अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों की

प्राणी विविधता

पी. टी. राजन
कैलाश चन्द्र
जे. आर. बी. एल्फ्रेड

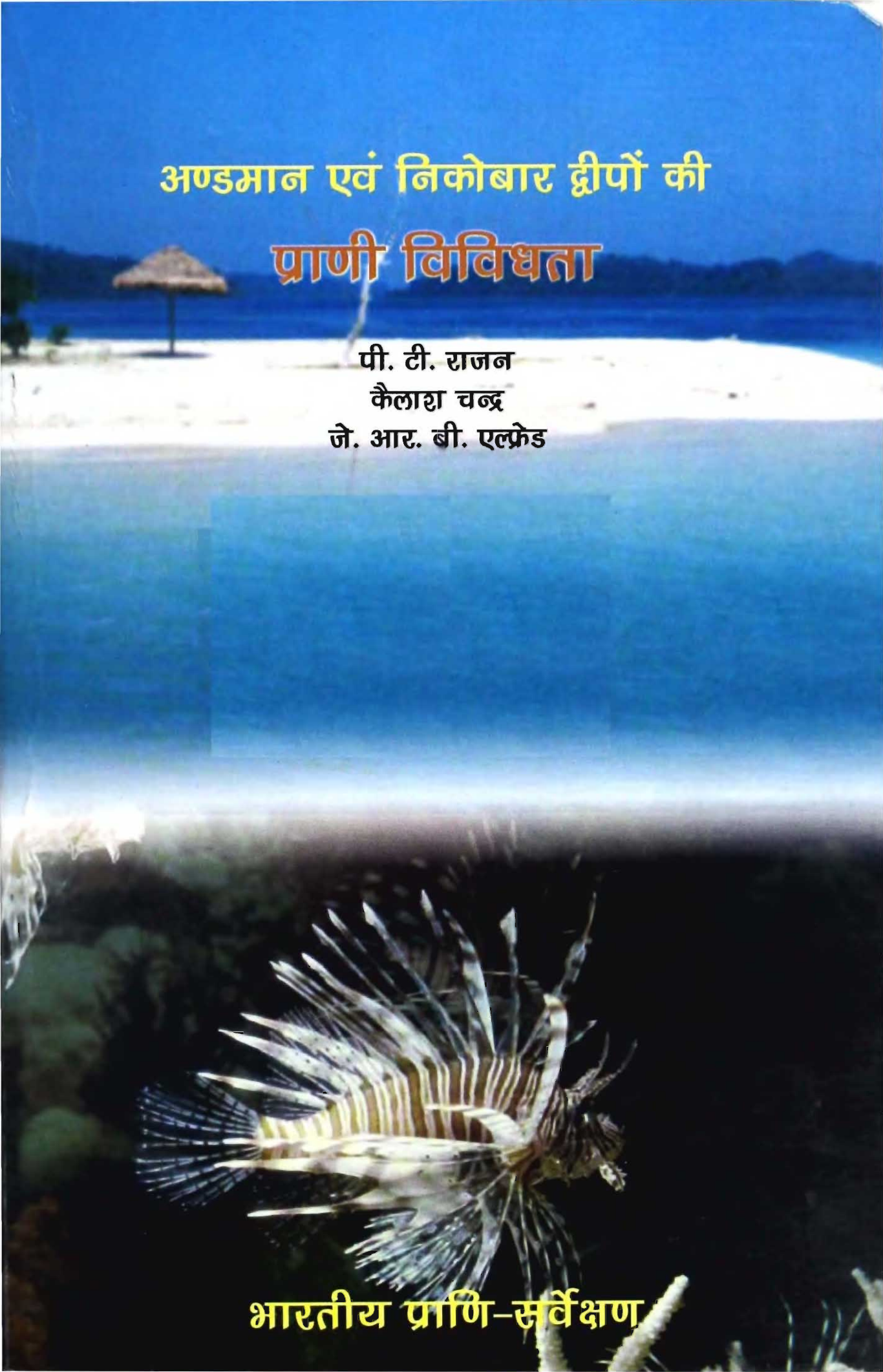

भारतीय प्राणि-सर्वेक्षण

अण्डमान एंव निकोबार द्वीपों की

प्राणी विविधता

(पर्यटन संबंधित जानकारी के साथ)

लेखन

पी. टी. राजन

कैलाश चन्द्र

जे. आर. बी. एल्फ्रेड*

भारतीय प्राणि सर्वेक्षण, अण्डमान एवं निकोबार क्षेत्रीय केन्द्र हड्डो, पोर्ट-ब्लयेर

***भारतीय प्राणि सर्वेक्षण, एम-ब्लाक, न्यू अलीपुर, कोलकाता**

संपादन

डॉ. रामकृष्ण

रतीराम वर्मा

भारतीय प्राणि सर्वेक्षण, एम-ब्लाक, न्यू अलीपुर, कोलकाता

भारतीय प्राणि-सर्वेक्षण

कोलकाता

CITATION
Rajan, P.T., Chandra, K. and Alfred, J.R.B., 2006 Andaman & Nicobar Dwipon ki Prani Vividhta (With Information on Tourism) : 1-173 (45 Colour Plates)

मई, 2006 में प्रकाशित

ISBN 81-8171-102-5

आवरण चित्रांकन : रतीराम वर्मा
प्रुफ़ संशोधन : शम्भु

© भारत सरकार, 2006

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक के पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना अथवा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय, या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

मूल्य
भारत में : रु. 200.00
विदेश में : $ 10; £ 7

निदेशक, भारतीय प्राणि-सर्वेक्षण के द्वारा प्रकाशन विभाग, 234/4 ए.जे.सी बोस रोड 13वाँ तला, निज़ाम पैलेस, कोलकाता 700 020 से प्रकाशित एवं पॉवर प्रिंटर्स, नई दिल्ली-110 002 द्वारा मुद्रित।

आभार ज्ञापन

लेखक गण इस कार्य के लिए दिए गए प्रोत्साहन एवं सहयोग के लिए डा. वीना उपाध्याय, संयुक्त सचिव, डा. जे.आर. बट्ट, श्री आर.के. जैन, डा. एम. हक, निदेशक, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली एवं डा. राजकुमार राजन, प्रभारी अधिकारी, प्राणी सर्वेक्षण विभाग, पोर्ट ब्लेयर का आभार प्रकट करते हैं। वन विभाग के मेहता, चौधरी, नायक और दूसरे स्थानों में काम करने वाले अपने सहयोगियों को धन्यवाद देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिन्होंने कई विषयों में सहायता एवं सुझाव दिए। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के डॉ. रामकृष्ण एवं रतीराम वर्मा के धन्यवादी हैं कि उन्होंने इस संस्करण के संपादन का कार्य करके भूलों, गलतियों और अस्पष्टताओं की ओर ध्यान दिलवाया।

उन सबका बहुत आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक के संस्करण की तैयारी में सहायता की थी। विशेष रूप से श्री सोम नायडू, कमिश्नर (रेवन्यू विभाग), एन. रशीद, इंसपेक्टर, पुलिस विभाग, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. पी. पौल पांडीयन, मात्स्य विभाग के निदेशक, डा. कृष्णमूर्ती, केन्द्रीय कृषि अनुसंधान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. हेमराय और मेरे सहकर्मी वैज्ञानिक कमला देवी। जहां तक चित्रों का संबंध है, कुछ एक को छोड़कर सभी चित्र भारतीय प्राणी सर्वेक्षण पोर्ट ब्लेयर के जी. पेान्नुस्वामी एवं पी.टी. राजन द्वारा विभिन्न द्वीपों के सर्वेक्षण के दौरान लिए गये हैं। श्री ऋषिकेश, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के सुझाव बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

पी.टी. राजन
कैलाश चन्द्र
जे.आर.बी. एल्फ्रेड

विषय सूची

		पेज नं.
1.	अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह–विषय प्रवेश	1
2.	अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूहों की प्राणी विविधता –एक परिचय	5
	प्राकृतिक भूगोल	9
	मौसम	10
	मृदा	10
	वनस्पति	11
	प्राणी विविधता	13
	तालिका – 1 : अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में पाये जाने वाली प्राणि वर्ग की जातियों की संख्या	15
	तालिका-2 : अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के स्तनधारी और सरीसृप की जातियों, उपजातियों और स्थानिक की संख्या	16
3.	अण्डमान–निकोबार के प्राणियों के वर्ग	17
	स्तनधारी	17
	समुद्री स्तनधारी	27
	द्वीप और पक्षी	34
	द्वीप के पक्षी	35
	पक्षी	36
	सरीसृप	69
	समुद्री कछुए	70
	मगर	74
	सांप	75
	पानी सांप	78
	जहरीले सांप	79

	पेज नं.
छिपकली	80
उभयचर	87
मेंढक	87
टोड्स	88
मछलियां	88
समुद्री मछलियां	92
मीठे पानी की मछलियां	93
शार्क मछली	94
एकाईनोडर्मेटा (शूलचर्मी)	95
समुद्री सीप	101
आथ्रोपोड़ा	110
कीट (इन्सेक्टा)	111
तालिका-3 : अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों में कीटों की विविधता	112
मकड़ियां और बिच्छु	113
कानखजुरा और गोचर	113
केंचुए और जोकें	113
प्रवाल समुद्री उपवन	114
पर्यटकों के लिए सुझाव	119
बोट मालिकों के लिए सुझाव	120
सैवेनिर हन्टर	120
सकारात्मक कदम	121
मृदु प्रवाल	121
जहरीले तथा डंक मारने वाले समुद्री प्राणी	129

		पेज नं.
4.	अण्डमान के आदिवासी	129
	अण्डमानी	129
	ओंगी	130
	जारवा	130
	सेण्टिनली	130
5.	निकोबार के आदिवासी	130
	शोम्पेन	131
6.	ज्वालामुखी द्वीप (बैरन द्वीप)	132
7	संरक्षण	134
8.	संदर्भ	136
9.	फोटो प्लेट	I-XXIX
10.	अण्डमान तथा निकोबार पन्ने का द्वीप : पर्यटन संबंधी जानकारी	137
	पर्यटकों के लिए निर्देशिका	139
	भूमिका	139
	इतिहास	139
	निवासी	140
	जीव जन्तु और वनस्पति	140
	सामान्य जानकारी	142
	मानसून में पर्यटन	143
	प्रवेश की औपचारिकता	145
	ऐतिहासिक महत्व के स्थान	146
	पोर्ट ब्लेयर और इसके आसपास के अन्य स्थान	149

	पेज नं.
पार्क	150
संग्रहालय	150
जू/एक्वेरियम	151
पोर्ट ब्लयेर के बाहर खोजी यात्रा	151
द्वीप गंतव्य (आइलैण्ड डेसटीनेशनस)	153
सेलिंग, स्कीइंग, पैरा–सेलिंग, वॉटर स्कूटर और स्पीड बोट	158
निकोबार के दर्शनीय स्थल	159
उत्सव	160
खरीदारी	161
पैकेज टूर	161
आयोजित टूर	161
टूर ऑपरेटर	163
ठहरने की जगह	164
पर्यटन निदेशालय	164
आरक्षण संबंधी जानकारी	164
निजी क्षेत्र द्वारा बनाये गए ठहरने के स्थान	165
रेस्तरां/बार	167
कांन्फ्रेस सुविधा	169
बैंक	169
पर्यटकों के लिए सुझाव	170
सामान्य सुझाव	172
महत्वपूर्ण टेलीफोन नंबर	173
फोटो प्लेट	XXX-VL

अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह
— विषय प्रवेश —

अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह, ऐसे खूबसूरत टापूओं का नाम है जो बंगाल की खाड़ी के दक्षिण दिशा में अक्षांश 6 डिग्री से 14 डिग्री उत्तर और देशांतर 91 डिग्री से 94 डिग्री पूर्व में स्थित है। यह 572 बड़े, छोटे द्वीपों एवं चट्टानों से मिलकर बना है जो कि 1962 कि.मी. समुद्री किनारों से घिरा हुआ है और क्षेत्रफल 8249 वर्ग कि.मी. है। 572 द्वीपों में से केवल 38 द्वीपों में ही आबादी है। इनमें से कुछ द्वीप बहुत ही दूर दराज में स्थित हैं। जहाँ केवल समुद्री किनारों पर मछलियों को पकड़ने के लिए मछुआरे या वैज्ञानिक कभी-कभार ही पहुँच पाते हैं। अंग्रेजी में इन्हें प्रायः **'आईलैड्स आफ द मेरीगोल्ड सन'** भी कहा जाता है। यह हरे-भरे, द्वीप आजादी के पहले **'कालापानी'** के नाम से जाने जाते थे, क्योंकि ब्रिटिश हुकूमत ने स्वतंत्रता सेनानियों को इन्ही द्वीपों पर बन्दी बना रखा था। आजादी के बाद यहाँ के विकास की प्रक्रिया तेजी से बढ़ी है। यह द्वीप समूह भारतीय महाद्वीप से करीब 1250 कि.मी. की दूरी पर स्थित है तथा अण्डमान-निकोबार सागर में म्यांमार के निचले हिस्से और इन्डोनेशिया के मध्य में 1120 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, तथा अण्डमान सागर में म्यांमार के निचले हिस्से और इन्डोनेशिया के मध्य में 1120 कि.मी. तक फैला हुआ है। अण्डमान-निकोबार द्वीपों में केवल दो जिले अण्डमान एवं निकोबार हैं जिन्हें 10^0 श्रोत अलग करता है और जो 145 कि.मी. चौड़ा एवं 400 फैदम गहरा है।

बंगाल की खाड़ी और अण्डमान-सागर में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह माला में पिराये गये मनके की तरह नीले जल में अपनी सुनहली मनभावन खाड़ियों, पूर्ण हरी वनस्पतियों, अन्य वृत्तीय जंगली, प्रदूषण रहित हवा, चित्त को आकर्षित करने वाले आदिवासियों तथा पक्षपात से रहित लोंगों से सदा चमकते हैं। बहुत वर्षो तक इन द्वीप समूहों का रहस्य घूंघट में छिपी नारी की तरह छिपा रहा जिससे ये भू-भाग अलग-थलग रहे। कालापानी जैसा नाम शायद कैदियों में भय और त्रास का

प्रभाव पैदा करने के लिए था। वस्तुस्थिति तो यह है कि जहाँ ये मोतियों जैसे सुन्दर द्वीप स्थित है वहाँ इस नाम और पानी के रंग का कोई तात्पर्य नहीं है।

क्योंकि ये द्वीप समूह मुख्यभूमि से बिल्कुल अलग-थलग है, इसलिये उस समय अंग्रेज सरकार ने भयानक हत्यारों और कुख्यात डकैतों को भारत और बर्मा से यहाँ लाकर रखने का बहुत ही सुरक्षित स्थान समझा। फलस्वरूप बदनाम सेलुलर जेल का निर्माण 1898-1908 में हुआ। फिर उपनिवेशीय सरकार ने भारतीय क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को जिन्हें क्रम से विप्लवी, आतंकवादी और कालापानी उस समय के सामान्य लोगों के लिये भय और वापस नहीं आने वाले शब्द के रूप में अपनी पहचान बना लिये।

आजकल परिस्थितियाँ बिल्कुल बदली हुई हैं अब ये द्वीप समूह काले-पानी की कारागार नहीं रहें अब ये हरा स्वर्ग है जहाँ मुख्य भूमि तथा विदेशों से सैलानी प्रतिवर्ष भ्रमण करने आते है।

मानचित्र में इनकी स्थिति भी स्वयं में विशिष्ट है। जिसकी तुलना प्रशान्त सागर के प्रसिद्ध गैलापेगस द्वीप से कर सकते है। शायद इन स्थानों की निर्मल प्राकृतिक सुन्दरता ही बहुत से प्रकृतिवादियों और सैलानियों को इन द्वीपों के वन्य जीवन की एक झलक देखने के लिये व्यग्र कर देती है। इस समय में जो भी सूचनायें उपलब्ध है, उनसे इस प्रदेश के पशु-वर्ग में स्पष्ट रूप से विषमता, प्रचुरता और अपूर्वता को प्रदर्शित करता है। दुर्भाग्यवश ऐसी सूचनायें बिखरी हुई है और उनमें से अधिकांश प्राप्त नहीं है। इस सन्दर्भ में इस प्रकाशन द्वारा इन द्वीपों के सभी तरह के पशु-वर्ग को संग्रहित करने का प्रयास किया गया है। यह प्रकाशन बहुत से प्रतिष्ठत जीव-वैज्ञानिकों और प्रकृतिविदों की पहले की खोजों तथा वर्तमान शोधों पर आधारित हैं जिन्हें इन दूर-दराज के द्वीपों की कई बारीक जांचों में पाया गया है।

अण्डमान समूह में 324 द्वीप हैं। जिनमें से 2001 की गणना के अनुसार केवल 24 द्वीपों पर आबादी है। समूह के प्रमुख भाग को वृहत् अण्डमान कहते है जो पांच मिले हुए द्वीपों से बने है जिन्हें उत्तरी

अण्डमान, मध्य अण्डमान, दक्षिण अण्डमान, बाराटान (ओरल-कच्चा) और रटलैण्ड द्वीप कहते है। ये सभी संकरे नालों से एक दूसरे से अलग है। बृहत् अण्डमान की भूमि का क्षेत्रफल 6408 वर्ग कि.मी. है। अण्डमान समूह का दक्षिणतम् द्वीप लिटिल अण्डमान है जो एक संकरे जिसे डन्कन पैसेज कहते है द्वारा अलग-अलग होता है। यह द्वीप 48 कि.मी. लम्बा और 27 कि.मी. चौड़ा है और इसका क्षेत्रफल 960 कि.मी. के लगभग है।

निकोबार समूह में 24 द्वीप हैं जिनमें से 13 पर आबादी है और दूसरे कम महत्व के है। इस समूह के कुल भूमि का क्षेत्रफल 1841 वर्ग कि.मी. हैं कार निकोबार के उत्तरम् छोर और पिगमिलियन प्वाइंट ग्रेट-निकोबार के दक्षिणतम छोर के बीच की दूरी 310 कि.मी. है। इन्दिरा (पिगमिलियन) प्वाइंट ही वास्तविक भारत की सीमा का दक्षिणतम छोर है जो सुमात्रा के अचिन हेड से 144 कि.मी. है। निकोबार समूह के द्वीपों में ग्रेट निकोबार सबसे बड़ा हैं जिसका क्षेत्रफल लगभग 1045.1 वर्ग कि.मी. और लम्बाई उत्तरी मुर्रे प्वाइंट और दक्षिणी पिगमिलियन के बीच 55 कि.मी. हैं। इस समूह के दूसरे द्वीप जिनका वर्णन आवश्यक है। कार निकोबार, चौरा तिलनचांग, टेरेसा, बम्बूका, कर्मोटा, ट्रिंकेट, नानकौरी, कचाल, पिलोमिलो, कोन्डुल और लिटिल निकोबार है। इनमें से अधिकांश द्वीप उपजाऊ है जिन पर सदा हरी वनस्पतियाँ होती है। इन द्वीपों पर प्रमुख रूप से नारियल और ताड़ के समूह होते हैं जिनकी पत्तियाँ पखें के समान होती है जिनका दुबला खुला तना नीले-आकाश को चुम्बित करता है। निकोबार समूह का मुख्यालय कार निकोबार है। यह प्रवाल भित्ति द्वीप है जिसका आकार आस्ट्रेलिया से मिलता है। इसके भूमि का क्षेत्रफल 126.9 वर्ग कि.मी. है।

मछलियाँ जो कि यहाँ मुख्य संसाधन है, अण्डमान सागर में विस्तरित और एकनिष्ठ आर्थिक क्षेत्र प्राप्त हैं। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, मछलियों के लिए बहुत धनी है इस क्षेत्र में मछलियों की लगभग 1,200 जातियों का पता है जिनमें से लगभग 300 व्यापारिक रूप में महत्वपूर्ण है। फैले समुद्र की मछलियों के सार्डदन्स, कैकेरल्स और टुना इन द्वीपों की आर्थिक उपयोग की मानी जाती है। इस क्षेत्र की अच्छी कीमत वाली

मछलियाँ है–ब्रीम्स, बैराकुडस, फैक्स, मफैलेट, सीर, स्नेपर और ग्रूपर। यद्यपि इन समूहों का खाड़ी क्षेत्र 1,960 कि.मी. लम्बा है फिर भी यहाँ कुल मत्स्य दोहन अपेक्षाकृत कम है। सम्भवतः यह द्वीप-समूहों के किनारे पथरीले और तली प्रवाल की होने के कारण है क्योंकि इनमें पोतों द्वारा मत्स्य दोहन कठिन होता है। यहाँ पर परम्परागत मछुआरे के परिवार नहीं हैं जैसा कि मुख्य भूमि में हैं। इन द्वीपों के प्रशासन द्वारा मुख्य भूमी के राज्यों जैसे आन्ध्रप्रदेश, और केरल से मछुआरों को लाकर बसाया गया है। इन द्वीपों में लगभग 45 मछुआरों के गाँव है और जनसंख्या लगभग 11,062 है।

इन द्वीपों से शार्क मछलियों के पंखों का निर्यात होता है। इन पंखों के पश्चिमी एशियायी देशों में बहुत अच्छा सूप बनाया जाता है। शार्क मछलियों की त्वचा से शैग्रीन बनायी जाती है जो चीजों की हत्थों पर आवरण चढ़ाने के लिए काम आती है तथा इन मछलियों के यकृत से तेल निकाला जाता है जो कॉड लिवर आयल की तरह भोजन के तौर पर प्रयोग में लाया जाता है। आजकल इन द्वीपों में शार्क मछलियों और ग्रूपर मछलियों में *इपिनेफिलस लेन्सीलोटस* के दोहन पर रोक लगायी गई है।

भारत में इन द्वीपों की विशेष भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति के कारण विशिष्ट स्थान है। इन द्वीपों की उत्पत्ति ज्वालामुखी पर्वतों से हुई जो कि सामान्यतः समुद्री पर्वत श्रृंखंलायें है। द्वीपों का भूमि प्रदेश ऊँचा-नीचा, पर्वती एवं पहाडी है, जिनके बीच घाटियाँ हैं। अण्डमान वर्ग के दक्षिण अण्डमान में माऊंट हैरियेट 422 मी., उत्तर अण्डमान में सैडलपीक जो कि समुद्र तल से 732 मी. की ऊँचाई पर एवं निकोबार द्वीप समूह में ग्रेट निकोबार के माउंट थुलर समुद्र तल से 670 मीटर की ऊँचाई पर हैं। यह द्वीप समूह उष्ण कटिबंधीय घने वर्षा वनों से आच्छादित है। अधिकतर द्वीप प्रवाल शैलमालाओं और छिछले समुद्र से घिरे हैं। दूर-दूर तक संकरे आकार के फैले हुए बालू तट यहाँ की शिलाकृति की मुख्य विशेषता है। इनके समुद्र तटों में मेंग्रोव वनस्पति भी पायी जाती हैं जो कि विभिन्न प्रकार के समुद्री जीव-जन्तुओं को आश्रय देती हैं, और जो विशेषकर उष्णकटिबंधीय महासागर द्वीपों में पायी जाती हैं।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूहों की प्राणी विविधता
– एक परिचय –

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह की प्राणी विविधता भारत देश में अपना अनोखा स्थान रखती है (तालिका-1)। इन द्वीपों की प्राकृतिक संसाधन वैविध्यपूर्ण है और प्राणी विविधता उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की विशेषता रखती है। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण ने, जो कि यहाँ का सर्वेक्षण वर्ष 1977 से कर रहा है। और यहाँ के सभी तरह के वातावरण में पाये जाने वाले प्राणियों का अध्ययन करता रहा है, कुल मिलाकर अभी तक करीब 6,000 जातियों को सूचीबद्ध किया है। जिनमें से कुछ ऐसी जातियाँ भी पायी गई हैं जो कि भारत या अन्य किसी देश में अन्यत्र नहीं मिलती। इन द्वीपों में प्राणियों की वितरण प्रणाली भी बहुत रोचक है। जैसे कि कुछ प्राणी विविधता की वितरण प्रणाली का विस्तार पूर्वक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अधिकतर अण्डमान द्वीप समूह के प्राणी इन्डोचीन एवं म्यांमार क्षेत्र से समानता रखते हैं और निकोबार का प्राणी जगत इण्डो-मलाया के प्राणी जातियों से मिलता है। इसके अतिरिक्त कुछ जातियाँ दोनों क्षेत्रों में समानरूप से पायी जाती हैं।

इन द्वीपों में सभी प्रकार के प्राणी पाये जाते हैं जो कि विभिन्न पारिस्थितिकी में रहते हैं। प्रोटोजोवा जो कि सूक्ष्म प्राणी है, इनका अध्ययन भी बहुत कम हुआ है। फोरेमीनीफेरा, मेंफीगोफोरा, सीलियेटा एवं स्पोरोजोवा समुदाय की केवल कुछ जातियों की संख्या का पता लगा है। स्पंज की करीब 72 जातियाँ मिलती हैं जो कि समुद्री जल में पायी जाती हैं। इन स्पंजो में कई प्राण-रक्षक औषिधियों के होने की जानकारी मिली है। जिनकी विस्तृत खोज जारी हैं। यहाँ पर प्रवाल या मूंगों की चट्टानें द्वीपों के चारों ओर फैली है। अधिकांशतः प्रवाल भित्ति फ्रिजिंग तरह की हैं। ये प्रवाल-भित्ति इन द्वीपों की मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद करती हैं एवं इन प्रवाल भित्तियों में असंख्य जीव-जन्तुओं का आवास है। प्रवालों की 200 से अधिक जातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं। प्रवाल की मुख्य जातियाँ, ऐक्रोपोरा, मोन्टीपोरा, फविया, फन्जिया,

पोराईट्स एवं गोनिएस्ट्रिया वशं के सदस्य हैं। यह प्रवाल भित्तियाँ हजारों वर्षो में विभिन्न समुद्री जीवों की क्रियाओं द्वारा बनती हैं। ये गर्म जलवायु के द्वीपों और महाद्वीपों के बाहरी किनारों जहाँ पानी का तापमान 22-29 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है, में विकसित होती है। दुर्भाग्वश यह प्रवाल भित्तियाँ इन द्वीप समूहों के अत्यधिक दबाव पर है। इनमें से कुछ प्रदूषित हो गयी है और कुछ का तटीय विकास, प्रवाल खनन्, अत्यधिक मत्स्य दोहन और प्रवाल भित्ति में रहने वाले प्राणियों के संग्रह से समाप्त हो रही है। 26 दिसम्बर 2004 में आये सुनामी से प्रवाल भित्ति को काफी क्षति पहुँची है।

एनीलिड़ा वर्ग के प्राणी जैसे केंचुआ, जोंक एवं छोटे पालीकीट कृमियों की जातियों की संख्या क्रमशः 21, 10 एवं 186 हैं। इन प्राणियों का प्राकृतिक पारिस्थितिकी में अपना-अपना योगदान है, खासकर केंचुए जो कि जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। इनमें अधिकतर परजीवी हैं। एस्केलमिन्थस एवं प्लैटीहेलमिन्थस की प्रजातियों का अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है, जबकि ज्वार-भाटा क्षेत्र एवं समुद्र तट के अकशेरूकी प्राणियों जैसे एरेकिएनीलिड़ा, गैस्ट्रोटिका, काइनोरिन्का, टरबलेरिया, कोपिपोड़ा एवं नमेंटोड़ा की 300 से अधिक जातियों को यहाँ से रिकार्ड किया गया है जिनमें से अधिकतर नई हैं और जिन्हें मीओफ़ोना भी कहते हैं।

विकसित अकशेरूकी प्राणियों की पारिस्थितिकी एवं वितरण प्रणाली का विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया है जिनमें से मुख्यतः क्रस्टेशियन, आर्थोपोड़ा, मोलस्का एवं इकाईनोडरमेटा हैं। कोपीपोड़ा जो कि क्रस्टेशियन समुदाय से सम्बंध रखते हैं, इनकी 200 से अधिक जातियों को समुद्री तट एवं ज्वार-भाटा क्षेत्र से रिकार्ड किया है। इसी तरह आइसोपोड, एमीपोड एवं केंकड़े जो कि सामान्यतः इसी क्षेत्र में पाये जाते हैं, इनकी 600 से अधिक जातियों का ज्ञान प्राप्त है। इनमें से एक विशेष प्रकार का केंकड़ा जिसे महादस्यु केंकड़ा (जायन्ट रोबर क्रेब) *बिरगस लेटरो* कहते है, यह निकोबार द्वीपों में विभिन्न जगहों पर पाया जाता है। यह डेढ़ फुट लम्बा एवं 9 इंच चौड़ा होता है। इसकी जनसंख्या कम हो रही है,

इसलिए संरक्षण के लिए इसे *वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 के अध्याय (1)* में रखा गया है। मकड़ियाँ एवं बिच्छुओं की 94 जातियाँ इन द्वीपों से ज्ञात हैं लेकिन इस समुदाय का इन द्वीपों में विस्तार पूर्वक सर्वेक्षण करने से इनकी जातियों की संख्या बढ़ सकती है। अण्डमान कनखजूरा (सेन्टीपीड़) इन द्वीपों में बहुतायत से मिलता हैं, जिसकी लम्बाई 10 इंच तक हो सकती हैं। यह कीड़े-मकोड़ो को खाता है। इसके काटने से बेहद दर्द होता है और सूजन भी आ जाती है। इन द्वीपों में सेन्टीपीड़ एवं मिलीपीड़ की 22 जातियों का उल्लेख है। कीट समुदाय, जो कि सामान्यतः प्राणी जगत में 75 प्रतिशत के अनुपात में होता है केवल अभी तक 2256 जातियाँ ही ज्ञात हैं। इनके 30 आर्डर में सभी समुदाय के कीट पाये जाते हैं। जिनमें से मुख्यतः पतगें, तितलियाँ, मच्छर, मक्खी, टिड्डियाँ, मधुमक्खियाँ, चींटी, गुबरैले, दीमक, ड्रैगनफ्लाईज, पादप-बग एवं थ्रिप्स इत्यादि हैं। इन कीटों में स्थानिकता की बहुतायत है। खासकर तितलियों में स्थानिकता 70 प्रतिशत से अधिक पाई गई है। इनमें से लेपीडोप्टेरा समुदाय की 790 से अधिक जातियाँ पायी गई हैं। छोटे कीट जो कि एप्टेरिगोटा उपवर्ग के सदस्य है जिनमें थाइसैनूरा, डिप्लूरा, प्रोटूरा एवं कोलेम्बोला आदि आते हैं। इनका अध्ययन बहुत कम हुआ है एवं कुछ जातियाँ ही अभी इन द्वीपों से दर्ज की गयी हैं। कीटों के जीवनवृत, जनसंख्यागति, पारिस्थितिकी, वर्गीकरण एवं नाशक जीव नियंत्रण का भी अध्ययन किया गया है। मोलस्क (मृदुकवची) समुदाय में बहुत तरह के सीपी, गैस्ट्रोपोड, शंख समुद्र एवं भूमि में सभी जगह मिलते हैं। इनकी 1,100 से अधिक जातियाँ इन द्वीपों में पायी गयी हैं। कुछ समुद्री मोलस्क जैसे कि सीपी, शंख, ट्रोकस, टरबो एवं बड़ी कौड़ी वगैरह हैं, जिनका कि अत्यधिक मात्रा में दोहन हो रहा है और इनकी संख्या समुद्री पारिस्थितिकी में कम होती जा रही है। साईपनकुलिड्स जो कि समुद्री तट पर रेतीले या सड़ी जगहों पर मिलते हैं, इनकी अभी तक 25 जातियों का ही ब्यौरा प्राप्त है। इकाईनोडर्मेटा (शूलचर्मी) में तारामछली, समुद्री अरचिन, समुद्री खीरा की जातियाँ आती हैं। जिनकी यहाँ पर 336 जातियाँ पायी जाती हैं। समुद्री खीरा की कुछ जातियाँ ऐसी

हैं जिनका यहाँ से अवैध रूप से निर्यात होता है और इनके सूखे हुए शरीर से सूप बनाया जाता है जो कि कई देशों में प्रचलित है।

कशेरूकी प्राणियों को मुख्यतः पाँच वर्गो में बाँटा गया है, जो कि मछली, उभयचर, सरीसृप, पक्षी एवं स्तनधारी प्राणी हैं। इन द्वीपों में मीठे पानी की मछलियों की संख्या कम है लेकिन समुद्री मछलियों की जातियों की संख्या 1,184 से ऊपर है जो कि यहाँ का मुख्य संसाधन है। अण्डमान सागर में एक विस्तीर्ण और एकनिष्ठ आर्थिक क्षेत्र हैं, जहाँ मत्स्य उद्योग की सम्भावनायें अत्यधिक है। ऐसा अनुमान है कि इस क्षेत्र से प्रतिवर्ष 2,00,000 टन मछलियों की उपज प्राप्त हो सकती है। लेकिन इन द्वीपों में आधुनिक तरीके से मछली पकड़ने के साधन प्राप्त न होने के कारण उपलब्ध संपदा का उपयोग कम हो रहा है। उभयचर प्राणियों में मेंढ़क और टोड जातियाँ रखी गयी हैं, जिनकी 18 जातियाँ इन द्वीपों में मिलती है, जिनमें से अण्डमान और निकोबार मेंढ़क मुख्य है। सरीसृप एक ऐसा वर्ग है जिसमें मगर, छिपकली, सर्प एवं कछुए आदि आते हैं। इनकी इन द्वीपों में 90 जातियाँ मिलती हैं, जिनमें 23 स्थानिक है जो कि इन्हीं द्वीपों में पायी जाती हैं। इनमें से मुख्य अण्डमान हरी छिपकली, अण्डमान गार्डन लिजर्ड, वाटर मोनीटर, जालिकारूपी अजगर, अण्डमान क्रेट, नागराज, लवणजल मगर एवं समुद्री कछुवे हैं। विभिन्न पक्षियों की लगभग 270 जातियाँ इन द्वीपों पर मिलती हैं, जिनमें से 95 जातियाँ स्थानिक (एंडमिक) हैं। मुख्य पक्षी नारकोन्डम धनेश, अण्डमान टील, हवाबिल, हरियल, निकाबार मेगापोड, निकोबार कबूतर एवं क्रो-फीजेन्ट आदि है। यह द्वीप पक्षियों के लिए स्वर्ग है लेकिन पिछले कुछ वर्षो से निरन्तर मनुष्यों की आबादी में वृद्धि और वनोन्मूलन के कारण इन पक्षियों को *वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972* के अन्तर्गत रखा गया है जो कि इनके संरक्षण के लिए कारगर कदम है। स्तनपायी प्राणियों की 60 जातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं जिनमें से 33 स्थानिक हैं। स्थानिक जातियों में अधिकतर चूहे एवं चमगादड़ आते हैं। बड़े माँसाहारी स्तनधारी प्राणियों का अभाव है। कुछ स्तनधारी जातियाँ जैसे हिरन, बिल्ली, हाथी, कुत्ते, बकरी वगैरह अब जंगली हो गये हैं। इन द्वीपों के

मुख्य स्तनधारी प्राणी अण्डमान चमगादड़, निकोबार चमगादड़, अण्डमान जंगली सुअर, केंकड़े खाने वाला बंदर, हस्तिमकर (ड्यूगांग), डाल्फिन एवं व्हेल आदि हैं। इस पुस्तक में कुछ विस्तार से जानकारियाँ स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप और जल-स्थल चर के विषय में दी गई हैं। जहाँ तक मछलियों का प्रश्न है इन द्वीपों में लवणीय मछलियों कि प्रचुरता है और भिन्नता भी है। केवल व्यवसायिक रूप से प्रमुख लवणीय मछलियाँ और कुछ मीठे पानी की भी तथा छोटी खाड़ियों की मछलियों के विषय में ही सामग्री है। अकशेरूकी जैसेः एकाइनोडर्म, घोंघें, स्लग, कीट, स्पाइड़र, बिच्छु, कानखजूरा, मिलीपीड़, कछुए, जोंक, केंकड़े, प्रवाल और स्पंज के विषय में भी संक्षिप्त जानकारी है। समुद्री-किनारे के जीव जो मुख्यतः सैलानियों के लिये बहुत ही आकर्षक हैं, उनका भी सामान्य रूप से वर्णन किया गया है। सैलानियों के लिए यह द्वीप समूह आकर्षक है, उनका भी सामान्य रूप से वर्णन किया गया हैं और उनकी सुविधा के लिये भी द्वीप समूह के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी दी गई है। आशा करते हैं कि यह पुस्तक प्रकृतिविदों और सैलानियों के लिए काफी हद तक उपयोगी होगी और सामान्य जनता में यहाँ के क्षेत्रीय जीवों की विभिन्नता और विशिष्टता को समझने और संरक्षण को बढ़ावा देने तथा इन द्वीपों के जीवों के अध्ययन के लिये आधार प्रस्तुत करेगी।

प्राकृतिक भूगोल

असीमित भारतीय समुद्र के लुभावने दृश्य को बेधते हुए गहरे नीले जल से सुदूर बंगाल की खाड़ी के दक्षिणी-पूर्वी भाग में सदाबहार चमकते हुए ये भू-भाग छोटे और बड़े द्वीपों के रूप में उभरें हैं। टापूओं का यह समुदाय जो 800 किलोमीटर में फैला है, कई द्वीपों से मिलकर बना है, जिन्हें संयुक्त रूप से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह कहते हैं। ये द्वीप समूह कभी एशियाई मुख्यभूमि के भाग थे जो आज से लगभग 100 लाख वर्ष पहले मिजोहक काल के पूर्वार्द्ध में भूगर्भीय भूमि के नीचे से ऊपर उठने की क्रिया में अलग हो गये थे। वर्तमान द्वीप समूह नागा और लुशाई पहाड़ियों और बर्मा की अराकन योमा की पर्वत-श्रृंखलाओं से

भौगोलिक क्रम बनाते हैं, जो अराकन योमा से होकर केप निग्रियास से अण्डमान-निकोबार और दक्षिणी-पूर्वी सुमात्रा (अचिनहेड) तक फैली है।

मौसम

इन द्वीपों की जलवायु आमतौर से उष्णकटिबंधीय एवं गरम मानी जाती है। ये द्वीप समूह अयन-वृतीय हैं अर्थात् गर्म और तर सदा एक समान है। समुद्र से निकटता और पर्याप्त वर्षा, गर्मी की अधिकता को समाप्त कर देती है। अधिकतम वर्षा मई से दिसम्बर तक होती है। दक्षिणी द्वीपों के पहाड़ी भागों में 300 सेन्टीमीटर वार्षिक वर्षा होती है। जबकि उत्तरी द्वीपों में दिसम्बर से फरवरी तक का मौसम सामान्यतः ठंड़ा होता है। गर्मी का मौसम मार्च से अप्रैल तक होता है जब वर्षा बहुत कम होती है। मई में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून का द्वीपों में प्रवेश होता है और यह अक्टूबर के अन्त तक होती है।

द्वीपों में ताप की भिन्नता होती है। 18 डिग्री सेन्टीग्रेड के बीच अत्यधिक आर्द्रता 80 प्रतिशत से भी अधिक होने के कारण वर्ष का मध्यमान तापक्रम 5 डिग्री सेन्टीग्रेड से 8 डिग्री सेन्टीग्रेड तक घटता बढ़ता रहता है। आकाश बादलों से ढ़का रहता है। गर्मी का मौसम गरजने वाले बादलों से ढ़का रहता है, और गरजने वाले तूफान आते रहते हैं। दक्षिणी पश्चिमी मानसून के मौसम में हवाएँ हल्की हो जाती हैं। किन्तु चीन सागर में उत्पन्न होने वाली बड़ी आँधियों का प्रभाव इस क्षेत्र पर पड़ता है। इनमें से कुछ पूर्ण रूप से तूफान में बदल जाती हैं और समुद्री किनारों की ओर आती हैं। तूफानी हवाओं के साथ वर्षा भी बहुत तेज होती है, और अत्यधिक तेज हवाएँ समद्री मल्लाहों की जीवन-लीला भी समाप्त कर देती है।

मृदा

इन द्वीपों की मृदा की पर्त परिवर्तनीय है। पहाड़ी भू-भाग में यह दो से पाँच मीटर तक है। पर्वत-पृष्ट पर एलूवियल मृदा पायी जाती है और

घाटियों तथा पर्वत-पृष्टों की ढ़लानों में जल से जमा की हुई मिट्टी होती है। नदी के जल-मार्गो की ओर बंहाव से बनी मृदा घनी होती है जिसकी मोटाई और बाढ़ से छोड़ी हुई मिट्टी तथा मूँगे के चूने का मिश्रण है। सामान्य तौर पर मृदा क्षीण या परिमित रूप से अम्लीय है, जिसमें हयूमस की मात्रा बहुत अधिक होती है। यहाँ की मिट्टी रेतीली एवं बहुत पतली सतह में होती है जिसका कि अधिक वर्षा के कारण कटने का खतरा बना रहता है।

वनस्पति

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह विश्व के अयन-वित्तीय वर्षा वन हैं। गर्म-तर जलवायु तथा प्रचुर वर्षा के कारण इन द्वीपों की वनस्पतियाँ अति-समृद्ध और अत्यधिक है। इन द्वीपों के जंगलों को निम्न प्रमुख किस्मों में बांटा गया है :

1. दैत्याकार सदाबहार (सदा हरे) जंगल।
2. अण्डमान गर्म-तर सदा हरे जंगल।
3. दक्षिणी पहाड़ी के गर्म-तर पतनशील जंगल।
4. अण्डमान अर्ध सदा-हरे जंगल।
5. अण्डमान तर पतनशील जंगल।
6. समुद्री किनारे के जंगल।
7. मेंनग्रूव जंगल।

इन प्रमुख सात किस्मों के अलावा और भी कुछ किस्में हैं जैसे: बैंत की झाड़ियाँ, बाँस की झाड़ियाँ आदि जो क्षेत्रफल ग्रहण के अनुसार बहुत महत्वपूर्ण नहीं हैं। केवल मेंनग्रूव के जंगलों को छोड़कर शेष सभी किस्मों को आसानी से चिन्हित नहीं किया जा सकता। वास्तव में ये एक दूसरे से बुरी तरह इस कदर हिल-मिल गये हैं कि सभी मिलकर मिश्रण बनाते हैं।

दैत्याकार सदाबहार जंगल इन द्वीपों का प्रमुख अतिसमृद्ध बहुमंजिले जंगल हैं जो यहाँ की जलवायु की वनस्पतियों को चरम का निर्माण करते हैं। उच्च आच्छाद्न भीमकाय पेड़ों से बनता है जो अधिकांशतः हमेशा हरे रहते हैं। इस किस्म की पायी जाने वाली प्रमुख जातियाँ गर्जन, पून, तौन्डामीनी, लम्बापत्ती, दालचीनी, पपीता आदि।

हालाँकि अण्डमान गर्म-तर सदा हरे जंगल संरचना में समान हैं किन्तु दैत्याकार सदाबहार वन की तरह विशेषकर उच्च मंजिलें के आकार घनत्व और ऊंचाई में प्रचुर नहीं हैं। जबकि उच्च मंजिले बहुत बेतरतीब हैं और इस किस्म में पतझड़ वाली जातियाँ बहुतायत से पायी जाती हैं। इस तरह के जंगल पूरे द्वीप समूह में चोटियों से लेकर पहाड़ियों ओर उनकी ढलानी में भी ये तर पतझड़ वाले जंगल हैं। गर्जन, टोगपीनी, काला लकुच, पून, रेड बाम्बे, थिन्गम, लेप्याओ, जायफल, खट्टाफल आदि इस किस्म की प्रमुख जातियाँ हैं।

दक्षिणी पहाड़ी के गर्म-तर सदा हरे जंगल पहाड़ी की चोटियों, कठिन ढ़लानों और नीचे की ओर जहाँ मृदा कम होती है, में पाये जाते हैं, और उच्च पवनों के लिये सदा आरक्षित होते हैं। इन वनस्पतियों का विकास रूका होता है। इनकी प्रमुख जातियाँ जो यहाँ पायी जाती हैं, वे हैं कास्टैटस, मेंसुआफेरिया, कनैरियम मनी, गर्जन, होपिया हूलफरी, कैटोजिलान फार्मोसिम, इफोर्बिया ट्राइगोना है।

अण्डमान अर्ध हरे जंगल अति समृद्ध हैं जिनमें दैत्याकार पेड़ सदाबहार और पतझड़ वाली जातियों के हैं। इस तरह के जंगल मुख्य रूप से घाटियों तक ही सीमित हैं। गर्जन, लेटकाक, बादाम, वोनमेंजा, कोको, पून डिडू, टौगपीनी, पैडॉक, प्यामा इस किस्म की पायी जाने वाली प्रमुख जातियाँ हैं।

अण्डमान तर पतनशील जंगल बहुमंजिले वाले हैं जिनका ऊपरी आच्छादन दैत्याकार पेड़ों से बना होता है, इनकी ऊंचाई लगभग 35

मीटर और मोटाई 2 मीटर होती है, और जिनका आधार बहुत ही पुख्ता है। यह पहाड़ी जमीनों जिनकी ऊंचाई सामान्यतः 90 मीटर से अधिक नहीं होती है। ये जंगल ही अनेकों तरह की कीमती लकड़ियों के प्रमुख स्रोत हैं जैसे पैड़ॉक, मार्बिल वुड़, सफेद बाम्बवे, चूई, कोको, सफेद-धूप आदि।

समुद्री किनारे के जंगल उच्च स्तर क़े एल्यूवियल मृदा के क्षेत्र जो समुद्र के किनारे हैं किन्तु उसकी पहुँच से दूर हैं, के क्षेत्र में पाये जाते हैं। बुलेट-वुड़, थिटपाक, बादाम, पून, करन्ज आदि।

इन द्वीपों के मेंनग्रूव जंगल समुद्री किनारों, खाड़ियों के मुहानों में लगभग 10,000 हैक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं, (ब्लास्को, 1977 के अनुसार)। समुद्र के बाहरी किनारों में पायी जाने वाली जातियों *(रूहाजोफोरा मुकोनाटा), (राइजोफोर स्टाइलोसा)* है। जो घने समूह बनाती है, खारे पानी के दलदली क्षेत्र जो कभी-कभी समुद्र से बहुत अधिक दूरी तक होते हैं और खाड़ियों से जुड़े होते हैं तथा बहुत अन्दर तक चले जाते हैं, प्रमुख जातियाँ *(बुगइरा परीवफ्लौरा)* और *(बुगइरा जिम्नोराइजा)* है। मेंग्रोव की दूसरी जातियाँ जैसे *(सोनेराटिया स्पीसीज)* ज्वार भाटे के जंगल में बहुत दूर की जमीन तक पाई जाती है, जबकि *(एविसेनिया आफिसिनालिस), (हेरिटीरा लिटोलिस)* और *(स्काईफिफोरा इाइड्रोफिलेसिया)* जमीन की ओर मेंग्रोव दलदल में उगती है।

प्राणी विविधता

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के अन्दर निकलने वाली पहाड़ियों के शिखर हैं, जिनके क्रम में बर्मा की अराकन योमा और दक्षिण में सुमात्रा के द्वीपों से निकटता है। भौगोलिक समानता के कारण और पूर्व भूगर्भीय सम्बन्धों से अण्डमान द्वीप, बर्मा के समान है (भारत, चीनी उपक्षेत्र) और निकोबार द्वीप की सुमात्रा से समानता है (भारत मलायन उपक्षेत्र)। यह अनुमान है कि भारत चीनी क्षेत्र के पशुवर्ग की समानता अण्डमान में होगी जबकि मलायन क्षेत्र के पशुवर्ग की समानता निकोबार द्वीप में

होगी। अण्डमान में बर्मीय पशु वर्ग बहुत ही कम है जबकि निकोबार में सुमात्रा के अति समान है। किन्तु सही आंकड़े जो आज उपलब्ध हैं, विशेषकर सरीसृप और स्तनधारियों के, इस मान्यधारणा की इन द्वीपों के पशु वर्ग के बंटवारे की पुष्टि नहीं करते है। इन स्थानों में मिलने वाली सरीसृपों की लगभग सभी बाहरी (विदेशी जातियाँ) भारत-मलायन उपक्षेत्रों में पायी जाती है। उनमें से कुछ अण्डमान और निकोबार द्वीप, दोनों में ही पायी जाती है तथा भारत-मलायन उपक्षेत्रों में पायी जाती है। 'छिपकलियों और सापों की बहुत सी जातियाँ दोनों में ही समान है' और सम्पूर्ण पशु-वर्ग सामान्य रूप मलायन से समानता रखता है जो धीरे-धीरे बर्मी पशु-वर्ग की ओर जाते हैं। जहाँ तक सांपों का प्रश्न है, तीन जातियाँ *(त्यासम्सूकोसस), (नाजा नाजा कौथिया)* और *(ओफियोफगस हन्नाह)* (जो भारत-चीन क्षेत्र में पाये जाते हैं) को छोड़कर दूसरी सभी बाहरी (विदेशी) जातियाँ जो इन द्वीपों की हैं, भारत-चीन और भारत-मलायन उपक्षेत्र दोनों से ही सम्बन्ध रखती हैं।

इन द्वीप समूहों की बाहर से आयी स्तनधारियों की अधिकांश जीव सादृश्यता भारत में पायी जाती हैं। यहाँ के पक्षियों की सादृश्यता भी, भारत से बर्मा और माले की अपेक्षा, अधिक समान है। कुछ चमगादड़ जो अण्डमान में ही पाये जाते हैं (किन्तु निकोबार में नहीं पाये जाते हैं) दोनों ही उपक्षेत्रों भारत-चीन मलायन क्षेत्र में सामान्य हैं। *साइनोप्टेरस स्फिक्स, इयोनेक्टरिस स्पेलीया, टैफोजोआस मिलैनोपोगान* ऐसे उदारहण है। कुछ और भी चमगादड़ हैं जो निकोबार और भारत में पाये जाते हैं (लेकिन अण्डमान में नहीं जैसे· *टैफोजोअस, सैक्कोलाहमस कैसस, पिपिस्ट्रेलस कोरोमेंन्ड्रा* और *हिप्पोसिडिरसफुल्बुस*)। चमगादड़ की एक और भी जाति *टाइलोनीक्टौरेस पचीपस फुल्बिड़ा* है जो अण्डमान, भारत की मुख्य-भूमि और जावा में पायी जाती है किन्तु निकोबार में नहीं पायी जाती है।

तालिका-1 : अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह में पाये जाने वाली प्राणि वर्ग की जातियों की संख्या

प्राणी वर्ग	विश्व	भारत	अण्डमान और निकोबार	भारत में प्रतिशत	स्थानिक संख्या	स्थानिक प्रतिशत
स्पंज	5100	519	72	1.48	5	7.14
प्रवाल	700	199	200	89.9	—	—
केंचुआ	4000	585	21	3.5	7	33.33
जोंक	500	59	10	16.9	—	—
पोलिकीट	8000	428	186	42.9	—	—
ऐरेकिऐनिलिडा	120	21	14	66.6	—	—
गेस्ट्रोटाइका	2500	88	32	36.6	6	18.75
काइनोरिन्का	100	10	4	40	2	50
क्रस्टेशिया	24375	2970	607	20.4	56	9.22
मकड़ियाँ और बिच्छू	35810	1352	94	6.9	28	45.16
सेन्टीपीड	3000	100	17	17	—	—
मिलीपीड	7500	162	5	3	—	—
कीट	867391	59353	2256	4.4	485	21.5
मोलस्का स्थलीय (मृदुकवची)	15000	950	110	11.5	75	68.18
मोलस्का असमुद्री	8765	284	51	17.9	12	23.52
समुद्री	56235	32751	932	2.8	2	0.2
साइपनकुलिडा	202	38	25	65.7		
एकाइनोडर्म (शूलचर्मी)	6226	765	336	43.9	2	0.59
मछली	21723	2546	1184	46.5	—	—
उभयचर	5145	204	18	8.8	3	16.66
सरीसृप	5375	428	90	21.0	23	25.55
पक्षी	9026	1228	270	21.9	95	35.18
स्तनधारी	4252	372	60	15.5	33	56.89

तालिका-2 :अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के स्तनधारी और सरीसृप की जातियों, उपजातियों और स्थानिक की संख्या

समूह का नाम	जातियों / उपजातियों की कुल संख्या	स्थानिक की संख्या
स्तनधारी		
माकाक्वीज	2	1
ट्री-श्रीयूज	2	2
ट्ररीस्ट्रियल श्रीयूज	4	4
जंगली कैट	1	—
पाम-सिवेट	1	1
सुअर	2	2
हिरण	2	—
चमगादड	26	11
चूहे	14	11
गिलहरी	1	—
समुद्री स्तनधारी		
समुद्री गाय	1	—
डोल्फिन	1	—
व्हेल	3	—
सरीसृप		
सांप	45	13
छिपकली	40	10
कछुआ	4	—
मगर	1	—

अण्डमान-निकोबार के प्राणियों के वर्ग

अण्डमान-निकोबार के जीव-जन्तुओं को विस्तृत रूप से दो वर्गो में बांटा जा सकता है। द्वीपीय सीमाओं के भीतरी भागों के जमीनी और मीठे पानी में रहने वाले जीव-जन्तुओं और समुद्री जीव-जन्तुओं जो इन द्वीपों के समूचे समुद्री क्षेत्र को ग्रहण किये हैं। इन सबमें भीतरी-भाग के जीव बहुत ही आनन्ददायक हैं, विशेषकर जीव-वैज्ञानिकों के लिये क्योंकि डारविन वैलेस के काल से ही द्वीप विकास-प्रयोगशाला समझी जाती है। वास्तविकता की सच्चाई के रूप में, लम्बें समय से अलग-थलग पड़े द्वीप रंग-बिरगें जैव-मण्डल के निर्माण के परिणाम हैं, जिन्होंने जानवरों की जनसंख्या के विकास और जीवित रखने तथा उनमें भिन्नता रखने में विभिन्न द्वीपों में सहायक हुए हैं। यही कारण है कि जैसा पहले कहा गया है, अधिक संख्या में स्थानीय प्रचलित जातियाँ और उपजातियाँ इन द्वीप समूहों में पायी जाती हैं।

स्तनधारी

चमगादड़ और चूहों को छोड़कर इन द्वीप समूहों में स्तनधारियों की जातियाँ बहुत कम है। इन द्वीपों में स्तनधारियों कि 60 जातियाँ और उपजातियाँ जिसमें पाँच समुद्री जातियाँ पायी जाती हैं, जिनमें से चमगादड़ और चूहों की क्रमशः 26 और 14 जातियाँ पायी जाती हैं।

इन द्वीपों में चमगादड़ और चूहों की उपस्थिति आसानी से इस तथ्य द्वारा समझाई जा सकती है कि चमगादड़ अपने उड़ने की प्रदत्त शक्ति द्वारा द्वीपों के बीच की समुद्री दूरी को तय करके समीपवर्ती देशों से उड़कर इन द्वीपों में आ गये, जबकि चूहे आसानी से इन द्वीपों में राफ्ट, बोटों और जहाजों आदि द्वारा आए। स्तनधारी इन द्वीपों की बदलती हुई परिस्थितियों और वायुमण्डलीय सम्बन्धी ढ़ाँचें के साथ-ही-साथ भौगोलिक अलगाव ही उनकी स्थानीय जातियों और उपजातियों के स्तर को प्राप्त करने की शक्ति मिली जो कि उनके द्वीपीय स्वरूप की संभावना बनी। यह इस सत्य का प्रमाण है कि चमगादड़ो की 26 जातियों और उपजातियों में से 6 अण्डमान की स्थानीय हैं और 6 निकोबार की

स्थानीय हैं। चूहों की 14 जातियों और उपजातियों में से 5 अण्डमान की स्थानीय हैं, चार निकोबार की और 2 इन दोनों द्वीपों की और 3 विस्तार में सब जगह पायी जाती हैं।

इस क्षेत्र के दूसरे स्तनधारी हैं केंकड़े खाने वाले निकोबार के बन्दर, अंड़मान और निकोबार के जंगली सूअर, अण्डमान के पाम सिवेट। वास्तव में यहाँ चीतल भौकने वाले हिरण हैं जो मनुष्यों द्वारा 19वीं शताब्दी के शुरू के वर्षो में यहाँ लाये गये। इनके अलावा बैरन द्वीप में जंगली बकरे हैं। यहाँ कुछ भारतीय हाथी हैं जो शुरू में ठेकेदारों द्वारा लकड़ी का ढ़ेर करने के लिये 19वीं शताब्दी के शुरू के वर्ष में लाये गये थे। ये आजकल इन्टरव्यू द्वीप और उत्तरी अण्डमान के जंगलों में घूमते हैं।

इन द्वीपों के ट्री श्रीयूज (एक स्तनधारी जिसके नाक के आगे ऊभरा हुआ भाग होता है) की एक जाति और दो उपजातियों और पृथ्वी के श्रीयूज की चार जातियाँ इन द्वीपों को प्रदर्शित करती हैं।

उत्तरी पाम स्क्वैरल (गिलहरी) (फुनम्बुस पेन्नान्टी) आधुनिक परिचय का उदारहण है। आजकल यह प्राणी पोर्ट ब्लेयर में सामान्यतः पाया जाता है।

क्रेब इटिग मेकाक (निकोबार बन्दर): क्रेब इटिंग मेकाक, *(मकाका फसिकफैलेसिए अम्बोसा)* एकमात्र बन्दर (प्राइमेट) है जो इन द्वीपों में पाये जाते हैं। निकोबार समूह के तीन द्वीपों, ग्रेट-निकोबार, लिटिल-निकोबार और कचाल में यह बंदर पाया जाता है। अण्डमान द्वीप में यह नहीं पाया जाता। भारतीय सीमाओं में संयोग से यह एकमात्र क्रैब इटिंग मेंकाक है। यहाँ यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि इसकी मिली हुई उपजातियाँ बर्मा, थाइलैंड़, वियतनाम, मलेशिया, इन्डोनेशिया और फिलीपाइन्स में पायी जाती हैं।

निकोबारी बन्दर एक लम्बी पूँछ वाला मध्यम आकार का अपेक्षाकृत भारी और स्पष्ट भौहों वाला बन्दर है। इसकी पूंछ इसके सिर और शरीर से लम्बी होती है। इसका बाह्यावरण घना और ऊपर की ओर स्लेटी

धवल तथा नीचे की ओर का भाग हल्का भूरे रंग का होता है। मादा में मूत्र-जनन भाग में बाल बिल्कुल नहीं होते हैं किन्तु नर में ये छोटे बालों से ढ़के होते हैं। प्रजनन काल के समय कुछ मादाओं में जनन अंगो के चारों ओर लालपन लिये हल्का उभार हो जाता है। मादायें अपेक्षाकृत प्रौढ़ नर से छोटी होती हैं।

निकोबारी बन्दर जंगलों में निवास करने वाली जाति है जो सदाबहार वनों के साथ-साथ बेल की वृद्धि वाले क्षेत्रों में, झाड़ियों में तथा मेंनग्रोव के जंगलों में भी रहते हैं। इनके समूह आबादी वाले क्षेत्रों के पास झुण्ड में रहते हैं जो अभी कुछ वर्ष पहले जंगलों को साफ करके लोगों को बसाया गया है। इनके ये समूह यद्यपि रात में जंगलों के किनारे बसेरा करते हैं और कृषि क्षेत्रों में हमला करने की आदत इनमें बन गई है। ये साग-सब्जी के बगीचों तथा आबादी वाले क्षेत्रों में कभी-कभी इतनी तबाही मचाते हैं कि लोंगों के लिए गंभीर समस्या बन जाती है।

निकोबारी बन्दर पेड़ों तथा जमीन दोनों पर ही समान रूप से रहता है। यह भोजन के लिये खाड़ियों के छिछले पानी, मेंनग्रोव और भीतरी दलदली क्षेत्रों में भी जाता है। एक अच्छा तैराक होने के कारण यह तेजी से पानी में भी आ जाता है।

निकोबारी बन्दर एक बहुसंख्यक नर वाले द्विलिंगी समूह में रहते हैं जो प्रौढ़, वयस्क, किशोर, तरूण और नवजातों से मिलकर बना होता है। निकोबार बन्दर को यद्यपि केंकड़ा खाने वाला बन्दर कहते हैं किन्तु यह अपने भोजन में सर्वोहारी है। फिर भी यह प्रमुख रूप से फल, फूल, कलियों एवं नवजात तनों पर निर्भर करता है। छिछले पानी में ये क्रस्टेशिया, मोलस्का और मछली का शिकार करते हैं।

रहन-सहन का स्तर एवम् संरक्षण : निकोबारी बन्दर को कानूनी तौर पर संरक्षित किया गया है और इसे *भारतीय वन्य जीवन (सुरक्षा) अधिनियम 1972 के सैड्यूल-1* के अन्तर्गत रखा गया है।

कानूनी संरक्षण के बावजूद निकोबारी बन्दर पिछले दो दशकों से अपने आवासीय क्षेत्र के विभिन्न भागों में घायल किया जाता है। इसका

प्रथम कारण आवास नष्ट होने से है। लोगों को बसाने के लिए जंगलों के लम्बें भाग को काट कर साफ कर दिया गया है। इसका दूसरा कारण मनुष्य और बन्दर के बीच लड़ाई के हानिकारक प्रभाव हैं। सेटलर (बसाये गये लोग) बड़े पैमाने पर अपनी फसलों और बागवानी काफी मेंहनत के बाद तैयार करते हैं। जिन्हें बन्दर बरबाद कर देते हैं। यद्यपि बन्दरों के प्रति लोगों की धार्मिक भावना है, फिर भी फसलों और खेतों के नुकसान से बचाने के लिए लोगों के विचार में ऐसी भावना के प्रति कमी आ रही है और किसान उन्हें मारने के लिए जहर और दूसरे तरीके अपनाते हैं जिससे बन्दरों को खेतों से दूर रखा जा सके। दुर्भाग्यवश निकोबार बन्दर विशेषकर जो आवासीय क्षेत्रों के पास होते हैं, उनमें उपज को नुकसान पहुँचाने की आदत हो गई है, ओर वे तेजी से किसानों के लिए सिर दर्द बनते जा रहे हैं। बन्दरों के पक्ष में कहा जा सकता है कि पहले लोगों ने उनके क्षेत्र में धावा बोला और उनके क्षेत्रों को मात्र अपनी आवश्यकताओं के लिए साफ किया और अब बदले में बन्दर उन्हें हानि पहुंचा रहे हैं।

अब केवल यह उम्मीद की जा सकती है कि बचे हुए आवासों की देखभाल की जाए और उन्हें निजी स्वार्थ के लिए नष्ट न किया जाये इससे बन्दर उनके आवासों में रहें। ग्रेट निकोबार द्वीप के कुछ भाग को जैव मण्डल घोषित किया है इससे उन आवासों में रहने वाले बन्दरों को पूरी सुरक्षा मिलेगी।

ट्री–श्रीयूज : (चूहे के समान एक स्तनधारी जिसके नाक और जबड़े निकले हुए होते है) इन द्वीप समूहों में निकोबार ट्री श्रीयुज (*टुपिया निकाबारिका*) की एक मात्र जाति है जो यहाँ पायी जाती है। यह प्राणी निकोबार के लिटिल-निकोबार और ग्रेट-निकोबार में ही पायी जाती है। टुपिया को पहले आर्डर इनसेक्टिवोरा (कीट-भक्षी) का माना जाता था लेकिन बाद में इसे कुछ वैज्ञानिकों द्वारा आदिम प्राइमेट माना गया और इसे एक अलग (आर्डर) स्कैन्डैंसिया में रखा गया।

टुपार्ह, गिलहरी के लिये एक मालायन शब्द है और इसका जातिगत नाम टुपिया इसी स्थानीय नाम से बना है। टुपिया जो बाह्याकार में

गिलहरी से समानता रखती है, कुछ सीमा तक इसे इसकी लम्बी नाक और लम्बें काले गलमुचे के नहीं होने के कारण आसानी से पहचान सकते हैं।

इस ट्री-श्रीयूज की दो उपजातियों को पहचान लिया गया है *(टुपिया निकाबारिका)* और *(टुपिया निकोबारीका सुर्डा)*। इनमें से पहली ग्रेट-निकोबार में पायी जाती है, जबकि बाद वाली लिटिल-निकोबार में पायी जाती है।

इन द्वीपों के ट्री श्रीयू की आदतों का अच्छी तरह अध्ययन नहीं हुआ है। ग्रेट निकोबार के जंगलों में ये बहुत ही सामान्य हैं। ये तटीय मेंनग्रोव के जंगलों में पायी जाती हैं। ये मुख्य रूप से पेड़ों पर दिखाई देती हैं और गिलहरी की ही तरह पेड़ो की शाखाओं पर दौड़ने में तेज है, लेकिन ये अपना अधिकांश समय जमीन पर तथा छोटी झाडियों में बिताती है। ये बालू पर बहुत तेज दौड़ती और खेलती हैं और विशेषकर दोपहर के बाद बहुत अधिक क्रियाशील होती है। ये प्राणी लगातार गतिशील रहते हैं। ये सर्वाहारी है और फलों, बीजों, पत्तियों और कीटों को खातें हैं।

टेरस्ट्रियल श्रीयू (स्थली श्रीयू): टेरीस्ट्रियल श्रीयू जीनस *क्रोसीड्यूरा* से सम्बद्ध है जो इन द्वीपों में पाये जाने वाले एकमात्र कीटभक्षी का उदाहरण हैं। चार जातियाँ अण्डमान द्वीपीय काँटेदार श्रीयूज, *(क्रोसीड्यूरा हिस्पिड़ा)*, मिलर्स स्माइनी श्रीयू *क्रोसाड्यूरा अण्डमानेनसिस जेनकिन्स* काँटेदार श्रीयू *क्रोसीड्यूरा जेनकिन्सि* एवं निकोबार काँटेदार श्रीयू *(क्रोसीड्यूरा निकोबारिका)*, का अभी पता चला है। इनमें से पहले तीन दक्षिणी और मध्य अण्डमान में फैली हुई हैं और अन्तिम ग्रेट निकोबार द्वीप में पायी जाती है। स्थलीय श्रीयूज की चारों जातियाँ इन द्वीपों की स्थानीय हैं।

पाम सिवेट: अण्डमान की पाम सिवेट *(पैगुमा लार्वाटा टिटलेरी)* इन द्वीपों में पायी जाने वाली एक मात्र पाम सिवेट है। वह भी केवल अण्डमान में ही पायी जाती है। यह एक स्थानीय उपजाति है जिसके शरीर पर न तो काई धब्बा होता है और न ही कोई लकीर होती है। इसमें

एक सफेद गल-मुच्छा होता है और इसके ललाट और नाक पर सफेद धारी होती है।

इस पाम सिवेट की आदतों का अच्छी तरह अध्ययन नहीं किया गया है। यह पेड़ों पर रहती है और सर्वाहारी है। जो फलों, जडों और छोटे रीढ़धारियों को अपना भोजन बनाती है। यह जंगलों में रहना अधिक पसंद करती है यद्यपि कभी-कभी समुद्री किनारे पर भी दिखाई देती है। शायद केंकड़े या छोटी मछलियों को पकड़ने के लिये आती है। यह अपने भोजन को पेड़ों की चोटी या जमीन पर इकट्ठा करती है। यह रात के समय गाँव और कस्बों में आते हैं और मुर्गियों का शिकार करते हैं।

जंगली सुअर : जंगली सुअर की उपजातियाँ अण्डमान जंगली सुअर *(सस स्क्रोफा अण्डमानेनसिस)* और निकोबार जंगली सुअर *(सस स्क्रोफा निकोबारिकस)* क्रमशः अण्डमान, और निकोबार में पायी जाती है। दोनों ही उपजातियाँ इन द्वीपों की स्थानीय हैं। अण्डमान में जंगली सुअर काले रंग का होता है जिसकी त्वचा पर बहुत कम बाल होते हैं। इसकी चोटी पर भूरे रंग के बालों का गुच्छा होता है। निकोबारी जगंली सुअर भी काला होता है। जिसके अधर भाग पर धूमिल भूरे रंग के बाल होते हैं। यह थोड़ा लम्बा होता है और इसकी खोपड़ी और दाँत स्पष्टतः अण्डमान जंगली सुअर की अपेक्षा लम्बे होते हैं।

दोनों ही अण्डमान और निकोबार जंगली सुअर जंगलो में रहते हैं किन्तु बहुधा खेती की ओर आ जाते हैं। ये प्रातः और शाम को अधिक क्रियाशील होते हैं और 5 से 10 के समूह में इधर-उधर जाते हैं तथा सर्वभक्षी भोजन जैसे फसलें, जडें, कूड़ा, मल, सड़ी चीजें खाते हैं। ये सुअर स्थानीय लोगों के लिये प्रोटीन के प्रमुख स्रोत हैं।

हिरण : धब्बेदार हिरण या चीतल *(ऐक्सिस ऐक्सिस)*, भौंकने वाले हिरण *(मुन्टियाकस मुन्टिजक)* और सांम्भर *(सर्वस यूनिकालर)* इन द्वीपों में 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध लगभग 1915 में लाये गये। चीतल की जनसंख्या में इतनी वृद्धि हो गई कि वे वनों और कृषि के लिये रोड़े बन गये।

अन्ततः चीतल को कुछ वर्षो के लिये वन तथा फसलों के लिये हानिकारक घोषित कर दिया गया। फिर इसकी संख्या में कमी हाने लगी। मुख्य रूप से इसके माँस चमड़े और सींग के लिये इसका शिकार किया गया जिससे इसकी संख्या कम हो गई। जिससे इन द्वीपों के वन्य-जीवन अधि ाकारियों को इनके शिकार पर रोक लगाने के लिये मजबूर कर दिया।

आजकल चीतल मध्य और दक्षिण अण्डमान में फैले हैं, जबकि भौंकने वाले हिरण कभी-कभी केवल मध्य-अण्डमान में ही दिखाई देते हैं। इन द्वीपों में कभी भी हिरण की जनसंख्या का अध्ययन नहीं किया गया है। आज इन द्वीपों में साम्बर की उपस्थिति संदेहास्पद है।

बकरे : 1891 में कुछ घरेलू बकरों को बैरन द्वीप पर पोर्ट ब्लेयर से स्थानीय स्टीमर से छोड़ा गया था। यह एक ज्वालामुखी द्वीप है। इसके बावजूद भी इन बकरों ने अपने अपको इतनी अच्छी तरह अनुकूलित किया कि इस द्वीप पर आज भी ये बकरें 40-50 की संख्या में हैं। बैरन द्वीप के ज्वालामुखी विस्फोट (1991, 1993-94, 2005-06) से इनकी संख्या में कमी आ गई है। बैरन द्वीप पर मीठे पानी का काई स्रोत नहीं है, परिणामस्वरूप इस द्वीप के बकरे मजबूरन समुद्री जल पीते हैं।

हाथी : भारतीय मुख्यभूमि और बर्मा से इन द्वीपों में कुछ ठेकेदारों द्वारा लट्ठे खीचनें के लिये शुरू में लाये गये थे। पहली ही बार जब उन्हें जहाज से उतारा जा रहा था तब कुछ नर और मादा हाथी जंगल में चले गये। ये हथिनियाँ और कुछ हाथी अपने निष्कर्षण में भाग गये। अपने झुंड़ बनाये और जंगली के रूप में तुगापुर और बेटापुर (मध्य अण्डमान) में घूमने लगे। आज लगभग 40-50 हाथी इन्टरटयू द्वीप में है।

आगे भी कुछ संख्या में जैसे वन-विभाग, फारेस्ट प्लान्टेशन और विकास कार्पोरेशन, जयश्री टिम्बर और ठेकेदार इन द्वीपों में हाथी रखते हैं जिनसे लट्ठे खिचवातें हैं। इस तरह केवल पालतु हाथियों की संख्या लगभग 100 है। अब वन विभाग ने पेड़ों की कटाई पर भी रोक लगाई है। स्थानीय लोगों की जरूरत के लिए केवल वन विभाग ही पेड़ों की कटाई करता है।

चमगादड़ (उड़ने वाले स्तनधारी): चमगादड़ स्तनधारी है। यद्यपि ये उड़ते हैं फिर भी ये पक्षी नहीं है। चमगादड़ अण्डे नहीं देते हैं, वे बच्चे को जन्म देते हैं जो अपनी माँ का स्तनपान करते हैं। केवल पक्षी और चमगादड़ ही ऐसे रीढ़धारी हैं जो अपने पंखों की सहायता से उड़ते हैं। पक्षी अपनी माँसपेशियों का उपयोग उड़ने में करते हैं। चमगादड़ों की भी छातियों की माँसपेशियाँ बहुत शक्तिशाली होती हैं जिससे वे अपने पंखों को तेजी से चलाते हैं। जिस तरह पक्षियों की हड्डियाँ हल्की होती है, ठीक उसी तरह चमगादड़ की हड्डियाँ भी हल्की होती हैं।

चमगादड़ के बहुत से शत्रु हों, ऐसा दिखाई नहीं पड़ता है। चमगादड़ सामान्यतः रात में उड़ते हैं और अन्धेरे में रहते हैं साथ ही हवा में उड़ने की इनकी क्षमता भी इन्हें पकड़ से दूर रखती है। साथ-साथ झुंड में रहने की इनकी आदत भी शायद इन्हें सुरक्षा प्रदान करती है। बहुत से चमगादड़ की महक बहुत बुरी होती है और शायद इनका स्वाद भी अच्छा नहीं होता है।

चमगादड़ बहुत ही आवृति की ध्वनियाँ करते हैं जिसे पराश्रव्य ध्वनी कहते हैं। यह ध्वनि वस्तु से टकराकर वापस आती है, चमगादड़ इसे ग्रहण करते हैं और उन्हें पता चल जाता है वस्तु कहाँ है। चमगादड़ की अन्धेरे में उड़ने की यह क्षमता प्रशंसनीय है। कीट भक्षी चमगादड़ उड़ने के समय अपने शिकार का पराश्रव्य ध्वनि द्वारा पता लगा लेते हैं और उन्हें अपने पंखों को एक ड्रेग्नेट के रूप में करके फँसा लेते हैं और तब कीड़ों को हाथ या पैर द्वारा चमगादड़ अपने मुँह में ले लेता है।

बहुत से चमगादड़ समूह में रहते हैं और कुछ गुफाओं में बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं। इतनी बड़ी संख्या से निश्चित रूप से बहुत बड़ी मात्रा में अपशिष्ट भी उत्पन्न होता है। इनके अपशिष्टों में अन्य प्राणियों के अपशिष्टों की अपेक्षा अधिक मात्रा में नाइट्रोजन युक्त रसायन होते हैं जो कृषि के लिये बहुत ही उपयोगी होते हैं।

चमगादड़ बहुत से कीटों को भी खाते हैं। जिनमें मच्छर, मक्खी और फलों में लगनेवाले और मनुष्य के लिये हानिकारक कीड़े शामिल हैं।

कीट भक्षी चमगादड़ कीटों जैवित नियन्त्रण में भी एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। कुछ फल खाने वाले चमगादड़ में पतली लम्बी जीभ होती है जिसके अन्त में एक ब्रश होता है। ये फलों से पराग और शहद एकत्र करने के लिए होता है और इस तरह ये परागण में मदद करते हैं।

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में चमगादड़ को आदिवासी जनजातीय लोगों द्वारा खाया जाता है और उनके अनुसार इनका स्वाद भी अच्छा होता है। यह भी कहा जाता है कि अस्तमा (दमा) जैसी बीमारियों को ठीक करने के लिए इनके रूधिर तथा माँस की औषधीय उपयोगिता भी है।

इन द्वीपों में चमगादड़ की 26 जातियाँ और उपजातियाँ हैं, जिनमें से 6 अण्डमान की स्थानीय है और 6 निकोबार की स्थानीय हैं। उड़ने वाली लोमड़ी (जीनस *टीरोपस*) की 6 जातियाँ और उपजातियाँ हैं जिनमें से नारकन्डम फ्लांईगफाक्स, *(टीरोपस मिलैनोटस सैटीरेस)*, निकोबार फ्लाईगफाक्स *(टीरोपस मिलैनोटस)* स्थानीय है। इनमें से पहली अण्डमान द्वीप में सीमित है जबकि दूसरी केवल निकोबार द्वीप में मिलती है। उड़ने वाली लोमड़ियाँ दिन के समय सामान्यतः पेड़ों पर काफी संख्या में लटकी रहती है। गोधूलि बेला में ये अपने रहने के स्थान से अपने भोजन के लिये पेड़ों की ओर जाती हैं। इन्हें फल के चमगादड़ के नाम से जाना जाता है क्योंकि ये विभिन्न तरह के फलों पर रहती हैं। इन द्वीपों के दूसरे फलों के चमगादड़ में छोटी नाक वाले फल के चमगादड़ (जीनस *साइनोप्टीरस*) और लम्बी जीभ वाले फल के चमगादड़ (जीनस *हओनाक्टेरिस*) आते हैं। इनमें से पहली तीन जातियाँ और उपजातियाँ हैं, दो स्थानीय जातियाँ भी हैं, (एक अण्डमान की और दूसरी निकोबार की) और दूसरी की एक जाति है। छोटी नाक वाली फल के चमगादड़ सामान्यतः पहाड़ों की गुफाओं में रहते है। कभी कभार पेड़ों की कन्दराओं में भी रहते हैं। चमगादड़ की एक जाति *(इओनीक्टेरिस स्पेलीया)*, अपने बसेरे के लिये गुफाओं का उपयोग करती है।

शेष सभी चमगादड की 16 जातियाँ कीटभक्षी हैं। हार्स शू बैट (जीनस *राइनोलोफस*) की 3 जातियाँ और उपजातियाँ हैं। ये सभी

स्थानीय हैं और अण्डमान द्वीप में पायी जाती हैं। यह चमगादड़ गुफाओं, घरों और पेड़ो की कन्दराओं में रहती है।

लीफनोस बैट (जीनस *हिप्पोसिड्रस*) की तीन जातियाँ भी इन द्वीपों में पायी जाती हैं। इनमें से दो स्थानीय जातियाँ निकोबार में भी पाई जाती हैं। ये चमगादड़ भी गुफाओं में ही रहते हैं।

पीपीस्ट्रेली की दो जातियाँ *(पीपीस्ट्रेलस कमोटी)* और *(पीपीस्ट्रीलस कोरोमान्ड्रा)* दोनों ही निकोबार में पायी जाती हैं। ये बहुत छोटे चमगादड हैं जिनके बसेरे का स्थान चट्टानों की खाँचे, इमारतें, गुफाएँ, पेड़ की कन्दरायें और केले की पत्तियाँ हैं।

फाल्स बम्पायर बैट *(मेंगाडर्मा स्मास्मा)* की एक जाति अण्डमान द्वीप में पायी जाती है। ये चमगादड़ अपने बसेरे अधिकांशतः गुफाओं में करते हैं और समूह में रहते हैं। इसके अलावा प्रत्येक मौसीपर्ड बैट की एक जाति *(मायोटिस ड्रायस)*, टिकेल्स बैट *(हेस्मरोप्टीनस टिकंल्ली)* कम पीला चमगादड़ *(स्कोटोफिल्स कुहली)* और मुड़े हुए पंखों की चमगादड़ *(मिनियोप्टीनस औस्ट्रोलिस पुसिल्लस)* भी इन द्वीपों में पायी जाती है। इनमें से पहले तीन अण्डमान में मिलते हैं जबकि बचे हुए दो निकोबार में पाये जाते हैं। इन चमगादड़ों में से मौसीयर्ड बैट गुफा का निवासी है, जबकि क्लब फूटेड बैट बाँस के तने में रहता है। इसलिये इसे बम्बू बैट भी कहते हैं। औक टिकेल बैट का बसेरा बहुधा पेड़ों की पत्तियों का गुच्छा है। कम पीला चमगादड़ घरों में बसेरा करने वाला सामान्य चमगादड़ है जबकि मुड़े पंखों वाला बैट, गुफाओं, चट्टानों की खाचों में रहते हैं। काली दाढ़ी वाले टाम्ब बैट *(टैफोजाअस मिलैनोपोगान)* जो अपना बसेरा इन द्वीपों के पेड़ो की कन्दराओं में करते हैं।

चूहे : इन द्वीपों के चूहे इसलिए विचार करने योग्य हैं। 14 जातियों और उपजातियों में से जो यहाँ मिलती है उनमें 11 स्थानीय हैं। घरेलू चूहा, *(मस मस्कुलस कस्टैनिउस)* जो कि सभी जगह पाया जाता है अभी तक केवल अण्डमान द्वीप में ही मिलता है। घरेलू चूहा *(रैटस स्पीसीज)* जो इन द्वीपों में हैं, इनकी 13 जातियाँ और उपजातियाँ मिलती हैं। केवल

रैटस अलेक्जान्ड्रिनस और *रैटस रोजेर्सी* को छोड़कर शेष सभी दूसरी जातियाँ इन द्वीपों की स्थानीय हैं। स्थानीय जातियों में से 6 केवल अण्डमान, 4 निकोबार और शेष 2 दोनों ही द्वीप समूहों में फैली हैं।

गिलहरी : उत्तरी पाम गिलहरी *(फुनाम्बुलुस पेन्नान्टी)* केवल एक मात्र गिलहरी है जो इन द्वीपों में पायी जाती है। यह पोर्ट ब्लेयर के चारों ओर सामान्य है।

समुद्री स्तनधारी

इन द्वीपों का सबसे उत्कृष्ट समुद्री स्तनधारी सामान्य डालफिन, *(डेल्फिनस डेल्फिस)* है। अण्डमान जल में इस डालफिन को बहुधा देखा जा सकता है। कभी-कभी तो बहुत बड़ी संख्या में भी देखी जाती हैं। ये 2.5 मीटर लम्बी और शक्तिशाली तैराक हैं। शायद सभी समुद्री जीवों में ये सबसे तेज हैं। यह स्तनधारी 25 नोट्स से भी अधिक गति से तैरने की क्षमता रखता है। भाग्यशाली सैलानी जो विशेषकर पोर्ट ब्लेयर से नील, सिंक या हैवलॉक और वापसी अंतर्द्वीपीय जहाजों से यात्रा करते हैं, एक बहुत ही रोमांचक दृश्य का आनंद ले सकते हैं। जब कुछ सामान्य डालफिन जहाज से उभरी लहरों को नमन करते हुए और जहाज से एक निश्चित दूरी बनाते हुए और जहाज की चाल से कदम मिलाते हुए लहरों पर आगे बढ़ती हैं और फिर अपने स्थानों को वापस जाती है। यह डालफिन माँसाहारी है और ये अपना भोजन छिछले पानी की मछलियों की जातियाँ और कटिल-फिश (सिफलोपोड़स) से लेती हैं।

अण्डमान और निकोबार समुद्री जल के डालफिन ह्वेल और डुगोनस समुद्री स्तनधारी के उदाहरण हैं।

डूगांग (समुद्री गाय) : किंवदन्तियों के अनुसार समुद्री गायों की कुछ जातियाँ जो नाविकों के लिए काल्पनिक समुद्री जीवों (जलपरी) के ये रूप कहानी बन गये थे। इनके नामकरण के इस आर्डर की स्टीलर समुद्री गाय आज विलुप्त है और अधिकांश के विलुप्त होने का खतरा है। भारत-प्रशांत क्षेत्र में डुगांग (समुद्री गाय ह्वेल की तरह का समुद्री स्तनधारी है) के बढ़ते शिकार एवं वातावरण के बदलाव के कारण खतरे

में आ गयी है। अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के खाड़ी के जल में समुद्री गाय *डुगांग डुगन* (मुल्लर) के पाये जाने की खबर लम्बें समय से जानी जाती है। डुगांग साइरेनियन की मात्र चार जीवित जातियों में से एक है। समुद्री गायों की दूसरी तीन जातियाँ जो ऊष्ण कटिबंधीय समुद्र की जलीय स्तनधारी है जो कैरीबियन क्षेत्र और दक्षिण पूर्वी युनाइटेड स्टेट, अमेंजन नदी का डेल्टा और पश्चिम अफ्रीका में पायी जाती है। मेंनाटी (समुद्री स्तनधारी) नदियों या मुहानों की ओर रहती है और ऐसा विश्वास है कि इनकी दैहिक निर्भरता मीठा पानी है। इसके विपरीत डुगांग एक मात्र शाकाहारी स्तनधारी है जो पूरी तरह समुद्री है। सामान्यतः यह छिछले पानी जहाँ समुद्री घास बहुतायत से होती है, में आश्रय लेती है जिससे ये अपना भोजन लेती है।

ऐतिहासिक रूप से डुगांग के रहने के क्षेत्र का विस्तार ऊष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण खाड़ी और द्वीपों के जल जो हिन्द-पश्चिमी प्रशांत जो पूर्वी अफ्रीका से लेकर वेनौटू तक फैले हैं। अण्डमान द्वीप में डुगांग दक्षिण अण्डमान के बर्मानाला, लिटिल अण्डमान, रीची द्वीपश्रृंखला एवं नानकौरी, ग्रेट निकोबार द्वीपसमूह में पायी जाती है।

डुगांग का शरीर स्पिंडिल के आकार का होता है और सिर, धड़ और पूंछ में बँटा होता है। अधर की ओर का रंग काला भूरा जो नीचे की ओर पीला होता जाता है। त्वचा मोटी होती है जिसकी सतह पर बाल होते हैं। धड़ के अगले भाग के अन्त में एक जोड़ी फिल्लपर होते हैं। डुगांग की वृद्धि 3 मीटर के लगभग और वजन 250 से 400 किलोग्राम होता है। ये सुस्त और हानि नहीं पहुँचाने वाले होते हैं। इसका जीवनकाल 70 साल से भी अधिक होता है और दस साल के पहले ये गर्भधारण नहीं करती हैं। तीन से सात साल के अन्तराल पर केवल एक बच्चा पैदा होता है। अधिकाँश बच्चे सितम्बर से जनवरी के बीच पैदा होते हैं जब समुद्री घास अपने पोषण के चरम पर होती है। बच्चे दुग्धपान कराने का समय लगभग डेढ़ साल होता है। बच्चे अपनी मादा के साथ कम से से कम दो साल तक रहते हैं। इन द्वीपों में डुगांग कभी-कभी मछली मारने के जालों

में फंस जाती है। प्रमाणों से पता चलता है कि डिग्लीपुर के नजदीक (उत्तरी अण्डमान) में चार डुगांग 1960-66 में पकड़े गए थे।

1977 और 1978 में टेरेसा द्वीप के नजदीक दो और 1977 में दो कैम्पबेल बे (ग्रेट निकोबार) में मिली थी (जेम्स, 1985) जनवरी 1987 और 1998 को लिटिल अण्डमान में मछुआरे के जाल में मिली थी। (राजन 1998) डुगांनस अपने नवजातों को अंस-मेंखला के पास स्थित एक लिपर द्वारा पकड़ कर दूध पिलाती है जैसे मनुष्य (औरतें) पिलाती हैं। डुगांनस की यह आद्त ही शायद मत्स्यांगना (मत्स्य स्त्री) की पैराणिक कथा का आधार है। पहले के समुद्री मल्लाह बहुत अधिक दूरी से दूध पिलाती डुगांनस को देखकर आधी औरत और आधी मछली की शंका कर चुके थे।

समुद्री किनारे पर रहने वाले आदिवासी लोगों द्वारा इनका शिकार का शायद परंपरागत पुराना तरीका समुद्री घासों के ऊपर एक प्लेटफार्म बनाकर जहाँ रात को डूगांग इन्हें खाने के लिए आती थी। शिकार का दूसरा तरीका नाव (होड़ी) द्वारा बरछे के प्रयोग द्वारा है। ओंगी और अंडमानी आदिवासी लोगों को डुगांग के गतिविधि का चन्द्रमा की कलाओं और ज्वारभाटे की दशाओं से सम्बन्धित है। इनका शिकार तभी सम्भव है जब उत्तरी-पूर्वी पवन कमजोर पड़ जाती है, समुद शांत होता है और डुगांग माँसल और बच्चा देने के नजदीक होती है। इतने बड़े जानवर को शिकार के बाद गॉव तक लाना बहुत ही कठिन है इसलिये आदिवासी लोग डुगांग को टुकड़ों में काट देते हैं। डुगांग के माँस का प्रयोग कभी-कभार विशिष्ट अवसरों पर जैसे परम्परागत दावतों पर ही होता है।

यदि आप खाड़ी में रहने वाले ओंगी आदिवासी जो लिटिल अण्डमान का मूल निवासी है, उनसे पूछें कि उसका सबसे प्रिय भोजन क्या है तो शायद वह आपको नम्बर एक पर डुगांग का नाम ही बताएगा। डुगांग का माँस बहुत ही स्वादिष्ट होता है और इसकी वसा भी औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है। आजकल ओंगी आदिवासी भी अपने परम्परागत

धार्मिक या अन्य शुभ कार्यों को मनाते समय में शिकार के लिए एक भी डुगांग को नहीं देख पाते हैं। अर्थात इनकी संख्या बहुत कम हो गई हैं।

संरक्षण : डुगांग का जनन बहुत ही धीमा है और इनको घायल करके या शिकार करके इन्हें विलुप्त होने की कगार पर खड़ा कर दिया गया है। यह स्पष्ट है कि इस जाति को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। इनकी प्रभावी देखभाल में कठिनाई उस समय आती है जब खाड़ी के किनारे रहने वाले आदिवासी लोगों द्वारा इनके परम्परागत शिकार तथा आदिवासी सभ्यता, परम्परा को बनाये रखने के लिए रोक लगाने के विरूद्ध तर्क दिये जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय देशों प्रकृति संरक्षण नियम 1972 द्वारा इस जाति को संरक्षण प्रदान करता है। इन जातियों का व्यावसायिक रूप से नुकसान नहीं करना चाहिए जब तक कि आदिवासी लोगों द्वारा यदि वे अपने परम्परागत ढ़ंग से अपने परम्परागत उद्देश्यों के लिये करें। समाज के सभी वर्गो के सक्रिय सहयोग ही इनके देखभाल का उचित उपाय है। वातावरण की सही जानकारी और इनकी देखभाल के प्रति अपने कर्तव्य बोध का परम्परागत शिक्षा तंत्र में समावेश भी एक उपाय है। मानव सभ्यताओं की तरह ही समुद्री जीवों की जातियों का संरक्षण ही देखभाल का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। बहुत सी आदिवासी मानवजातियों जैसे ओंगी, शाम्पेन, जखा और अण्डमानिज भी खतरे में है।

आधुनिक समाज के लोगों को भी द्वीपों की खाड़ियों के समुद्री जातियाँ का उपयोग करने की आवश्यकता पड़ती है। व्यावसायिक रूप से मछली का दोहन करनेवाले मछुआरों को अपने जीवन को आर्थिक रूप से प्रभावी बनाने और जीवों के बीच प्रभावी रूप से संबंध बनाये रखने की आवश्यकता पड़ती है। योजना बनाने वाले और मछुआरे दोनों के उददेश्य एक जैसे होने चाहिए। व्यावसायिक मछुआरे, परम्परागत शिकारी और योजना बनाने वाले सभी का उद्देश्य वातावरण को स्थिर बनाए रखना, होना चाहिए। प्रत्येक एक दूसरे को बहुत कुछ दे सकते हैं कि किस क्षेत्र को शिकार के प्रयोग में लाया जा सकता है जिससे कि उन

जातियों को जिनका शिकार नहीं हो और उन्हें दुर्घटनाओं से बचाया जा सकता है।

स्पर्म ह्वेल : अण्डमान समुद्र में ह्वेल की केवल तीन प्रजातियाँ, स्पर्म ह्वेल *(फाइसेटर मेंकोसिफलत)*, पिग्मी स्मर्म ह्वेल *(कोयगा साइमस)* और किलर ह्वेल *(स्यूडोकीक्रैसीडेन्स)*। ह्वेल और डालफिन को मछलियों से उनके क्षैतिज प्लुक के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है जो क्षैतिज स्थिति में व्यवस्थित होते हैं जबकि मछलियों में पूंछ पंख लम्बवत् स्थिति में होते हैं।

स्पर्म ह्वेल दोनों ही गोलार्धो के समुद्र में पायी जाती हैं। इसे अन्य ह्वेलों से इसके बेलनाकार (बैरेल की तरह) सिर के कारण पहचाना जाता है। नर की लंबाई मादा से लगभग दुगनी होती है। सामान्य रूप से नर के शरीर की लंबाई 15-18 मीटर होती है और कभी-कभी 20 मीटर भी होती है जबकि मादा की सामान्य लंबाई 10-11 मीटर और अधिकतम 12 मीटर होती है। इसके फिल्लपर लगभग 2 मीटर लम्बें होते हैं और पूंछ फ्लूक 4-4.5 मीटर चौड़े होते है। सामान्य तौर पर नर का वजन 35-40 टन होता है, जबकि मादा का वजन 15-25 टन होता है। इसके शरीर का रंग गहरा नीला, भूरा या काला होता है। इसका पतला निचला जबड़ा शंक्कार क्रियाशील 16-30 दांतो से दोनों ही तरफ से आच्छादित होता है तथा अक्रियाशील छोटे दाँत ऊपरी जबड़े में पाये जाते हैं। उनमें रेशेदार पर्तें होती हैं। जो वसा और तेल से भरी होती हैं तथा इसके नाक का छेद (नास्ट्रिल) 'S' आकार के वायु छेद में खुलता है जो सिर के सबसे ऊपरी हिस्से में स्थित होता है। स्पर्म ह्वेल की खोपड़ी समरूप नहीं होती है क्योंकि इसके नासा-द्वार की एक हड्डी नहीं होती है। यह सीधे फेफड़े से जुड़ी होती है और जब ह्वेल पानी में डूबा होता है तो एक वाल्व से बंद होती है। इसकी हड्डियां छूने में मुलायम होती है। अश्रुग्रंथियों का श्राव लवणीय जल से आँखों की सुरक्षा करता है। देखने की अपेक्षा सुनने और स्पर्श की चेतना बहुत कम होती है। ज्ञानेद्रियाँ नहीं होती हैं। बहुत अधिक गहराई में 360 मीटर में स्पर्म

ह्वेल भोजन करती है। साधारणतः इसका भोजन मुख्य रूप से स्क्वैड, काटिल फिश और शार्क है। स्केट्स इसके द्वितीय वर्ग का भोज्य पदार्थ है।

स्पर्म ह्वेल कई किलोमीटर की गहराई तक जाती है किन्तु सामान्यतः से 20 से 75 मिनट तक डूबी रहने के बाद उछली डुबकी लगाती है। ये समूह में रहती हैं और एक नर के साथ कई मादायें होती हैं। साधारणतः ये 15 से 20 की संख्या में घूमती है। जिसमें एक पुराना नर उसकी मादाओं का समूह और उनके बच्चे होते हैं। ये अयनवृत्तीय जल में पाये जाते हैं और बसन्त में समशीताष्ण कटिबंध की ओर चले जाते हैं। इनके गर्भधारण की अवधि 12 से 16 महीने की है। ये एक बच्चे को जन्म देती हैं किन्तु बहुत ही कम मौकों में दो बच्चे को जन्म देती हैं जिनकी लंबाई पांच मीटर होती है और 6 महीने तक माँ के शरीर से दुग्धपान करते हैं और 6 मीटर की लंबाई प्राप्त करने पर माँ से दुग्धपान करना छोड़ देते हैं। सामान्य रूप से नर 32 वर्षो तक जीवित रहते हैं और मादा 22 वर्षों तक जीवित रहती हैं।

स्पर्म ह्वेल से कई तरह से व्यावसायिक उत्पाद मिलते हैं। स्पर्म ह्वेल का स्पर्म आयल जो इसके सिर की गुहिकाओं में स्मरमेंसिटी से जुड़ा होता है और वसा का उपयोग औद्योगिक स्नेहक के रूप में होता है। स्पर्म आयल खुला छोड़ने और ठंड़ा करने पर भी द्रव रूप में रहता है। एक स्पर्म ह्वेल के सिर से 30 बैरल तक स्पर्म आयल और एक टन तक स्पर्मीसिटी मिलता है। अम्बरग्रिस (अम्बर) जो स्पर्म ह्वेल का अनूठा पदार्थ है जो सम्भवतः ठोस नहीं पचने वाले अपशिटों के गर्भ के चारों ओर मिलकर एक हो जाने से बनता है न कि पित्त के जमने से बनता है। एक जीव के अम्बरग्रिस की अधिकतम संहिता का भार 450 किलोग्राम तक होता है।

अम्बरग्रिस एक स्थिर करने वाला पदार्थ है और इसमें इत्र की सुगंध रखने की क्षमता होती है। इसकी आज की कीमत इसके सुंदरता और रंग के आधार पर 50 हजार से एक लाख रूपये प्रति किलो है।

यह प्रमाणित सत्य है कि वर्तमान शताब्दी में ही विभिन्न पदार्थो जैसे तेल, स्पर्मसिटी, माँस चर्बी और हड्डियों के लिए आठ लाख से अधिक जलीय स्तनधारियों (सीटेसियन्स) को मारा गया है। इन ह्वेलों को पकड़ने के लिए रस्सी बंधी बर्छी के साथ देर से धड़ाके के साथ फटने वाले विस्फोटक द्वारा घायल किया जाता है जिससे उनमें हवा भर जाये और शव डूबने न पाये। इसकी सुरक्षा के उपाय का अंतराष्ट्रीय समझौता 1937 से प्रभावी है।

1994 में तीन स्पर्म ह्वेल फादसेटर (*कैफोप्स्फिलस*) लिटिल, मध्य और दक्षिण अण्डमान के समुद्री किनारों पर मरी हुई आ लगी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि सामान्यतः ये ह्वेल 15 से 20 के समूह में चलती हैं जिसमें एक पुराना नर, कई मादायें और कुछ वयस्क होते हैं। इसलिए यह अनुमान लगाया जाता है कि कुछ गड़बड़ियों, चाहे वे प्रदूषण के कारण या कुछ विषैले पदार्थों को भारतीय समुद्र में दूसरे देशों के द्वारा (किसी क्षेत्र विशेष में) फेंकने से हो। स्पर्म ह्वेलों के समूह में मरने का अनुमान लगाया जा सकता है और उन्हीं में से कुछ समुद्री धारा की दिशा में बह कर अण्डमान सागर में आ गये और इन द्वीपों की खाड़ियों के किनारे लग गये। इस प्रकरण ने ह्वेल के संरक्षण में लगे लोगों को दुविधा में डाल दिया है और अभी तक इनके मरने की निश्चित वैज्ञानिक जाँच नहीं की गई है। इसलिए इन प्राणियों के संरक्षण के लिए निश्चित कारण पता लगाने पर इस जाति के जीवों की सुरक्षा की जा सकती है।

इन द्वीपों से व्हेल की भी सूचना मिली है। दो फाल्स किलर व्हेल *(स्डूड़ोर्काकैसीडेन्स)* 1976 और 1977 में पोर्ट ब्लेयर से दूर के समुद्री मुहानों में मिली थी। इनकी माप क्रमशः 4.187 मी. लम्बाई में थी, जिनमें से लम्बी वाली 3.19 मी.। कैम्पबेल बे से 32 कि.मी. दूर शास्त्रीनगर के नजदीक दो फाल्स किलर व्हेल निःसहाय पायी गई थी जिनमें से एक नर था और दूसरी मादा थी। कैलाश एवं राजन 1994 के अनुसार एक स्पर्म व्हेल ब्रिजगंज की समुद्री किनारे में मरी पायी गयी।

द्वीप और पक्षी

ये द्वीप समूह पक्षियों के लिए स्वर्ग हैं। द्वीप समूह और पक्षी साथ-साथ हैं। पक्षी द्वीप समूह पर अपने द्वारा बना खाद को जमा करते हैं जो केवल फास्फेट चट्टानें ही नहीं बनाती बल्कि मृदा को भी उर्वरा बनाती है जो पौधों की वृद्धि करते हैं। पक्षी एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर बीज भी लाते हैं। बदले में द्वीप समूह पक्षियों को आश्रय उपलब्ध कराते हैं जहाँ वे बिना किसी बाधा के जनन करते हैं या अपने घोंसले बनाते हैं। पक्षियों को अपना प्राकृतिक जीवन यापन करने में मनुष्य या दूसरे परभक्षी जैसे – साँप, छिपकली, गिरगिट या पक्षियों का शिकार करने वाले पक्षी जैसे – चील या बाज का भी भय लगा रहता है।

द्वीप और महाद्वीप जो पहले भूगर्भीय निर्माण के समय पर मुख्य भूमि के भाग थे और बाद में अलग हो गये या डूब गये जिससे समुद्र तल उठ गया या दोनों ही प्रक्रियायें घटित हुए, बलुई भित्तीयों का क्षेत्र चाहे महाद्वीपीय भू-भाग में हो या दूर-दराज की भित्तियों में हो, ये कभी भी मुख्य-भूमि के भाग नहीं रहे हैं।

बलुई भित्ति : अण्डमान-निकोबार द्वीप के प्रवाल-भित्ति क्षेत्र लुभावने बलुई किनारे मुख्य रूप से समुद्री जीवों जैसे – प्रवाल, सीपी कवच, चूने के गुण वाले शैवाल और अन्य दूसरे जीवों और उनके अवशेष से बने हैं। ये छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट कर बालू बनाते हैं और बाद में इन्हें जल-धारा भित्तियों और तट पर जमा कर देते हैं। बलुई किनारे की उत्पत्ति भाटे के समय अत्यधिक बालू के जमाव से होती है जिस पर हवा से और अधिक बालू जमा हो जाती है।

द्वीपों में पेड़-पौधों और प्राणियों का समूहनः पौधौं और प्राणियों का जीवन बहुत ही छोटे और दूर-दराज के द्वीपों पर भी है। बड़े द्वीपों में इसकी शुरूआत प्रमुख है, इनकी कुछ जातियाँ द्वीपों के बनने के समय निःसहाय अवस्था में होगी या किसी तरह पहले से रह गई होगी। प्रवाल-भित्तियों के किनारों की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। जब प्रवाल-भित्तियाँ

समुद्र जल से होकर निकली होगी तो उन पर स्थलीय जीवन नहीं होगा। सभी पौधे और प्राणी समुद्र जल से होकर वहाँ पहुँचे होंगे।

इन पर जीवन की उत्पत्ति के तरीके विभिन्न है। बहुत से द्वीपीय पौधौं के वे फल या बीज जो बहुत लम्बें समय अर्थात् दिनों, सप्ताहों या महीनों तक समुद्री जल में अपने को जीवित रख सकते हैं, जल से यहाँ पहुँचे। इस तरह के पौधे लम्बी दूरी तक जल-धारा से पहुँचे। दूसरे पौधों के फलों या बीजों के प्रकीर्णन के अन्य अंग जैसे हुक या चिपचिपा स्राव जो पक्षियों से चिपक कर चारों तरफ़ दूर-दूर तक फैल गये होंगे, क्योंकि पक्षी एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाते रहते हैं और पौधों के फल पक्षियों द्वारा खाये जाने पर एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर उनके जाने से और मल त्याग करने से फैले हैं।

पौधों के साथ-साथ कीट आते हैं। कीट जिनमें से अधिकांश तेज चलने वाली पवनों से द्वीपों पर पहुँचे। ऐसे तेज उड़ने वाले कीट जैसे तितली, ड्रैगनफ्लाई आदि अपनी ही शक्ति से लम्बी दूरी तक उड़कर पहुँच गये। छोटे अकशेरूकी कीट जैसे कनखजूरा (सेन्टीपीड़), मकड़ी और झिंगुर आदि खाड़ी में फेके गये कचरे, मलबे और तैरने वाले लकड़ी के टुकड़ों के माध्यम से एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर पहुँचे। इस तरह कीटों की विभिन्न जातियाँ दूर के द्वीपों में फैली और अपना समूहन किया। इन अकशेरूकी जीवों और पौधों के नये द्वीपों पर पहुचने के बावजूद भी केवल कठोरतम जातियाँ ही अपने को जीवित रख पायी। पौधें दोनों ही तरह से सड़-गल कर मृदा को उर्वरा बनाकर और वातावरण को संतुलित करने में मदद की जिससे और पौधों की जातियाँ विकसित हुई।

द्वीपों के पक्षी

महाद्वीपीय पक्षियों की जातियौं की विविधता विभिन्न है और जमीनी पक्षी अपने मुख्य भूमि के आवास के अनुरूप ही रहती है। प्रवाल-भित्तियों के क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति बिल्कुल विपरीत है। वहाँ ऐसे आवास बहुत कम हैं और इसलिए वहाँ जमीनी पक्षियों की अपेक्षा समुद्री पक्षी अधिक

हैं। समुद्री पक्षी मुख्य रूप से प्रवाल-भित्तियों से जुड़े होते हैं जहाँ पर वे जनन करते हैं। अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह जहाँ प्रवाल-भित्तिय क्षेत्र की अधिकता है जो अयन वृत्तीत समुद्री पक्षियों के लिए सर्वोत्तम क्षेत्र है। विभिन्न प्रकार के समुद्री पक्षियों की 56 जातियाँ इस क्षेत्र में फैली हुई हैं। विशेष प्रकार के समुद्री पक्षी और उनकी संख्या जो किसी निश्चित द्वीप पर जनन करती हैं, सामान्यतः उनके प्रवेश योग्यता पर निर्भर करता है जो उनके शिकार स्थल और उपयुक्त आवास के अनुकूल होता है। समुद्री पक्षियों के साथ बहुत से दूसरे स्थलीय पक्षी इन द्वीपों में पक्षी समुदाय के प्रमुख सदस्य हैं। इन द्वीप समूहों से कुल 270 जातियों और प्रजातियों के पक्षियों का पता चला है जिनमें से 32 प्रतिशत प्रजातियाँ स्थानिक हैं। इनमें से कुछ पक्षियों की जातियों को विलुप्त की श्रेणी में रखा गया है। मेंगापोड़, निकोबार कबूतर, नारकन्ड्रम हार्नबिल, अण्डमान टील उन पक्षियों में से हैं। स्वीटलेट जिसे सामान्यतः हवाबिल के नाम से प्रमुखता से इन द्वीप समूह में जाना जाता है। लोगों में सामान्य रूप से जानी जाने वाली यह उपजाति (*कैलोकैलिया इस्कफैलेंटा एफिनिस*) अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में पायी जाती है। खाड़ी क्षेत्रों में पथरीली सतहों पर ये अपने लार से जैली जैसा घोंसला बनाती हैं जिसमें अंडे देते हैं। इनके घोंसलें आर्थिक दृष्टि से बहुत ही लाभदायक हैं। इसलिए लोग हमेंशा इन घोसलों को अपने लाभ के लिए तोड़ते रहते हैं जो इनके जनन को बुरी तरह प्रभावित करता है जिससे इनकी जनसंख्या घटती जा रही है। जब तक द्वीप समूह है तब तक पक्षी उनमें रहेंगे। कुछ द्वीप समूह विभिन्न जातियों के पक्षियों को अपनी विभिन्न प्राकृतिक सम्पदाओं के कारण आकर्षित करते रहेंगे। कुछ द्वीपों की राष्ट्रीय-पार्क, सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है। यह एक बहुत ही अच्छी बात है जो पक्षियों को प्राकृतिक आवासीय सुविधा प्रदान करेंगे जिससे पक्षियों की विभिन्न जातियों/प्रजातियों के सुरक्षित रहने की आशा है।

पक्षी

तुलनात्मक रूप से अण्डमान और निकोबार द्वीप पक्षी वर्ग के लिए घना हैं। अब तक पक्षियों की 270 जातियाँ और उपजातियों के प्रमाण

मिले है। इन द्वीपों की पक्षियों को निम्न रूप में समूहन किया गया है :

निवासी	-	53
निवासी और स्थानीय	-	95
प्रवासी	-	118
लाये गये	-	4

इन द्वीपों के पक्षी वर्ग की समीपता भारत से बर्मा या माले की अपेक्षा अधिक दिखाई देती है, निकोबार कबूतर और मेंगापोड़ को छोड़कर क्योंकि इनकी समीपता आस्ट्रेलियन पक्षियों से है, निवासी पक्षियों की कुछ जातियों के आकार, रंगों के क्रम में स्पष्ट अंतर है जो विभिन्न उपजातियाँ बनाती हैं।

इन द्वीपों में मुख्य भूमि से लाए गये पक्षी दक्षिणी भारतीय ग्रे पार्ट्रिज, पीफाउल, सामान्य मेंना, मोर और घरेलू स्पैरो अच्छी तरह बढ़े हैं। इनमें से पहली 1890 में पोर्ट-ब्लेयर लायी गई थी। अन्य तीन उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे मध्य में रास द्वीप में लाई गई थी। निम्न पक्षी इन द्वीपों में पाये जाते हैं:

ट्रापिक-पक्षी : ट्रापिक पक्षियों की दो जातियाँ लालपूंछ वाली ट्रापिक बर्ड *(फीचन रूब्रिकौड़ा रूब्रिकौड़ा)* और लम्बी पूंछ वाली ट्रापिक बर्ड, *(लेप्बुरस लेप्बुरस)* का इन द्वीपों से प्रमाण मिला है। इनमें पहला संदिग्ध प्रमाण बनाती है, जबकि दूसरी घुमक्कड़ किस्म की है। समुद्री पक्षियों में रेशमी सफेद और मध्य की लम्बी पंखों युक्त पूँछ वाले होते हैं। सामान्यतः ये समुद्र से बहुत दूर तक देखे जाते हैं।

हीरोन्स इग्रेट्स और विटर्नर : हिरोन्स अपना शिकार खड़े गतिहीन होकर करते हैं या शिकार की प्रतीक्षा करते हैं। विश्राम की अवस्था में इनकी गर्दन, सारस का आकार ले लेती है। ये अपने सिर को आगे की ओर लेते हैं जिससे ये अपने शिकार को मार सके या अपनी चोंच से उसे पकड़ सकें।

पूर्वी भूरी हिरोन (*आर्डिया सिनेरिया रेविटरो* स्ट्रीस) और पूर्वी पर्पिल हिरोन *(आर्डिया परफिरिया मेंनिलेंसिस)* दोनों ही अण्डमान और निकोबार

द्वीप में पायी जाती हैं। भूरी हिरोन लम्बें पैरों वाली और लम्बी गर्दन वाला दलदली पक्षी है जो बहुधा मेंनग्रोव दलदल और ज्वार भाटें की नालियों में घूमती है। इसका प्रमुख भोजन मछली और मेंढ़क है। पर्पिल हिरोन भी एक दलदली पक्षी है किन्तु इसके पैर अपेक्षाकृत छोटे होते हैं, और यह भोजन और जनन के लिये समुद्री क्षेत्र को विशेष रूप से पसन्द करती है।

अण्डमान की छोटी हरी हिरोन *(आर्डियोला स्ट्रैटस स्पाडियोगास्टर)* इन द्वीपों की स्थानीय है। यह अपने घोंसले मेंनग्रोव के पेड़ों पर ज्वार-भाटीय दलदल के नजदीक बनाती है। भारतीय पोंड हिरोन, *(आर्डियायोला ग्रेई)* अण्डमान के दलदल और धान के खेतों में शांत खड़ी या चतुरता से अपना शिकार पकड़ने के लिये बहुधा दिखाई देती है। चीनी पांड हिरोन, *(आर्डियोला बक्चस)* अण्डमान द्वीप के समुद्री ज्वार-भाटे के पानी या दलदल में पायी जाती है।

कैटिल लम्बी इग्रेट *(बुबुल्कस आइबिस करोमेंन्डस)* चरते हुए जानवरों के चारो ओर या ताजी जुताई के बाद से जलप्लावित खेतों के झुण्डों में दिखाई देती हे। कैटिल इग्रेट की चोंच पीली होती है। छोटी इग्रेट *(इग्रेटा गर्जेटा)* भी बड़ी संख्या में समुद्र के किनारे या छिछले पानी के अन्दर की ओर या जलप्लावित धान के खेतों में मिलती है। यह लम्बी दुबली बर्फ की तरह सफेद पक्षी है जो कैटिल इग्रेट के बहुत समान है किन्तु इसे इसकी काली चोंच के कारण आसानी से अलग पहचाना जा सकता है।

पूर्वी नरकंडे की हिरोन *(इग्रेटा सैक्रा)* एक खाड़ी पक्षी है जो चट्टानी किनारों को प्रभावित करती है। भाटे के समय वे समुद्री जीवों को, फैली चट्टानों पर भोजन के लिए ढूंढ़ती है। ये पक्षी जनन खाड़ी के चट्टानों पर करती हैं।

नाइट हिरोन *(निवटीकोरैवस निक्टीकोरैक्सो)* खाड़ी के छिछले भाग और छोटी खाड़ियों को प्रभावित करती हैं और गोधूलि बेला तथा रात को अधिक सक्रिय होती हैं। ये मेंढ़क, मछली, कीट और लार्खों को अपना

भोजन बनाती हैं। दिन के समय नाइट हिरोन बहुत बड़ी संख्या में मेंनग्रूव या दूसरी झाड़ियों जो किसी जलस्रोत के पास हो, में अपना बसेरा करती है।

विटर्रन्स विशेष रूप से समुद्री किनारों की वनस्पतियों पर जीवन बिताती हैं चेस्टनट बिटर्न *(हुवजोब्राइकस सिनैमोमियस)* पीली बिटर्न, *(इवजोब्राइकस साईनेसिस),* और निकोबार टाइगर बिटर्न *(गोर्साचियुस मिलीनोलोफस माइनर)* यहाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं। इनमें से अंतिम स्थानीय है और निकोबार द्वीप में बहुत कम मिलती है। घने जंगलों में ये स्रोतों और गीले भागों को प्रभावित करती हैं। चेस्ट्रनट बिर्टन और पीली बिर्टन छोटी हिरोन्स में से है जो छिछले पानी के क्षेत्र और धान की खड़ी फसल वाले खेतों में रहते हैं। यह मेंनग्रोव दलदल में भी पायी जाती है।

डक्स (कलहंस) बत्तख : लेसरविस टील *(डेन्ड्रोसाइग्ना जबानिका)* सामान्य छोटी बत्तख (कामन टील) *(एनस केका)* अण्डमान टील *(एनस गिब्बोरिफान्स अल्बोगुलारिस)* और काटन टील *(नेट्टापख कोरोमेंन्डीलियोनस)* बत्तखें हैं जो इन द्वीपों में पायी जाती हैं। लेसर विसलिंग टील पीले भूरे रंग की छोटी बत्तख है जिसका आकार पालतू बत्तख के बराबर होता है। यह दलदली इलाकों और जलाशयों में पायी जाती है तथा बहुधा 15-20 के झुंड़ में दिखाई देती है।

कामन टील प्रवासी हैं जो जाड़े के मौसम में इन द्वीपों में आती है और दलदली इलाकों व छिछले जलाशयों में दिखाई देती है। काटन टील भ्रमणशील है।

अण्डमान टील स्थानीय है। यह अण्डमान और कुछ दूसरे नजदीक के द्वीपों जैसे लैण्डफाल, नॉर्थ रीफ, कोको, ग्रेट कोको आदि में मिलती है। इसका आकार कामन टील के समान होता है और यह मुख्य रूप से मेंनग्रोव की खाड़ी में कभी 5 से 10 के झुण्ड में या इससे अधिक के झुण्ड में दिखाई देती है। दिन के समय यह सामान्य रूप से मेंनग्रोव के पेड़ों या भाटे के समय फैली चट्टानों पर बसेरा करती हैं। अण्डमान टील की

जनसंख्या बहुत अधिक घटी है क्योंकि लोगों के पुनर्वास के लिये इसके आवासों को नष्ट किया गया है ओर इसका अति शिकार किया गया है। नॉर्थ रीफ द्वीप में इसकी जनसंख्या काफी है।

हाक्स (श्वेत पक्षी, बाज): अण्डमान ब्लैकक्रेस्टेड़ बाज *(एविसिड़ा लिओफोट्स अण्डामानिका)* दक्षिण अण्डमान की स्थानीय है। यह कबूतर के आकार का होता है। इसका भीतरी भाग बिना धारियों के होते हैं। पैरियाह चील, *(मिल्वुस माइग्स)* और ब्रहमिनी चील, *(हेलियास्टर इन्डुस)* इन द्वीपों में पायी जाती है। जिनमें से पहली घुमक्कड़ है और दूसरी यहाँ की निवासी है जो खाड़ियों में पायी जाती है।

कारनिकोबार शिकरा *(एसीपीटर वैडियस बुटलेरी)* और कचाल सिकरा *(एसीपीटर वैडियस आब्सेलिडस)* कार निकोबार और कचाल द्वीप की स्थानीय उपजातियाँ हैं। यह घरेलू कौए के आकार की होती है।

हार्सफील गोशक *(एसीपीटर सोलिएन्सिस)* जाड़े में मौसम की प्रवासी है। यह कचाल, लिटिल निकोबार, ग्रेट निकोबार साथ ही साथ अण्डमान द्वीप में सामान्य है। वहीं दूसरी ओर एसियाटिक रूपैरों-हाक, *(एसीपीटर नाइसोसिमिलिस)* जो कि एक जाड़े के मौसम की प्रवासी अण्डमान में है, जो सामान्य नहीं है। पूर्वी रूपैरो-हाक *(एसीपीटर वरगैटस गुलारिस)* जो कि अण्डमान और निकोबार दोनों ही सामान्य निवासी हैं। दक्षिण अण्डमान में सामान्य है।

अण्डमान क्रेस्टेड हाक-इगिल, *(स्पाईजीएट्स सिरहैटस अण्डमानोन्सिस)* दूसरी स्थानीय उपजीवी है। अण्डमान द्वीप में यह दक्षिण अण्डमान के जंगल के खुले स्थानों की सरहद पर पायी जाती है। इस पक्षी का आकार चील के समान होता है जिसमें स्पष्ट छोटी कलंगी होती है। सामान्य रूप में यह ऊपर की ओर भूरी और नीचे की ओर सफेद चौड़ी चाकलेट रंग की लकीर वक्ष-स्थल पर और संकरी काली लम्बवत लकीरें गले पर होती हैं। इसका शिकार छोटे स्तनधारी जैसे चूहे, गिलहरियाँ और पक्षी जैसे कबूतर और चूजें हैं। व्हाइट वेलीड सी इगिल *(हेलीयीइडस ल्यूकोगैस्टर)* एक शक्तिशाली खूबसूरत पक्षी है जो

अण्डमान और निकोबार के समुद्री किनारे के नजदीक पायी जाती है। यह बड़े चील के आकार की होती है और इसका सिर, गला, भीतरी भाग और पूंछ के किनारे का भाग सफेद है और पृष्ठ भाग खाकी भूरा होता है। यह पक्षी बहुत ही गरममिजाज और झगड़ालू है और बहुधा खाड़ी प्रवाल भित्तियों के ठीक ऊपर बैठती है या लम्बें पेड़ों की शाखाओं पर बैठती है जब यह शिकार पर आक्रमण करती है तो बहुत ही सुन्दर लगती है। इसका प्रमुख शिकार मछली और कभी-कभी समुद्री साँप है।

टु हैरियर इन द्वीपों में मिलती है, ये सभी जाड़े की प्रवासी हैं। वे हैं - पेलहैरियर, सकस, *(मेंक्रोओरस)* मोन्टैगुज हैरियर, *(सर्कस पीगार्गस)* और दलदली हैरियर *(सर्कस एरूजिनोसस एरूजिबोसस)*। ये सभी हैरियर एक छोटे दुबले पतले चील के आकार के होते हैं। मार्श हैरियर बहुधा दलदलों और पानी से भरे धान के खेतों में आती हैं, मान्टैगुज हैरियर दलदली घास के मैदानों और फसलों में पायी जाती है। जबकि पेल हैरियर पहाड़ी क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं।

सर्पेन्ट इगि़ल इन द्वीपों की हैं, इसकी पाँच जातियाँ और उपजातियाँ, जो यहाँ मिलती हैं, में से चार स्थानीय हैं। *(स्पाइलोर्निस चीला)* जाति अपनी तीन निम्न उपजातियों से मानी जाती हैं :

1. अण्डमान पेल सर्पेन्ट इगिल *(स्पाइलोर्निस चीला डैवीसोनी)* - यह स्थानीय है और अण्डमान तथा निकोबार की सामान्य निवासी है। वह ज्वार-भाटीय खाड़ी और मैंनग्रोव के दलदल को प्रभावित करती है।

2. निकोबार क्रेस्टेड़ सर्पेन्ट इगिल *(स्पाइलोर्निस चीला मिनिमस)* - यह निकोबार द्वीप समूहों की स्थानीय है विशेषकर कर्मोटा, नानकौटी, तरासा और कचाल में मिलती है।

3. मलायन सर्पेन्ट इगिल *(स्पाइलोर्निस चीला मलायोन्सिस)* - यह अभी तक ग्रेट निकोबार की निवासी पक्षी है। यह जंगल के किनारे और खाड़ी के नजदीक के जंगल में पायी जाती है।

स्पाइलोर्निस चीला के अलावा इन द्वीपों में *स्पाइलोर्निस* की दो और जातियाँ पायी जाती हैं। अण्डमान डार्क सर्पेन्ट इगिल *(स्पाइलोर्निस ज्ञलिम्नी)* और ग्रेट निकोबार सर्पेन्ट इगिल *(ज्ञलिम्नी क्लोसी)*। इनमें से पहली दक्षिण अण्डमान की स्थानीय है और घने जंगलों में पायी जाती है जबकि दूसरी ग्रेट-निकोबार द्वीप की स्थानीय है और अयन वृत्तीय वर्षा वाले जंगलो में पायी जाती है।

फलकान्स : इन द्वीपों में टु फलकान्स की चार निम्न जातियाँ और उपजातियाँ पाई जाती है:

1. **यूरोपियन केस्ट्रेल** *(फल्को टिन्नुन्कुलस टिन्नुन्कुलस)* : यह कबूतर के आकार का पक्षी है जो पहाड़ियों और फैले घास के मैदानों को प्रभावित करती है। यह पक्षी जाड़े के मौसम का अण्डमान द्वीप में प्रवासी है।

2. **पूर्वी हिमालयन केस्ट्रेल** *(फैल्को टिन्नुकुस इन्टरस्टीक्टस)* : यह पक्षी यूरोपियन केस्ट्रेल से अधिकतम समानता रखता हैं और अण्डमान द्वीप में जाड़े के मौसम का प्रवासी है। यह ऊंची-नीची पहाड़ियों और फैले देहातों में पाया जाता है।

3. **शहीन फल्कम** *(फैल्को पेरीग्रीन्स पेरीग्री नेटर)* : यह चील के आकार का पक्षी है और निकोबार द्वीप का निवासी है तथा ऊंची-नीची पहाड़ियों में अक्सर दिखाई देती है।

4. **पूर्वी पेरीग्रीन फल्कन** *(फैल्को पेरीर्गीनस जैपोनिकस)* : देखने में यह पक्षी शहीन फल्कन से अत्यधिक समानता रखती है। यह एक संदिग्ध, इन द्वीपों में जाड़े का प्रवासी है।

मेंगापाड : मेंगापाड एक छोटा जमीनी पक्षी है। यह भूरे रंग की विशेष रूप से लम्बें पैरों और छोटी पूंछ वाला पक्षी है। इसे मिट्टी का टीला बनाने वाला पक्षी भी कहते हैं क्योंकि इसकी आदत पत्तियों और बालू को मिलाकर टीला बनाने की है।

निकोबारी मेंगापाड *(मेंगापोडियस फिसेसिनेट)* मुर्गी की तरह दिखाई

देती है और कभी-कभी समुदाय में दिखाई देती है। यह तेज दौड़ने वाली होती है, और कीटों, कृमियों, जमीनी घोघें को अपने भोजन के रूप में लेती है। यह उच्च ज्वार के निशान से डेढ़ मीटर की ऊंचाई एवं दस मीटर या इससे अधिक परिधि का, अपना टीला जैसा आवास, बालुई समुद्री किनारे के घने जंगलो में बनाती है। सम्भवतः बहुत सी मादायें एक ही आवास में अंडे देती है लेकिन वे कभी भी अंडे सेती नहीं हैं। ह्यूमस के विघटन से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा इन अण्डों को गरम करती है।

निकोबार मेंगापाड़ की दो उपजाति, नॉर्थ (ऊत्तरी) निकोबार मेंगापाड *(मेंगापोडियस फियोसिनेट निकाबारियोन्सिस)* और दक्षिणी मेंगापाड़ *(मेंगापोडियस फियोसिनेट अब्बोट्टी* हैं। उत्तरी निकोबार मेंगापाड पीले रंग की है जो निकोबार द्वीप समूह में सोम्बेरो चैनेल के उत्तर में पड़ने वाले क्षेत्रों चौरा और कार निकोबार को छोड़कर मिलती है। दक्षिणी निकोबार मेंगापाड गाढ़े रंग का पक्षी है जो ग्रेट निकोबार और लिटिल-निकोबार की स्थानीय है।

आज से कुछ दशकों पहले, मेंगापाड निकोबार द्वीप समूह में बहुतायत से मिलती थी किन्तु इसके माँस और अण्डे के लिये इसका बेतहाशा शिकार करने से इसकी संख्या बहुत अधिक कम हो गई है।

पाट्रिज, कोयल और पीफाउल (तीतर, कोयल और मोर): तीतर, कोयल और मोर इन द्वीपों में बहुत ही कम हैं और प्रत्येक की एक-एक जातियाँ पायी जाती हैं। कोयल निकोबार द्वीप की स्थानीय उपजाति है जबकि तीतर और मोर अण्डमान द्वीप में मनुष्य द्वारा लाये गये हैं।

दक्षिण भारतीय भूरी तीतर *(फन्कोलिनस पान्डीसिरेनस)* 1890 में, पोर्ट ब्लेयर में लायी गई थी, आजकल यह पर्याप्त संख्या में पोर्ट ब्लेयर के आसपास के क्षेत्रों में पायी जाती है।

निकोबार की नीले वक्ष-स्थल वाली कोयल *(कोटुर्निक्स चाइनेसिस ट्रीकुटेन्सिस)* इन द्वीपों की एक मात्र कोयल की प्रतिनिधि है और कार निकोबार ट्रिन्केट तथा कमोटा में मिलती है।

सामान्य मोर *(पेवा क्रीस्टैटस)* 1886 में रास द्वीप में लाया गया। यह जापानियों के अधिकार के समय लुप्त हो गया और फिर बाद में अण्डमान प्रशासन द्वारा फिर लाया गया। आजकल इस पक्षी के कुछ नमूने ही रास द्वीपों पर मिलते हैं।

बटन कोयल : बटन कोयल की एक जाति जिसका नाम पीले पैर वाली बटन कोयल *(टर्निक्स टैन्की)* है इन द्वीपों में पायी जाती है। यह एक निवासी पक्षी है और यह बहुतायत से निकोबार में, विशेषकर कार-निकोबार तरासा और कमोटा द्वीप में घास के मैदानों और पहाड़ियों में पायी जाती है। मादा सामान्यतः लम्बी और अधिक रंगीन होती है।

रेल्स और कुट्स (जल-पक्षी) : अण्डमान की नीले वक्षस्थल वाली धारीदार रेलस *(रैलस स्ट्रैटस आब्सकुरियर)* अण्डमान और निकोबार की एक सामान्य निवासी और स्थानीय पक्षी है। यह एक छोटी पूँछ वाली भूरी तीतर के आकार का पक्षी है। यह बहुधा जंगलों, धान के खेतों, दलदल क्षेत्रों में पायी जाती है।

अण्डमान द्वीप के दलदली जंगल की एक दूसरी स्थानीय जाति अण्डमान धारीदार क्रेक *(रेलिना कैनिगी)* भी सामान्यतः मिलती है।

पूर्वी बैलन्स क्रेक *(पोर्जाना पुसिला)* अण्डमान द्वीप में जाड़े के मौसम के प्रवासी के रूप में पायी जाती है। यह कोयल की तरह एक दलदली पक्षी है जो सिंचित फसलों को प्रभावित करती है।

सोतों और मेंनग्रोव दलदली तथा नदी के पास वाले जंगलों के नजदीक अण्डमान सफेद वक्ष-स्थल वाली जल-मुर्गी, *(अमीरोनिस फोहनिकुरस हेसफैलेरिस)* इन द्वीपों में देखी जा सकती है।

इनके अलावा जल-मुर्गा *(गैलीक्रेक्स सीनेरिया)* और भारतीय पीली मूरहेन *(पोफिरियो पोलियोसिफलस)* भी दलदली इलाकों और सिंचित धान के खेतों में देखी जा सकती है।

प्लोवर : ग्रेहेडेड लैपविंग और पूर्वी सैण्ड प्लोवर को छोड़कर इन द्वीपों के सभी प्लोवर जाड़े के मौसम के प्रवासी हैं। पहला घुमक्कड़ है जबकि

दूसरा स्वेच्छाचारी है। इन द्वीपों से प्लोवर की निम्न जातियाँ जानी जाती है:

1. **ग्रे प्लोवर *(प्लुवियालिस स्कैटारोला)*** : यह पक्षी समूहों में दिखाई देता है। सामान्य रेड सैन्क *(टोटैनस टोटैनस)* बालुई समुद्र किनारे और ज्वार-भाटीय कीचड़ के क्षेत्र में सामान्यतः मिलता है।

2. **ग्रे हेडेड लैपविंग *(वैनलस सीनेस्यिस)*** : अण्डमान द्वीप में यह भ्रमणशील रूप में अंकित है। यह दलदली क्षेत्रों, जोते हुए खेतों और कटे हुए बालियों का प्रभावित करता है।

3. **पूर्वी सुनहली प्लोवर *(प्लूवियलिस डोसिनिका फुल्वा)*** : यह पक्षी भी सामान्यतः झुण्ड में रहने वाला है और 20 से 40 के समूह में दिखाई देता है। यह कीचड़ वाले क्षेत्र, खेतों, ज्वारभाटीय क्षेत्रों को पंसद करता है।

4. **लम्बी सैण्ड प्लोवर *(काराड्रिनस लेस्कीनौल्टी लंस्कीनौल्टी)*** : सामान्यतः यह समूहों में दिखाई देता है जो अण्डमान और निकोबार दोनों के ही बालुई समुद्री खाड़ियों की अन्दरूनी ज्वारभाटा क्षेत्र, कीचड़ के क्षेत्र और नदीमुख के क्षेत्र या छोटी खाड़ी क्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

5. **यूरोपियन लिटिलरिंगं प्लोवर *(कारड्रिनस डुबियस कुरोनिकस)*** : यह पक्षी अण्डमान के समुद्री किनारे या कीचड़ क्षेत्र में जोड़े या कभी-कभी छोटे समूह में दिखाई देता है। इसका सिर गोल होता है जिस पर काला सफेद क्रम होता है। इसकी चोंच कबूतर की तरह छोटी है और पैर पीला होता है।

6. **लेसर सैण्ड प्लोवर *(कारड्रिनस मानोलस अट्रीफानस)*** : यह अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगह पाया जाता है और यह समुद्री किनारे तथा कीचड़ क्षेत्र को प्रभावित करता है।

करल्यूज, सैण्डपाइपर, टर्न स्टोन और स्नाइपस : करल्सूरज (जीनस *न्सूमोनियास*) की तीन जातियाँ और उपजातियाँ इन द्वीपों में हैं,

जो हिमब्रेल और पूर्वी करल्यू के नाम से भली प्रकार जानी जाती हैं। ये सभी पक्षी जाड़े के मौसम के प्रवासी हैं। इनके पैर और चोंच लम्बी होती हैं जो नीचे की ओर झुकी होती हैं।

पूर्वी कर्ल्यज *(न्यूमेंनियस आरक्वैट ओरियैन्टालिस)* : यह बालुई वेडर है जिसका आकार बड़ी देशी मुर्गी का होता है। हिम्ब्रेलए *(न्सूमेंनियस फियोपस)* और पूर्वी हिम्ब्रेल *(न्यूमेंनियस फियोपस वैरियेगेटस)* वे छोटी होती हैं और उनमें काला क्राउन दोनों तरफ होता है और लम्बी सफेद धारियाँ दोनों तरफ होती हैं। ये पक्षी समुद्री किनारे और कीचड़ वाले क्षेत्र में मिलती हैं।

वारटेल्ड गाडविट *(लिमोसा लैपोनिक वाउरी)* : निकोबार द्वीप की यह जाड़े की प्रवासी पक्षी है। इसकी चोंच लम्बी और ऊपर की ओर मामूली मुड़ी होती है। यह छोटे झुण्डों में पायी जाती है। यह मुख्यतः अन्य वेडर के साथ समुद्र-तट पर मिलती है।

जैसा कि नीचे दर्शाया गया है, सैण्डपाइपर (जीनस *ट्रिगा*) की छः जातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं :

1. साधारण रेडशैन्क *(ट्रिंगा टोटैनस टोटैनस)*
2. ग्रीन शैन्क *(ट्रिंगा नेबुलरिया)*
3. ग्रीन सैण्डपाइपर *(ट्रिंगा आक्रापस)*
4. वुड सैण्डपाइपर *(ट्रिंगा ग्लैरियोला)*
5. टेरेक सैण्डपाइपर *(ट्रिंगा टैरेक)*
6. साधारण सैण्डपाइपर *(ट्रिंगा हाइपोल्यूकस हाइपोल्यूकस)*

ये सभी पक्षी जाड़े के मौसम के प्रवासी हैं और इन्हें कर्ल्यूज और बारटैड़ गाडविंट से अपेक्षाकृत छोटी चोंच द्वारा अलग किया जा सकता है।

सामान्य रेडशैन्क छोटे झुण्ड़ के रूप में छोटी खाड़ी या ज्वार झुण्ड-भाटीय खाड़ी क्षेत्र में देखे जा सकते हैं। यह छिछले पानी में चलती हैं

या कीचड़ वाले किनारों में इधर-उधर दौड़ती हैं तथा कृमि, जलीय कीट, सरीसृप और क्रस्टेशियन को अपने आहार में लेती हैं। सामान्य रेड़ शैन्क के संगठन के साथ ग्रीन शैन्क भी देखी जा सकती है। यह पक्षी अपेक्षाकृत लम्बा होता है। इसे रेड शैन्क से इसके जैतून, हरे पैरों और सपाट चोंच जो मामूली सी ऊपर की ओर मुड़ी होती है, के कारण आसानी से अलग किया जा सकता है। सैण्डपाइपर की शेष चार जातियों में से ग्रीन सैण्डपाइपर और वुड़ सैण्डपाइपर केवल अण्डमान और निकोबार में मिलती है। सभी सैण्ड पाइपर ग्रे कोयल के आकार की होती है जो दलदली सतहों, कीचड़ क्षेत्र, समुद्री किनारे और खाड़ी के टापूओं में मिलती है। इन पक्षियों में से वुड़ सैण्डपाइपर अधिकतर झुण्ड में रहने वाला है और बहुधा एक दर्जन से भी अधिक के झुण्ड में यहाँ तक की 10-15 संख्या में दिखाई देते हैं। टेरेक सैण्डपाइपर छोटे समूहों सामान्यतः 10-15 की संख्या में घूमते हैं। इन द्वीपों के दूसरे सैण्ड पाइपर बहुधा अकेले रहते हैं या फैले हुए दो या चार की संख्या में रहते हैं।

पथरीली खाडियों में, टर्न स्टोन *(अरीनारिया इन्टरप्रेस इन्टरप्रेस),* सैण्ड प्लोवर के बीच में छोटे झुण्ड में दिखाई देती हैं। यह एक गहरी भूरी और सफेद वेडर है जिसका आकार ग्रे कोयल का होता है। इसकी ठुड्डी और गला सफेद रेशमी होता है। इसकी चोंच सीधी और काली होती है और पैर नारंगी-लाल होता है।

सामान्य स्नाप्स वंस *गैलिनगों* की निम्न जातियाँ : पिनटैल स्नाइपस *(गैलिनगो स्टोनुरा)* फनटेल स्नाइप *(गैलिनगो गैलिनगो)* और जेंक स्नाइप *(गैलिनगों गैलिनगों)* इन द्वीपों में पायी जाती है। ये सभी स्नाइप जाड़े के प्रवासी हैं। पिनटैल स्नाइप धान के ढेर को प्रभावित करती है जबकि फन टैल स्नाइप और जैक स्नाइप दलदली सतहों में आती हैं।

जीनस *कैलिड्रिस,* जिसकी 6 जातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं, वे हैं :

1. पूर्वी नाट *(कैलिडिस टेनुडरोस्ट्रीस)*
2. पूर्वी छोटी स्टिन्ट *(कैलिडिस रूफिकोलिस)*

3. छोटी स्टिन्ट *(कैलिडिस मिनटा)*
4. टैमिक स्टिन्ट *(कैलिडिस टैमिन्की)*
5. लांग टोहड स्टिन्ट *(कैलिडिस सबमिनुटा)*
6. कर्ल्यू-सैण्डपाइपर *(कैलिडिस टेस्टीसीया)*

इन सभी पक्षियों में से छोटा स्टिट सबसे छोटा है और घरेलू गोरैया से थोड़ा बड़ा है। यह दूसरे स्टिंट, कर्ल्सूज और सैण्डपाइपर के साथ बहुत बड़े समूह में पाया जाता है। ब्राडल्डि सैण्डपाइपर *(लिमिकोल फैल्सीनेल्स)* जाड़े के मौसम के प्रवासी के रूप में समुद्री किनारों, ज्वार-भाटीय क्षेत्र वाली खाड़ियों में देखा जाता है। यह अकेले रहता है और सामान्यतः लिटिल स्टिन्ट और टेमिंक्स स्टिन्ट के साथ में मिलता है।

क्रैबप्लोवर : कैबप्लोवर *(ड्रोमस आर्डिओला)* अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में कीचड़ के मैदान और प्रवाल भित्ति क्षेत्र में समूह में पाया जाता है। यह जाड़े के मौसम का प्रवासी पक्षी है और इसे आसानी से इसकी लम्बी चोंच, लम्बे-हल्के भूरे-नीले पैरों और सफेद परों के साथ काली पीठ से पहचाना जाता है।

स्टोन प्लोवर : कभी-कभी इसे कैब प्लोवर के साथ देखा गया है। यह गोधूलि बेला में क्रियाशील हो जाता है।

प्रैटिनकोल्स : कालर्ड प्रैटिकोल्स *(ग्लैरियोला प्रैटिनकोला माल्डीवरम)* अण्डमान का जाड़े का प्रवासी पक्षी है। यह छोटे पैरों वाला प्लोवर है। यह पक्षी गोधूलि बेला में क्रियाशील होता है और दलदली क्षेत्रों तथा ज्वार-भाटीय कीचड़ के मैदान में बड़े समूहों में रहता है।

टर्न्स : टर्न्स औसत आकार की छोटी समुद्री पक्षी की तरह का पक्षी है जिसके पंख सामान्यतः लम्बे और पतली पूंछ अधिकतर लम्बी होती है। इन द्वीपों में पायी जाने वाली टर्न्स की सात जातियों का पता है, जिनमें से अधिकांश जीनस *स्टर्ना* की है जो निम्न तीन जातियों द्वारा निरूपित है:

1. रोजी टर्न *(स्टर्ना डौगली कोरूस्टीस)*

2. पूर्वी ब्लैक नैक्ड टर्न *(स्टनी सुमात्राना सुमात्राना)*

3. भारतीय लेसर क्रेस्टेड टर्न (*स्टर्ना बंगालेंसिस बंगालेंसिस*)

ये सभी टर्न ऊपर की ओर भूरे और नीचे की ओर भूरी या सफेद होती हैं। इनके सिर पर एक काली टोपी या कम से कम काला ताज सफेद ललाट के साथ होता है। इन पक्षियों में से भारतीय क्रेस्टेड टर्न सबसे लम्बी होती है। यह समुद्री किनारे से दूर तथा कभी-कभार समुद्री खाड़ी में रहती है। गुलाबी टर्न और पूर्वी ब्लैक नैक्ड टर्न इन द्वीपों में मई से अक्टूबर तक बहुत सामान्य है और अण्डमान के दूर पूर्वी खाड़ी की छोटी चट्टानी भागों में जनन करती है।

इन द्वीपों से निम्न टर्न की दूसरी जातियाँ प्रमाणित है:

1. **नाड़ी टर्न *(अनौस स्टोलिडस पिलिसेटस)*** : इसका आधारभूत रंग धुएँ जैसा भूरा चाकलेट और कैप भूरा सफेद है।

2. **सफेद टोपी वाली नाड़ी *(टेन्यूरेस्ट्रिस वार सेस्टेरी)*** : अण्डमान से इस पक्षी का पता एक घुमक्कड़ के रूप में चला है।

कबूतर

इन द्वीपों में पाये जाने वाले कबूतर निम्न हैं:

1. अण्डमान ग्रेफान्टेडग्रीन पीजन *(ट्रेरीन पाम्मेंडोरा क्लोरोप्टैरा)*

2. निकोबार ग्रीन इम्पिरियल पीजन *(डक्रुलनाइनिया निकोबारिका)*

3. अण्डमान ग्रीन इम्पिरियल पीजन *(डकूलाएइनिया अण्डमानिका)*

4. पीड इम्पिरियल पीजन *(डकुला बाइकोलर)*

5. अण्डमान उड़ पीजन *(कोलम्बा लुम्बोइडिज)*

पीड़ इम्पिरियल पीजन को छोड़कर कबूतरों की सभी दूसरी जातियाँ इन द्वीपों में स्थानीय हैं। लगभग 25 से. मी. लम्बा अण्डमान ग्रेफान्टेड एक छोटा हरा कबूतर है, जिसके पैर लाल होते हैं। इसका ललाट पूरी तरह भूरा और निचली पूँछ के ढ़के हुए भाग हरे होते हैं जिनके सिरे पीले

होते हैं यह अण्डमान और निकोबार में मिलता है जो हरे जंगलों को प्रभावित करता है।

दोनों ही ग्रेट इम्पिरियल पीजन और पीड़ इम्पिरियल पीजन लम्बे हैं। यह कबूतर अधिकांशतः वृक्षों पर रहते हैं और कभी-कभार जमीन पर पाये जाते हैं जैसा कि इनके नाम से पता चलता है निकोबार ग्रीन इम्पिरियल कबूतर निकोबार की स्थानीय है। निकोबार समूह के द्वीपों में यह सामान्य तौर पर बहुतायत से लगभग सभी द्वीपों में पाया जाता है। अण्डमान हरा इम्पिरियल पीजन स्थानीय है और अण्डमान समूह के द्वीपों में इनकी संख्या सामान्य है।

पीड इम्पिरियल पीजन का रंग सफेद होता है और पंख तथा पूंछ काली होती है। निकोबार में यह बहुतायत में मिलता है। नारकंडम और बैरन द्वीपों में इसकी पर्याप्त संख्या है किन्तु अण्डमान के अन्य भागों में इसकी संख्या कम है।

पेडुकी

कक्कू पेडुकी डोव की एक जाति *(मेंक्रोपीजीया सर्फिपेन्नीस)* इन द्वीपों में पायी जाती है। यह औसत आकार की लाल-भूरी पेडुकी लम्बी पूंछ वाली होती है। यह पक्षी अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगह की स्थानीय है और इसकी दो उपजातियाँ निकोबार कक्कू-डोव *(मेंक्रोपीजिया मेंक्रोपीजिया रूफिपेन्नीस)* और अण्डमान कक्कू अण्डमान में ही पायी जाती है।

बर्निज रेड टर्टिल डोव *(स्ट्रेप्टोपोलिया ट्रान्क्यैवेरिका हसूमिलिस)* जो कि चमकदार रंगीन छोटी डोव है जिसकी गर्दन के पिछले भाग में पतली कालर होती है जो कि अण्डमान द्वीप की पहाड़ियों के निचले भाग में पायी जाने वाली स्थानीय पक्षी है।

इनके आलावा इन द्वीपों में इमेंराल्ड डोव अपनी दो उपजातियों अण्डमान इमेंराल्ड डोव *(चल्कोलस इंडिका मेंक्जिमा)* और निकोबार इमेंराल्ड डोव *(इसेइन्डिका औगस्टा)* है। अण्डमान इमेंराल्ड भूरे-गुलाबी

रंग की चमकदार धात्विक हरी आवरण की है। यह अण्डमान द्वीप की स्थानीय है। निकोबार इमेंरालड डोव अपने अण्डमान उपजाति की तुलना में अधिक रंगीन और निकोबार द्वीप की स्थानीय है।

निकोबार कबूतर *(कैलोइनस निकाबारिका निकाबारिका)* जमीन पर रहने वाला पक्षी है और निकोबार समूह के द्वीपों में विशेषकर कार-निकोबार, बट्टीमाल्व, तिलकचांग, तरासा, कमोंटा, नानकौटी आदि में मिलता है। इसका सामान्य रंग चमकीला धात्विक, नीला हरा, भीतरी भाग तांबे और पीतल रंग के जैसा और कुछ सफेद होता है। गर्दन के पीछे के भाग के पर लम्बे होते है जो एक चमकदार कलगी बनाते हैं।

पैरेट्स (तोता)

पैराकीट्स वंश जीनस *सिटैकुला* इन द्वीपों में बहुतायत से पाये जाते है। इनकी चार निम्न जातियाँ पायी जाती है जो इन द्वीपों की स्थानीय हैं.

1. **लम्बी अण्डमान पैराकीट *(सिटैकुला, इयूपैट्रिया मेंग्नीरोस्ट्रीस)*** : यह घास की तरह हरे रंग की है जिसके कंधों पर चमकीला लाल धब्बा होता है यह पैराकीट अण्डमान में बहुत सामान्य है।
2. **अण्डमान रेड्ब्रेस्टैड (लाल छाती वाला) पैराकीट *(सिटैकुला अलेक्जैन्ड्री एब्बौटी)*** : यह भी घास की तरह हरे रंग का है जिसकी छाती और गला गहरा लाल होता है। इसके प्रमाण अण्डमान समूह के द्वीपों में मिले है और यह दक्षिण और मध्य अण्डमान में बहुत ही सामान्य है। धान के खेंतों में समूहों में देखा जा सकता है।
3. **ब्लीथ निकोबार पैराकीट *(सिटैकुला कनीसेप्स)*** : यह भी घास की तरह हरे रंग का पैराकीट है जिसके सिर पर काले निशान होते हैं। यह पैराकीट कोन्डुल और ग्रेट निकोबार के लम्बे पेडो की चोटियों पर रहता है।
4. **रेड़ चीकड पैराकीट *(सिटैकुला लांगीकौडा)*** : इसकी दो उपजातियाँ अण्डमान रेडचीकड पैराकीट, (*सिटैकुला लांगीकौड़ा*

टिटलेरी) और निकोबार रेडचीकड़ पैराकीट *(सिटैकुला लांगीकौडा निकाबारिका)* है। इनमें से पहली खेती के क्षेत्र और उनके चारों ओर के जंगल में कभी-कभी बहुत बड़े समूहों में विशेषकर अण्डमान द्वीप के धान के पकने वाले खेतों में देखे जाते हैं। दूसरा निकोबार द्वीप में मिलता है और फसलों, जंगलों ओर मेंनग्रोव को प्रभावित करता है। ये पक्षी धान के फसलों को काफी नुकसान पहुँचाते हैं। भारतीय लोरीकीट *(लोरीकुलस वर्नीलिस वर्नालिस)* अण्डमान और निकोबार का एक बहुत ही सामान्य पक्षी है, जो सदाबहार जंगलो को प्रभावित करता है। इस पक्षी का पिछला भाग गहरे लाल रंग का होता है।

ककूज, कोयल और क्रोपीजैन्टस

इन द्वीपों के ककू में निम्न जाति हैं:

1. **भारतीय ककू *(कुकुलस माइक्रोप्टीरस)*** : यह इन द्वीपों का निवासी पक्षी है जो तर पतझड़वाले और सदाबहार वनों को प्रभावित करते हैं। इन ककू के पूँछ सफेद किनारे के आगे एक काली पट्टी होती है।
2. **ककू *(कुकुलस कैनोरस कैनोरस)***: यह पक्षी प्रवासी है और अण्डमान में मिलते है।
3. **हिमालयन ककू *(कुलुलस सैचुरैअस सैचुरैअस)*** : अण्डमान और निकोबार दोनों के ही पहाड़ी जंगलो में यह बहुधा देखा जाता है।
4. **इनरोड ककू *(काल्साइट्स मेंकफैलेटस)*** : यह ककू जाड़े का प्रवासी पक्षी है। यह सदाबहार वनों को प्रभावित करता है।
5. **भ्यावलेट ककू *(कुकुलनस जैन्थोहीइन्कस)*** : यह इन द्वीपों का निवासी पक्षी है। और सदाबहार जंगल पसन्द करता है।

इनके आलावा, अण्डमान कोयल *(इसूडीनैमीस स्कोलोपैसिया डोलोसा)* भी यहाँ मिलती है। यह इन द्वीपों का स्थानीय पक्षी है। यह नारकन्डम द्वीप और निकोबार के जंगलों में पाया जाता है और आबादी के चारों

ओर के पेड़ों पर पाया जाता है। अण्डमान क्रोपीजैन्ड *(सेन्ट्रोपस अण्डमानेन्सिस)* एक दूसरा स्थानीय पक्षी है जो इन द्वीपों में सामान्यत: झाड़ियों, जोते खेतों और मेंनग्रूव के दलदल में मिलता है। यह सामान्य क्रोपीजैन्ट से समानता रखता है किन्तु अपने भूरे सिर, शरीर और पूंछ के कारण भिन्न है। यह पक्षी अफ्रीकन धोधें को खाते हैं, इससे इन धोधों की जनसंख्या वृद्धि में कमी हो सकती है।

आउल्स (उल्लू)

उल्लू की पहचान इसके बड़े सिर के कारण आगे की ओर निकली हुई आँखे, दिखावटी तौर पर गर्दन का नहीं होना और बहुत ही मुलायम परों से होती है। सब मिलाकर उल्लू की सात जातियाँ और उपजातियाँ हैं, सभी इन द्वीपों की स्थानीय हैं।

1. **अण्डमान बार्न आउल *(टीटो अल्बटिरियोप्स्टोर्फी)*** : एक बहुत कम मिलने वाला निवासी और स्थानीय है। इसका आकार घरेलू कौए के जैसा है। इसका मुखावरण ह्दय के आकार का, आँखें अपेक्षाकृत छोटी और काली-भूरी और पंख लम्बें और नुकीले होते हैं।

2. **अण्डमान स्काप्स आउल *(ओटस वाली)*** : एक छोटा उल्लू है और अण्डमान द्वीप में बहुत ही सामान्य लगता है जो आबादी और खेती वाले क्षेत्रों में रहता है। इसका आकार मैंना जैसा होता है। इसका सामान्य रंग लाल-भूरा, कुछ काले किनारों के साथ भीतरी भागों में सफेद ताज और गर्दन पर सफेद निशान होते हैं।

3. **लेसर स्काप्स आउल *(ओटस स्काप्स)*** : भी एक छोटे कान वाला उल्लू है जिसकी दो उपजातियाँ अण्डमान लेसर स्काप्स आउल, *(ओटस स्काप्स मोडेस्टस)* और निकोबार लेसर स्काप्स आउल, *(ओटस स्काप्स निकाबारिकस)* है। इनमें से पहला दालचीनी की तरह भूरा ऊपर की ओर धूमिल धब्बों का होता है। जिसका दक्षिण अण्डमान से प्रमाण मिला है जबकि बाद वाली अण्डमान उपजाति से अधिकांशत: समानता रखता है और सामान्यत: लम्बा होता है। यह कमोंर्टा द्वीप और ग्रेट-निकोबार में मिलता है।

इन द्वीपों में हाक आउल की तीन जातियों और उपजातियाँ मिलती है जो निम्न हैं:

क) **ह्यूम्स भूरी हाक-आउल *(निनोक्स स्कुटुलाटा आब्सकुरा)*** : यह गहरी ग्रेईश भूरी ऊपरी भाग और सफेद ललाट वाली है। यह अण्डमान और निकोबार दोनों ही स्थानों की स्थानीय है जो आबादियों और रबर के बगानों में बार-बार आता है।

ख) **अण्डमान ब्राउन हाक (आउल *(निनोक्स एफिनिस)*** : यह गहरा भूरा स्पष्ट चमकीले लाल-भूरे धब्बों वाला पक्षी है। यह एक स्थानीय उपजाति है जो अण्डमान द्वीप में मिलती है।

ग) **निकोबार ब्राउन हाक आउल *(निनोक्स एफिनिस आइसोलाटा)*** : यह अण्डमान जाति से समानता रखता है लेकिन कम राख के रंग के भीतरी भाग के कारण इससे भिन्न है। यह एक स्थानीय उपजाति है जिसके निकोबार के कार-निकोबार ट्रिंकेट, कमोंर्टा और सम्भवतः ग्रेट निकोबार से प्रमाण मिले है।

नाइटजार

नाइटजार कोमल परो, लम्बें पूँछ और छोटे पैरों वाला पक्षी है। यह सध्या के समय में तथा रात में सक्रिय रहने वाला पक्षी है। इसकी चोंच छोटी और चौड़ी होती है, जिसे यह बहुत अधिक फ़ैला सकता है। इन द्वीपों से नाइटजार की दो जातियों के प्रमाण हैं। एक अण्डमान लम्बी पूँछ वाला नाइटजार (*कैप्रीमुल्गास मेंकुरस अण्डामनिकस*) है। यह अण्डमान द्वीप की स्थानीय उपजाती है जो मध्य और दक्षिण अण्डमान में सामान्य है। दिन के समय यह जंगलों की पत्तियों में छिपे रहतें है और संध्या से ही सक्रिय हो जाती है और दूसरा मेंनग्रोव के दलदल इलाके में अपना भोजन तलाशती है।

स्वीफटलेटस

इन द्वीपों में स्वीफटलेट्स की तीन जातियाँ पायी जाती हैं जिनमें से दो अण्डमान ग्रेइरम्पड़ स्वीफटलेट, *(कोलोकैलिया फयूसीफागा*

इनेक्जूक्टाटा) और वाइटवेलीड़ स्वीफटलैट, *(कोलेकैलिया इस्कफैलेटा एफिनिस)* स्थानीय है।

अण्डमान ग्रेरम्पड् स्वीफटलेट, के विषय में इन द्वीपों के लोग बहुत अच्छी तरह जानते हैं, क्योंकि इसके अन्दर सफेद घोंसला बनाने की क्षमता होती है जिसका उपयोग चीन और दक्षिण-पूर्वी एशिया में होता है। इस कारण इस पक्षी के घोसलें की अच्छी व्यावसायिक कीमत होती है। इस पक्षी को प्रमुखता से हवा बिल के नाम से जाना जाता है। यह एक छरहरी काले-भूरे रंग की स्वीट है, जिसका आकार स्पैरो के समान होता है। यह अण्डमान में सामान्य है और निकोबार में कम मिलती है। यह अपने घोसलें एक दूसरे से पास-पास पहाड़ी (चट्टानों) गुफाओं पर समुद्र के किनारे में बनाती है। इसका घोंसला सफेद और प्याले की तरह दिखाई देता है। दिन के समय यह मेंनग्रूव के ऊपर जंगलो और खेतों पर शिकार करते हुए मिलती है।

व्हाइट बेलीड स्वीटलेट छोटी होती है और इसके भीतरी भाग चमकीले नीले-काले और उदर सफेद होता है। यह अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगह बहुत सामान्य है।

ह्यूम की स्वीटलैट *(कोलोकालिया ब्रिविरोस्ट्रीस इनोमिनाटा)* अण्डमान द्वीप का निवासी पक्षी है।

इनके आलावा स्वीटलैट्स की दो और जातियाँ इन द्वीपों में मिलती हैं। एक भूरे गले वाली स्पाइनटेल स्वीट *(चीतुरा जीगैन्टी इंडिका)* और दूसरी पूर्वी स्वीट *(अपस अपस पेकिनोरिस)* है। इनमें से पहली अण्डमान द्वीप की निवासी पक्षी है जो सदाबहार वन और तर पतझड़ वाले जंगलों में बार-बार आती है जब कि दूसरी अण्डमान में घुमक्कड़ प्रवासी है।

किंगफिशर्स

किंगफिशर्स की दस जातियाँ और उपजातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं जिनमें से दस स्थानीय हैं। भारतीय छोटी नीली किंगफिशर (*एल्सिड़ो अथीस बेंगालेंसिस*) इन द्वीपों की निवासी पक्षी है। यह पानी

वाले क्षेत्रों में बार-बार आती है। दूसरी इन द्वीपों की निवासी किंगफिशर काली टोपी वाली किंगफिशर *(हेल्सियोन पीलीटा)* जो समुद्र के किनारे, मेंनग्रोव दलदल, खाड़ियों में मिलती है।

इन द्वीपों की निम्न स्थानीय किंगफिशर हैं :

1. **अण्डमान ब्लूइयर्ड किंगफिशर *(एलसिड़ामेंनिन्टिग रूफीगस्टर)* :** यह दक्षिण और मध्य अण्डमान में मेंनग्रूव के किनारे वाली खाड़ियों और जंगल के झरनों के पास पायी जाती है।

2. **अण्डमान थ्रीटोड़ जंगल किंगफिशर, *(केइक्स इरिथैकस मेंकोकारस)* :** यह अण्डमान और निकोबार दोनों ही स्थानों पर ज्वारभाटीय खाड़ियों में मिलती है। यह किंगफिशर अण्डमान द्वीप में कम मिलती है।

3. **अण्डमान स्टोर्कविल किंगफिशर *(पेलागोंप्सिस कैपन्सिस आस्मास्टोनी)* :** अण्डमान द्वीप में यह स्पष्टतः सामान्य है जो मॅनग्रोव के किनारे के ज्वारभाटीय खाड़ी में बार-बार आते है। इसे इसके लम्बें आकार के कारण तथा लाल कटार जैसी चोंच के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है।

4. **निकोबार स्टोब विल्ड किंगफिशर *(पेलारगोप्सिन्स कैपेन्सिस इन्टरमिडिया)* :** यह किंगफिशर निकोबार द्वीप के समुद्री किनारे, मेंनग्रोव दलदल और ज्वारभाटीय खाड़ियों में बहुत ही सामान्य है।

5. **अण्डमान रूडीकिंगफिशर *(हलकियान करेमेंड़ा मिजोहिना)* :** यह लाल-भूरी, सफेद पिछले भाग और चमकीली लाल चोंच वाली है। यह अण्डमान द्वीप की स्थानीय है। यह किंगफिशर गहरे मेंनग्रोव दलदल को प्रभावित करती है।

6. **अण्डमान सफेद व्रेस्टेड़ किंगफिशर *(हेलसियोन स्माइनेन्सिस सैचुरैटिआर)* :** यह ऊपर की और नील लोहित और भीतरी भाग गहरे चाकलेट जिन पर उत्कृष्ट चमकदार सफेद रंग गर्दन और

छाती के बीच होता है। यह अण्डमान में बहुत सामान्य है। यह किंगफिशर समुद्री खाड़ियों, मेंनग्रोव दलदलों में पायी जाती है।

7. **अण्डमान सफेद कालर किंगफिशर *(हेलसियोन क्लोसि डैवीसोनी)*:** यह अण्डमान द्वीप की एक दूसरी स्थानी किंगफिशर है जो बार-बार समुद्री खाड़ी, मेंनग्रोव दलदलों और जंगलों के किनारे आती है। यह काली चोंच वाली तथा सफेद कालर वाली किंगफिशर है।

8. **निकोबार सफेद कालर वाली किंगफिशर *(हलसियोन क्लोरिस आसीपिटौलिस)*:** यह एक स्थानीय और पूरे निकोबार समूह में सामान्य रूप से मेंनग्रोव दलदलों, ज्वारभाटीय खाड़ी और नारियल के क्षेत्रों में पायी जाती है। यह अपने अण्डमान उपजाति से बहुत अधिक समान है किन्तु गर्दन के पिछले भाग में बहुत चौड़ी सफेद कालर के कारण उससे अलग है।

बीइटर (मधुमक्खी खानेवाला)

इन द्वीपों में भी बीइटर की दो जातियाँ अण्डमान चेस्टनटहेडड बीइटर *(मिरोप्स लैसचेनौल्टी अण्डमानोन्सिस)* और (नीली पूँछ) ब्लू टैल बीइटर *(मिरोप्स फिलिपिनस)* दिखाई देती है। इनमें से पहली अण्डमान द्वीप की उपजाति है। यह घास की तरह हरे रंग की छरहरी, मुड़ी हुई और नुकीली काली चोंच वाली है। यह सामान्यतः झरनों, नदी के नजदीक और जंगल से होकर जाने वाली सड़को पर दिखाई दे सकता है। ब्लू टेल्ड बीइटर अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगहों की जाड़े की प्रवासी है और सोतों के नजदीक के क्षेत्र को प्रभावित करती है।

रोलर

अण्डमान ब्राड बिल्ड रोलर *(औरीस्टोमस ओरियेन्टालिस)* यह एक मात्र रोलर है जो इन द्वीपों में जानी जाती है। यह गहरी हरी-भूरी और नील लोहित नीले काले रंग की है। इसका सिर काला और संतरे के रंग की चौड़ी चोंच होती है। अण्डमान द्वीप की यह स्थानीय पक्षी है और सदा हरे जंगलों में दिखाई देती है।

हार्नबिल

इन द्वीपों की एक मात्र हार्नबिल है *(हीइटिसिरस नारकन्डमी)* जो नारकन्डम हार्नबिल के नाम से प्रसिद्ध है। यह अण्डमान में स्थानीय है और एक बहुत ही छोटे द्वीप नारकन्डम तक ही सीमित है। यह चील से जरा सी लम्बी होती है। इसकी चोंच प्याले के आकार की हल्का पीले रंग की होती हैं। नर के सिर और गर्दन का रंग लाल-भूरा होता है। मादा सफेद पूँछ वाली काले रंग की होती है। यह शोर करने वाली और निडर पक्षी है।

वुडपेकर : (कटफोडवा)

वुडपेकर की दो जातियाँ अण्डमान काली वुडपेकर, *(ड्रायोकपिस जावोन्सिस होजी)* और अण्डमान फुलबौस ब्रेस्टेड पीड वुडपेकर, *(पोकोइडिस पसी अण्डमानोन्सिस)* इन द्वीपों में पायी जाती है। दोनों ही वुडपेकर अण्डमान द्वीप की स्थानीय है। जहाँ तक निकोबार का प्रश्न है यहाँ से किसी भी वुडपेकर के मिलने का प्रमाण नहीं है।

अण्डमान ब्लैक वुडपेकर का आकार एक कबूतर के सामान होता है। यह अण्डमान द्वीपों में पायी जाती है। जो ऊँचाई वाले सदाबहार वनों के ऊँचे पेड़ों पर आती है। दूसरी वुडपेकर भी अण्डमान में सामान्य है जो फैले जंगलों और नजदीकी फसलों में पाये जाते है। यह बुल-बुल के आकार के बराबर छोटा होता है। यह ऊपर की ओर काली होती है और सफेद धब्बों से भरा होता है।

पिट्टा

इन द्वीपों में पिट्टा की केवल एक जाति निकोबार हुडेड या हरी छाती वाली (*पिट्टा सोर्डिडा अबोटी*) पायी जाती है। यह ऊपर और नीचे दोनों तरफ काली होती है जिसके क्षितिज पर गहरी मध्य रेखा होती है। इसके अगले पंख के पर और पूँछ के पर नीले होते हैं। यह एक स्थानीय पक्षी है जो ग्रेट और लिटिल निकोबार में पायी जाती है। सघन जंगल में यह जमीन पर रहती है।

स्वेलोज

इन द्वीपों में स्वैलौज की दो जातियाँ पूर्वीस्वैलो *(हिरून्डो रस्टिका गटरालिस)* और जावन घरेलू स्वैलों *(हिरून्डो टट्टिटिका जवानिका)* पायी जाती है। इनमें से पहली इन द्वीपों में जाड़े की प्रवासी है जो बार-बार फसलों, खाड़ी के पानी आदि में आती है और बाद वाली अण्डमान द्वीपों की निवासी है जो अपने घोंसलें घरों में और गुफाओं में बनाती हैं।

श्राइक्स

श्राइक्स की केवल दो जातियाँ और उपजातियाँ, भूरी श्राइक्स *(लैनियस क्रीस्टैटस क्रीस्टैटस)* और फिलीपिन श्राइक्स *(लैनियस क्रीस्टैटस लुसिओनोन्सिस)* इन द्वीपों में मिलती है। दानों ही श्राइक्स जाड़े की प्रवासी है जो जंगलों के किनारे और मानव आबादी के बगीचों में आती हैं।

ओरिओल्स

ओरिओल्स की तीन निम्न जातियाँ और उपजातियाँ पायी जाती है जो सभी इन द्वीपों की स्थानीय है:

1. **अण्डमान ब्लैकनेप ओरिओल *(ओरिओलस चाइनेन्सिस अण्डमानेन्सिस)*** : यह बहुत ही सामान्य और विशिष्ट ओरिओल है जो अण्डमान की विशेषकर दक्षिण और मध्य अण्डमान में पायी जाती है। यह चमकीले सुनहरे पीले रंग की काले पंख और पूँछ वाला पक्षी है। यह ओरिओल फैले जंगलों और मानव आबादी के चारों ओर पाया जाता है।

2. **निकोबार ब्लैकनेप ओरिओल *(ओरिओलस चाइनेन्सिस मेक्रोयूरस)*** : यह निकोबार की स्थानीय है और इसके प्रमाण कारनिकोबार, सैन्ट्रन-निकोबार, नानकौरी, कमोंटा, ट्रिकेंट, ग्रेट निकोबार आदि से मिले हैं। यह फैले जंगलों मानव आबादी के चारों ओर क्षेत्र को प्रभावित करती है।

3. **अण्डमान काले सिरवाली ओरिओल *(ओरिओलस जैन्थोर्नस रूवेनी)*** : इसका प्रमाण केवल दक्षिण-अण्डमान से है यह चमकदार सुनहले पीले रंग की और इसका सिर, गला और ऊपरी छाती काली होती है।

ड्रौन्गोस

ड्रौन्गोस की 6 जातियाँ और उपजातिया इन द्वीपों में जानी जाती है जिनमें से निम्न चार स्थानीय है:

1. **लम्बी अण्डमान ड्रौन्गो *(डाइकुरस अण्डमानोन्सिस डाकुरीफार्मिस)*** : यह उत्तरी अण्डमान की स्थानीय है। यह पक्षी मैना के आकार की जिसकी ऊपरी सतह धावित्क नीली-हरी और मखमल की तरह चिकना काला नीचे की ओर होती है। इसकी पूँछ दो गहरे नोक वाली होती है। यह पक्षी जंगलों में बार-बार आती है मुख्यतः खाड़ी के चारों ओर के नारियल के क्षेत्र के जंगलों में आती है।

2. **छोटी अण्डमान ड्रोन्गो *(डाइकुरस अण्डमानोन्सिस अण्डमानेन्सिस)***: यह लिटिल, दक्षिण और मध्य अण्डमान की स्थानीय है। यह लम्बी अण्डमान ड्रोन्गों से समानता रखती है। अंतर केवल यही है कि यह छोटी है। यह ड्रोन्गों समान्यतः दर्जनों के झुण्ड में देखी जाती है।

3. **अण्डमान रैकेट टेल्ड ड्रौन्गो *(डाइक्रुरस पैराडिसीयस ओटीओसस)*** : यह अण्डमान द्वीप की स्थानीय हैं यह जंगल क्षेत्रों में बहुत सामान्य है।

4. **निकोबार रैकेट टेल्ड, ड्रौन्गो (डाइकुरस पैराडिसीयस निकाबारियेन्सिस)**: देखने में यह अण्डमान प्रतिरूप के बहुत ही समान है, पर यह उससे छोटी है। यह समूचे निकोबार द्वीप समूह के जंगल क्षेत्र को प्रभावित करती है।

इन द्वीपों की दूसरी ड्रोन्गोस, ग्रे ड्रोन्गो *(डाइक्रुरस ल्यूकोफीयस ल्सूकोजेनिस)* और व्हाइट चीक्ड ग्रे ड्रोन्गोस *(डाइक्रुरस ल्यूकोफीयस*

सलान्जेसिस) है। इन ड्रौन्गों का पता अण्डमान से है और ये सम्भवतः घुमक्कड़ हैं।

स्टारलिंग्स और मैना

इन द्वीपों में पायी जाने वाली स्टारलिंग्स और मैंना निम्न है:

1. **व्हाइट ब्रेस्टेड स्वैलो श्राइक *(आर्टामिस ल्सूकोरिन्कस हुकेई)*** : यह अण्डमान के द्वीपों की स्थानीय है। यह छोटी पूँछ वाली स्लेटी भूरी पक्षी है। जिसका सिर और गर्दन नील लोहित भूरा और निचला पिछला भाग और पूँछ के भीतरी पर सफेद है। यह जंगल के किनारे फैले क्षेत्रों में बार-बार आती है।

2. **अण्डमानग्लोसी स्टेर *(अप्लोनिस पनायेन्सिस टिटलेरी)***: यह एक काली मैना है। जिसकी आँखे विशिष्ट स्काल्रेट क्रिमसन है। यह एक स्थानीय उपजाति हैं और अण्डमान तथा निकोबार दोनों जगह चारों तरफ फैली है। जो बार-बार जंगलों और लम्बें पेड़ो वाले फैले क्षेत्रो में बार-बार आती है।

3. **व्हाइट हेडेड मैना *(स्टर्नस इरिथ्रोपीगियस)***: इसका सिर गर्दन और भीतरी भाग क्रीम-सफेद होता है। यह छोटे समुदाय या झुड़ों में जंगलों के किनारे, फैले घास के मैंदान और पहाड़ी क्षेत्रों में समान्यतः ड्रोन्गोस, ककू श्राइक्स, मिनिवेट आदि के साथ बार-बार देखी जाती है। इस मैना की तीन निम्न उपजातियाँ है जो सभी इन द्वीपों की स्थानीय है :

   क) **अण्डमान सफेद सिर वाला मैना *(स्टर्नस इरिथ्रोपिसियस अण्डमानेन्सिस)*** : यह स्थानीय है और अण्डमान में बहुत सामान्य है।

   ख) **निकोबार सफेद सिर वाला मैना *(स्टर्नस इरिथ्रोपिगियस इरिथ्रोपिगियस)***: यह केवल कार निकोबार में स्थानीय है।

ग) **कचाल सफेद सिर वाला मेंना *(स्टर्नस इरिथ्रोपिगियस कचालैन्सिस)*:** यह केवल कचाल द्वीप की स्थानीय है।

कचाल रूप को कार-निकोबार रूप से अलग इसके पीले-भूरे पिछले भाग के आधार पर अलग पहचान सकते हैं, क्योंकि निकोबार रूप का पिछला भाग नील-लोहित होता है और अण्डमान रूप से (अखरोट के फल की तरह) चेस्टन्ट नील लोहित रंग पूँछ के भीतरी परों में होता है, जबकि कचाल रूप के पूँछ के भीतरी परों का रंग पीला नील रोहित होता है।

4. **सामान्य मैना (एक्रीडोथिरेस ट्रीस्टिस ट्रीस्टिस):** यह बहुत ही सामान्य और दक्षिण अण्डमान में सभी जगह खेती और घरों के आस पड़ोस देहातों और कस्बों में पायी जाती है।

5. **अण्डमान हिल मैना *(ग्रेकुला रेलिजिओसा अण्डमानेन्सिस)*:** यह अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगहों की स्थानीय है और मध्य और दक्षिण अण्डमान तथा मध्य लिटिल और ग्रेट निकोबार में बहुत ही सामान्य है। निकोबार की यह मैना अण्डमान की मैना से बड़ी है।

ट्रीपाय

अण्डमान ट्रीपाय *(डेन्ड्रोसिटा बेलेयी)* अण्डमान द्वीप की स्थानीय है और सामान्यतः जाड़ों में तथा कभी-कभी बिखरे झुण्ड में सदाबहार वन के ऊँचे पेड़ो पर दक्षिण और मध्य अण्डमान में दिखाई देती है। इसका सामान्य रंग राख नीलापन लिये हुए जो सिर, गर्दन के पास अधिक गाढ़े तथा भीतरी भाग अखरोट के रंग का होता है।

कौआ

पूर्वी जंगल कौआ *(कोर्वस मेंक्रोर्हाइन्कस लेबैलैन्टी)* अण्डमान में बहुत सामान्य है। यह कस्बों, गाँवों और जंगल के किनारे के गाँवों को प्रभावित करता है।

कक्कू-श्राईक्स

कक्कू श्राइक की तीन जातियाँ इन द्वीपों में मिलती है, ये सभी स्थानीय हैं:

1. **अण्डमान लम्बा कक्कू श्राइक *(कोरौसिना नोवीहोलैन्डों अण्डमाना)*** : यह एक स्थानीय और अण्डमान द्वीपों में सामान्य है। यह पक्षी छोटी झाड़ियों, छोटे जंगलों और यहाँ तक की फैले स्थानों के पेड़ों पर बार-बार आती है।

2. **बैर्ड कक्कू श्राइका-एं *(कोरौसिना स्ट्रयेटा डावसोनी)***: यह अण्डमान की स्थानीय है जो घने और तर सदाबहार जंगल को प्रभावित करती है।

3. **निकोबार पीड़ कक्कू श्राइक *(कोरौसिना निगरा डावसोनी)***: यह स्थानीय पक्षी अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगह की है। यह जंगलों के किनारे में रहती है।

मिनीबेट्स

अण्डमान स्कारलेट मिनिवेट् *(पेरीक्रोकोटस फ्लेमियस अण्डमानेन्सिस)* अण्डमान द्वीप की एक स्थानीय पक्षी है।

पूर्वी छोटी मिनिवेट *(पेरीक्रोकोटस सिनैमौमियस विविडस)* अण्डमान द्वीप की निवासी पक्षी है। यह मेंनग्रोव जंगलों, और कभी-कभी देहातों में भी दिखाई देती है।

फेयरी ब्लूवर्ड

फेयरी ब्लू-वर्ड *(इरेना पुएला-पुएला)*. एक अण्डमान और निकोबार का निवासी पक्षी है। जो बहुधा पेड़ों की चोटी पर छोटे समूह में देखी जाती है। भोजन के लिये यह तेजी से झाड़ियों में आती है।

बुल-बुल

इन द्वीपों में बुल-बुल की निम्न जातियाँ मिलती हैं :

1. **अण्डमान ब्लैक हेडेड बुल-बुल *(पिक्नोनोटस अट्रीसेप्स फुस्कोफ्लैवेस्केन्स)*:** यह स्थानीय है और दक्षिण तथा मध्य अण्डमान में पाई जाने वाली है। यह हल्के वर्षा वनी और घने जंगल में जाड़े में बार-बार आती है। ऊपर की ओर यह ओलीव हरी, क्षितिज और सिर के बगल में डस्की और उदर में चमकीला पीला तथा पूँछ की भीतरी सतह भी चमकीली पीली होती है। पूँछ से होकर एक गहरी पट्टी होती है और पिछले भाग पर कुछ काले पर होते है।

2. **अण्डमान लाल विस्कर्ड बुल-बुल *(पिक्नोनोटस जोकोसस विस्टलेरी)* :** यह अण्डमान द्वीप की एक दूसरी स्थानीय पक्षी है जो समान्य तौर पर दक्षिण और मध्य अण्डमान में पायी जाती है। यह कस्बों और फैले ग्रामीण क्षेत्रों में बार-बार आती है। छोटे लाल कान के गुच्छे और गुलाबी भूरे भीतरी भागों के कारण इसे आसानी से पहचाना जाता है।

3. **निकोबार बुलबुल *(पिक्नोनोटस हिप्सीपेटिज निकाबारियेन्सिस)* :** यह निकोबार द्वीप का स्थानीय है। यह अकेले या जोड़े या छोटे समूह में और कभी-कभी पेड़ो पर बड़े समुदाय में पायी जाती है।

निकोबार काली गर्दन वाला फ्लाई कैचर *(हैपोथैमिस अजुरिया निकोबारिका)*

यह निकोबार की स्थानीय और सामान्य है। यह भी सफेद उदर वाली एक लाई कैचर है। मेंनग्रोव हिस्टलर *(पैकिसिफाला ग्रीसोला)* अण्डमान द्वीप का एक निवासी पक्षी है। यह जैतून की तरह भूरा और अकेले या जोड़े में मेंनग्रोव के किनारे के समुद्री किनारे पर दिखाई देता है। यह मेंनग्रूव और दूसरे नजदीकी छोटे पेड़ो को प्रभावित करता है।

वारब्लर्स

वारब्लर्स की 13 जातियाँ और उपजातियाँ इन द्वीपों में जानी जाती

है। अण्डमान पीले पैरों झाड़ी वारब्लर *(सेटिया पैलीडिपिस आस्मास्टोनी)* दक्षिण अण्डमान की स्थानीय है। यह एक छोटी स्पैरो के आकार की वारब्लर है जिसका उपरी भाग जैतूनी भूरा पीला, गहरे पीले पैरो और आँखों से होकर एक स्पष्ट लकीर होती है।

मलाया स्ट्रीवड फनटेल वारब्लर *(सिस्टीकोला जन्सीडिस मलाया)* निकोबार की एक सामान्य निवासी है। घास के मैदानों पर बार-बार आती है। यह एक छोटी वारब्लर है जिसका ऊपरी भाग गहरा भूरा, जो प्रमुख्ता से अनेक रंगों की रेखाओं से चिन्हित जैसे काला, भूरा-पीला सफेद नीचे की ओर इसकी पूँछ एक पंखे के आकार की सफेद चोटी वाली है। यह अकेले या समूह में रहती है।

निम्न वारब्लर जाड़े के शैलानी है :

1. **पलास की सेन्ट्रल असियन ग्रास हापर वारब्लर *(लोकुस्टिला सर्थिओला सेन्ट्रालसी)*** : अण्डमान और निकोबार दोनों के ही दलदलों में बार-बार आती है।
2. **पलास की साइब्रेरियन ग्रास हापर वारब्लर *(लोकुस्टिला सर्थिओला रूबेस्कीन्स)*** : अण्डमान द्वीप के दलदल को प्रभावित करती है।
3. **स्ट्रीवड ग्रास हापर वारब्लर *(लोकुस्टिला लन्सियोलाटा)*** : इन द्वीपों की सघन झाड़ियों और फैले घास के मैंदानों को प्रभावित करती है।
4. **थिक बिल्ड वारब्लर *(लोकुस्टिका लन्सियोलाटा)*** : दलदली स्थानों में पायी जाती है।
5. **मनीपुर डस्की लीफ वारब्लर *(फिलोस्कोपस फस्कैटस मारीई)*** : दलदली क्षेत्र जो लम्बी-लम्बी घासों से ढ़के होते हैं, छोटी झाड़ियों और यहाँ तक की उपज के क्षेत्र को भी प्रभावित करते हैं।
6. **साइबेनियन डस्की लीफ वारब्लर *(फिलोस्कोपस फस्कैटस फस्कैटस)*** : झाड़ियों, लम्बी दलदली क्षेत्रों में और फसलों के क्षेत्रों में रहती है।

7. **साइबेरियन पीली भूरी लीफ वारब्लर *(फिलोस्कोपस इनार्नेटस इनार्नेटस)*** : केवल नारकन्डम द्वीप में पाई जाती है।

8. **आर्कटिक लीफ वारब्लर *(फिलोस्कोपस बोरियलिस बोरियलिस)*** : मेंनग्रोव दलदलों में दिखाई देती है।

9. **लार्जीविल्ड लीफ वारब्लर *(फिलोस्कोपस मेगनिरोस्ट्रीस)*** : मेंनग्रोव दलदलों में दिखाई देती है।

10. **पूर्वी हरी लीफ वारब्लर *(फिलोस्कोपस ट्रोकोलोइडिस ट्रोकोलोइडिस)*** : मिश्रित जंगलों और उपज के क्षेत्र को प्रभावित करती है।

थ्रशेज और चैट्स *(ब्लूथ्रोट)*

उत्तरी नीले गले वाली *(हरिथैकस स्वेसिकस स्वेसिकस)* अण्डमान द्वीपों की जाड़ें की शैलानी है जो बगीचों खेतों और पानी के पास की झाड़ियों को प्रभावित करती है।

अण्डमान मेगपी-राबिन *(काप्सीकस सौलारिस अन्डामानेन्सिस)* और अण्डमान शामा *(सैलारिस मालाबरिकस अल्बीवेन्टिस)* अण्डमान द्वीपों की स्थानीय पक्षी है। लम्बी पूँछ वाली काली और सफेद राबिन जिसका नर चिकना चमकीला नीला काला और मादा पीली होती है। यह दक्षिण और मध्य अण्डमान में पायी जाती है। जो झाड़ियों के जंगल और गाँवो को प्रभावित करती है। अण्डमान शामा अण्डमान द्वीपों के घने जंगलों में सामान्य है। यह बगीचों और रास्तों के किनारों की झाड़ियों में भी बार-बार आती है। इस पक्षी की पूँछ लम्बी होती है। इसका सिर और पिछला भाग चमकीला मुलायम काला और निचली छाती और उदर का मध्य सफेद होता है।

इन द्वीपों में जमीनी थ्रशेज की निम्न जातियाँ और उपजातियाँ मिलती हैं:

1. अण्डमान ग्राउन्ड थ्रश *(जूथेरा सिट्रीना अण्डामानेन्सिस)*
2. निकोबार ग्राउन्ड थ्रश *(जूथेरा सिट्रीना अलवोगुलेरिस)*

यह अण्डमान और निकोबार की निवासी है। अण्डमान ग्राउन्ड थ्रश सघन जंगलों और निकोबार ग्राउन्ड थ्रश हल्के जंगलों में दिखाई देती है। इसके अलावा डार्क थ्रश, *(टर्डस आब्कुरस)* भी है जो दक्षिण अण्डमान में एक घुमक्कड़ है।

पिपिट्स और बागटेल्स

पिपिट्स और बागटेल्स की निम्न सात जातियाँ हैं जिनमें से सभी इन द्वीपों की जाड़े की शैलानी है।

1. **रिचर्डस पिपिट *(एन्थस नोबीसीलैन्डी रिचार्डी)*** : यह अण्डमान में पायी जाती है। यह घास के मैंदानों, उपज के क्षेत्र, कटे अन्न वाले खेत और पहाड़ी क्षेत्रों में बार-बार आती है।

2. **रेड थ्रोट पिपिट *(एन्थस सार्विनस)*** : अण्डमान और निकोबार दोनों जगह छोटे समूहों में देखा जा सकता है। यह दलदली और गीली जमीन तथा कटे हुए अन्न वाले खेतों को प्रभावित करती है।

3. **फारेस्ट बागटेल *(मोटासिला इंडिका)*** : यह अण्डमान द्वीप के सदाबहार वनों को प्रभावित करती है।

4. **येलो बागटेल *(मोटसिला फ्लैवा)*** : अण्डमान और निकोबार दोनों जगह की जाड़े की है।

    4.1. **ग्रेहेडेड येलो बाग टेल *(मोटसिला फ्लैवा थुनवर्गी)*** : अण्डमान और निकोबार दोनों जगह की जाड़े की है।

    4.2. **शार्ट टेल्ड ग्रेहेडेड येलो बागटेल *(मोटासिला फ्लैवा सिमिलिमा)*** : अण्डमान में पायी जाती है।

    4.3. **शार्ट टेल्ड पीली बागटेल *(मोटासिला फ्लैवा बीमा)*** : निकोबार में दिखाई देती है। पीली बागटेल सामान्यतः छोटे फैले समूह में दिखाई देती है जो गीले, घास वाले मैंदान को प्रभावित करती है।

5. **ग्रे वागटेल *(मोटासिला सिनेरिया सिनेरिया)*** : अण्डमान और निकोबार दोनों जगह दिखाई देती है।

6. **व्हाइट फेस्टपीड वागटेल *(मोटासिला अल्वा ल्यूकोप्सिस)*** : अण्डमान में जाड़े की है, फसलों में बार-बार आती है।

फ्लावरपेकर्स

अण्डमान प्लेनकलर फ्लावरपेकर *(डिसीयेअम कनकोलर वारेस्केन्स)* इन द्वीपों में मिलने वाली एक मात्र फ्लावरपेकर है। यह एक छोटी, जैतुनी-हरा, फ्लावरपेकर है। जिसका उदर चमकीला गहरा पीला होता है। यह अण्डमान की स्थानीय जगहों पर और सामान्यतः दक्षिण और मध्य अण्डमान में पायी जाती है।

सन बड्र्स

सनबर्ड की चार जातियाँ और उपजातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती हैं, जो स्थानीय है :

1. **अण्डमान ओलीबैक्ड सनबर्ड *(नेक्टारिनिया जुगुलारिस अण्डामानिका)*** : यह स्थानीय और अण्डमान में सामान्य है जो जंगलो, झाड़ियों और खाड़ी में मेंनग्रोव में आती है।

2. **निकोबार ओलीववैक्ड सनबर्ड *(नेक्टारिनिया जुगुलारिस क्लोसी)*** : यह केवल निकोबार द्वीप समूह की एक सामान्य पक्षी है।

3. **कार-निकोबार ओलीवबैक्ड सनबर्ड *(नेक्टारिनिया जुगुलारिस प्रोसिलिया)*** : यह केवल कार निकोबार की ही निवासी और स्थानीय है।

4. **निकोबार पीली बैक्ड सनबर्ड *(एइथोपिगा सिपारजा निकोबारिका)*** : इन द्वीपों की यह एक दूसरी सनबर्ड की जाति है। यह निकोबार की निवासी और स्थानीय है।

व्हाइट-आइज

निकोबार व्हाइट आई *(जोस्टेरोप्स पल्पेब्रोसा निकोबारिका)* केवल एक मात्र सफेद आँखों वाली है जो इन द्वीपों में पायी जाती है। यह अण्डमान और निकोबार दोनों जगह की स्थानीय है। यह बहुधा सदाबहार वनों में समूह में देखी जाती है। यह पक्षी ऊपर की ओर हरी होती है इसके आँख का गोला अत्याधिक स्पष्ट सफेद होता है।

हाउस सपैरोज

भारतीय घरेलू स्पैरो *(पैसर डोमिस्टकिस इन्डिकस)* को श्री ओ.एच. ब्रूक्स द्वारा रॉस द्वीप में 1882 में लाया गया आज यह पर्याप्त संख्या में दक्षिण अण्डमान के कस्बों, गाँवो झाडियों के जंगल और खेतों में देखी. जाती है।

मुनियाज

मुनिया की केवल एकमात्र जाति जो इन द्वीपों में मिलती है वह है वाइट बैक्ट मुनिया। यह निम्न दो उपजातियों द्वारा प्रतिनिधत्व करती है:

1. **अण्डमान वाइट बैक्ड मुनिया *(लांकुरा स्ट्रैटा फयूमिगाटा)* :** यह स्थानीय और दक्षिण तथा मध्य अण्डमान का सामान्य निवासी है जो जंगल के किनारों, उद्यानों में आती है।
2. **निकोबार व्हाइट बैक्ट मुनिया *(लांकुरा स्ट्रैटा सेमिस्ट्रैटा)* :** यह स्थानीय और कार निकोबार और मध्य निकोबार का सामान्य निवासी है जो घास के मैदानों को प्रभावित करता है।

सरीसृप

इन द्वीपों में अब तक सरीसृपों की 90 जातियों का पता चला है। ये सरीसृप समुद्री कछुए की चार जातियों से संबंधित हैं। मगर की एक जाति, सांपो की 45 जातियाँ और छिपकली की 40 जातियाँ हैं। इनमें से साँपों की 13 और छिपकली की 10 जातियाँ स्थानीय हैं। कोबरा, किंग कोबरा बहुत ही कम दिखाई देते है और वह भी केवल अण्डमान में जब

कि पिट वाइपर अंण्डमान और दोनों स्थानों में सामान्य है। समुद्री साँप की तीन जातियाँ इन द्वीपों के समुद्र में रहने वाले विषैले साँप हैं।

समुद्री कछुए

इन द्वीपों की कछुओं की प्रमुख जातियों में हरे कछुए *(सिलोनिया माइडस)* और हाक्स बिल कछुए *(इरट्मोकीलस इम्ब्रिकाटा)* है जिनमें से हरे कछुए बहुत ही सामान्य है। हरे कछुए जो अपने हरे रंग के कवच और हल्के हरे रंग की वसा के कारण हरे कछुए कहे जाते हैं। यह कछुआ (मादा) अण्डा देने के लिए बहुत बड़ी संख्या में कुछ स्थानों विशेषकर बालुई खाड़ियों में इकट्ठे होते हैं। ये अनुमानतः 70 से. मी. गहरा गड्ढ़ा बालू में खोदते हैं और समुद्र में वापस जाने से पहले उन गड्ढ़ों को भर देते हैं। इनका अण्ड-सेवन काल 40 से 50 दिन का होता है। हैचिंग के बाद नवजात आश्रय के लिये शीघ्र ही समुद्र की ओर चले जाते हैं। कुछ ही दशकों पहले अण्डमान द्वीप के क्षेत्र में ये बहुत ही सामान्य थे किन्तु आजकल इनकी जनसंख्या बहुत ही कम होती जा रही है क्योंकि माँस के लिए और अण्डों के लिए इनका शिकार होता रहता है, तथा इनके आवास स्थानों, (अण्डे देने के स्थान, मानव द्वारा समुद्री बालु को निकालने, तथा सुनामी के बाद समुद्री तट जलमग्न हो गये हैं।

विशालकाय समुद्री कछुआ : समुद्री कछुओं की जातियों के लिए अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह की स्थान विश्व के स्थानों में से एक है। विश्व में समुद्री कछुओं की सात प्रज़ातियाँ मानी जाती हैं। जिनमें से मुख्यतः चार प्रजातियाँ लेदरबैक समुद्री कछुआ, हरित समुद्री कछुआ, ओलिव रिडले कछुआ एवं हाक्सबिल कछुआ अण्डमान एवं निकोबार समूह में पायी जाती हैं। इसमें से लैदरबैक कछुआ आकार में सबसे बड़ा एवं सबसे भारी है। इसके बाह्य आवरण की सामान्य लंबाई 1.5 मी. तक एवं वजन 400 से 700 कि. ग्रा. तक होता है। कभी-कभी ये इससे बड़े एवं भारी आकार के भी हो सकते है। इसकी विशिष्ट पहचान इसके कवच की बनावट है। छोटी हड्डियों का समूह इसके आधार में धंसा होता है। इस प्रजाति का दूसरा विशिष्ट लक्षण यह है कि इसका आवरण

(कवच) मजबूत चिकनी चमड़े जैसी त्वचा से ढ़का होता है जिसमें सात ल़म्बवत खाँचें होते हैं। लैदरबैक समुदी कछुओं के जबड़ों में चौड़ी काँटेदार प्लेटेंस नहीं होती हैं। किन्तु उसके किनारे तेज होते हैं। निचले जबड़े के बीच में हुक होते हैं तथा ऊपरी जबड़े में एक जोड़ी मजबूत चबाने वाली सतह के प्रवर्ध होते हैं, जिसमें तीन गहरे खाँचें होते हैं। इसका सिर बड़ा होता है तथा गर्दन छोटी होती है। पाद का आकार पैडिल के समान होता है और उसमें तेज हुक नहीं होते हैं। इसके अगले पाद त्रिकोणीय एवं लम्बें होते हैं तथा पश्चपाद चौड़े एवं छोटे होते हैं। जो त्वचा की मजबूत परतों से जुड़े होते हैं। शरीर की तुलना में पूँछ बहुत ही छोटी होती है। कवच का रंग मटमैला काला होता है जिसमें सफेद धब्बे होते है। उदरीय भाग का रंग भिन्न-भिन्न होता है जो समान्य रूप से गुलाबी, सफेद और काले रंग का मिश्रण होता है। परिपक्व मादा के सिर के आच्छाद रंग का धब्बा होता है और पूँछ काली होती है। वास्तव़ में लेदरबैक समुद्री कछुआ फैले समुद्र में रहने वाली प्रजाति है जो केवल अण्डे देने कि लिए समुद्र के किनारे जमीन पर आती है। इसकी लंबी भारी, मोटी चमड़ी जिसमें तेल से चिकनी ग्रंथियां लंबी सतह की होती है। जब यह जीव निश्चित ध्रुवीय ठड़े जल की ओर दूर जाती है तो शरीर के ताप को नियंत्रित करने में ग्रंथियां सहायता करती है। यह एक शक्तिशाली तैराक है। इसमें स्तानांतरण की सहज अंतः प्रेरित होती है जिससे यह फैले समुद्र में रहना पसंद करता है। इसका शरीर धारा रेखित नाव के आकार का होता है। इसके कवच पर स्थित लंबवत पुष्ठ और खाँच भी इसे असाधारण तैरने की क्षमता और तेज गति प्रदान करते हैं। उत्तरी अटलांटिक देशों के समुदी तटों पर इसके अण्ड़े देने का समय मार्च से जुलाई के बीच का है। पूर्वी प्रशांत एवं हिन्द महासागर के तटों पर अक्टूबर से फरवरी का है। प्रत्येक कछुए का अपना भोजन लेने का एक गृह-क्षेत्र होता है जो लगभग 1,00,000 वर्ग मीटर का होता है। इस क्षेत्र में ये कई सालों तक पाये जाते हैं। जनन काल में सभी प्रौढ़ अपने जनन क्षेत्र में आ जाते हैं। मैथुन समुद्र में होता है और प्रत्येक मादा कुछ दिनों तक क्रम से विभिन्न नरों से संभोग करती है इस तरह वह पर्याप्त

मात्रा में शुक्राणुओं को एकत्रित करती है जो उसके द्वारा विगत सप्ताहों में बनाये गये अण्डों को निषेचित करते हैं। मैथुन के बाद नर अपने गृह-क्षेत्र में आ जाते है और मादा खाड़ी के छिछले ज्वार क्षेत्रों की ओर अण्ड़े देने के लिए पानी से निकलकर समुद्र के रेतीले तट पर आती है। वहाँ पहले वह अण्डे देने के लिए उचित स्थान का चयन करती है। जहाँ पर कि समुद्री लहरें ज्वार में पहुँच जाती है। ठीक उसी के पास की जगह का चयन होता है। इसके बाद अपने पिछले पादों का इस्तेमाल करके बड़ी सावधानी से करीब 2 से 2½ फुट गहरा गड्ढ़ा खोदती है। गड्ढ़ा खोदते समय दोनों पादों का उपयोग एक एक करके लगातार करती है फिर अण्डे देना शुरू करती है। इस प्रकार एक बार में करीब 120-140 अण्ड़े तक देती है। एक जनन काल में प्रत्येक मादा तीन से पाँच बार दो सप्ताह के अन्तराल में समूह में अण्डे देती है। विकास दर के अनुमानों से यह पता चलता है कि कछुए 50 साल की आयु में प्रथम जनन के लिए लिए परिपक्व होते हैं। मादा अण्ड़े जनन की प्रकिया में सर्वाधिक संतुलित रहती है और अण्डा देने के बाद उस स्थान को फिर रेत से भर देती है। परन्तु इस तरह अंडा देने के स्थान के आसपास क्षेत्र असमतल हो जाता है। इस प्रक्रिया में अगले पाद बहुत ही तेज झटके से रेत को पीछे की ओर ढकेलते हैं जिससे अण्ड जनन क्षेत्र पूरी तरह छिप जाता है।

इस प्रक्रिया में पास की छोटी वनस्पतियाँ भी नष्ट हो जाती हैं। छोटे द्वीपों में इनका अण्डा देने का क्षेत्र समूचा द्वीप भी हो सकता है और उनमें चारों ओर गहरे गड्ढ़े हो सकते हैं। अण्ड क्षेत्र को छिपाने के बाद मादा तेजी से समुद्र में वापस आ जाती है। पुनः जनन के लिए वह फिर उसी समुद्र-तट पर जाती है जहाँ वह जनन करती है। समुद्री कछुए को अण्ड जनन के लिए निश्चित ताप चाहिए। अण्ड जनन के लिए गड्ढ़े का ताप जनन करने वाले कछुए की स्थिति को निर्धारित करता है। अण्डे के विकास की प्रक्रिया 24 डिग्री से.ग्रे. से कम और 34 डिग्री से.ग्रे. से अधिक ताप पर नहीं होती है। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के किनारे इसके जनन के लिए बहुत ही उपयुक्त स्थान है। अन्डे का व्यास

55-60 मि.मी. तक होता है। इसमें से कुछ बहुत ही छोटे भी होते है। इनके अण्डे से नवजात के जनने में 55 से 70 दिन का समय लगता है और नवजात की लंबाई 55 से 65 मिली मीटर होती है।

इस विशालकाय कछुए का मुख्य भोजन विभिन्न प्रकार की जेलीफिश, फैशेलिया और ट्यूनिकेट्स है। इस समुद्री कछुए के अण्ड़ों एवं परिवर्धित हो रहे नवजात का भक्षण गोह, घोस्ट क्रैब, जंगली सुअर, छिपकली, पक्षी एवं कुछ स्तनधारी और शार्क करते हैं। लेदरबैक समुद्री कछुआ विश्व में चारों ओर पाया जाता है। इसका अण्डजनन स्थान अटलांटिक, प्रशांत और हिन्द महासागर के समुद्र तट हैं। हिन्द महासागर में इसका अण्डजनन क्षेत्र केरल के क्विलान समुद्र तट है, गोवा, अण्डमान और निकोबार तथा लक्षद्वीप के अलग-अलग द्वीपों में पायी जाती है। भारतीय वन्यजीव अधिनियम 1972 के द्वारा सभी प्रकार के समुद्री कछुओं को कानूनी संरक्षण मिला है। लैदरबैक कछुआ समुद्री कछुओं में सबसे बड़ा और सबसे विरल है। इसको अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संस्था ने भी विलुप्त होने वाली प्रजातियों की श्रेणी में रखा है। प्रजातियों की लाल आंकड़ा पुस्तक (रेड़ डाटा बुक) ने भी इसे शीघ्र विलुप्त होने वाली प्रजाति की घोषणा की है। यह प्रजाति खतरे में है अतः इन द्वीपों में एक कार्यक्रम अभी हाल में किया गया है जिसके अंतर्गत समुद्री कछुओं के अण्डों को उनके अण्डे देने के स्थान से इकट्ठा करके उसका परिवर्धन करना और नवजात को समुद्र में छोड़ना है।

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में समुद्री रेत का अधिक प्रयोग मकानों के निर्माण, सड़क, पुल व बन्दरगाह बनाने के लिए किया जाता है। इससे समुद्री रेत की अधिक कटाई होती रहती है। इसका बुरा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है, जैसे कि समुद्री कछुओं के अण्डे देने का स्थान रेत ही है और रेत की कटाई से इन कछुओं की उत्पत्ति पर सीधा प्रभाव पड़ता है। कहीं-कहीं यह भी देखा गया है कि यह समुद्री कछुआ जहाँ पहले पाया जाता था आज वह उस स्थान पर दिखाई नहीं पड़ता इसका कारण समुद्री रेत का निकालना भी है, यही कारण है कि कछुए अपने रहन सहन का स्थान बदलते रहते हैं। इन कछुओं के रहन सहन में

बाधाओं के कारण अनेक देशों में इनकी जनसंख्या विलुप्त होती दिखलाई पड़ती है। इन कछुओं के अण्ड़ें देने के स्थान की पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था करनी चाहिए, जैसे समुद्री तट से निर्माण कार्य के लिए रेत निकालने का कार्य पूरी तरह से रोकना चाहिए। इस तरह सभी प्रकार के समुद्री कछुओं की प्रजातियों को संरक्षण मिलेगा और विशेष रूप से लेदरबैक समुद्री कछुआ की प्रजाति को विलुप्त होने से बचाया जा सकेगा।

हाक्सबिल कछुआ जिंसको यह नाम इसके पक्षी के तरह के सिर और चोंच के फलंस्वरूप मिला है, समुद्री कछुओं में सबसे छोटा है। यह हरे कछुए की तरह अण्डमान जल में इतना सामान्य नहीं है। यह किनारे के जल और खाड़ियों वाले द्वीपों के जल में बार-बार आते हैं। अण्ड जनन की इसकी प्रक्रिया हरे कछुए के ही समान है किन्तु यह दिन के समय अण्डे देती है। इसके अतिरिक्त हरे कछुए की तुलना में हाक्सबिल कछुए कम संख्या में 95-125 तक ही अण्ड़े देती है। इसका जनन-काल नवम्बर से फरवरी है और अण्डसेचन में लगभग 60 दिन लगते है।

इस कछुए का माँस लोग पसन्द नहीं करते हैं। फिर भी इसका शिकार बहुत संख्या में इसके सींगदार कवच या इसके कवच के किरैटिन पर्त के लिये होता है। यह पर्त आसाधरण पीली-भूरी सुन्दर पारदर्शकता प्रदर्शित करती है जब इसे कवच से हटा कर गरम किया जाता है। तो इस तरह प्राप्त किरैटिन पर्त का उपयोग शौकीन ट्वायलेट उपकरणों, फर्नीचर और आभूषणों के बनाने में होता है।

मगर

इन द्वीपों में मिलने वाला एक मात्र मगर खारे पानी का मगर, *(क्रोकाडिलस पोरोसस)* है। यह अण्डमान और निकोबार समूह के ऐसे सभी बड़े द्वीपों जहाँ मेंनग्रूव स्वैम्प फैले है और ज्वारभाटे मेंनग्रूव और नदियों के किनारे के जंगलों में मगर के रहने के सर्वोत्तम आवास प्रतीत होता है।

उत्तरी अण्डमान में मगर अपना आवास तीन प्रकार के वानस्पतिक क्षेत्र में क्रमशः ज्वार-भाटीय बेत के जंगलों, सदाबहार वनस्पतियों तथा खाड़ी के क्षेत्र में करते हैं।

मगर के अण्डों की संख्या 40-60 होती है। जिसका औसत 50 है। इसकी संख्या बहुत अधिक कम हो गई है क्योंकि इसका शिकार सभी मौसमों में इसके चमड़े, मानव खाद्य पूर्ति के लिये अण्डों को एकत्र करने के लिए और मानव अधिकरण के कारण इसके आवासों का सीमित होना प्रमुख कारण है।

साँप

जैसा कि पहले कहा गया है इन द्वीपों में साँपों की 45 जातियाँ जानी जाती हैं जिनमें से 13 स्थानीय हैं। समुद्री और जमीनी विषैले साँपो को छोड़कर अन्धा साँप, सनबीम साँप, रेटीकुलेट पाइथन, रैट-स्नैक, ट्रिंकिट, पानी साँप, कैट-साँप आदि सभी इन द्वीपों में मिलते है। इनके विषय में विवरण निम्न है:

अन्धा साँप : सामान्य अन्धा साँप, *(टाइफ्लोप्स ब्रैमिनस)* इन द्वीपों में सामान्य है। यह भूरे या काले रंग का 12 सेन्टी मीटर लम्बा केचुएं की तरह का होता है। यह सामान्यतः लट्ठों के नीचे, भीगी पत्तियों और जंगलों में गीली मिट्टी में पाया जाता है।

सन बीम साँप: सन बीम, *(जीनोपेल्टिस यूनिकलर)* जो कि अपने आकर्षक स्केल के कारण प्रसिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि सामान्य रूप में लट्ठों या चट्टानों या यहाँ तक की धान के खेतों और उद्यानों के नजदीक के मानव आबादी के क्षेत्र में जमीन के अन्दर पाया जाता है।

पाइथन: रेटिकुलेट पाइथन, *(पाइथन रेटिकुलेटस)* निकोबार द्वीप समूह में मिलता है। यह सभी भारतीय साँपों में सबसे बड़ा और भारी होता है। यह ऊपर की ओर पीला या हल्का भूरा होता है जिसके साथ लम्बें गाढ़े भूरे रंग की समानान्तर चतुर्भुजाकार या अण्डे के आकार के धब्बे जो बहुधा एक दूसरे के साथ अधर श्रृंखला में होते है। यह गीले सदाबहार

जंगलों में रहता है और छोटे स्तनधारी पक्षी और सरीसृप का पोषण करता है।

रैट साँप: भारतीय रैट-साँप (धामन) *(ट्यास म्यूकोसस)* अण्डमान द्वीप के जंगलों और मानव आबादियों के नजदीक बहुत ही सामान्य है। यह एक झगडालू स्वभाव का साँप है जो जमीन पर अपने शिकार के पीछे बहुत तेजी से दौड़ता है। यह पेड़ों पर भी उतनी ही दक्षता से गतिशील भी है। एक शाखा से दूसरी शाखा पर आसानी से चला जाता है जिससे पेड़ की चोटी की शाखा पर बैठी चिड़ियाँ को भी निगल सकता है। मामूली छेड़-छाड़ पर भी यह बहुत उत्तेजित हो जाता है और बार-बार काटता है। कभी-कभी यह साँप कुंडली मार लेता है और अपने गर्दन के भाग को फैला देता है और हिस-हिस की ध्वनि उत्पन्न करता है जिससे बहुत से लोगों को नाग का भय हो जाता है।

ट्रिंकेट्स : ट्रिंकेट्स या रैसर प्रमुख रोडेंट भक्षी है। ये पेड़ो पर रहने वाले साँप हैं जो खुरदुरे उपदरीय भाग का उपयोग मजबूती से पेड़ों की शाखाओं का पकड़ने और तेजी से इधर-उधर गति करने के लिये करते हैं ये साँप अण्डमान द्वीप के जंगलो में बहुत ही सामान्य है, विशेषकर खारे पानी के खाड़ियों की झाड़ियों में ये निवास करते हैं। इन द्वीपों में ट्रिंकेट्स की निम्न तीन जातियाँ पायी जाती है।

1. **हरा ट्रिकेट *(इलैफी प्रैसिना)* :** यह सामान्यतः हरा होता है जिसके मध्य की त्वचा पर काले और सफेद जाली के धब्बे होते है।
2. **पीले ट्रिकेट *(इलैफी फ्लैवोलिनीटा)* :** यह सामने की ओर पीला भूरा रीढ़ की हड्डी के साथ पीले काले जो धीरे-धीरे शरीर के पिछले भाग में अदृश्य हो जाते है। इसकी पूँछ गाढ़ी भूरी होती है।
3. **लाल पूँछ ट्रिकेट *(इलैफी आक्जीसिफाला)* :** यह ऊपर की ओर हरा और इसकी पूँछ हल्की लाल होती है।

ब्रान्ज बैक्स : ब्रांज बैक्स जीनस (डेन्ड्रीलैफिस) से सम्बन्धित है। ये भी पेड़ो पर रहते हैं। ये ऊपर की ओर जैतुनी या हरित या लोहित होते हैं

और पेड़ की शाखाओं पर तेजी से घूमते हैं। ये सदैव पेड़ों पर या झाड़ियों में रहते हैं और कभी भी (भोजन की तलाश को छोड़कर) जमीन पर नीचे नहीं आते हैं। केवल दिन के समय ये शिकार करते हैं जो प्रमुखतः छिपकली और मेंढ़क होते हैं। कभी कभार ये कीटों को भी भोजन के लिये पकड़ लेते है। अब तक ब्रांज की चार जातियों का प्रमाण है। जिनके नाम निम्न है :

1. अण्डमान ब्रांज बैक *(डेन्ड्रीलैफिस अट्टीतुला अण्डमानेन्सिस)*
2. हरा पेड़ साँप *(डेन्ड्रीलैफिस पिकटस अण्डमानेन्सिस)*
3. तिवारी ब्रांज बैक *(डेन्ड्रीलैफिस हुमायुनी)*
4. दौदीन ब्रांज बैक *(डेन्ड्रीलैफिस ट्रीस्टिस)*

इनमें से पहला अण्डमान और निकोबार दोनों की ही स्थानीय है और तीसरा केवल निकोबार का स्थानीय है।

कैट साँप: कैट साँप की तीन जातियाँ नामतः अण्डमान कैट-स्नेक, *(बोएगा अण्डमानेन्सिस)* स्मिथ कैट-स्नैक, *(बोएगा ओक्रसिया वली)* और बोझस कैट-स्नैक, *(बोएगा डेन्ड्रोफिलस)* इन द्वीपों में पायी जाती हैं जिनमें से पहला अण्डमान द्वीप का स्थानीय है। दूसरा अण्डमान और निकोबार दोनों जगह पाया जाता है जबकि तीसरे का अभी तक ग्रेट निकोबार से प्रमाण मिला है।

कैट-स्नैक भी पेड़ो पर रहने वाले है। ये रात्रि में सक्रिय रहते हैं और स्वभाव से बहुत ही उग्र होते हैं। ये साँप गेंद के आकार में कुंडली मार लेते हैं जब ये विश्राम करते हैं। यहाँ तक कि जब इन्हें मामूली सा भी उत्तेजित किया जाता है तो ये बहुत ही आक्रामक रूप में प्रतिक्रिया करते है।

फ्लाईग-स्नेक: उड़ने वाले साँप, *(क्राइसोपेलिया पैराडिसी)* इन द्वीपों का एक सामान्य पेड़ों का साँप है। वास्तव में यें साँप उड़ नहीं सकते हैं। ये केवल अपने को इतनी तेजी से पेड़ की एक शाखा से नीचे वाली

दूसरी शाखा पर लम्बी दूरी छोड़ देते हैं कि लगता है कि ये उड़ रहे हैं। लेकिन किसी भी माने में न तो यह सही उड़ना है, केवल हवा में गिरना है। ये बहुत ही पतले साँप है जो मुख्यतः छिपकली खाते हैं।

वुल्फ स्नेक, अण्डमान धारीदार कुकरी और काले सिर वाला पहाड़ी साँप: गुफाओं में, पत्थरों के ढ़ेर और पेड़ों की छिद्र में वुल्फ-स्नेक, *(लाइकोडन औलिकस कैपिसिन्स)* विस्वास वुल्फ स्नेक, *(लाइकोडन्न तिवारी)* और अण्डमान धारीदार कुकरी, *(ओलीगोड़न उडमासोनी)* पाये जा सकते हैं। ये सभी साँप इन द्वीपों के स्थानीय हैं।

वुल्फ-स्नेक रात में सक्रिय रहता है। चिकने तने वाले पेड़ों या दिवार पर बहुत ही अच्छी तरह चढ़ जाता है। अण्डमान धारीदार कुकरी का रंग ऊपर की ओर गाढ़ा भूरा जिस पर पीली लम्बवत धारियां होती हैं। वास्तव में यह शांत साँप है। इसकी आदत रात्रिचर की है और कभी नहीं काटता है।

पानी साँप

सभी पानी के साँप कम से कम अस्थायी तौर पर पानी के किनारे रहते हैं और मेंढ़क तथा मछली को अपना पोषण बनाते है। इन द्वीपों में निम्न पानी के साँप द्रिखाई देते है।

1. **सामान्य पानी के साँप (*जिनेक्रापिस पिस्केटर*)** : इसकी दो उपजातियाँ है *(जिनोक्रापिस पिस्केटर पिस्केटर)* और *(जिनोक्रापिस पिस्केटर मिलैन्जोस्टस)*। इस पानी के साँप की दोनों ही उपजातियाँ केवल अण्डमान में सामान्य रूप से पायी जाती है। इनका दैनिक स्वभाव है कि वे अपने सिर को पानी की सतह पर किये हुए पानी में पड़े रहना और मेंढ़कों या मछलियों की प्रतीक्षा करना है। लेकिन अपना शिकार लेने के बाद सामान्यतः ये जमीन पर आ जाते हैं और उनका उपभोग करते हैं।
2. **बोइस का पानी साँप *(जिनोक्रापिस ट्रैन्गुलिजेरा)*** : यह एक मलयन जाति है जिसकी जातियाँ भारतीय चीनी क्षेत्र में फैली है।

इसके शरीर में चमकीले लाल त्रिकोणी धब्बे होते है और यह निकोबार में पाया जाता है।

3. **स्ट्रीप्ड कील बैक** ***(एमफीज्मा स्टोलाटा)*** : यह जैतुनी हरा या ऊपर की ओर भूरा साथ में काले धब्बे होते है। यह साँप बहुत ही सरल स्वभाव का होता है और कभी काटने का प्रयास नहीं करता है।

4. **कुत्ते के मुंह वाला पानी का साँप** ***(सिरबिरस रिनकोप्स)*** : यह अपेक्षाकृत मेंनग्रुव दलदल और इन द्वीपों की छोटी खाड़ियों में सामान्य है। यें केकडे के बिलों या समुद्र के किनारे की चट्टानों में रहते हैं और कभी भी पानी से दूर नहीं जाते। यह रात में बहुत अधिक सक्रिय होता है और मुख्यतः मछलियों पर जीवित रहता हैं।

5. **सफेद उदर वाला पानी साँप** ***(फोर्डोनिया ल्यूकोवालिया)*** : यह निकोबार के खाड़ियों में पाया जाता है। यह मुख्यताः केंकड़ों को खाता है और पानी में दूर तक तैरता है।

6. **धारीदार स्वैम्प-स्नैक** ***(कैन्टोरिया वायलैसिया)*** : एलीफैंट ट्रन्क स्नैक *(एक्रोकोर्डस ग्रेनयूलेटस)* यह अण्डमान द्वीप के खाड़ी क्षेत्रों में देखा जाता है। यह निकोबार के खाड़ियों के चारों ओर पाया जाता है। यह मुख्यतः मछलियों से पोषण लेता है।

जहरीले साँप

जहरीले साँपों में नाग, नागराज और बैन्डेड क्रैट का इन द्वीपों से प्रमाण मिला है। वह भी केवल अण्डमान से ही। अण्डमान नाग, *(नाजा कैआथिया)* रंग में गाढ़ा भूरा जिसके फन पर एक मात्र निशान होता है। यह साँप अण्डमान में बहुत ही कम पाया जाता है। किंग कोबरा *(ओफियोफगस हन्नाह)* दुनिया का सबसे अधिक विषैला साँप है। यह साँप अण्डमान द्वीप में विशेषकर उत्तरी और दक्षिणी अण्डमान में पाया जाता है। फिर भी यह बहुत कम ही देखा जाता है। अपेक्षाकृत सामान्य जहरीले साँप जो इन द्वीपों में सामान्य है बैन्डेड कैट *(बन्गारस अण्डमानेन्सिस)* है। यह बिना फन वाला साँप है। यह स्वभाव में बहुत ही शांत और अक्रामक है। पिट वाइपर इन द्वीपों में बहुतायत से मिलते हैं।

दिखने में पिट वाइपर, वाइपर से बहुत अधिक समानता रखते हैं विशेषकर छोटी पूँछ और चौड़े त्रिकोणीय सिर जो शरीर के शेष भाग से बिल्कुल ही स्पष्ट होता है। लेकिन वे वाइपर से बहुत भिन्न होते है क्योकि इनके नासाद्वार और आँख के बीच में एक गहरा पिट अंग होता है। इन द्वीपों में पिच वाइपर की चार जातियाँ मिलती है:-

1. कैन्टर का पिट वाइपर *(ट्रिमेंरीसुरस कैन्टोरी)*
2. अण्डमान पिट वाइपर *(ट्रिमेंरीसुरस परपुरियोमेंकुलेलेटस एन्डरसोनी)*
3. ब्राउन स्पोटेड पिट वाइपर *(ट्रिमेंरीसुरस लेबियालिस)*
4. वाइड पिट वाइपर *(ट्रिमेंरीसुरस अल्बोलेब्रिस)*

इनमें से पहली तीन यहाँ की स्थानीय हैं, जो इन द्वीपों में बहुत ही सामान्य है। ये साँप दिन के समय देखे जा सकते हैं किन्तु अधिकाशंतः ये रात्रिचर है जो मुख्यतः जंगल के निवासी हैं। यह उद्यानों को विशेष पसन्द करता है जो मानव आबादी के क्षेत्र में होते है।

पिट वाइपर के काटने से दर्द होता है कभी कभी यह दर्द बहुत होता है और इसके साथ सूजन होती है। लेकिन इसके काटने से मृत्यु नहीं होती है।

समुद्री साँप : समुद्री साँपों की दो जातियाँ उभयचर समुद्री साँप *लैटीकौड़ा लैटीकौड़ा* और *कालुब्रिन एम्फिवियस* समुद्री साँप इन द्वीपों में पाये जाते हैं। ये साँप बहुत ही जहरीले होते हैं। ये लवणीय जीवन के प्रति पूरी तरह अनुकूलित होते हैं। इनकी पूँछ किनारे से नाव के पतवार की तरह दबी होती है। समुदी किनारे पर ज्वार-भाटे वाले क्षेत्र में दिखाई देते हैं। ये साँप अच्छे तैराक हैं और मछलियों से जीवन निर्वाह करते हैं।

छिपकली (लिजर्डस)

इन द्वीपों में छिपकलियों की 40 जातियाँ मिलती है। गोह *(वैरानस सल्वेटर अण्डमानेन्सिस)* को अण्डमान जलीय छिपकली के रूप में अच्छी तरह जाना जाता है। इन द्वीपों की यह सबसे बड़ी छिपकली है और

इसकी लम्बाई दो से ढ़ाई मीटर होती है। यह एक स्थानीय उपजाति है जिसका रंग छोटे पीले धब्बे और तिरछे क्रम से व्यवस्थित गोल लम्बें धब्बों के साथ काला होता है। इसके चार शक्तिशाली पैर होते हैं जिनमें प्रत्येक में पाँच अंगुलियों का पंजा होता है। इसकी पूँछ मोटी और शरीर से दोगुना हथियार इसके तेज दाँत और पंजे हैं जिनकी सहायता से यह अपने शिकार या दुशमन पर गहरे घाव कर सकती है।

यह छिपकली समुद्र के किनारे विशेषकर छोटी खाड़ियों के नजदीक और पानी के अन्दर भी जा सकती है और यहाँ तक की पानी में दूर तक तैर सकती है। छेड़ने पर यह जमीन पर अपने मजबूत पैरों की सहायता से दौड़ सकती है और पेड़ों पर भी अपने लम्बें तेज पंजों की सहायता से चढ़ती है। यह स्वभाव से दिनचर है और मछलियों, मेंढकों, कनखजूरा, छिपकलियों, साँपों, पक्षियों और चूहों को खाती है। अण्डमान जलीय छिपकली मगर और कछुवे के अण्डों को उनके आवासों से भोजन के लिये चुराने की आदी है।

कुछ दशकों से पहले यह छिपकली बहुतायत से पायी जाती थी लेकिन इसकी संख्या आज बहुत कम हो गई है। क्योंकि लोग इसे क्रूरता से पकड़ते हैं और इसके माँस को खाने के लिये और चमड़े को व्यापारिक उपयोग के लिये उपयोग में लाते है।

घरेलू छिपकली : घरेलू छिपकलियां, छोटी छिपकलियां है जो ध्वनि करती है। ये चपटे शरीर वाली जीव है जो पूरी तरह से चढ़ने के लिए सक्षम है और बहुत सीधी दीवार पर अपने पैरों की विशेष प्रकार की संरचना अंगुलियों और पंजों जिनमें बहुधा अन्दर के भागों में चौड़ी चिपकने वाली लैमिली है जिसके कारण यह आसानी से घूमती है। इन घरेलू छिपकलियों की दूसरी विशेषता यह है कि जब उन्हें पकड़ा जाता है तो माँसपेशियों के संकुचन से ये अपनी पूँछ को अचानक तोड़ देती है। यह अलग किया हुआ भाग पुनः बन जाता है लेकिन यह दुबारा फिर उसी रूप में नहीं बन पाती है जैसे कि पहले थी। यह बिना खण्ड वाली कार्टिलेज की एक छड़ से आधारित होती है।

इन द्वीपों की घरेलू छिपकलियों में सबसे सराहनीय है, एशियन टोके *जेक्को जेक्को* जो एक ध्वनि उत्पन्न करती है। जिससे इसका रंग मटमैला होता है। यह घरेलू छिपकली बहुत ही साहसी होती है। यद्यपि यह प्रमुखता से कीटों को खाती है। इसके जबड़े बहुत ही मजबूत होते हैं और जब यह शिकार को एक बार पकड़ लेती है तो यह आसानी से छूट नहीं पाता हैं।

स्मिथ्स जिक्कों *(जिको स्मिथी)* जो पहले इन द्वीपों में सामान्य है, जिसे अक्सर अण्डमान द्वीप के जंगलों में पेड़ो के ऊपर देखा जा सकता है। घरों में यह कभी कभार ही मिलती है। इसकी आवाज तुक-तुक होती है जिसकी पुनरावृति यह 4-5 बार करती है। इसका रंग भूरा या भूरा मटमैला होता है जिसके साथ गहरे निशान विशेषकर सिर के पीछे होते है।

इन द्वीपों की सामान्य घरेलू छिपकली *(हेमीडैक्टिलस फ्रेनेटस)* है। यह मुख्य रूप से कीट भक्षी है जो सामान्यत: सभी घरों की दीवार पर पायी जाती है।

कर्लटल्ड जेको *(सीर्टोडैक्टीलस रूबिडस)* इन द्वीपों में बहुत ही सामान्य है। यह एक स्थानीय जाति है और जंगलों में पायी जाती हैं यह हल्की भूरी या भूरी मटमैले रंग की आड़े-तिरछे गहरे निशानों की जो आपस में जुड़े होते है। यह जमीन और पेड़ दोनों पर समान रूप से चल सकती है और जब दौड़ती है तो अपनी पूँछ को मजबूती से ऊपर कर लेती है।

दिन की जंगल छिपकली *(निमेंस्पिस कन्डियाना)* : यह इन द्वीपों के जंगलों में अक्सर मिलती है। इसका रंग भूरा होता है जिस पर हल्के या गाढ़े रंग-बिरंगे रंग तिरछे क्रम में व्यवस्थित होते हैं। इनके अलावा एक धब्बेदार गीको *(जेहिरा मूटिलेटा)* अण्डमान और निकोबार के जंगलों में पायी जाती है। यह पीले भूरे रंग की छिपकली है। यह अपना रंग हल्के से गाढ़े रंग में बदल सकती है।

उड़ने वाली छिपकली *(टाइकोजून कुहली)* निकोबार में विशेषकर कार निकोबार, कार्मोटा और नानकौरी द्वीप में मिलती है। इस छिपकली के घड़ के दोनों तरफ त्वचा की एक पर्त और त्वचा के पतले किनारे जो सिर और जांघ से होती हुई पंजे और पूँछ तक जाती है इसके आधार पर इसे पहचाना जा सकता है। जब यह आराम करती है तो यह छिपकली अपने को पास-पड़ोस के अनुरूप अपने त्वचीय पर्तो को मजबूती से दबाकर पूरी तरह ढ़ाल लेती है। यह मुख्य रूप से पेड़ों में रहती है फिर भी कभी-कभी घरों में देखी जाती है। इन द्वीपों में इस छिपकली का पाया जाना निःसंदेह ही बहुत ही रोमांचकारी है क्योकि इसकी जातियाँ पूर्व देशीय नहीं है बल्कि यूथोपियन है, फेल्सुमा का विस्तार अण्डमान और निकोबार से दूर मेंड़ागास्कर, कोमारो सीचेलीज और मेंसाकैरीन द्वीप है।

इनके अलावा जेक्कों की दो और जातियाँ इन द्वीपों में पायी जाती है वह भी निकोबार में :

1. ***हेमीफीलोडैक्टीलस टाइपस टाइपस*** : यह भूरे रंग की होती है जिस पर गहरे धब्बे और गहरी रेखायें सिर के किनारों से लेकर कंधे तक होती है। यह जंगलों में पायी जाती है।
2. ***कोसीम्बोटस प्लैटीयूर*** : यह मटमैली या मटैली भूरी गाढ़े धब्बों वाली होती है, यह बगीचों और घरों में देखी जा सकती है।

अगामिड्स : अगामिड्स लम्बें पैर अपेक्षाकृत बड़ा सिर और लम्बी पूँछ वाली मजबूत छिपकली है। जेक्कास की तरह ये अपनी पूँछ सामान्यतः नहीं तोड़ती है। प्रायः हमेंशा तिरछे या खुरदुरे किनारे इनके शरीर और पूँछ पर होते हैं।

दक्षिण पूर्वी एशिया के एगामिड्स की बहुत बड़ी संख्या होती है जो जमीन, पेड़ों और यहाँ तक की अयनवृत्तीय जंगलों के जल में रहते है। लेकिन इन द्वीपों के सभी अगमिड्, पेड़ो पर रहते है। इनके दो जेनेरा *(गोनियेसिफलस)* और *(कैलोट्स)* हैं।

गोनियोसिफलस की एक जाति *(गोनियोसिफलस सबक्रिस्टैटस)* इन द्वीपों में मिलती है। यह स्थानीय है और हरी जंगल छिपकली के नाम से भली-भाँति पहचानी जाती है। यह भूरी या हरी होती है, जिसका सिर तिकोना और ललाट तेजी से तिरछा होता है। यह अण्डमान और निकोबार के जंगलों में बहुत ही सामान्य है।

कैलोट्स को प्रायः बगीचे की छिपकली के नाम से जाना जाता है और कभी-कभी इन्हें परिवर्तनशील छिपकली कहते है क्योकि इनके अन्दर तेजी से अपने रंग को परिवर्तन करने की क्षमता होती है। इनका सिर अंगूरी रंग का विशेषकर मिलन के समय लाल हो जाता है।

इन द्वीपों में *कैलोट्स* की सात जातियाँ जानी जाती हैं। जिनमें से दो जातियाँ अण्डमान गार्डेन लिजर्ड *(कैलोट्स अन्डामानेन्सिस)* और तिवारी की गार्डेन लिजर्ड, (*कैलाट्स डैनीली)* अण्डमान और निकोबार की स्थानीय है।

गार्डेन लिजर्ड की निम्न जातियाँ जो इन द्वीपों की हैं, ये हरे रंग की होती है और जिन्हें देखकर एक दूसरे से अलग उनके शरीर और पूँछ पर उपस्थित विभिन्न धब्बों व निशानों के आधार पर किया जाता है।

1. **ग्रीन गार्डेन लिजर्ड *(कैलोट्स क्रीस्टैटिलस)*** : इसका रंग हरी होती है या इसके शरीर पर लाल या चाकलेट रंग के धब्बे होते हैं। यह निकोबार में पायी जाती है।
2. **धब्बेदार गार्डेन लिजर्ड *(कैलोट्स जुबैटस)*** : सामान्यतः इसके शरीर के अगले भाग में लम्बें पीले या लाल धब्बे या लम्बवत फैले निशान या लम्बवत धारियां होती है। यह भी निकोबार में देखी जाती है।
3. **गार्डेन लिजर्ड *(कैलोट्स)*** : यह चमकीले हरे रंग की होती है। पाँच या छः गहरे या सफेद तिरछी धारियाँ जो सामान्यतः पूँछ तक जाती है। इसके प्रमाण भी निकोबार से मिले है।

इसके आलावा वाइट लिप्ड गार्डेन लिजर्ड *(कैलोट्स मिस्टैसियस)* भी यहाँ उपलब्ध है। यह गार्डेन लिजर्ड की एक मात्र जाति है जो अण्डमान और निकोबार दोनों जगह पायी जाती है। यह भूरी मटमेंली या जैतुनी स्पष्ट गहरे धब्बों या निशानों वाली होती है।

शेष सामान्य गार्डेन लिजर्ड, *(कैलोट्स वर्सीकोलर)* बहुधा झाड़ियों और अण्डमान के फैले जंगलों में दिखाई देती है।

स्कीन्क्स (एक प्रकार की छोटी छिपकली): इन छिपकलियों का शरीर बेलनाकार होता हैं और पूँछ नुकीली होती है। जैसाकि पहले कहा गया है इन द्वीपों में स्किंवस की 11 जातियाँ मिलती है। इनमें से जीनस *मबुया* बहुत ही सामान्य है और इसकी निम्न पाँच जातियाँ मिलती हैं :

1. **टाइटलर की स्किंक *(मेबुया टीटलरी)*** : यह अण्डमान की सामान्य स्किंक है जिसका रंग भूरा और कभी-कभी इस पर धुंधले धब्बे होते हैं और नीचे की ओर का रंग हरा सफेद होता है। यह अण्डमान द्वीप की स्थानीय है।

2. **अण्डमान स्किंक *(मेबुया अण्डमानोन्सिस)***: यह मात्र मेंबुया अण्डमान और निकोबार दोनों जगह पायी जाती है लेकिन अण्डमान में यह बहुत ही सामान्य है। यह स्किंक भूरे रंग की होती है और काले धब्बों की दो श्रृखंला रीढ़ के दोनों तरफ होती है।

3. **धारीधार स्किंक *(मेबुया मल्टीफसिआटा)*** : इसका रंग भूरा होता है, इसके प्रमाण केवल निकोबार से मिले है।

4. **भूरी स्किंक *(मेबुया रूगिफेरा)*** : यह बहुत ही गहरी भूरी स्किंक है जिस पर पाँच या सात हरित सफेद लम्बवत धारियाँ होती है। इस स्किंक का प्रमाण अभी तक निकोबार से मिला है।

5. **स्किंक *(मेबुया रूडिस)*** : यह भी निकोबार में पायी जाती है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सभी *मेबुया* जमीन पर रहने वाले हैं और दिन के समय बहुत ही क्रियाशील होते हैं। *मेबुया* के साथ स्किंक के तरह ही दिखने वाली एक दूसरी किस्म भी द्वीपों में दिखाई देती है। ये जैतुनी-भूरी है। *स्फेनोमार्फस* को दो जातियाँ *(स्फेनोमार्फस मेंकुलेटम)* और *(स्फेनोमार्फस केकुलेटस)* का प्रमाण इन द्वीपों से मिला है जिनमें से पहली अण्डमान और निकोबार दोनों जगह पायी जाती है। ये स्कीक्स जंगलो तक ही सीमित है और जमीन पर रहती है। यह आकार में छिपकली की तरह होती है। इनकी पूँछ लम्बी होती है। इनके अंग पूरी तरह विकसित होते है और इनका पंजा मजबूत होता है।

यद्यपि मेंबुया और *स्फेनोमार्फस* कभी-कभी इन द्वीपों में साथ-साथ दिखाई देती है फिर भी इनकी आदतों में कुछ प्रमुख अंतर है। *मेंबुया* केवल दिन के समय क्रियाशील होती है जबकि *स्फेनोमार्फस* सुबह के पहले और सूर्यास्त के बाद अधिक क्रियाशील होती है। *स्फेनोमार्फस* जंगल तक ही सीमित है जबकि मेंबुया परिवर्तित आवासों में भी पायी जाती हैं। *मेंबुया* बहुत तेजी से गतिशील होती है जबकि *स्फेनोमार्फस* गति में इतनी तेज नहीं है।

व्हाइटस्ट्रीप्ड स्किंक *(स्किंसेला मेंक्रोटिम्पैनम),* ब्लैकस्ट्रीप्ड स्किंक, *(सेयपा बौरिन्गी)* का प्रमाण भी अण्डमान से मिला है। यह फैले मैदानों में रहती है। इन द्वीपों की पेड़ों की स्किंसक *(डैसिया ओलवैसिया)* और *(डैसिया निकोबारेन्सिस)* है। इनमें से पहली अण्डमान और निकोबार दोनों जगह पायी जाती है। और दूसरी निकोबार द्वीप की स्थानीय है। ये स्किंक छिपकली की तरह है जिनकी पूँछ लम्बी और किनारे की ओर नुकीली होती है।

बरोविंग लिजर्डस *(डाई वैमिड्स)* : बरोविंग लिजर्ड की एक जाति *(डाईबैमस नोविग्युना)* इन द्वीपों में केवल निकोबार में है। यह एक कीट के समान छिपकली है जिससे कोई अंग नहीं होते है और आँखे भी पूरी विकसित नहीं होती है। इसका विस्तार निकोबार से न्यू-ग्यूनिया तक है।

यह एक छेद करने वाली और अयनवृत्तीय जंगलों के हयूमस में रहती है। इसका ऊपरी भाग बैंगनी भूरा और पीला होता है। यह अपनी पूँछ को छोड़नें में पूरी तरह सक्षम है।

उभयचर – एम्फिबिया (जल-थल चर)

इन द्वीपों के जल-थल चर का पूरी तरह सही रूप से खोज नहीं हो पायी है। इन द्वीपों से कुल 18 जातियों का पता चला है। इनमें से भारतीय टोड *(ब्यूफो मिलैनोस्टिक्टस)* और धान का मेंढ़क *(राना लिम्नोकारिस)* अण्डमान औरं निकोबार में सामान्य रूप से पाये जाते है।

मेंढ़क

इन द्वीपों में जलीय मेंढ़को (जीनस *राना*) की निम्न जातियाँ मिलती है :

1. **भूरा मेंढ़क *(राना डोरी)*** : इसका प्रमाण केवल उत्तरी अण्डमान से है।
2. **धान का मेंढ़क *(राना लिम्नोकारिस)*** : यह इन द्वीपों का सामान्य मेंढ़क है और इसकी दो उपजातियाँ *(राना लिम्नोकारिस अण्डमानेन्सिस)* और *(राना लिम्नोकारिस लिम्नोकारिस)* है। इनमें से पहली केवल अण्डमान द्वीप में पायी जाती है जबकि दूसरी अण्डमान और निकोबार में पायी जाती है।
3. **निकोबार मेंढ़क *(राना निकोबारेन्सिस)*** : यह निकोबार द्वीप में पाया जाता है।
4. **खारे पानी का मेंढ़क *(राना कैन्कीवोर)*** . यह मेंनग्रूव जंगलों में मिलता है। थल मेंढ़कों की केवल दो जातियाँ *(माइक्रोहाइला इनोर्नाटा)* और *(माइाक्रोहाइला चक्रापानी)* का प्रमाण केवल अण्डमान से मिलता है। अन्तिम मध्य अण्डमान का स्थानीय है। पेड़ पर रहने वाले मेंढ़क। *(कीकोफोरस ल्सूकोमीस्टैक्स)* ग्रेट निकोबार द्वीप से इकट्ठा किया गया है।

टोड्स

जैसा कि पहले कहा गया है, भारतीय टोड, *(ब्यूफो मिलैनोस्टिक्टस)* पूरे द्वीप समूह में पाया जाता है। एक दूसरा टोड *(ब्यूफो कामोटान्सिस)* कर्मोटा द्वीप से एकत्र किये गये नमूनों का वर्णन है। यह जाति पर्याप्त रूप में कार निकोबार में भी पायी जाती है।

मछलियाँ

मछलियाँ जल-जीवन के प्रति भलि-भाँति अनुकूल होती हैं। मछलियों में दो बड़े वर्ग हैं-कांन्ड्रिक्थीस जैसे शार्क और स्केट और ऑस्टिक्थीस जैसे कॉड, हेरिंग, ईल और सोल। इनका शरीर हर प्रकार के जलीय जीवन के अनुकूलित होता है। इनमें श्वसन की क्रिया जीवन पर विशेष संवहनी प्रवर्धो द्वारा होती है जिन्हें गिल कहते हैं। गिल ग्रसनी में पाये जाने वाले गिलछिद्रों की दीवारों से बनते हैं तथा विशेष क्लोम-चायें इन्हें आश्रय देती हैं। मछलियों का प्रमुख चलनाश इनकी शक्तिशाली पेशीयुक्त पूंछ होती है। पूँछ के अलावा एक-एक जोड़ा अस तथा श्रोणी का भी होता है। कुछ मध्यावर्ती अयुग्मित पंखें भी होते हैं। ये भी सन्तुलन में ही सहायता देते हैं। मछलियों का शरीर प्रायः एक विशेष बाह्य कंकाल से ढ़का होता है। यह कंकाल चर्वी दान्तिकाओं, चर्क शल्कों तथा अस्थाई पट्टिकाओं के रूप में होता है। डिप्नोई उपवर्ग को छोड़कर बाकी सभी मछलियों के ह्दय में केवल बायाँ अलिंद होता है।

एक विशेष बात यह है कि इनके ह्दय में केवल शिरा-रूधिर के रूप में शरीर के विभिन्न भागों में वितरित हो जाता है। मछलियों में प्रायः एक वायु-आशय भी होता है जो एक द्रवस्थैतिक अंग का कार्य करता है। मछलियों के शरीर पर विशेष प्रकार की वक्र-इन्द्रियां होती हैं, जिन्हें पार्श्व-रेखा-अंग कहते है। ये पार्श्व रेखा अंग जो पार्श्व दिशाओं के कतारों में स्थित होते है, जलीय जीवन की एक विशेष आवश्यकता है, क्योंकि इन्ही अवयवों की सहायता से ही ये जीव पानी के दाब तथा लहरों को महसूस करके दूसरे जीवों की गतिविधियों का ध्यान रख सकते है।

मछलियाँ (पाइसीज)

इस वर्ग को पाँच उपवर्गो में बाटाँ गया है.

1. **उपवर्ग प्लेकोडर्काई:** इस उपवर्ग में रखी जाने वाली मछलियों के कोई भी सदस्य आधुनिक काल के जींव नहीं है।

2. **उपवर्ग इलेस्काब्रेकांई:** इस उपवर्ग में रखी जाने वाली मछलियों में उपास्थीय अन्तः कंकाल होता है तथा त्वचा प्रायः पट्टाभ-शल्कों से ढकी होती है। नर इलेजकोब्रेंक मछलियों में श्रोणि पखों पर आलिंगक होते हैं। इन जीवों के अवस्कर छिद्रों को ढकने के लिए प्रच्छद-ढक्कन नहीं होते। इनके अण्डे कुछ बड़े होते हैं जिनके ऊपर श्रृंगी केस चढ़े होते हैं। कुछेक जाति (स्पीसीज) को छोड़कर लगभग सभी इलेज्कोब्रैंक मछलियाँ समुद्र में निवास करती हैं। शार्क, स्केट तथा रे कहलाने वाली मछलियों में असं-पखों के अगले किनारे स्वतन्त्र होते हैं। स्केट तथा रे मछलियाँ के शरीर पृष्ठीय-अधर दिशाओं से चिपका हुआ होता है। असं-पंख बहुत बडे होते हैं तथा पूर्वी किनारे सिर के साथ जुड़े हुए होते हैं। गिलछिद्रों के पांच जोडे अधर दिशा में स्थित होते हैं। परन्तु स्पादरेक्लों का एक जोड़ा पृष्ठीय पंख केवल पूँछ पर ही होते हैं। गुदा-पंख का अभाव होता है।

उपवर्ग टीलियोस्टोगाई

मछलियों की अधिकतर किस्में इसी उपवर्ग के अन्तर्गत आती है। इन मछलियों का अन्तः कंकाल अस्थीमय होता है तथा शरीर प्रायः अस्थीमय शल्कों से ढ़का हुआ होता है। आधुनिक मछलियों के लगभग 95% इसी उपवर्ग के अन्तर्गत आती है तथा इनकी कोई 25,000 जाति (स्पीसीज) अलवण तथा समुद्री जल में पायी जाती है। गण (जीनस) *सीलाकैंथिफार्किस* की केवल एक मछली *लेटिकीरिया* सन् 1938 में दक्षिणी अफ्रीका के समुद्री जल से प्राप्त हुई थी। इस पुरातन जीव को भी पहले विलुप्त समझा जाता था, इसी कारण इस मछली को अब प्रायः जीवित-जीवाश्म भी कहते हैं।

आधुनिक काल की लगभग सभी मछलियाँ ऐक्टीनोटैरिजाई वर्ग के अन्तर्गत आती है इनमें अन्तः कंकाल अस्थीमय होता है। जिसके अन्तगर्त सुप्रसिद्ध भोजन-मछलियाँ आती हैं।

गण *ऐग्युलिफॉर्किस* मछलियाँ का शरीर सर्पमीन जैसा होता है। पृष्टीय-पंख तथा गुद-पंख बहुत लम्बें होते है तथा पीछे निकले हुए होते हैं। उदारणार्थ, ऐंग्युल्ला, जिसे अलवन पानी की सर्पमीन भी कहतें हैं। यह सर्पमीन अपनी प्रवासी शक्ति के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

गण *बेलोनिफॉक्रिस*

ये अमुख वाताशयी मछलियाँ हैं। इनके पंखों में कंटक नहीं होते। असं-पंख बहुत ऊँचें लगे होते हैं। उदाहरणार्थ, जिसे अर्धचोचं भी कहते हैं। हेमीरैम्फस, जिसे उड़न मछली भी कहते हैं।

गण *सिनग्नैथिफॉर्मिस*

ये मछलियाँ भी अमुख वाताशयी होती हैं। इनका पहला पृष्ठीय पंख काँटेदार होता है। प्रोथ नलाकार होता है। ये मछलियाँ बहुत दिलचस्प है क्योंकि इनमें बहुत अधिक शारिरिक विशिष्टीकरण होता है।

उदाहरणार्थ, सिनग्नैथस इसे पाइप मछली भी कहते हैं। इसमें एक लम्बा प्रोथ होता है जिसके शिखर पर छोटा सा मुख होता है। त्वचा अस्थिकय पट्टिकाओं के छल्लों से सुदृढ़ बनी होती है। गिलछिद्र बहुत सूक्ष्म होते हैं। इनमें श्रोणि पखों का अभाव होता है। नर मछलियों के अधर दिशा में एक अण्डकोष्ठ होता है। इनकी पूंछ परिग्राही होती है तथा इस पर एक पुच्छ-पंख होता है।

गण *हिप्पोकैम्पस*

इस मछली को समुद्री घोड़ा भी कहते हैं क्योंकि इसका आकार घोड़े की गर्दन से मिलता है। यह शरीर को अनुलम्ब दिशा में खड़ा करके तैरती है। नर मछली में अण्डकोष्ठ होता है। इसकी लम्बी परिग्राही पूँछ पर पुच्द-पंख नहीं होता।

गण *पर्सिफॉर्मिस*

यह समुद्री मछलियों का एक विशाल गण है। इनको पर्च मछलियाँ भी कहते हैं। इनके पंखों पर काँटे होते हैं। उदाहरणार्थ, ऐनाबस, ग्रूपर, स्नेपर आदि।

गण *प्लूरोनैक्टीफॉर्किस*

इस मछलियों की दोनों ऑखें प्रायः एक ओर ही स्थित होती हैं तथा कपाल असकोकत होता है। पखों पर कटंक नहीं होते। उदहरणार्थ, *सेलिया; बोथस,* जिसे चपटी मछली भी कहते हैं।

गण *इकिनिफॉर्मिस*

इन मछलियों का पृष्ठीय पंख रूपान्तरित होकर सिर ऊपर स्थित एक आसंजक चकती के रूप में होता है तथा इस प्रकार स्वंय शक्ति लगाये बिना यह मछलियाँ दूसरे बड़ी जैसे शार्क, व्हेल, डोलफीन एवं कछुए से चिपक कर घूमती रहती है। उदाहरणार्थ, *इकिनिस*।

गण *टैटराऔंटिफॉर्मिस*

इन मछलियों के गिलछिद्र बहुत कम होते हैं। यदि अपर-पंख हों तो वे वक्षीय होते हैं। कुछेक में वायु कक्ष भी होते हैं। उदाहरणार्थ, *आर्थोडोन* तथा *डाइओडान*।

गण *क्लथूपिफॉर्मिस*

यह एक बडा गण (जीनस) है जिसमें हिल्सा एवं हैरिंग जैसी सुप्रसिद्ध मछलियाँ आती है। इनका पुच्छ-पंख समपालिपुच्छी होता है। कशेरूक-काय आपस में जुड़ी होती है। इनके शल्क प्रायः चक्राभ होते हैं। इन मछलियों वेबर अस्थिकाएँ नहीं होती। उदाहरणर्थ, हिल्सा, सार्डिन, यह भोजन के रूप में प्रयुक्त की जाने वाली प्रसिद्ध मछली है।

समुद्री मछलियाँ

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह अपने मछलियों के लिये बहुत धनी है। इस क्षेत्र से मछलियों अण्डमान सागर में व्यापारिक उद्धेश्य से स्पष्टतः पकड़ी जाती है :

शार्क और रेज (*ककैर्हिनस* जाति *स्फाईना* जाति *डसयासि* जाति), क्रोकर्स (*डेन्ड्रोफाइसा रूसेली* और *पेन्नाहिया मेंकोप्यैलमस* और *जोनियस* जाति), स्वीपर्स (*पेम्फेरिस* जाति), सरडाइन्स (*सर्डिलेला* जाति), एन्काबी, सरडाइन्स (*सर्डिनेला* जाति), अन्कोबीज (*स्कोलोपिस सिलिएटस*), सीर मछली (*स्कोम्बिरोमोरस कामरसोनी, स्कोम्बिरीमोरस गुटैटस*), मेंकेरल (*रास्ट्रीलिगर ब्रैकीसोमा, सस्ट्रीलिगर, कानाखुर्ता*), टुना (*थुन्ना टान्गोल*), थुन्ना अल्बाकेर्स, थुन्ना ओबिसस मार्लिन (*टेट्राप्टीरस औडेक्स*), पोनीफिशेज (*लियोग्नैयसडौस* जाति), मूलेट्स (*मुगिल, लिजा, वालामुगिल* जाति), स्नैपर्स (*लुटजैनस* जाति), इल्स (*एन्गुइ बेन्गोलोन्सिस*), सिल्वर साइड (*एथोरिनोमारस लैकुनोरस*), सी पर्चेज (*इपिनीफिस* जाति, *सिफलोफोलिस* जाति और *प्लवटरोपोमस* जाति), बैराकुडस (*स्फीरीएना* जाति), ऐम्पेरर ब्रीम (*लेथिरेनस* जाति)

इनके आलावा बहुत सी और भी मछलियाँ है जो इन द्वीपों में लघु फिशरी बनाते है, इनमें से कुछ निम्न है :

पिगफेस ब्रीम्स/इम्परर्स/लेथ्रीनस जाति। स्कैड और जैक्स (*करैन्कस* जाति, *सीलर* जाति *उलुआ मेंन्टालिस, मेंगालैस्पिस कार्डियाला*), लैन्डर (*स्यूडोर्होबस डुप्लिसिओसिलैटस*)

फैले समुद्र की मछलियों में सर्डाइन्स, मेंकेरल्स और टुना इन द्वीपों की आर्थक उपयोग की मानी जाती है जो पूरे खपत की क्रमशः 13, 12 और 5 प्रतिशत हैं। डेमेंर्सल मछलियों की ढेर की पकड़ सी पर्चेज है। वास्तव में डेमेंर्सल बाजार से अच्छी कीमत नहीं लाती है। इस क्षेत्र की अच्छी कीमत वाली मछलियाँ हैः ब्रीम्स, बैराकुडस, जैक्स, मफैलेट और सीर (सुरमाई) मछलियाँ।

यद्यपि इन द्वीप समूहों का खाड़ी क्षेत्र 1960 कि.मी. लम्बा है फिर भी यहाँ कुल मत्स्य दोहन अपेक्षाकृत कम है। सम्भवतया यह द्वीप समूहों के किनारे पथरीले और मूगें के चट्टान होने के कारण है क्योंकि इनमें गीयर वाले पोतों द्वारा मत्स्य दोहन कठिन होता है और यहाँ परम्परागत मछुवारों के परिवार भी नहीं है जैसा कि मुख्य भूमि में है। वर्ष 2002 से इन द्वीपों से ग्रूपर मछलियों का जीवित रूप में तथा स्नैपर, एम्पेरर मछलियों बर्फ में रखकर में सिंगापुर, हागकांग के बाजार में निर्यात करना शुरू किया गया। इन मछलियों का अन्तराष्ट्रीय बाजार में काफी मूल्य है।

मीठे पानी की मछलियाँ

प्राकृतिक तालाब और पोखर इन द्वीपों में बहुत ही कम है। फिर भी मानव निर्मित कुछ बड़े मीठे पानी के जालशय, तालाब और पोखर है जो कैदियों और विभिन्न क्रियाकलापों (परियोजनाओं) के दौरान खोदे गये। द्वीपों में मीठे पानी के कुछ सोते वास्तव में है। पहाड़ी क्षेत्रों में ये सोते पहाड़ी झरनों में बदल जाते है। ये अपर्याप्त है और बरसात को छोड़कर बाकी दिनों में ये बहुत ही छिछले होते है।

मीठे पानी की मछलियों की लगभग 20 जातियाँ इन द्वीपों के तालाबों और पोखरों में पायी जाती है जिनमें से 5 से 6 जाति मनुष्य के माध्यम से यहाँ लायी गई हु। इन मछलियों में निम्न जातियाँ हैं जो मुख्य भूमि में भी बहुत सामान्य है .

1. कार्प्स *(लोबियों रोहिता, कतला, सिट्टीइना म्रीगाल, रसबोरा डैनिकोनियस)*
2. मुरेल्स *(चन्ना पन्कटैटस, चन्ना ओरिएन्टालिस)*
3. कैट-फिश *(हेटेरोन्यूस्टीस फासिलिस, क्लेरियस बटराकस)*
4. अनाबस *(अनाबस टेस्टुडिनिअस)*
5. तिलापिया *(ओरिओक्रोमिस मोजाम्बिक)*
6. मीठे पानी की इल *(एन्गुइला ब्राइकोलर)*

इन द्वीपों में बारहमासी नदियाँ बहुत ही कम है। लेकिन ग्रेट-निकोबार में पांच ऐसी नदियाँ गलेथिया, अलेक्जेन्ड्रा, डोगमार, अमृतकौर और जुबली है जिनमें सालभर पानी रहता है। इन नदियों की मछलियों का सही रूप में खोज नहीं किया गया है। उत्तरी अण्डमान कलपोंग में नदी भी सालभर बहने वाली है। इसी नदी पर जल विद्युत परियोजना सफल रूप से बिजली उत्तरी एवं मध्य अण्डमान में पहुँचा रही है। दक्षिण अण्डमान में मीठे पानी के कई झरनें एवं छोटी नदियाँ हैं।

शार्क मछली

शार्क मछलियाँ, मछलियों की उस श्रेणी में आती हैं जिनका आंतरिक कंकाल, उपस्थी का बना होता है। शीर्ष भाग नुकीला होने के अलावा हथौड़े के आकार का भी होता है। शार्क प्रजातियों में मुख्यतः आम भारतीय शार्क, हथौड़े जैसे सिरवाली, सात गलफड़ो वाली शार्क आदि उनके कुछ उदारहण हैं।

शार्क मछलियाँ हिन्द महासागर में सभी भारतीय तटों पर पायी जाती हैं। इसके अलावा भूमध्य सागर, अटलांटिक सागर तथा यूरोपीय तटों पर भी पाई जाती हैं। ये मछलियाँ माँसाहारी होती हैं। इनका भोजन केंकड़ा, झींगा छोटी मछलियाँ हैं। इन मछलियों में अपने भोजन को बहुत दूर से सुगंध द्वारा जान लेने की अद्‌भुत शक्ति होती है। शार्क के दांत एक जैसे नुकीले होते हैं। ये ऊपर व नीचे के जबड़ो में होते हैं।

शार्क का यकृत पीले रंग का व काफी बड़ा होता है। यकृत को धूप में सुखाने मात्र से ही उससे तेल निकलना आरंभ हो जाता है। इस तेल का उपयोग विभिन्न प्रकार के प्रसाधनों में किया जाता है, विशेषकर चेहरे की मंहगी क्रीमों में।

शार्क में दो प्रकार के पंख पाये जाते है। यह सर्वविदित तथ्य है। परन्तु पंख पानी में तैरने में कम और संतुलन बनाने में तथा दिशा बदलने में अधिक सहायक होते हैं। क्या इन पंखों का उपयोग मानव अपने कामोत्तेजना के लिए कर सकता है। शायद ही कोई माने या न माने लेकिन यह सत्य है। शार्क पंखों को काटकर इन्हें सुखाया जाता है।

शार्क के पंखों को सिंगापुर व मलेशिया में निर्यात किया जाता है। जहाँ इनसे पंख शिरायें निकालकर उनकों जापान, यूरोप व अरब देशों में भेजा जाता है। विदेशी इनसे पेय पदार्थ बनाते है जिससे पीने वाले को प्राकृतिक कामोत्तेजना होती है। विदेशी बाजार में इन पंखों की भारी मांग है।

आज कल शार्क की चमड़ी का उपयोग बहुमूल्य जैकेट बनाने में किया जाता है। जैकेट उद्योग में इटली ही विश्व में ऐसा देश है, जो इस कार्य में दक्ष है।

शार्क मछलियों का शिकार दुनिया में अंधाधुध हो रहा है। शायद इसके बहुआयामी उपयोगो के कारण इसके संरक्षण के लिए विदेशों में सशक्त कदम उठाये गये हैं। लेकिन भारत में इस ओर विशेष ध्यान हाल ही में दिया गया है।

एकाईनोडर्मेटा (शूलचमी)

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की प्राणी विविधता भारत देश में अपना अनोखा स्थान रखती है। इन द्वीपों का प्राकृतिक संसाधन वैविध्यपूर्ण और प्राणी विविधता उष्णकटिंबधीय क्षेत्र की विशेषता रखती है। इन द्वीपों में सभी तरह के प्राणी पाए जाते हैं जो कि विभिन्न पारिस्थितिक में रहते हैं। विकसित अकशेरूकी प्राणियों की पारिस्थितिकी एवं वितरण प्रणाली का विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया है, मुख्यतः क्रस्टैशिया (आथ्रोपोडा), मोलस्का, एकाइनोडर्मेटा (शूलचर्मी)। इस समुदाय में आनेवाले अधिकतर प्राणी समुद्र में मिलते हैं। एकाइनोडर्म प्राणी सीलोमी समुद्री जन्तु होते हैं। एकाइनोडमेंटा के फैदर-स्टार, तारामछली, ब्रिटिल-स्टार, समुद्री अरचिन, एवं सी-कुकम्बर (समुद्री खीरा) की जातियाँ आती हैं। जिनकी विश्व में 6226 जातियाँ हैं। भारत में 765 जातियाँ और इन द्वीपों में 336 जातियाँ पाई जाती है। समुद्री खीरा की कुछ जातियाँ ऐसी हैं जिनका यहाँ से चोरी-छिपे निर्यात होता है और इनके सूखे हुए शरीर से सूप बनाया जाता है। जो कि कई देशों में प्रचलित हैं। इनकी विशेषता यह है कि इनका पूरा शरीर छोटे-छोटे कांटों से भरा रहता है।

कुछ जातियाँ पौधों की तरह एक ही स्थान पर रहती हैं तथा दूसरी जातियाँ स्वतंत्र रूप से एक जगह से दूसरी जगह जा सकती हैं। अधिकांश एकाइनोडर्मो में अपने शरीर के भागों को तोड़कर त्यागने और पुनरूद्भवन करने की सामर्थ्य काफी हद तक पायी जाती है। यह शक्ति शायद उनके बचाव का एक सार्थक कदम है।

1. **क्राइनॉइडिया (फैदर-स्टार) :** ये सामान्यतः सवृंत किस्में हाती है। जिसके पाँच संश्रित भुजाए पाई जाती हैं जो प्रायः शखित होती हैं। ये भुजाए एक केन्द्रीय प्रवारक से निकलती हैं और इन पर पिच्छिकाएँ पाई जाती हैं। फेदर-स्टार या समुद्री लिली एक संधित वृत द्वारा स्थायी या अस्थायी रूप से स्थानबद्ध होने के कारण अन्य एकाइनोडर्मो से भिन्न होते हैं। अधिकतर क्रइनॉइड गहरे जल में पाए जाते हैं और अनेक प्रवाल भित्तीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये जन्तु चट्टानों या पत्थरों पर चिपके रहते हैं। छोटे-छोटे प्राणी जैसे डयाटम, प्रोटोजोआ, सूक्ष्म क्रस्टैशिय जल की धाराओं के साथ बहकर भुजाओं पर स्थित आहार-खाँचों में होकर केन्द्रीय मुख तक पहुँचते हैं।

2. **ऐस्टेरॉइडिया (सी-स्टार, स्टार-फिश) :** इस वर्ग में तारे जैसे या पंचभुजीय एकाइनोडर्म प्राणी शामिल है जो शरीर के मुख्य अक्ष से समकोण बनाते हुए प्रायः चपटे होते हैं। इनमें सामान्यतः सुव्यक्त सरल भुजाएं पाई जाती हैं जिनमें गोनड और आहार-नली के बढ़े हुए भाग पाए जाते हैं, युग्मित अस्थिकाओं पर सधी हुई एक अथर वीथी-खाँच होती है, जिनमें नाल-पाद होते हैं। इनकी त्वचा पर व्यवस्थित रूप से स्थित कैल्सियम प्लेट पाई जाती है, जो प्रायः शूलमय होती है। एक बाह्य मेंडेपोराइट पाया जाता है। निचली सतह के बीच में मुख स्थित होता है और विपरीत छोर पर सामान्यतः गुदा होती है। समुद्रतट के कुंड़ो में पाई जाने वाली सामान्य पंचभुजीय स्टार-फीश को अक्सर उन स्थानों पर देखा जा सकता है जहाँ जल कम होता है। लेकिन समुद्रतल में काफी गहराई में स्टार-फिशों के झुंड पाए जाते हैं। इन स्थानों पर वह अपने नाल-पादों की सहायता से धीरे-धीरे चलती है।

3. **ओफियुराइडिया (ब्रिटिल-स्टार)** : इस वर्ग में वे एकाइनोडर्म शामिल किए जाते हैं जिनका चपटा शरीर ताराकार होता है। ब्रिटिल-स्टार का शरीर स्टार-फिश के शरीर से भिन्न होता है और भेद यह है कि इनमें भुजाएं पेटिनामा खाँचे से बना होता है और इनकी गति साँप की तरह होती है। ये भुजायें केन्द्रीय डिस्क से मानी एकाएक निकली होती है। भुजाएं पेशीयुक्त होती है और रेंगने चढ़ने में सहायक होती है। भुजाओं में आहार नली की बहिवृद्धियाँ नहीं होती लेकिन सभी जननांग होते हैं।

4. **एकाइनोइडिया (समुद्री अर्चिन)** : इस वर्ग के अंतर्गत वे एकाइनोडर्म प्राणी आते है जिनका शरीर प्लेटों की कतारों से ढ़का होता है। इन प्लेटों की सामान्यतः एक ऊर्ध्वाधर श्रृंख्ला होती है जिससे एक मजबूत चोल का निमार्ण होता है। अधिकांश एकाइनोडियों की आकृति लगभग गोलाकार होती है। चोल ऊपर शूलों से ढ़का होता है। चलन और श्वसन नालपाद सामान्यतः परिमुख से लेकर अपमुखी ध्रुव के पास तक पाये जाते हैं। मुख निचले धृव पर स्थित होता है। अधिकांश समुद्री अर्चिन पथरीले तटों पर दूर तक पाए जाते है और उनमें से अधितर अपने आप को निष्क्रिय रूप में छेदों में छिपाए रखते हैं। वे अपने नालपादों और शूलों की सहायता से चलते हैं।

5. **होलोथुराइडिया (समुद्री खीरा)** : ये बेलनाकार या कृमि जैसी आकृति वाले एकाइनोडर्म होते हैं और इनका शरीर अपने मुख्य अक्ष की दिशा में लंबा होता है। इनकी त्वचा सामान्यतः मुलायम या चमड़े जैसी होती है। सूक्ष्मदर्शीय प्लेट अव्यवस्थित ढ़ंग से फैली हुई होती है, देह भित्ति पेशीयुक्त होती है। गुदा पिछले सिरे पर स्थित होती है। होलोथूरियन प्राणी अधिकांश समुद्रों में कम गहराई से लेकर अधिक गहराई तक पाए जाते है। वे छोटे-छोटे जंतुओं से और बालू में पाई जाने वाली कार्बनिक कणिकाओं से भरण-पोषण करते है। कुछ होलोथूरियन भोजन को अपने हिलते डोलते स्पर्शकों से पकड़ लेते हैं, बाद में इन्हें भोजन ग्रसनों में पहुँचा दिया जाता है। होलोथूरियन यदि पकड़ लिया जाता है तो उसकी पेशियां बहुत

संकुचित हो जाती हैं और इस दबाव के कारण अंतरंग बाहर निकल आते हैं। विश्व के विविध भागों में अब तक 670 से अधिक होलोथूरियन जातियाँ (स्पीजीस) हैं और इसमें लगभग 75 जातियाँ (स्पीजीस) 20 मीटर गहराई के उथले जल में दिखाई पड़ती हैं। इसमें 15 जातियाँ (स्पीजीस) वाणिज्य की दृष्टि से मूल्यवान हैं।

बेश-द-मेंर: संसाधित समुद्री खीरा को बेश-द-मेर कहते है। यह पूर्व-दक्षिण एशिया के लोगों का विशेष भोज्य है। भारत से इसका विशेष रूप से निर्यात सिंगापुर की ओर होता है। अण्डमान और निकोबार द्वीपों में होलोथूरियन के मत्सयन पर रोक लगायी है। कानूनी रोक के बावजूद पड़ोसी देश बर्मा, थाईलैड़ एवं इण्डोनेशिया के मछुआरे चोरी छिपे इन समुद्री संसाधनों का शिकार करते हैं एवं विस्फोटक के द्वारा प्रवालभित्ति क्षेत्र में पाये जाने वाली मछलियों को भी पकड़ते हैं।

कांटो का मुकुट तारा मछली (एकैन्थस्टर प्लैन्सी)

एकैन्थस्टर प्लैन्सी एक तारा मछली है जिसे काँटो का मकुट के नाम से भी जाना जाता है। यह तारा मछली समुद्री वातावरण में होते हैं और इसका विशेष गुण काँटों से युक्त त्वचा होने के कारण इसकी इकानोडरमेटा प्राणी समुदाय में रखा गया है। इसकी खोज सर्वप्रथम 1743 में लीनियस द्वारा की गई थी। इसका महत्व हमारे समुद्री वातावरण में प्रवाल भित्ति का विनाश करने के कारण बढ़ गया है। इनकी आबादी अधिक बढ़ जाने से पूरे के पूरे प्रवाल भित्ति का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है, जिससे कि प्रवाल भित्ति में रहने वाले दूसरे जन्तुओं पर भी असर पड़ता है।

यह तारा मछली पूर्व अफ्रीका, लाल सागर, हवाई से लेकर हिन्द प्रशान्त महासागर तक पायी जाती है। यह हिन्द महासागर से मालद्वीप, लक्षद्वीप, श्रीलंका और भारत की खाड़ी क्षेत्र अण्डमान निकोबार में भी मिलती है। इसे अभी तक अटलांटिक महासागर से रिपोर्ट नहीं किया गया है। अण्डमान द्वीप समूह में यह नील, सरहूज रॉस, नारकोन्डम, नॉर्थ रीफ, लिटिल अण्डमान और दक्षिण अण्डमान में और निकोबार द्वीप समूह में केवल नानकौरी में प्राप्त हुआ था। राजन (1992-93) निकोबार द्वीप

समूह में सर्वेक्षण के दौरान इसे लिटिल निकोबार, पिलोमिलो और ग्रेट निकोबार से भी रिपोर्ट किया गया है। इनकी कुछ संख्या में राष्ट्रीय मेंरीन पार्क वान्डूर (अण्डमान) में पाये जाने का व्याख्यान है। यह इस पार्क में ग्रब द्वीप, चस्टर द्वीप, एलेजैन्द्रा द्वीप, रेडस्किन द्वीप, मलाया एवं ट्विन द्वीप में भी देखे गये हैं।

काँटो का मुकुट तारा मछली की रंग बैगनी, नीला या भूरा नीला होता है। यह तारा मछ़ली अधिकतर प्रवाल भित्ति में ही देखने को मिलती है। इसका आकार 30 से. मी. व्यास वाला गोलाकार होता है, लेकिन कभी-कभी इससे भी बड़े आकार के देखने को मिले हैं। अभी 70 से. मी. व्यास वाली सबसे बड़ी इस तारा मछली को आस्ट्रेलिया के ग्रेट-बैरियर रीफ से रिपोर्ट किया गया है। सामान्यतः इसके शरीर में 15 भुजायें होती हैं लेकिन यह 7 से 23 तक भी हो सकते हैं। सभी भुजाओं पर लम्बें जहरीले काँटे होते हैं जो सारे शरीर को ढ़के रहते हैं। इस तारा मछली के काँटे कुछ विशेष तरह के काँटों की कतारों के साथ निचली सतह पर होते हैं। शरीर के केन्द्रीय भाग के मध्य में मलद्वार होता है। शरीर के मुख्य भाग में ऊपरी सतह पर चारों ओर कठोर संरचनाये हाती हैं जिन्हें सूक्ष्म कूटवाद कहते हैं। यह सतह को साफ करने का कार्य करते हैं। बाहरी सतह पर अंगुली के आकार की छोटी-छोटी थैलियाँ होती हैं जिन्हें पैपिली कहते हैं। यह श्वसन में मदद करती है। सभी भुजाओं की चोटियों पर हल्के गुलाबी रंग के संवेदनशील स्ट्रेटीयर होते हैं जो कि नालिकाकर गतिशील टेन्टेकिल हैं और इसका अगला एवं पिछला भाग नहीं होता। यह अपने किसी भी भुजा से गतिशील होता है। लेकिन भुजाओं की नलिकाकार पादों के कारण इसकी गति धीमी होती है। यह अपना भोजन अपने एठें हुए आमाशय को मुँह से बाहर निकाल कर करती है। यह पाचक रसों को प्रवाल के उतकों पर श्रावित करता है और पचे हुए उतकों को आमाशय के भीतर लेते समय अवशोषित करता है। प्रवाल में सफेद चिन्हों के होने से प्रवाल-भित्ति क्षेत्र में काटों का मुकुट तारा मछली के होने की पुष्टि की जाती है। इस तारा मछली की सतह

पर मुलायम ऊतकों में सैपोनिन नामक रसायन होता है जो कि क्रियाशील पदार्थ है।

तारा मछली के काँटें मनुष्यों को लगने से काफी दर्द होता है क्योंकि काँटों पर सैपोनिन वाले ऊतक की पर्त होती है और अधितर काँटों के उत्तक टूट कर शिकार के शरीर में रह जाते हैं और इस तरह अपनी सुरक्षा करते हैं। काँटों का मुकुट तारा मछली प्रवाल का भोजन करती है। इसके अलावा दूसरे प्राणी जैसे मछलियाँ, केंकड़े, घोंघे, स्लग्स, ढक्कनदार स्पंज, कृमि नूडिबैग, एक दूसरी तारा मछली *(कुटसिटा नोवागीना)* भी प्रवाल का शिकार करते हैं। लेकिन काँटों का मुकुट तारा मछली की उच्च जनसंख्या में सन्तुलन होने से और तारा मछली का शिकार करने वाली प्राणियों की उपस्थिति से प्रवाल पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता।

बाहरी आकृति में नर और मादा एक सामान दिखते हैं। निषेचन की क्रिया समुद्र के उथले जल में होती है जिसे बाह्य निषेचन कहते है। मादा तारा मछली एक घंटे मं 12.5 लाख अण्डे उर्त्सज करती है और पूरे जनन काल में दो अरब अण्डे देती है। नर तारा मछली इससे भी ज्यादा शुक्राणुओं का उत्सर्जन करता है। अण्डे एवं शुक्राणु अस्थाई रूप में जल में पाये जाने वाले प्लैक्टान के सदस्य हो जाते हैं। युग्मनज से गैस्ट्रला लारवा बाइपिनेरिया लारवा में और बाइपिनेरिया लारवा ब्रैकियोलैरिया लारवा में विकसित होता है। ब्रैकियोलैरिया लारवा सक्रिय रूप से भोजन करता है और स्वतंत्र रूप से तैरता रहता है और कार्यान्तिरित होकर तारा मछली में बदल जाता है। प्रारंभिक अवस्था में यह हल्के पीले रंग का पांच भुजाओं वाला होता है। इस अवस्था में यह अपना भोजन प्रवाल के बदले समुद्री शैवाल से पोषण करता है। जटिल पुर्नसंघठनात्मक परिवर्तनों के बाद वयस्क काँटों का मुकुट तारा मछली बन जाती है। जो कि अपना पोषण प्रवाल से आरम्भ करना शुरू कर देता है। सामान्यतः तारा मछली समूह के प्राणियों में पुर्नजन्म की क्षमता अत्यधिक होती है लेकिन इस तारा मछली में इसकी क्षमता सीमित होती है।

समुद्री सीप

विश्व के समुद्र एवं समुद्री किनारों पर पाये जाने वाले लाखों सीपियों में से प्रत्येक की अपनी एक जीवन कहानी है। अंडे से लारवा का बनना, इसका हतों महीनों तैरना और अन्त में समुद्र की सतह पर स्थिर हो जाना। यह जैसे-जैसे भोजन करता है और वृद्धि करता है यह अपने चारों ओर एक कठोर आवरण स्त्रावित करता जाता है, जब यह बढ़कर बहुत बड़ा हो जाता है तब इसकी पहचान हो पाती है कि यह क्या चीज है? कोमल शरीर वाले सुरक्षात्मक कवच वाले इस प्राणी में टेन्टेकिल, आँख, प्रबोसिस और चौड़ा माँसल पैर भी विकसित होता है। बाईवाल्ब प्राणियों में संकरे माँसल पैर, गिल, साइफन और संवेदनशील टेनटेकिल विकसित होते हैं।

कवच क्या हैं : कवच निर्माण का आधारभूत पदार्थ कैलसियम कारबोनेट है। एक दूसरा अवयव जो गैस्ट्रोपोड़ा के ओपरकुलम में पाया जाता है, कानक्योलिन एक तरह का प्रोटीन है जो पर्तो में स्त्रावित होता है और अधिक मजबूती प्रदान करता है। कवच के रंगो का क्रम इसके लगातार और आवर्ती जैविक विकास से विकसित होता है।

सीप के आवास: अन्य प्राणियों की तरह मोलस्क भी विभिन्न जैविक दशाओं में विस्तृत रूप से पाया जाता है। समुद्री किनारे पर चट्टानों से टकराने वाली समुद्री लहरों से लेकर बहुत अधिक गहराई जहाँ कोई गति न हो, में भी इनके बहुत से आवास होते हैं। जिनका अपना विशेष कवचधारी लक्षण होता है। ज्वारभाटा भी कवचधारी के लक्षण और विस्तार को प्रभावित करता है जो समुद्र के किनारे होते है।

मोलस्क को अपने जीवन-यापन के लिए सर्वोत्तम दशायें गरम वातावरण में ही मिलती है। और यही कारण है कि वहाँ विभिन्न प्रकार के तथा असामान्य सीप पाये जाते हैं। एक प्रवाल भित्ति गरम समुद्र के मोलस्क, रंगीन कोन्स, कठोर आवरण वाले विशालकाय बाइवाल्स जड़ो से चिपके रहते हैं। समुद्री अप्सरा कहे जाने वाले कवचधारी पत्तियों पर रेंगते है जबकि सेरिथस कीचड़ में रहते हैं। रेतीला किनारा विभिन्न

प्रकार के बाइवाल्ब मोलस्क का अनुकूलतम आवास हैं जबकि मेंनग्रूव में कटे-फटे आवास वाले बाइवाल्व और छेद करने वाले गैस्ट्रोपोड्स को आश्रय देता है।

मुहानों पर बालू और कीचड़ से मिलकर एक अच्छा भोजन प्रदान करने वाला क्षेत्र बनाता है जहाँ कोरल्स पाये जाते हैं। पथरीली किनारा गैस्ट्रोपोड्स के शिकार के लिए अच्छा क्षेत्र है क्योंकि यहाँ पर ये तेजी से चिपकते हैं।

वातावरण के प्रति अनुकूलन : विभिन्न परिस्थितियों में विकास के लिए मोलस्क में बहुत से तरीके विकसित होते हैं। कुछ प्रवाल में धंस जाते है और उसके साथ विकसित होते हैं, जबकि दूसरे स्वयं को प्रवाल से चिपका लेते हैं। पतले आवरण वाले, छेद करने वाली जातियाँ रेत में स्वयं को ढ़क लेती हैं। बाईबाल्व आराम से बालू की कड़ी परत में चले जाते हैं। धारारेखित तेज धारा वाले कवच इतनी तेजी से बालू में घुसते हैं कि इतना तेज कि एक आदमी भी नहीं खोद सकता। चट्टानी स्थानों की लिम्पेटस प्रत्यक्ष सच्ची कहानी है कि ये किस तरह अपने गुम्बज आकार के कवच को प्रशंसनीय रूप से स्थिर रखती है जिन पर लहरे लगातार धक्का मारती हैं।

आवासीय संरक्षण : आवासीय संरक्षण के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम यह है कि हम उन्हें हानि नहीं पहुँचाये। लगभग सभी पत्थरों और प्रवाल के समूह में जीवित प्राणी और पौधें होते हैं और यदि उनके इस छोटे से संसार को किसी भी तरह से थोड़ी भी हानि पहुँचाई गयी तो ये समाप्त हो जाएँगे। सीप एकत्र करने वालों द्वारा लगातार किसी एक समुद्री किनारे से सीप एकत्र करने से धीरे-धीरे इनके प्राकृतिक आवास को समाप्त कर देगा। हमें सदैव इन आवासों को और उनके प्यारे निवासियों का सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए।

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण सीप : इन द्वीपों में लगभग 1,000 से अधिक कवचधारी की जातियाँ पायी जाती हैं। इनमें से मात्र कुछ ही व्ययवसायिक महत्व की हैं। एक समय

द्वीपों का सीप व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान था। *(ट्राकस नाइलोटिकस)* व्यापारिक महत्व की जाति है। सन् 1900 से ही नियमित रूप से इनकों निकाला गया है। ट्राकस और टर्बो अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में समुद्र में बहुतायत में मिलती थी किन्तु इनके अत्यधिक दोहन के फलस्वरूप इनकी संख्या बहुत ही कम हो गई।

महत्वपूर्ण गैस्ट्रोपोड़स: *ट्राकस नाइलोटिकस* और *टर्बो मारमोरिटस* इन द्वीपों में अब सामान्य नहीं हैं। लगभग सभी खूबसूरत और बहुत ही प्रशंसनीय सीप, गुंबज, मुरीसीडस आदि है। पोर्ट ब्लेयर बाजार में मिलने वाले दूसरे सामान्य बड़े आकार वाले पथरीले किनारे के किंगशेल हैं *(कैसिया कानूर्टा),* क्वीन सीप *(कैसिया रूफा),* मुरेक्स आदि। नौटिलस गहरे समुद्र में रहता है किन्तु इसके कवच बहकर किनारे पर आ जाते हैं। ये बहुत ही हल्के और भंगुर होते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण और सुन्दर कवच गर्म समुद्र के कौरी मोल्सक हैं जिन्हें गहराई के रत्न नामक सामान्य नाम से जाना जाता है। छिछले समुद्री जल में ये मिलते हैं और प्रवाल बोल्डर तथा चट्टानों में छिपे होते हैं। टैगर कौरी सभी कौरियों में सबसे बड़ी होती है।

गुम्बज आकार के सीप कवचधारी वर्ग प्राणियों में सबसे अधिक कफैलीन माने जाते हैं। कोन्स माँसाहारी होते हैं और इनके प्रबोसिस में जहरीला डंक होता है। हिन्द प्रशांत क्षेत्र में खतरनाक जाने वाली जातियाँ *कोन्स जियोग्राफस, कोनस औलिकस, कोनस टुलियां* और *कोनस टेक्सटाइल* हैं। अण्डमान में इनके द्वारा मनुष्य पर घातक हमले का कोई प्रमाण नहीं है।

विशालकाय कठोर आवरण वाले बाइवाल्व कवचधारी मोल्सक *(ट्रैडैक्ना माक्जिमा)* बहुत ही बड़े और स्थूलकाय होते है। एक दूसरी जाति *(ट्रैडैक्ना क्रोसिया)* भी बहुत सामान्य है और ये *फेबिया* तथा *पोराइटा* जाति के बोल्डर्स में पायी जाती हैं।

मनुष्य द्वारा शैलफिश का शोषण : अण्डमान निकोबार में बहुत से कवचों के संचय क्षेत्र के निरीक्षण से इसका प्रमाण है कि आदिवासी लोग अक्सर

सीपों का शिकार भोजन के लिए करते हैं। सीप उस समय प्रोटीन का स्त्रोत होती है जब दूसरे प्राणी की कमी भोजन के लिए होती है।

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह के आदिवासी जो कि इनका शिकार करते हैं उसमें गैस्ट्रोपोड़ा और बाइवाल्व की कई जातियाँ होती हैं जिन्हें सामान्यतः औरतें और बच्चे एकत्रित करते हैं। सीप को, इनके विभिन्न आवासों जैसे प्रवाल क्षेत्र, रेतीले, कीचड़ के क्षेत्र, समुद्री घासों के क्षेत्र, मेंनग्रूव या चट्टानों से एकत्रित किया जाता है।

बहुत सी पसन्दीदा जातियाँ मुख्य रूप से रेत वाले क्षेत्र में पायी जाती हैं जो या तो उसमें धंसी होती हैं या ऊपर होती हैं। दुर्भाग्यवश शेलफिश के परम्परागत आदिम जनजातियों द्वारा एकत्रित करने के तरीकों के बहुत कम प्रमाण हैं। सम्भवतः खाड़ी की खोजें मुख्य रूप से कछुए, डुगांग और मछलियों के शिकार पर ही केन्द्रित हैं।

समकालीन सीपों को एकत्रित करना व्यवसायिक उद्धेश्य से इस व्यवसाय में लगे लोगों द्वारा शेलफिश की संख्या और इनकी आबादियों को भिन्न रूप से प्रभावित करता है। उदारहण के लिए बहुत से ट्राकस, टर्बो, लम्बिस, ट्रीडक्ना और स्ट्रोम्बस की जनसंख्या गहन सीप दोहन जो मोटरबोट और स्नोर्कल के उपयोग से किया जाता है। इसका कारण द्वीपों में सीप पर आधारित उद्योग भी है। इन द्वीपों में व्यावसायिक रूप से मिलने वाले सीपों की संख्या में अब काफी कमी आ गई है और सीपों की इनके आवासों में भी मिलना मुश्किल हो गया है। इसका कारण अनियमित रूप से सीपों को एकत्र करना तथा आवासों को नुकसान पहुँचाना है जैसे कि इन द्वीपों के समुद्री किनारों में दूसरे देशों जैसे बर्मा, थाइलैड़, इन्डोनेशिया आदि के लोगों द्वारा चोरी-छिपे इनका दोहन से क्षति करना और मछलियों को प्रवालभित्ति क्षेत्र में विस्फोटक पदार्थ के द्वारा पकड़ने से भी इनके आवासों को खतरा हो गया है। अब दूर-दराज के द्वीपों के प्रवालभित्ति क्षेत्र में क्षति हो रही है। अण्डमान निकोबार प्रशासन को चाहिये कि इसके दोहन के विरूद्ध उचित कार्यवाही की जाये क्योंकि इनके दोहन स्थान और संख्या का सही अनुपात और

निरीक्षण में कमी देखी गयी है। इन द्वीपों में बढ़ते सैलानियों की संख्या भी सीप की कमी का एक कारण है। जब तक सैलानि इन्हें खरीदते रहेगें तब तक इनकी संख्या में कमी आती रहेगी। अतः इसके शोषण और मुल्यांकन के लिए इनके प्रभावों को अनदेखी नहीं की जा सकती।

भीमकाय सीपी : समुद्र के किनारे के प्रवाल-भित्तियों के क्षेत्र का कौतुकपूर्ण आनन्दित करने वाला मनमोहक दृश्य महासीपियों का है। इनका चमकदार रंगीन विशाल ऐठनदार कवच किनारों पर पूरी तरह खुला होता है। ये महासीपी विश्व के सबसे बड़े बाइबाल्व कवचधारी हैं। इनमें से कुछ की लम्बाई एक मीटर से भी अधिक होती है और वजन 300 किलोग्राम से भी अधिक होता है।

ट्रैडैक्ना परिवार की महासीपियों की सात जातियाँ हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के प्रवाल भित्ति क्षेत्रों में पायी जाती है। इनमें से कुछ अण्डमान निकोबार समुद्र के प्रवाल भित्ति क्षेत्र में पायी जाती हैं।

सभी जातियों के लिए छिछले समुद्र का अत्यधिक खारा साफ गरम पानी आवश्यक है। प्रतीकात्मक रूप से ये प्रवालों के बीच है या बालू और प्रवाल भित्ति अवशेष पर रहती है। सबसे बड़ी महासीपी *(टैडैक्ना जैगस)* 20 मीटर तक की गहराई में रहते है। *(ट्रैडैक्ना डेरेसा)* दूसरी बड़ी महासीपी है जिसकी लम्बाई 20 से.मी. अधिक होती है। यह समुद्री वातावरण में बहुत ही सामान्य है जो भित्तियों के बाहरी किनारों की ओर 4 से 10 मीटर की गहराई में पायी जाती है। परतदार महासीपी *(टैडैक्ना स्क्वैमोसा)* सामान्य रूप से सुरक्षित प्रवाल क्षेत्र जैसे समुद्री झीलों के प्रवाल-भित्ति क्षेत्र में किनारे की और 15 मीटर की गहराई में पायी जाती है। महासीपी की बहुत ही सामान्य जाति *(ट्रैडैक्ना मौक्जिमा)* प्रवाल भित्ति की ढलान पर पायी जाती है। पहली दो जातियों की लम्बाई 40 से.मी. होती है। *(ट्रैडैक्ना क्रोसिया)* जो छेद करने वाली महासीपी है, पूरी तरह प्रवालो के भीतर छेद बनाकर रहती है। किन्तु इसके कवच प्रवाल के भीतर रहता है और ऊपरी भाग दिखाई देता है। ऊभरी हुई भित्तियों के चपटे भाग में यह बहुतायत से पायी जाती है। इसकी लम्बाई 15 से.मी. होती है।

सभी महासीपी द्विलिंगी होते है किन्तु इनमें पर-निषेचन होता है। अण्डाणु और शुक्राणु का स्त्राव ये पानी में करते है और निषेचन की प्रक्रिया पानी में ही होती है। शुक्राणु का स्त्राव पहले होता है। और बाद में अत्यतं सूक्ष्म लाखों की संख्या में अण्डाणु का अण्डोतसर्जन होता है। एक महासीपी के शुक्राणु स्त्राव के पास ही दूसरे महासीपी का अण्डोतसर्जन होता है जिससे उनके अण्डाणु और शुक्राणु मिल जाते है और इस तरह निषेचन होता है। सभी महासीपियों का जीवन चक्र एक समान ही होता है। युग्मनज विकसित होकर ट्राईकोपोरा लारवा बनाता है। यह बाद में बेलीजर लारवा में बदल जाता है। बेलीजर स्वतन्त्र रूप से तैरता है। महासीपियों की लारवा अवस्था शिशु महासीपी में कायांतरित हो जाता है। शिशु महासीपी की लम्बाई 0.2 मी.मी. होती है। ये गतिशील होते है और जब इन्हें सूत्र-गुच्छ द्वारा स्थिर होने के लिए कोई अवरोध नहीं मिल जाता तब तक पूरी तरह विकसित पाद में रेंगते है। तीन बड़ी जातियाँ में ये सूत्र धीरे-धीरे लुप्त हो जाते है और ये अपनी स्थिति अपने वजन द्वारा बना लेती हैं। महासीपियों के भोजन के दो स्त्रोत है (1) निस्यदन भोजी - आस-पास के समुद्री जन्तु के फाइटोप्लैकअन। (2) एक विशेष प्रकार के शैवाल जो सिम्वियोडिनियम जाति के हैं, से अपना पोषण प्राप्त करते हैं। ये शैवाल सहजीवी के रूप में इनके फैले प्रवाल में रहते हैं। इन्हें सामान्य रूप में जुक्जैथिलों कहते हैं। प्रकाश संश्लेषण द्वारा ये स्टार्च बनाते हैं जो सीधे महासीपी के उत्तकों में जाता है और बदले में जुक्जैथिली महासीपी के अपशिष्ट का उपयोग करता है। महासीपियाँ छिछले पानी में स्पष्ट दिखाई देती हैं इसलिए लोग इन्हें आसानी से पकड़ लेते हैं जिससे इसका आसानी से अधिक क्षय होता है। महासीपियों की संख्या अनेक क्षेत्रों में काफी कम हो गई है और कुछ क्षेत्रों में विलुप्त हो रही है। दो बड़ी जातियों *(ट्रैडैक्ना जैगस)* और *(ट्रैडैक्ना डेरेसा)* अंतराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ द्वारा विलुप्त होने वाली स्थिति में अंकित की गई है।

इनकी संख्या में कमी का प्रमुख कारण सीप के लघु कारखानों द्वारा शिकार और विदेशियों द्वारा अनाधिकृत प्रवेश और सीपों का शोषण है।

द्वीप समूह के आदिवासियों के भोजन का यह एक महत्वपूर्ण भाग है। ये लोग इनका शिकार शताब्दियों से करते आ रहें हैं क्योंकि इसकी अभिवर्तनी पेशियों में इनके वज़न का 10 प्रतिशत माँस होता है और इनके कवच को साफ करके सजावट के लिए प्रयोग में लाया जाता है। सन् 2003 से द्वीपों में इन सीपियों के दोहन पर पाबन्दी है।

हाल के वर्षो में महासीपियों पर की गई खोजों में कवच धारियों के अण्डों के औद्यगिक उत्पादन के महत्व पर प्रकाश डाला है। अण्डों से जुवेनिक लारवा का उत्पादन लाभप्रद और प्रभात्य हो सकता है। सम्भवतया बहुत ही खाली भित्तियों को फिर से इनके उत्पादन का क्षेत्र बनाया जा सकता है और इस तरह प्रवाल भित्ति समुदाय के इन महत्वपूर्ण जीवों की विलुप्ता के बढते क्रम को रोका जा सकता है। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो अण्डमान और निकोबार भित्ति क्षेत्र भी इन बाइवाल्ब जीवों को हमेंशा के लिए विलुप्त होने से बचा नहीं पायेगा।

अपनी व्यापारिक महत्व के अतिरिक्त ट्रेडैक्ना महासीपी का प्रयोग वातावरणीय खोजों, विशेषकर अत्याधिक धात्विक प्रदूषण की चेतावनी प्राप्त करने में होता है। ये बाइवाल्ब जीव अपने अन्दर धातुएँ जैसे जिंक, ताबां, कैल्सियम, काँच और पारा को निर्धारित स्तर तक जमा कर लेती है जिससे उनके आस-पड़ोस में इनकी सान्द्रता का पता चलता है। ट्रेडैक्ना परिवार की यह जैव संकेतन क्षमता प्रमुख रूप से उनके वृक्क में होती है। आज इनके पालन का बढ़ता वैज्ञानिक उद्देश्य मुख्य रूप से समुद्री प्रदूषण के अध्ययन और इसकी जाति को विलुप्त होने से बचाने के लिए आवश्यक है।

स्नेल्स, स्लग्स और मसेल्स : इन द्वीपों के स्नेल्स और स्लग्स मसेल्स की खोज ठीक तौर पर नहीं की गई है। फिर भी इन द्वीपों से इस समूह की 140 जातियों के प्रमाण है। जिनमें से अधिकांश का प्रतिशत उनका है जो यहाँ की स्थानीय हैं।

लैण्ड स्नेल (जमीनी घोंघा) : इन द्वीपों में जमीनी घोंघों की 85 के लगभग जातियों का पता है जिनमें से 75 स्थानीय है। इन स्नेलों में यहाँ अफ्रीकन स्नेल *(एकैटीना फूलिका)* बहुतायत से मिलता है। यह बड़े आकार का जमीनी स्नेल है और यह विभिन्न फसलों को नुकसान करने वाला स्नेल है। ऐसा समझा जाता है कि जापानियों द्वारा द्वितीय महायुद्ध के समय प्रोटीन की कमी की समस्या को हल करने के लिए इस स्नेल को इन द्वीपों में लाया गया। अब यह स्नेल सम्पूर्ण अण्डमान निकोबार द्वीप समूह उत्तरी, मध्य, दक्षिणी और लिटिल अण्डमान यहाँ तक की कार-निकोबार, कचाल, कार्मोटा, ननकौरी और ग्रेट निकोबार में भी पाया जाता है और फसलों को काफी हानि पहुँचाता है।

यह स्नेल द्विलिंगी और अधिक संख्या में नवजात पैदा करने वाला है यह वर्षा के मौसम में जनन करता है और एक बार 50-200 अण्डे देता है। इन अण्डों का एक सप्ताह में विकास होता है। 10-12 महीने तक जनन के योग्य होता है। बरसात के मौसम में यह स्नेल बहुत ही क्रियाशील होता है और अपने छिपे हुए स्थानों से रात में बाहर आता है। सामान्यतः यह दिन के समय पत्थरों के नीचे झाड़ियों में और दरारों में छिपा रहता है। लेकिन वर्षा के समय यह बहुत संख्या में केले के पेड़ में लटका हुआ दिन के समय में भी दिखाई देता है।

इन स्नेलों के नियंत्रण के लिए बहुत से भौतिक रासायनिक और जैविक उपाय प्रयोग में लाये गये। लेकिन ये सभी उपाय बिल्कुल असफल रहै। मेंटलडिइड पिलेटस 5 प्रतिशत इस स्नेल के नियंत्रण के लिए बहुत सार्थक है। लेकिन इस रसायन का उपयोग प्रयोगिक रूप में बेकार हो जाता है क्योंकि बरसात के कारण घोंघें के संपर्क में आने से पहले ही यह धुल जाता है। इसके जैविक नियंत्रण के लिए दो बाहरी परभक्षी स्नेलों की जातियाँ *गोयनाक्सिस क्वाड़ी लेटरीस* और *यूगोलेडिया रोजिया* हवाई से मंगायी गईं और इन द्वीपों में छोड़ी गई। एक भारतीय स्नेल, (*गफैलेला बाइकोलर*) एक कीटभक्षी, आर्थो मारफा जाति का और हरमीट कैब की चार जातियाँ जो (सिनोबीटा जीनस) संकंधित हैं, का प्रयोग भी इस स्नेल के नियंत्रण के लिए लिया गया लेकिन ये सभी

उपाय पूरी तरह असफल हो गए। राजन (2005) के अनुसार इन द्वीपों में पाये जाने वाला पक्षी अण्डमान क्रो पीजेंट के आहार में अफ्रीकन जमीनी घोंघा भी शामिल है। कुछ अच्छे परिणाम इसके आवासीय स्थानों को नष्ट करके जहाँ की यह स्नेल गर्मी के मौसम में शरण लेता है, पाया गया। यह विधि गर्मी के महीने मार्च और अप्रेल में अच्छी रहती है।

इन द्वीपों के दूसरे हानिकारक स्नेल *(मेंको कैलेमजी इन्डिका)* और *(ओपियाज ग्रेसाइल)* है जिनमें से पहला अण्डमान और निकोबार दोनों ही जगह बहुत सामान्य है फिर भी ये स्नेल इन द्वीपों की फसलों और बागवानी पौधों की नहीं के बराबर हानि पहुँचाते हैं।

स्लग (घोंघा) : घोंघो की प्रजातियाँ *लेविकुलिस आल्ट, हथलिमेंक्स अण्डमानिका* और *हथालिमेंक्स रैन्हार्टी* इन द्वीपों में पाई जाती है। जबकि इनमें से एक प्रजाति को पहली बार मुख्यभूमि के साथ-साथ विश्व के अयनवृत और उपअयनवृत भागों में पाया गया अन्य तीन प्रजातियाँ केवल अण्डमान निकोबार के इन द्वीपों तक ही सीमित हैं।

अण्डमान घोंघा *(हथालिमेंक्स अण्डमानिका)* केवल अण्डमान के द्वीपों में ही पाया जाता है। पीले आवरण के साथ इसके शरीर का रंग हल्का हरा होता है और इसके ग्रीवा के ऊपर का भाग यथाक्रम धारीदार नीले और लाल भूरे रंग का होता है। वर्षा ऋतु में अक्सर यह घोंघा पत्तियों के निचले हिस्से से चिपका हुआ दिखाई पड़ता है।

निकोबार घोंघा, *(हथालिमेंक्स रैन्हार्टी)* स्थानीय रूप से निकोबार के द्वीपों में पाया जाता है। यह बाह्य रूप से अण्डमान घोंघे से बिल्कुल मिलता जुलता है।

मीठे पानी के घोंघे और मसेलस: इन द्वीपों से मीठे पानी के घोंघे की 45 जातियाँ और मीठे पानी के मसेल्स की 6 जातियाँ का पता है जिनमें से 12 जातियाँ स्थानीय हैं। मीठे पानी के घोंघे में नेरीटिड्स की 5 जातियाँ, थायेरिड्स की 25 जातियाँ बहुत ही सामान्य हैं और झरनों में पायी जाती हैं। कोतूहलवश, भारत की मुख्यभूमि के कुछ गैस्ट्रीपाइड्स जैसे *(बैल्लायिय पाइला)* और *लिम्नीया* इन द्वीपों में बहुत ही कम पाये जाते हैं। गण (जीनस) *पैलुडोमस* से सम्बन्धित घोंघा जो भारतीय

मुख्यभूमि के पहाड़ी झरनों में पाये जाते हैं, इन द्वीपों के वैसे ही आवास में नहीं पाये जाते। मीठे पानी के सामान्य मसेल्स जैसेः लैमेंलिडेन्स, *पैरिईसिया वलाम्स (पिसिडियम और स्पीरिडियम)* जो भारत में बहुत ही समान्य है और सभी जगह पाये जाते हैं संयोगवश ये इन द्वीपों में नहीं मिलते। मीठे पानी के वाइवाल्व जो जीनस *(बतीसा)* से सम्बन्धित हैं अण्डमान और निकोबार दोनों द्वीपों में है जबकि ये कवचधारी भारत की मुख्यभूमि में नहीं हैं। लेकिन माले के द्वीप समूह और दूसरे समीपवर्ती द्वीपों पर मिलते है।

आर्थ्रोपोड़ा

आज के सभी जन्तुओं में आर्थ्रोपोड़ा प्राणी शायद सबसे अधिक सख्या में और विविध रूपों में पाए जाते हैं। इसमें अकेशेरूकी उपजगत का सबसे बड़ा और प्रमुख फाइलम है। आज जन्तुओं की जितनी भी जातियों (स्पीशीजों) की हमें जानकारी है उनमें से लगभग 98 प्रतिशत जातियाँ स्पीशीजें आर्थ्रोपोड़ा फाइलम में ही शामिल है, जो समुद्रों नदियों, झीलों पृथ्वी, मिट्टी के भीतर, बर्फीली चोटियों आदि सभी प्रकार के आवासों में मिलती हैं। सबसे अधिक सफल जन्तु कीटों के रूम में आर्थ्रोपोड़ा ही है। जंतुओं की ज्ञात स्पीशीजों में से तीन-चौथाई से अधिक स्पीशीजें आर्थ्रोपोड़ा फाइलम के अंतगर्त आती हैं। सबसे अधिक सफल जन्तु कीटों के रूप में आर्थ्रोपोड ही है क्योंकि अकेले कीटों की स्पीशिजों की संख्या (5,00,000) अन्य सभी जंतुओं की स्पीशीजों की मिली-जुली संख्या से अधिक होती है। जब हम इनकी संख्या और विविधता पर तथा स्थल, जल, और नभ के विभिन्न प्रकार के आवासों में सर्वत्र उनकी उपस्थिति पर विचार करते है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्थ्रोपोड़ा प्राणी जंतुओं में सबसे अधिक सफल है और तदनुरूप मानव-प्रगति में उनका प्रमुख योग होता है। एक तरफ तो ये मनुष्य के आहार-संभरण में योग देते हैं, पुष्पों के निषेचन तथा फलों के अधिक उत्पादन में सहायक होते है, लेकिन दूसरी ओर वे फसलों तथा खाद्य-भडांरों को क्षति पहुँचाते हैं, रोग-उत्पादक प्राणियों को मनुष्य तथा उसके पालतू जंतुओं तक पहुँचाते है और उन पर परजीवी के रूप में रहते हैं।

वर्गीकरण : चूँकि आर्थ्रोपोड़ा बहुत बड़ी संख्या में विविध किस्मों में पाए जाते है। आमतौर से इस फाइलम को पांच वर्गों (क्लासो) में बाँटा गया है :

(1) अँनिकाफोरा (2) क्रस्टेशिया (3) ऐरेक्निडा (4) मिरियापोडा और इन्सेक्टा।

इनमें से इन्सेक्टा क्लास (कीट वर्ग) आर्थ्रोपोडा की सबसे बड़ी और प्रमुख क्लास है, जिसके सदस्यों को आमतौर से कीट कहते है। कीटों का शरीर स्पष्टतः सिर, वक्ष और उदर में बँटा होता है। सिर पर एक जोडी ऋंगिकाओं के अलावा मुखांग, नेत्र और नेत्रक होते हैं। वक्ष के तीन खंड होते हैं, जिनमें से प्रत्येक पर प्रायः एक-एक जोड़ी टाँगे होती है; इससे अतिरिक्त दूसरे तथा तीसरे खंडो पर प्रायः एक जोड़ी पंख होते हैं। उदर आमतौर से 11 खंड़ो का होता है। इनका पाचन क्षेत्र तीन भागों में बँटा होता हैं, अग्रांत्र, मध्यांत्र और पश्चांत्र, और साथ में लार-ग्रंथिंया भी होती है। ये श्वांश नलियों से साँस लेते है। इनके उत्सर्जन-तंत्र में दो जोड़ी से लेकर अनेक जोड़ी कैलपीगी नलिकाएँ होती हैं। ये पृथ्क्लिंगी होते हैं। झींगुर, टिड्डी, मख्खी, तितली आदि कीटों के कुछ उदारहण हैं।

वर्तमान कीटों को 26 आर्डरों में रखा जाता है, जिनके अंतर्गत लगभग 1000 कुल (फैमिली) और कई हजार गण (जीनस) आते हैं।

कीट (इन्सेक्टा)

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह भारत के क्षेत्रफल का 0.25 प्रतिशत भाग दर्शाता है जिसमें बहुत से द्वीप होने के कारण यहाँ ही कीट विविधता अद्वितीय है। इन द्वीप समूह में भारतीय प्राणि सर्वेक्षण पिछले चार दशक से सर्वेक्षण कर रहा है और इस दौरान 200 से ज्यादा प्रकाशन किये जा चुके है। डा. कैलाश चन्द्र (2000) के अनुसार अब तक 2,256 कीट प्रजातियों की संख्या का पता लगाया जा चुका है। इन द्वीपों की भौगोलिक स्थिति एवं परिस्थितिकीय विषमता के आधार पर कीटों की जातियाँ 10,000 से अधिक होने की सम्भावना है। जिनका सर्वेक्षण करके पता लगाना आवश्यक है जिससे आगे यहाँ के परिस्थितिकी

बदलाव होने पर प्रभाव का अध्ध्यन किया जा सके। ज्ञात कीटों में 93 प्रतिशत प्रजातियाँ लिपिडोप्टेरा, कोलयोप्टेरा, हेमीप्टेरा, डिप्टेरा, हाईमेंनोप्टेरा, आरथोप्टेरा एवं ओडोनेटा वर्ग (आर्डर) के हैं और शेष 7 प्रतिशत प्रजातियाँ 12 छोटे वर्ग (आर्डर) के हैं। ज्ञात 2,256 कीट प्रजातियाँ में 485 प्रजातियाँ स्थानिक हैं जो कि 21.5 प्रतिशत भाग दर्शाती हैं और यह प्रजातियाँ इन्हीं द्वीपों में पायी जाती हैं। कुछ कीटों की प्रजातियाँ किन्हीं-किन्हीं द्वीपों में ही मिलती हैं और कुछ अण्डमान, निकोबार द्वीप समूह में अलग अलग एवं कुछ दोनों द्वीप समूह में सभी जगह मिलती हैं।

तालिका-3 : अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों में कीटों की विविधता

वर्ग (आर्डर)	कुल (फैमिली)	गण (जीनस)	जाति/ उपजाति	स्थानिय (एंडेमिक) जाति/ उपजाति	प्रतिशत %
कोलेम्बोला	3	8	8	-	-
ओडोनाटा	11	32	50	7	14.2
आथ्रोप्टेरा	11	47	67	12	17.9
फासमिडा	3	3	4	-	-
डरमाप्टेरा	5	7	8	2	25
एम्बियाप्टेरा	1	1	2	-	-
ब्लाट्टेरिया	5	8	12	-	-
मैनटोडिया	2	4	5	2	40
आइसोप्टेरा	3	12	38	21	55.2
फथिराप्टेरा	1	4	4	-	-
हेम्प्टेरा	47	188	250	36	14.4
थायसनोप्टेरा	2	25	30	2	6.6
न्यूरोप्टेरा	5	9	13	2	15.3
कोलियोप्टेरा	37	334	541	154	28.5
सिफोनोप्टेरा	1	1	2	-	-
डिप्टेरा	34	117	231	23	9.9
लेपिडोप्टेरा	41	522	795	200	25.1
ट्राइकोप्टेरा	7	12	20	-	-
हायमेनोप्टेरा	23	112	176	24	13.6
कुल	**242**	**1446**	**2256**	**485**	**21.5**

मकड़ियाँ और बिच्छू

इन द्वीपों से मकड़ी की 89 जातियों के प्रमाण अभी तक प्राप्त हैं जिनमें से 26 स्थानीय हैं। बिच्छू इन द्वीपों में बहुत कम दिखाई देते हैं जिनकी 5 जातियाँ ही मिलती हैं। बिच्छू बरसात के मौसम में जंगल में गिरे हुए लट्ठों की छालों में बहुतयात से मिलते हैं। दुर्भाग्यवश इन द्वीपों से इस प्राणि के विषय में किए गए किसी भी कार्य का प्रकाशन नहीं है।

कानखजुरा और गोजर

इन द्वीपों से कानखजुरों की अब तक 17 जातियाँ जानी जाती हैं। एक विशेष जाति जिसे *स्कोलोपेन्द्रा स्बस्पनीस डेहानी* कहते हैं, जिसे सभी लोग कनखजुरा के नाम से जानते है, जिससे लोग काफी भयभीत रहते है। यह जीव समान्यतः 20-25 से.मी. लंबा होता है और बरसात के मौसम में बहुतायत से मिलता है, विशेषकर लकड़ी से बने घरों, जिनके चारों ओर फैले हुए बगीचे होते है या लंबी-लंबी घासें होती हैं। इसका काटना बहुत ही कष्टदायक होता है। यह दर्द लगभग 12 घंटे के बाद समाप्त हो जाता है और भारी सूजन होती है। पूरी तरह ठीक होने के लिए दो-तीन दिन लग जाते हैं।

मिलीपीडस की पाँच जातियाँ इन द्वीपों में पाई गई हैं जिनमें से *एनोप्लोडीस्मस टनजोरीकस* बहुत ही सामान्य है। बरसात के मौसम में यह गोजर बहुत ही सामान्य है और बड़े पेड़ो की छाया में और गिरी हुई, सड़ती हुई पत्तियों में बहुत ही क्रियाशील है। इसके अलावा दूसरी जातियाँ *डेसमोक्जीटिस प्लेनेटस* और *ट्रिगोनुलस कोरालिबक* बहुत सामान्य है।

केंचुए और जोकें

केंचुआ की जातियों के संबंध में ये द्वीप बहुत ही धनी है। इन द्वीपों से अभी तक केंचुए की 21 जातियों का प्रमाण मिला है जिनमें से 13 प्रमाण अण्डमान में 3 निकोबार से और 5 के दोनों ही द्वीप समूह में प्रमाण मिले हैं। जिनमें से 7 जातियाँ स्थानीय हैं।

इन द्वीपों में जोंको की केवल दो जातियाँ *हीमाडिप्सा सिलवेस्ट्रिस* और *हीमाडिप्सा झिलैविका* ही पाई जाती है। बरसात के मौसम में और अधिक ओस गिरने से जंगलों और घास के मैदान बहुतायत से पाई जाती है।

प्रवाल-समुद्री उपवन

अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह का विस्तृत समुद्री किनारा जो लगभग 1962 किलोमीटर लम्बा है बहुत ही खूबसूरत और सुहावने प्रवाल भित्ति से भरा है। प्रवाल बाहुल्य यह क्षेत्र अण्डमान सागर को प्रवाल का स्वर्ग बना देता है। अधिकाशं प्रवाल फ्रजिंग तरह की है जो किनारे के पास पायी जाती है। द्वीप समूह के पश्चिम भाग में बैरियर-रीफ किनारे से बहुत दूर दिखाई देती है। ये प्रवाल जो एक उपवन की तरह दिखते है, सैलानियों को बहुत आकर्षित करते है।

प्रवाल : प्रवाल वास्तव में उन छोटे-छोटे जन्तुओं का बाह्यकंकाल होता है जो शक्ल में समुद्री एनीमोनों की तरह होता है। इनका स्त्राव धीरे-धीरे इकटठा होकर चूने अथवा कैल्सियम की तरह का रूप ले लाता है। प्रवाल नाम वैसे अनेक प्रकार के उन सिलेन्टरेटों को दिया जाता है जो इस प्रकार के कैल्शियमी कंकाल बनाते हैं। प्रवाल निर्माण करने वाले अधिकांश प्राणियों को नाइडेरिया वर्ग में रखा गया है जिनकी लगभग 2,500 जातियाँ पायी जाती हैं। प्रवाल की 200 जातियों का अभी तक इन द्वीपों में पता लगा है, किन्तु उनमें से केवल 15 प्रतिशत जातियाँ ही कठोर और धारा के प्रति प्रतिरोधी होती हैं।

दिन के समय पालिप्स अपने कप के अन्दर बन्द रहते हैं, रात के समय जब प्लेन्क्टन किनारे पर बहुतायत हो जाती है तो पालिफ सक्रिय हो जाते है और अपने को बाहर निकालकर भोजन की तलाश करते हैं। टैन्टेकिल की सतह चिपचिपी होती है जिससे छोटे जीव (सूक्ष्मप्राणी) उससे चिपक जाते है और ये उन्हें अपने मुँह में ले लेते हैं।

प्रवाल का निर्माण : प्रवाल प्राणियों की एक्टोडर्म में विशेषकृत कोशिकाओं की एक परत होती है जिन्हें कैलिकाब्लास्ट से उत्पन्न पदार्थ के मिलने से कैल्सियमी क्रिस्टल बन जाते हैं जो जमकर पत्थर जैसे कठोर हो जाते हैं।

आरम्भ में पालिप के आधार की एपिडर्मिसी कोशिकाएं इस प्रकार का कैल्सियमी कंकाल उत्पन्न करती हैं, बाद में पालिप की दीवार भी कैल्सियमी पदार्थ का निर्क्षेपण करने लगती हैं जिससे एक प्याले-जैसी रचना बन जाती हैं। इसी में पालिप स्थित होता है। इस प्याले जैसे आकृति को कोरैलाइट कहते हैं।

धीरे-धीरे कोरैलाइट की शक्ल पालिप जैसी हो जाती है क्योंकि निक्षेपित पदार्थ इतना इकट्ठा हो जाता है कि पालिप को वह चारों ओर से घेर लेता है, जिससे केवल इसका मुखीय भाग ही बाहर दिखाई देता है। इस प्रकार के अनेक कोरैलाइट से मिलकर बना प्रवाल-पत्थर कोरैलम कहलाता है, जिसमें हजारों लाखों कोरैलाइट होते हैं।

प्रत्येक कोरैलाइट के दो भाग होते हैं, थीका और आधार-पट्टिका। सारा कोरैलाइट पालिप के शरीर के बाहर उसकी एक्टोडर्म से सटा हुआ रहता है। बहुत से प्रवाल में थीका के निचले भाग पर एक और कैल्सियमी भित्ति चढ़ जाती है। जिसे एपिथीका कहते हैं। थीका और एपिथीका के बीच की जगह दृढ़पटों से भरी होती है जिन्हें कोस्टा कहते हैं।

प्रवाल की किस्में : कुछ प्रवाल-प्राणी एकल जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु अधिकांश निवहजीवी होते हैं। नए निवह अलैगिंक विधि से उत्पन्न होते हैं। जिसे मुकुलन कहते हैं। मुकुलन के विभिन्न तरीकों पर ही प्रवाल की किस्म निर्भर होती है। आमतौर पर पालिप की आधारों से लगातार कैल्सियमी कंकाल का स्त्राव होता रहता है जिससे कंकाल बढ़ता रहता है और पालिप ऊपर ही पाए जाते है। कुछ पालिपो के थीका पृथक-पृथक और दूर-दूर होते हैं जैसे आँकुलाइना में, परन्तु अन्यों में थीका इतने सटे हुए होते हैं कि उनकी भित्तियाँ मिलकर एक हो जाती हैं जैसे फेबिया और ऐस्ट्रीया में।

मिऐन्ड्रिना नामक मस्तिष्क की शक्ल के प्रवाल में तो थीका एंक-दूसरे से मिलकर एक खांचे का रूप ले लेते हैं जिसके किनारों पर स्पर्शक कतार में व्यवस्थित हो जाते हैं और इनके पालिप मुख्य खांचे में स्थित होते हैं। कुछ निवहजीवी प्रवालों का कंकाल वृक्ष की तरह बढ़ता जाता है जैसे एक्रोपोरा और डेन्ड्रोफिलिया में अन्य प्रवालों की किस्में है जैसे फैलेबेलम और ऐस्ट्रिया में सीनोसार्क में छिद्र नहीं पाए जाते। उनमें सीनेन्काइस केवल थीकाओं के ऊपरी सिरों पर मिले होते है। छिद्रयुक्त सीनोसार्क वाले प्रवालों जैसे मेंड़ीपोरा के सीनेन्काइन में छोटे-छोटे छिद्र होते हैं।

प्रवाल भित्तियाँ : प्रवाल भित्तियाँ समुद्र में पाए जाने वाले कैल्सियम कार्बोनेट के ऐसे ढेर होते हैं जो पथरीले प्रवालों के कंकालों के इकट्ठे होने से बनते हैं। पथरीले प्रवालों के साथ-साथ कई अन्य प्राणियों के कंकाल भी इसके निमार्ण में सहयोग देते हैं। प्रवालों का निवह लगातार आकार में बढ़ता जाता है। इनके पालिप मुकुलन विधि द्वारा संख्या में बढ़ते रहते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी कंकाल का निर्माण करते हैं। धीरे-धीरे ये कंकाल चट्टान का रूप ले लेते हैं। इन्हीं को प्रवाल भित्ती कहा जाता है।

वितरण : प्रवालों के प्राणी संसार के उष्ण तथा उपोष्ण क्षेत्रों में उन स्थानों पर बड़ी संख्या में पाए जाते हैं जहाँ का जल उष्ण, साफ और पूरी तरह प्रकाशित होता है। तथा जहाँ आक्सीजन बहुत मात्रा में उपलब्ध होती है। ऐसी दशाओं में ये प्राणी बड़ी तेजी से जनन करते हैं और कैल्सियम कार्बोनेट के विशाल ढेर तैयार कर देते हैं। यही कारण है कि प्रवाल उष्ण कटिंबधीय समुद्र तटों पर ही मिलते हैं। जिन स्थानों के जल का तापमान कभी 20 डिग्री से कम नहीं होता वहाँ ये बहुतायत में मिलते है।

चट्टान बनाने वाले प्रवाल अटलान्टिक महासागर, हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर के उष्णकटिबंधीय भागों में पाये जाते हैं। प्रवाल की चट्टानें फ्लोरिड़ा, बर्मूदा, बहामा द्वीप समूह तथा वैस्ट-इंडीज में मिलती है।

हिन्द महासागर में लक्ष्यद्वीप, मालद्वीपों के निकट तथा अण्डमान तथा निकोबार द्वीपों में पायी जाती है। प्रशांत महासागर में फिलिपिन, आस्ट्रेलिया, हवाई द्वीप, फिजी द्वीपों इत्यादि के निकट मिलती है। आस्ट्रेलिया के निकट पाई जाने वाली ग्रेट बैरियर-रीफ संसार भर में प्रसिद्ध है।

यद्यपि हिन्द-प्रशांत क्षेत्र के अण्डमान निकोबार द्वीप समूह क्षेत्र में प्रवाल बनने की प्रक्रिया सबसे अधिक है और ये प्रवाल भित्तियां उत्तरी और दक्षिणी अण्डमान से लेकर ग्रेट-निकोबार तक फैली हैं किन्तु आजकल इनका लगातार क्षय होता जा रहा है। अब इन प्रवाल भित्तियों के अवशेष बहुतायत में इन द्वीपों के विभिन्न भागों में बिखरे हैं। वे क्षेत्र जिनमें ये बहुतायत से पायी जाती हैं - उत्तरी भित्तियाँ जो उत्तरी अण्डमान में पायी जाती हैं। दक्षिणी अण्डमान की रिचिज आर्किपिलेगो, लैब्रिन्थ समूह, लिटिल अण्डमान, नानकौरी, कमोर्टा, तिलक-चांग, लिटिल अण्डमान और ग्रेट निकोबार क्षेत्र।

प्रवाल भित्तियों में पाये जाने वाले जीव-जन्तु : प्रवाल की पहाडियों और चट्टानों में पाए जाने वाले गड्डों, दरारों, खाचों और छिद्रों में विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु आश्रय पाते हैं। इनमें विशेषतः अकशेरूकी प्राणी रहते हैं। कशेरूकियों में से कुछ छोटी-छोटी मछलियाँ इनमें बने गड्डों में निवास करती हैं। केकड़े, श्रिप, बार्नेकाल, ऐनेलिड वर्म, स्टारफिश, ब्रिटल स्टार, समुद्री कुकुम्बर, समुद्री अरचिन, क्लैम, कौड़ियां, स्पोंज, आक्टोपस, ब्रायोजाअन, समुद्री एनीमोन इत्यादि अनेक जन्तु इनमें आश्रय पाते हैं। यही कारण है कि प्रवाल भित्तियाँ विभिन्न प्रकार के जन्तुओं के साथ-साथ बड़ी खूबसूरत और आकर्षक प्रतीत होती हैं। जन्तुओं के विभिन्न रंगों और प्रवालों के पालिपो के रंगों से मिले-जुले समुदाय की छटा देखते ही बनती है।

प्रवाल भित्तियों की किस्में : प्रवाल भित्तियों की चट्टानें सामान्यतः तीन किस्म की होती हैं। तटीय प्रवाल भित्ति, रोधिका प्रवाल भित्ति तथा प्रवाल द्वीप-वलय। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के तटीय भागों में तटीय प्रवाल भित्ति की किस्म पाई जाती है।

तटीय प्रवाल भित्तियां ज्वालामुखी द्वीपों तथा समुद्र तटों के निकट उथले पानी में एक बार्डर अथवा प्लेटफॉर्म के रूप में पाई जाती है, और इनके तथा भूमि के बीच कुछ फुट से लेकर चौथाई मील तक का भाग जल मग्न होता है। इनका ढलान समुद्र की ओर होता है जिस पर प्रवाल 20 फैदम गहराई तक बड़ी तादात में उत्पन्न होते रहते हैं। ढलान के ऊपर का शीर्ष प्रवाल भित्ति का कोर कहलाता है। इसके पीछे 10 से 20 मीटर चौड़ी पट्टी होती है जिससे लहरे टकराती हैं। यह प्रवाल भित्ति का चौरस भाग होता है। प्रवाल भित्ति के इस चौरस भाग पर प्राणी तथा पौधे दृढतापूर्वक जमें होते हैं। साथ ही इस भाग पर बालू, मिट्टी, मृतवाले तथा अन्य पदार्थ भी पाए जाते हैं। चौरस भाग के पीछे अर्थात द्वीप की ओर एक गोलाश्म क्षेत्र होता है। इसके भीतर की ओर एक चौरस भाग होता है जो जलमग्न रहता है। यह भाग द्वीप के किनारे से मिला होता है और पानी की सतह से काफी नीचे होता है। इसलिये यह एक लैगून का रूप ले लेता है।

द्वीप समूह में पायी जाने वाली भित्तियों को पवनोन्मुखी भित्तियों में वर्गीकृत किया जा सकता है जो कि चलने वाली पवनों की दिशा में बढ़ती है और ये पवनोन्मुखी मुख्य रूप से मानसूनी हैं। सामान्यतः इन भित्तियों के किनारे ढ़लवा होते हैं किन्तु स्थान-स्थान पर इनमें अन्तर होता रहता है।

दूसरी चैनल भित्तियाँ हैं जो कि चैनल के स्थिर जल में बढ़ती हैं जहाँ पवनों और लहरों का प्रभाव कम है। इन स्थानों पर भित्तियों के किनारे सामान्यतया स्टीप होते हैं। इन्हें ली-वर्ड रीफ कहते हैं जैसे कि दक्षिणी अण्डमान के चैनल और नानकौरी, कमोर्टा के बीच का क्षेत्र जो मुख्य रूप से पोरिटस, फबिया और एकरोपोरा से बनते है। रिची आर्किपिलेगो के चैनल निकोबार द्वीप समूह के कमोर्टा के संकरे भाग में ये भित्तीय बनती है।

प्रवाल भित्तियाँ हजारों वर्षो में विभिन्न समुद्री जीवों एवं पौधो के क्रियाकलापों से बनती हैं। ये गर्म जलवायु के द्वीपों और महाद्वीपों के

बाहरी किनारों, जहाँ पानी का ताप 22-28 डिग्री से. होता है, में विकसित होती हैं और अन्त में समुद्र में एटाल्स बनाती हैं। इनमें से कुछ खूबसूरत उद्यान की तरह दिखती हैं जो लुभावने प्रवाल से ढ़की होती हैं और बहुत से समुद्री जीवों और चमकीली मछलियों को आवास उपलब्ध कराती हैं। बहुत सी रहस्यमय होती हैं जो ढ़ेर सारे प्रवाल का निर्माण करती हैं जो गहरे समुद्र तक फैली होती हैं।

दुर्भाग्यवश, सभी प्राकृतिक आवास और प्रवाल भित्तियाँ अत्याधिक दबाव में है। इनमें से बहुत प्रदूषित हो गयी है, कुछ परतों में धँस गयी और कुछ समाप्त हो गयी हैं। कुछ तटीय विकास खनन, अत्यधिक मत्स्य दोहन और भित्ति वाले प्राणियों के संग्रह से समाप्त हो रही हैं। 26 दिसंबर, 2004 को आये सुनामी लहरों के कारण भी प्रवाल-भित्ति क्षेत्रों को काफी क्षति पहुँची है। उत्तर अण्डमान के द्वीपों के समुद्र तल उठ जाने के कारण प्रवाल-भित्ति क्षेत्र समद्री जल के अभाव में क्षतिग्रस्त हो गये हैं। आज अधिकांश लोग प्रवाल-भित्ति क्षेत्र को देखने जाते हैं। प्रवाल अपने लुभावने रंगीन दृश्य से आने वालों के मन को मोह लेते हैं। विश्व के हर प्रवाल क्षेत्र में सैलानियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। जिससे हजारों वर्षो में बनने वाले ये प्रवाल कुछ पलों में समाप्त हो जाते हैं। पर्यटन भी आवश्यक है किन्तु सुरक्षित तौर पर करने से प्रवाल क्षति का काफी हद तक कम किया जा सकता है। अब समय आ गया है जब हम इस दिशा में सोचें और इसके लिये सघन कार्यक्रम बनाये।

पर्यटकों के लिये सुझाव

1. जब कभी तैरें या पैडलिंग करें तो निछले भित्ति क्षेत्र की अपेक्षा बालू वाले चैनल का उपयोग करे जिसे प्रवाल दबे नहीं या अन्य जीव परेशान न हों।

2. कभी भी प्रवाल को स्पर्श न करें या उन्हें धक्का न दे क्योंकि प्रवाल बहुत ही नाजुक होते हैं और थोड़ी भी हलचल से समाप्त हो जाते हैं।

3. प्रवाल क्षेत्र में कभी भी बालू को न उठाये क्यों कि बाद में यह प्रवाल पर जम जाती है और दूसरे पर्यटक इसे देख नहीं पाते।

4. प्रवाल क्षेत्र से मछली न पकड़ें। आजकल प्रवाल क्षेत्र में बहुत से देशों ने मत्स्य दोहन पर प्रतिबंध लगा दिया है।

5. सभी ऐसे जीवों को जो प्रवाल पर आश्रित होते हैं उन्हें छेड़े नहीं। प्रवाल से ही भित्तियों का निर्माण होता है। बहुत से क्षेत्रों में सीप आदि बहुत कम हो गये हैं।

6. गोताखोरों का यह देख लेना चाहिए कि उनका भार उचित है।

बोट मालिकों के लिए सुझाव

1. प्रवाल के ऊपर कभी जहाज न खड़ा करें क्योंकि ऐंकर से प्रवाल आसानी से समाप्त हो जाते हैं। बोट को बोया या जेटी पर लगायें या सावधानी से बालू वाले क्षेत्र में ऐंकर करें।

2. भित्तियों का ध्यान रखें, प्रवाल-भित्ति क्षेत्र में पोत खड़ा करना जहाज और भित्ति के लिए नुकसानदेह है। प्रवाल भित्ति में बोटों को सही दिशा पर चलायें तथा इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

सैवेनिर हन्टर

1. यादगार के रूप में रखने के लिए समुद्री उत्पाद जैसे प्रवाल, सीप, रंगीन सूखी मछलियाँ, स्टार फिश, समुद्री पंखें तथा अन्य समुद्री यादगार चीजें खरीदने की प्रवृति छोड़े।

2. बडे पैमाने पर इनकी बरबादी को रोकने के लिए तथा इनके आयात और निर्यात के लाईसेन्स आवश्यक है।

3. समुद्री उत्पादों या कछुए की कवच की बिक्री पर रोक लगा कर, क्योंकि समुद्री कछुए की प्रजातियाँ विलुप्त होने वाली है।

4. उन समुद्री चीजों को न खरीदें जो कम होती जा रही हैं क्योंकि उनकी खरीददारी जारी रहने से वे और भी कम होती जाएगीं।

5. खाली सीप, तरंगो के कारण विभिन्न मोहक आकारों में बनी लकड़ियों, बीजों आदि के लेने के बदले खाड़ी का आनन्द लीजिए।

सकारात्मक कदम

1. मेंरीन उद्यानों के भ्रमण के समय निर्धारित नियमों का ईमानदारी से पालन करें जिससे प्रवाल भित्तयों को सुरक्षित रखा जा सकें।
2. प्रवालों और अन्य जीवों के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए जिससे जब आप इन्हें देखें तो आपको पूरा आनन्द मिले।
3. प्राकृति के स्वरूप से अपनें आप को संतुष्ट करें। कुछ क्षेंत्रों में मत्स्य दोहन अधिक होता है जबकि कुछ क्षेत्रों में बिल्कुल नहीं। इससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है और प्रवाल भित्तियों के पनपने वाले जीवों का संतुलन बिगड़ जाता है।
4. भित्तियों को साफ-सुथरा रखें। अवशिष्टों को खाड़ी और प्रवाल क्षेत्रों से दूर विसर्जित करें।
5. विभिन्न संगठनों जैसे समुद्री जीव संरक्षण संगठन को पूरा समर्थन दें क्योंकि ये समुद्री जीवों के संरक्षण को आगे बढ़ाती है।
6. सैलानी नियमों का पालन करें। प्रवाल भित्तियों का ध्यान अपने लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए रखें।

मृदु प्रवाल

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के प्रवाल भित्ति के सबसे महत्वपूर्ण प्राणियों के समूह में से एक मृदु प्रवाल *(नीडैरिया एल्सियोनासिया)* है। ये प्रवाल भित्ति क्षेत्र में बहुतायत से मिलती है जिसमें से प्रत्येक समूह एक दूसरे से जुड़े हुए एक समान पालिप होते हैं। मृदु प्रवाल में अस्थिपंजर शरीर के अंदर होता है जबकि चट्टानी प्रवाल में यह पूरी तरह बाहर होता है और इसे थिका या कप कहते हैं। मृदु प्रवाल का शारीरिक विन्यास आठ है जबकि चट्टानी प्रवाल का छः है।

मृदु प्रवालों में से कुछ जो इन द्वीपों में पाये जाते हैं वे हैं कठोर सर्पकेशी, समुद्री पंखे, लाल पाइप जैसे शरीर वाले प्रवाल, नीले प्रवाल *(इलियोपोरा)* और बहुत से माँसल मृदु प्रवाल जो इन प्रवाल भित्ति में वृद्धि करते हैं। आनन्ददायक मनमोहन समुद्री पखें भी इसी समूह के हैं किन्तु वे छिछले पानी में सामान्यतः नहीं पाये जाते। मृदु प्रवाल के अस्थि पंजर विभिन्न छायाओं या रंगो जैसे – नीला, लाल और पीला होता है। पाइप की तरह के शरीर वाले प्रवाल बहुधा किनारे पर मिलते हैं। इनमें पालिय चूने की नलिकाकार चट्टानों पर लम्बवत रहते हैं। ये लम्बवत नलियां क्षैतिज रूप से एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। भाटा के समय साफ दिन में प्रवाल भित्ति के किनारे समुद्र की ओर ये देखे जा सकते हैं। ये कभी भी फैले नहीं होते। मृदु प्रवाल विस्तृत रूप से मृदु और माँसल सदस्य जो जैनिडी परिवार के हैं बहुत ही सुन्दर हैं किन्तु कंटीले सदस्य जो जीनस *डेन्ड्रोनिथिया* के है और कठोर चमड़े की तरह के रूप वाले जो जीनस *साइनफैलेरिया* के हैं और भी दूसरे जो इसी जीनस के सीधे पेड़ की तरह के रूप है, विस्तृत रूप से फैले हुए है।

मृदु प्रवाल प्राकृतिक यौगिक उत्पन्न करते हैं जो इनके पास-पड़ोस वातावरण में उनके लिये महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये द्वितीयक यौगिक संरचना में उत्कृष्ठ होते हैं। इनमें से अधिकांश एक रासायनिक वर्ग जिसे टर्पिन्स कहते हैं से सम्बन्धित हैं जो सुगन्ध और छतदार फैलाव जैसे सामान्य पौधे और पेड़ पाइनस, यूकेलिप्टस, सोजेव्रश आदि। ये यौगिक रसायनज्ञों के लिए प्राकृतिक उत्पाद हैं क्योंकि इनका औषधीय विज्ञान में महत्वपूर्ण उपयोग है जैसे कि इनका उपयोग एन्टीबायोटिक्स, एन्टीफन्गल और एन्टीट्यूमोरल के रूप में उपयोग होता है।

वे जीव जो इन यौगिकों को धारण करते हैं, वे इनके अनुकूलन के लाभ प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं जो इन्हें इनके प्राकृतिक आवास में रहने में सहायक है, किसी भी आवास में, विशेषकर उन आवासों में जहाँ जीव स्थायी रूप से तली से चिपके रहते हैं, में जीवों को आपसी क्रियाशील बना देती है।

शत्रुओं के खिलाफ सुरक्षा के लिए विषैलापन: सामान्यतया प्रवाल भित्तियों में बहुत से जीव होते हैं जिनमें शत्रु भी जैसे - मछलियाँ, इकाइनोडर्म और अन्य दूसरे जीव होते हैं। सबसे सामान्य मृदु प्रवाल छूने पर माँसल लगते है और शत्रुओं से सुरक्षात्मक दृष्टि से असहाय होते हैं।

इसके विपरीत, कठोर प्रवाल भित्तियों में मिलने वाली कुछ मछलियों के लिये भोजन का प्रमुख स्त्रोत है जैसे - तोता मछली, तारा मछली, मोलस्क और केंकड़े। इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि मृदु प्रवाल अपनी सुरक्षा व्यवस्था रखते हैं किन्तु यह तुरंत नहीं होता है जिससे देखने वाले समझ नहीं पाते। अधिकांश मृदु प्रवालों में टर्पिन की उपस्थिति उनकी सुरक्षात्मक प्रक्रिया है।

शत्रू: मृदु प्रवाल संरचना और स्वरूप दोनों में ही एक दूसरे से भिन्नता रखते हैं, जो पालिप्स या पूरे समुदाय को शत्रुओं से सुरक्षित रखती है। सैक्रोफाइटन जैसे मृदु प्रवाल अपने पालिप्स को पूरी तरह समूह व्यवस्थित कर देते हैं। एक दूसरे तरह के पालिप और कालोनी अपनी सुरक्षा के लिए कैल्सियम-कार्बोनेट के छोटे किन्तु तेज काँटे उत्पन्न करते हैं। ये लम्बें सुई के आकार के भाग बहुधा पालिप के सिर को घेरे रहते हैं। अंड कौरी *(ओबुला ओवम)* मृदु प्रवाल पर भोजन के लिये आश्रित है। कुछ नुडीब्रांच भी मृदु प्रवाल से ही अपना भोजन लेते है।

जनन: मृदु प्रवाल बाहर निषेचित अंडे से जनन करते हैं जो मृदु-प्रवाल की सतह से ढ़के होते हैं। अलैगिक जनन, समूह वृद्धि और खंडन तथा पेड़ की तरह की संरचना द्वारा जिससे नवजात समूह के भीतर बडिंग द्वारा विकसित होते है, जनन करते है।

जहरीलें तथा डंक मारने वाले समुद्री प्राणी

ऊष्ण कटिबंधीय समुद्री, उभरी हुई चट्टानों के प्राणियों और पौधों की विविधता स्पष्ट रूप से उन लोगों के ध्यान को आकर्षित किया जो लोग जटिल विष के सक्रिय यौगिकों का विश्लेषण करने में लगे हैं जो बहुत सी समुद्री जातियों द्वारा अन्य जीवों में प्रविष्ट होते हैं। स्पष्टतः जहरीले समुद्री प्राणियों के अतिरिक्त और भी बहुत सी उष्ण कटिबंधीय प्राणी और

पौधें है जो वैज्ञानिक खोजों को शक्ति प्रदान करते हैं। सजीवों कि 90 प्रतिशत जातियाँ समुद्र में रहती हैं जो जमीन के प्राणियों और पौधों की तुलना में पूरी तरह भिन्न जैव-संश्लेषण की दशा में होती हैं। अतः यह पूर्णतया सम्भव है कि समुद्र से बहुत से अज्ञात रासायनिक पदार्थ विशिष्ट संरचना होगी, जो जैविक क्रियाओं की एक लम्बी श्रृंखला है।

समुद्री जीवों की लगभग एक हजार जातियों के जहरीला होने का पता है जो विश्व के लगभग सभी सागरों और महासागरों में पायी जाती हैं। जहरीलें प्राणी सामान्यतः उन जीवों के लिये प्रयुक्त होते हैं जो विशेष रूप से विकसित स्त्रावी अंग या कोशिकाओं के समूह द्वारा जहर उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं और जिससे काटने या डंक मारने के समय इस विष को स्थानांतरित करते हैं। वास्तव में सभी काटने या डंक मारने वाले प्राणी जहरीले हैं किन्तु सभी जहरीले प्राणी काटते या डंक नहीं मारते।

हाइड्रोजोआ : (*फिसैलिया फिसैलिस*) जिसे पोर्टग्ज मेंन आफ वार भी कहते है का डंक मारने वाला अंग इसका निमेंटोसिस्ट है जो मनुष्य की त्वचा से घुस कर जहर फैलाने की क्षमता रखता है।

इकाइनोडर्माटा: इनके बहुत से जहरीले रूप है जो मनुष्य के लिए हानिकारक है। *डायोडिमा सिटोसम, इकाइनोथ्रीक्स कलारिस, इकाइनोथ्रीक्स डाएडिमा,* बहुत सी काटों वाली कई धारियों वाली स्टार फिश *एकैन्थैस्टर प्लैन्सी*। जिनके शरीर अण्डाकार, त्रिज्यीक रूप से सुडौल होते है। यह अपने को एक कठोर आवरण में बन्द रखते है जिनसे काँटे निकलते है। काँटे सीधे और नुकीले होते है। ये गति, सुरक्षा, खोदने, पोषण, धारा उत्पन्न करने और लारवा को शरण देते है। काँटा मनुष्य के लिए भी घातक है। ऐसा ज्ञात हुआ है कि बहुत से समुद्री कुकुम्बर एक तरह का पदार्थ स्त्रावित करते है जो मछलियों तथा दूसरे समुद्री जीवों और शायद मनुष्य के लिए जहरीले होते हैं। हिन्द प्रशांत क्षेत्र में आदिवासी लोगों द्वारा होलोथुरिया की कुछ विशिष्ट जातियाँ *होलोथुरिया अट्रा* और *होलोथुरिया आर्गस* के ऊतक तरल का उपयोग मछलियों की क्रियाशीलता कम करने के लिए करता है।

कवचधारी सीपी : कवचधारी भी जहर उत्पन्न करते है। सबसे खतरनाक गैस्ट्रोपाड्स *कोनस* जीनस के सदस्य है जैसे *कोनस इबुर्नियस, कोनस टेसफैलेटस, कोनस डिस्टैनस, कोनस स्ट्रीयेटस* और *कोनस टेक्सटाइल*।

सिफलोपाड्स : अपनी लार ग्रंथि से यह जहर स्त्रावित करते हैं जो कुछ जानवरों की निष्क्रिय कर देते हैं। इस जहर का उपयोग ये अपने शिकार पकड़ने के लिये करते हैं जैसे: *आक्टोपस वल्गैरिस*।

जहरीली मछलियाँ : लगभग 500 समुद्री मछलियों की अब तक ज्ञात जहरीली जातियाँ है, जिनमें से अधिकांश प्रवाल भित्ति क्षेत्र में पायी जाती हैं। ये शाकाहारी या माँसाहारी हो सकती हैं।

मछलियाँ जो जहरीली होती हैं, जहर उनके शरीर की पेशीय संरचना या आंतरिक अंग जैसे हृदय, फेफडे या आँत और त्वचा में होता है। सामान्यतया इनकी पहचान मछली के प्रकार : *सिगौटेरा, टेट्राडान, स्कामब्रायड, क्लूपिआएड, इलास्मोब्रान्च* पर निर्भर करता है।

सिगुएटेरा : सिगुएटेरा शब्द पहले शायद एक समुद्री घोंघे *(लिवोना पिका) (सिगुआ)* के खाने से फैलने वाले जहर के लिए प्रयुक्त हुआ। समूचे कैरीबियन सागर में मिलने वाला यह एक समुद्री भोजन है। इससे आशयिका एवम् आंतीय तंत्र को प्रभावित होने की अभिव्यक्ति करती है। यह उष्ण-कटिबंधीय प्रवाल में मिलने वाली मछलियों जैसे बैराकुडस, ग्रोपर्स, सी-बासेस, स्नैपर्स, सर्जन-फिश, पैरटफिश, जैक और रैसेस की कुछ जातियाँ खाने के बाद होता है। क्योंकि वे सभी मछलियाँ खाने योग्य हैं और इनमें से बहुत सी खाने योग्य मछलियाँ विश्व के कुछ भागों में कीमती हैं। सिगुआटेरा का जहर बहुत ही सामान्य है।

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में मिलने वाली सिगुआटेरा जहर वाली मछलियाँ हैं - एकैन्थुरिडे परिवार की सर्जन फिश, *एकैन्थरस लिनिएटस, एकैन्थरस ट्रायोस्टिगस, टीनोसिटस स्ट्रीगोसस, जेबरासेमा बेलिफेरम*।

बालिस्टिडी परिवार की ट्रिइगर फिश : *एबैलिस्मि स्टिल्लोरिस, बालीस्टैपस अनडफैलेटस, सैलिस्टायडिश, विरिडिस्केन्स, बैलिस्टायडिश नाइगर, आडोनस नाइगर, हाइनेकैन्थस एकुलिटस, हाईनोकैन्थैस बेरूकोसस, सलामेंन क्यासोप्टेरा।*

करैन्जिड़ी परिवार की जैक फिश: *करैन्क्स करैनास, करैन्क्स इग्नोबिलिस, करैन्क्स सेक्सफसियेटस, इलोगौटिस बिकपन्नफैलेटस*।

किटोडान्टीडी परिवार की बटरलाई फिश : *किटोडान औरिगा, किटोडान इफिपियम, हेनियोकस एकुमिनेटस, होलोकैन्थस इम्पिरेटर, पाइगोप्लिटीज डाएकैन्थस*।

लैब्रिडी परिवार की रैसेज : *चेलिनस फेसियेटस, इन्सिडिएटर*

लुट्जानिड्य परिवार की स्नैपर्स : *एप्रिआन विरेस्केन्स, लुटजानस आर्जेनिट मेंकफैलेटस, जिम्नोथोरैक्स फुल्विलैमा, लुटजानस गिब्बस, लुटजानस सेमिसिन्क्टस*।

मुरेनिडी परिवार की मोरे ईल : *इकिड़ना नेबुलोसा, जिम्नोथोरैक्स कानकोलर, जिम्नोथेरैक्स लैविमेंर्जिनेटस, जिम्नोथोरैक्स अन्डफैलेटस। स्कैरस धोब्बन* स्कैरिडी परिवार की पैरट (तोता) मछलियाँ, ग्रुपर्श मछलियों में *इपिनिफेलस आर्गस, इपिनिफलस फस्कोगुटेटस, इपिनिफिलस मेंरेरा, बैरिओला लौटी*।

स्फाइरीनिडी परिवार की बैरराकुडस : *स्फाइरीना बैर्राकुडा, स्फाईरीना फोस्टेरी, स्फाइरीना जेलो* सिगुआटेरा जहरीली मछलियों की अधिकांश जातियाँ रीफ या किनारे की जातियों की है केवल कुछ ही फैले समुद्र की जातियाँ है। यह जहरीलापन मछलियों के आहार-श्रृंख्ला से जुड़ा हुआ है। शाकाहारी और माँसाहारी मछलियाँ अधिक जहरीली हैं और मनुष्य में जहर फैला सकती है।

टेट्रीडॉन : टेट्रीडॉन, पफर मछली की जहर सामान्यतया कुछ निश्चित पफर मछली के खाने से होता है। विश्वस्तर पर पफर ही केवल ऐसी मछलियाँ है जो जहरीली मानी जाती हैं। विश्व के विभिन्न भागों में ग्लोब

मछली, गुब्बारा मछली या टोड मछली के नाम से जाना जाता है। इनका नाम इनके अपने आकार को अधिक मात्रा में हवा या पानी से भरकर उस आकार में फैलाने के कारण है। अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह में उपस्थित टेट्रीडॉन जहर के लिए उत्तरदायी कुछ मछलियाँ :

मोनाकैन्थीडी परिवार की सीथर जैकेट : *एलुटेरा मोनोसिरास, आक्जीमोनाकैन्थस लांगीरोस्ट्रिस*

टेट्राडॉनटिडी परिवार की पफर : *कैन्थीगैस्टट बेनेटी, स्फीराएडिस लुनारिस, स्फीराएडिस स्क्लेरेटस, टेट्राडॉन हिस्पिडस, टेट्राडॉन इमेंकफैलेटस, टेट्राडॉन मिलिएग्रिस, टेट्राडॉन नाइग्रोपन्क्टैरस, टेट्राडॉन पटोका, टेट्राडॉन रेटीकफैलेरिस, टेट्राडॉन स्टीलैटस टेट्राडॉन* मुख्यरूप से उष्णकटिबंधीय मछलियाँ हैं। अण्डमान और निकोबार में इन मछलियों को नहीं खाया जाता।

जहरीले डंक मारने वाली मछलियाँ : 200 जातियों से भी अधिक समुद्री मछलियों की जातियाँ जिनमें स्टिंग रे, बिच्छू मछली (स्कार्पियन फिश), स्टोन फिश और सर्जन मछली को जहरीली डंकवाली माना जाता है।

ये मछलियाँ छिछले प्रवाल भित्ति वाले पानी या समुद्र के अन्दरूनी किनारे की मछलियाँ हैं। ये हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में बहुतायत से मिलती हैं। ये सुरक्षित आवासों जैसे चट्टानों में या उनके चारों ओर प्रवाल भित्ति या ये अपना अधिकाशं समय बालू में धसकर रहने की आदी हैं। अधिकांश जातियाँ जहर-उपकरण का प्रयोग सुरक्षात्मक हथियार के रूप में करती हैं। इन द्वीपों में मिलने वाली कुछ डंक वाली मछलियाँ है :

एकैन्थुरीडी परिवार की सर्जन मछली : एकैन्थुरस लिनिएटस, एकैन्थुरस टायोस्टीगस, टिनोकटस स्ट्रेटस

डैसिएटीडी परिवार की स्टिंगरे : *डौसिएटिक कुहली, डैसियोटिस सेफेन, डैसिएटिक और्नेक*। सामान्यतः स्टिंग रे इन द्वीपों में दिखाई देती है जो तेज तैराक है। इनकी माँसल पूँछ के अधर के आधे भाग तक एक या दो काँटे स्थित होते हैं जो घाव करते हैं। काँटे सुरक्षा के लिये होते

हैं और ये अन्दर तक घुस सकते हैं। अधिकांश घाव पैर के निचले भाग में होते हैं। जो बहुत ही कष्टदायक होते है।

मिलियोबैटिडी परिवार की स्टिंगरे : *एइटोबैटस नैरी-नैरी*

स्कार्पोनिडी परिवार की स्कार्पियन फिश एवं स्टोन फिश : *डेन्ड्रोकिरस जेबरा, टेरोइस रैडिआटा, टिरोइस वालीटेन्स, स्कार्पिनेडिस गुआमेंन्सिस, स्कार्पिनेडिस स्कैब्रा, स्कारपीनोकप्सस सिर्होसा, स्कार्पिनोप्सिस गिब्बोसा, सिनैनीजस वेरूकोसा*। जहरीली स्टोनफिश *(साइनेनसिया सिरौसा)* इन द्वीपों में भी पायी जाती है। निश्चित रूप से मछली के शानदार आच्छदं के परिणाम से घाव पैर के तलवे में होते हैं। कम से कम 13 सीधे अध ारीय कांटो में से प्रत्येक जिसमें जहर ग्रंथि होती है, गहराई तक घुसता है और घाव में जहर छोड़ देता है।

समुदी साँप : समुद्री साँपों की चार जातियाँ इन द्वीपों में मिलती है।

हाइड्रोफिडी परिवार (समुद्री सीप) : *लैटीकौड़ा लैटोकौडा, लैटीकौड़ा माइकोसिफैलोफिस कन्टोरिस* और *फिलौमिस प्लेउरस*

समुद्री साँपो का जहर तंत्रिकाओं द्वारा ही तंत्रिका तंत्र, केन्द्रीय और परिधीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है।

समुद्र की विशिष्ट जैविक यौगिकों का उत्पन्न करने की शक्ति मनुष्य के ज्ञान को विभिन्न जातियों के बीच की क्रियाओं से जोड़ने तथा चिकित्सा पद्धति के लिये महत्वपूर्ण पदार्थो का स्वास्थ्य के लिये लिये उपयोग तथा कृषि, पशुपालन विज्ञान और सूक्ष्म रसायनों के उत्पादन की ओर अग्रसर करता है। समुद्र के भीतर जीवों का ज्ञान सफलता के लिए एक नया रास्ता प्रशस्त करता है।

अण्डमान के आदिवासी

अण्डमान तथा निकोबार का अधिकांश भू-भाग वनाच्छादित है। इन घने वनों में आदिकाल से आदिमानव निवास करते रहे हैं। द्वीपसमूह की कुल जनसंख्या का छठवां भाग आदिवासियों का है। इन आदिवासियों को मूलतः निग्रेटा और मगोंलियन प्रजाति का माना जाता है। अण्डमान संवर्ग में निग्रेटो नस्ल की जातियाँ हैं और निकोबार में मंगोलियन नस्ल की। निकोबार द्वीप समूह के आदिवासियों की भौतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अण्डमान वर्ग के आदिवासियों की पृष्ठभूमि से भिन्न दिखाई देती हैं। अण्डमान वर्ग में अण्डमानी, ओंगी, जारवा और सेन्टिनली, आदिवासी है तो निकोबार वर्ग में निकोबारी और शोम्पेन।

अण्डमानी

पहले यह जनजाति मध्य तथा उत्तरी अण्डमान के द्वीप तट पर बसी हुई थी अब इन्हें स्टेट द्वीप में विधिवत बसा दिया गया है तथा ये सरकारी आवास का उपयोग करते हैं। प्रारम्भ में इनकी संख्या लगभग पाँच हजार थी परन्तु धीरे-धीरे इनकी संख्या घटने लगी। आज इनकी कुल संख्या उन्तीस के आस-पास है। अण्डमान के तटीय क्षेत्रों में बसे होने के कारण इन्हें मछली पकड़ने की कला में निपुणता प्राप्त है। इस जनजाति की गणना शिकारी और खाद्य संग्रहण करने वाली खानाबदोश जाति के रूप में की जाती थी। बाहरी लोगों के साथ सम्पर्क के कारण इनके रहन-सहन, खान-पान और आचार-व्यवहार में काफी परिवर्तन हुआ है। अब यह जनजाति काफी सभ्य हो गये है।

ओंगी

यह जनजाति लिटिल अण्डमान, उत्तरी पूर्वी तटों, मध्यवर्ती भाग तथा दक्षिणी तथा पश्चिमी भागों में रहती थी। अब यह जनजाति इसी द्वीप के डिगोंग क्रींक और साऊथ बे तटीय भागों में प्रशासन द्वारा बसाया गया है। ओंगी शिकार और खाद्य संग्रहण करने वाली जनजाति है। जिनमें सूअर, समुद्री गाय (डयूगांग) कछुए और मछलियों का शिकार

प्रमुख है। अब यह जनजाति प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराये गयें चावल, चीनी, आटा, चाय पर निर्भर रहने लगी है। एक ही पेड़ के तने को खोखला करके नाव बनाने में काफी कुशल हैं। इस समय ओंगी लगभग 100 की संख्या में है।

जारवा

जारवा जनजाति दक्षिण, मध्य और उत्तरी अण्डमान के पश्चिमी भागों में रहते हैं। यह जनजाति पाषाण कालीन जीवन व्यतीत करती है। खाद्य संग्रहण, शिकार और मछली पकड़ना इनका मुख्य व्यवसाय है इसलिए जंगल और समुद्र पर आधारित है। नंगे रहना और प्राकृतिक संसाधनों से अपनी जीविका चलाना इनके स्वभाव की विशेषता है। जरवा आदिवासियों को सभ्य बनाने के लिए वर्षो से प्रशासनीय प्रयास किये जा रहे है और विशेष सफलता मिली है। अब इस वर्ग का सभ्य लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार है तथा खाद्य या लोहे की तलाश में ये सभ्य बस्तियों में भी आने लगे हैं। इनकी अनुमानित संख्या दो सौ के आस-पास है।

सेण्टिनली

ये आदिवासी हिंसक हैं ये उत्तरी सेण्टिनल द्वीप में रहते हैं। शिकार करते हैं। केवल सेन्टिनली ही ऐसे जनजाति है जिनके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के सारे प्रयास विफल हो गये हैं।

निकोबार के आदिवासी

निकोबार वर्ग के विभिन्न द्वीपों के निवासी एक ही प्रजाति के हैं। किन्तु अलग-अलग स्थानों में रहने के कारण इनकी भाषा-बोली, रहन-सहन, आचार-विचार में काफी परिवर्तन आ गया है। ये आधुनिक अर्थव्यवस्था के मूलाधार है।

शोम्पेन

निकोबार के दक्षिणतम द्वीप ग्रेट निकोबार के समुद्री तटों और जंगलों में शोम्पेन जनजाति निवास करती है। ये अत्यन्त शांत स्वभाव के हैं। खानाबदोसी जीवन व्यतीत करने के कारण इनका अपना कोई स्थाई निवास नहीं है। मछली पकड़ना, शिकार करना, पेड़ लगाना और पशुपालन इनका मुख्य व्यवसाय है। ये शहद का उपयोग भरपूर करते हैं। पान-सुपारी खाने की अत्यधिक अभिरूचि के कारण इनके होठ भददे और दाँत काले होते है। परम्परागत खाद्य-समाग्री के साथ-साथ ये लोग चावल, दाल, चीनी आदि आधुनिक खाद्य सामग्रियों के प्रति अधिक रूचि प्रकट करते हैं।

ज्वालामुखी द्वीप (बैरन द्वीप)

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के अतंर्गत बैरन द्वीप भी सम्मिलित है, जो एक ज्वालामुखी द्वीप है। पोर्ट-ब्लेयर से करीब 135 कि.मी. दूर उत्तर-पूर्व में स्थित बैरन द्वीप के नाम से जाना जाता है। इस द्वीप का क्षेत्रफल लगभग 8 वर्ग कि.मी. है और इसका आकार लगभग गोल है। ज्वालामुखी का कोन समुद्र तल से लगभग 350 मी. ऊचाँ है।

बैरन शब्द का अर्थ है बंजर परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। 22-30 मार्च, 1990 में द्वितीय लेखक (राजन, 1990) ने भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण के साथ बैरन द्वीप का 8 दिन तक वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया। उस समय ज्वालामुखी की भूरी ढ़लान वाली राख की चट्टानों पर कहीं-कहीं पर हरियाली छाई हुई थी और कोन के भीतर काला ढ़ेर था। सन् 1795 में लेफ्टीनेन्ट आर्चीबाल्ड ब्लेयर ने इस जववालामुखी को विस्फोटित रूप में देखा था। कुछ वर्षो बाद होर्सबर्ग (1803) ने भी इसे प्रत्येक मिनटों में विस्फोटित होते हुए देखा था। उन्होनें ज्वालामुखी के पूर्वी क्षेत्र में आग जलती हुई भी देखी थी। सन् 1857 मं डा. फेडरिक जे. माउंट और डा. वान लायबिग ने अलग-अलग समय में इस द्वीप का भ्रमण किया और इन लोगों ने काले धुएं के साथ गर्म जलवाष्प के बादल देखे थे। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के एफ. आर. मैलेट इस द्वीप का भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण सन् 1885 में किया था, अनके अनुसार यह ज्वालामुखी 1857-58 के दौरान सक्रिया था। मैलेट के अनुसार ऊपरी मूल कोन ध्वस्त हो गया था। रैना (1987) के अनुसार यह सुस्पष्ट, विशिष्ट तरूण ज्वालामुखी की राख कोन था। पुराना कोन मुख्यतः स्फोट-गर्ती लावा और ओल्वीन डोलेराइअ-बेसाल्ट से बनी हैं। नये कोन के तल पर काला धातुमल लावा पाया गया। बैरन द्वीप का वायुवीय चित्रों द्वारा ज्वालामुखी के तल पर कई गंधक स्त्रोतों का पता चला है। रैना (1987) ने नये कोन के उत्तरी भीतरी ढलान पर मूल गंधक की मौजूदगी का पता लगाया था। साठ और सत्तर दशक के दौरान भी इस द्वीप में गर्म पानी और गर्मवाष्प गैसों को निकलते देखा गया था। सन् 1991 के अप्रैल माह में भारतीय

तटरक्षक गश्ती अभियानों के दौरान बैरन ज्वालामुखी से पतली धुएँ की रेखा निकलती देखी गई जो 30.04.91 तक भारी धुएं में बदल गई थी। भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण और भारतीय प्राणी सर्वेक्षण दल ने बैरन द्वीप पर दिनांक 16.05.91 को पहुँचा। इस दल ने देखा कि केन्द्रीय ज्वालामुखी कोन के पूर्वोत्तर क्षेत्र से लाल गर्म मैग्मा के साथ-साथ धुआं बराबर बाहर निकल रहा था। 50 से 60 सेंटीमीटर व्यास वाले ज्वालामुखी गोले भी विस्फोट के साथ छूट रहे थे जो 500 मीटर ऊचाई तक जाते थे। इस प्रक्रिया से समुद्री तटों की पानी काफी गर्म हो गया था जिससे गर्म वाष्प गैसों को निकलते देखा गया था। यही गर्म मैंग्मा समुद्र तट के गर्म पानी के साथ मिलकर सफेद बादल बनाती है। दल ने द्वीप में लगभग 6 घण्टा बिताया। इसी दौरान विस्फोट के समय काले धुयें के साथ गर्म जलवाष्प के बादल देखे गये और कुछ ही देर में काली वर्षा हुअी। गन्धक के धुओं के कारण साँस लेने में काफी कठिनाई होती थी।

गर्म-तर जलवायु और बार-बार विस्फोट के प्रभाव से, दूसरे पास के द्वीपों के तुलना में बैरन द्वीप पर वनस्पति और जीव-जन्तुओं की संख्या बहुत कम है। वनस्पति में मुख्य हैं – *फाइकस* जाति के छोटे पेड़, लेकिन द्वीप के दक्षिण भाग के वनस्पति काफी हरी-भरी और पेड़ 15 मी. से ऊँचे है।

वनों की कमी के कारण इन द्वीपों के प्राणी-विविधता बहुत कम है। स्तनधारी प्राणियों में जंगली बकरे, चमगादड़ और चूहे प्रमुख है। 1891 में कुछ घरेलू बकरों की इस द्वीप पर पोर्ट-ब्लेयर से स्थानीय स्टीमर से छोड़ा गया। यह ज्वालामुखी द्वीप होने के बावजूद भी इन बकरों ने अपने आप को इतनी अच्छी तरह से अनुकूलित किया कि मार्च 1990 में इन्हें सैकड़ो की संख्या में पाया। 1991 से 1993 के बैरन द्वीप के ज्वालामुखी विस्फोट के कारण इनकी संख्यॉ में काफी कमी आ गई है। मार्च 2000 को भारतीय तटरक्षक गश्ती अभियानों के साथ बैरन द्वीप का सर्वेक्षण किया और यह पता लगाया कि अब इन बकरों की केवल 30-40 संख्यॉ जो 5-6 के समूहों में था। बैरन द्वीप पर मीठे पानी का कोई स्त्रोत नहीं है, परिणमस्वरूप इस द्वीप के बकरे मजबूरन समुद्री जल पीते

है। पक्षियों की लगभग 15 जातियों का पता लगाया, जिनमें कबूतर, कोयल, बुलबुल, सनबर्ड, आदि प्रमुख हैं।

इसी दौरान ज्वालामुखी कोन से पतली सफेद धुआँ निकलता देखा गया और कहीं-कहीं ज्वालामुखी गोले तथा तटीय समुद्री जल काफी गर्म था, कहीं-कहीं मेंग्मा के चट्टानों में आग देखी गई, हो सकता है भविष्य में यह ज्वालामुखी फिर से सक्रिय हो जाये। यही विस्फोटों के कारण ज्वालामुखी पृथ्वी पर अपनी शक्तिशाली हक जताया है। यह ज्वालामुखी 1993 में सक्रिय हुआ। राजन (2000) ने भारतीय तटरक्षक गश्ती अभियानों के साथ बैरन ज्वालामुखी से धुंआ निकले देखा गया तथा कहीं-कहीं ज्वालामुखी गोले और तटीय जल काफी गर्म था। 26 दिसम्बर, 2004 के भूकंप और सुनामी के 6 महीने बाद जून 2005 में बौरन द्वीप के ज्वालामुखी फिर एक बार सक्रिय हुआ।

संरक्षण

विभिन्नता एवं सौन्दर्य से परिपूर्ण अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह प्रचुर वन सम्पदा एवं कई तरह की पारिस्थितिकी रखते हैं। हांलाकि इन द्वीपों का 86 प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छादित हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षो से इन द्वीपों में तेजी से अव्यस्थित विकास, आबादी से वृद्धि, वनोन्मूलन के कारण वंन्य एवं समुद्री प्राणियों की जनसंख्या की तीव्र ह्रास हो रहा है। इनके लिए अण्डमान निकोबार प्रशासन ने एक मंडल, आठ राष्ट्रीय उद्यान एवं 94 वन्य प्राणियों के अभयारण्य घोषित किये गये हैं जो कि 6 प्रतिशत क्षेत्र पर फैले हुए हैं। यह आंरक्षित क्षेत्र संख्या देश की किसी भी दूसरी प्रांत की अपेक्षा अधिक है लेकिन अधिकतर पशुविहार दूर-दराज के इलाकों पर है जिनका रख-रखाव सही ढंग से कर पाना मुश्किल होता है। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण का पोर्ट ब्लेयर स्टेशन 1977 से इन द्वीपों के संरक्षण के बारे में बहुत सी जानकारियाँ प्राप्त की है जिन्हें अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में किताबों, लेख एवं छायाचित्र के रूप में प्रकाशित किया है। इस जानकारी ने न केवल अण्डमान निकोबार प्रशासन को वन्य जीवों के संरक्षण में योगदान दिया

है बल्कि सभी जागरूक जनता में भी पहुँचाने की कोशिश की है। इन द्वीपों की वन संपदा को बंचाने एवं पारिस्थितिकी संतुलन को बिगड़ने से रोकने के लिए सभी संबंधित विभागों की जिम्मेदारिया बढ़ गयी हैं। इसके लिये मिलकर काम करने की जरूरत है। इस संदर्भ में भारतीय प्राणी सर्वेक्षण ने पहले से ही सभी राष्ट्रीय उद्यानों, पशुविहारों एवं जैव मंडलों का सर्वेक्षण शुरू कर दिया हैं जिससे कि वहाँ की जैव विविधता का पता लगाकर संरक्षण के लिए योजना बनायी जा सके।

संदर्भ

राजन्, पी.टी. 1994. प्रवाल-समुद्री उपवन. *पर्यावरण,* **6**(2) : 6-10.

राजन्, पी.टी. 1994. समुद्री गाय. *पर्यावरण,* **9**(4) : 55-57

राजन्, पी. टी.-1998, चमगादड (उडने वाला स्तनधारी). *पर्यावरण,* **10**(2) : 58-60

राजन, पी. टी. समुद्री सीप (समुद्र के रत्न). *पर्यावरण,* **12**(1) : 51-54

राजन्, पी.टी. एवं कैलाश चन्द्र. 1993. काटों का मुकुट तारा मछली (एकैन्थस्टर प्लेन्सी). *पर्यावरण,* **5**(4) . 38-39.

राजन्, पी.टी. एवं कैलाश चन्द्र. 1996. द्वीप और पक्षी. *पर्यावरण* **9**(1) : 8-11.

राजन्, पी.टी.. एवं कैलाश चन्द्र. 1996. भीमकाय सीपी. *पर्यावरण,* **8**(2) 13-14

कैलाश चन्द्र एवं राजन, पी.टी. 1995. स्पर्म व्हेल. *पर्यावरण* **7**(3) : 13-15

कैलाश चन्द्र एवं राजन, पी.टी. 1995. अण्डमान और निकोबार के प्राणी ओर उनका पर्यावरण में महत्व. *अण्डमान और निकोबार द्वीप समाचार.*

कैलाश चन्द्र एवं राजन, पी.टी. 1997 अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह के वन्य जीवों की वर्तमान स्थिति. *सागर तरगं*

कैलाश चन्द्र एवं राजन, पी.टी. 1997 अंण्डमान एवं निकोबार द्वीपों की प्राणी विविधता. *प्राणी जगत* 259-265.

कैलाश चन्द्र एवं राजन, पी.टी. 1994. विशालकाय समुद्री कछुआ. *पर्यावरण*

शास्त्री, डी. आर. के. एवं राजन, पी. टी. एकाईनोडरमैंटा (शूलचर्मी). *पर्यावरण,* **12**(1) : 39-42

कमल देवी एवं बुलगानिन मित्रा. 1990. दुर्लभ व सकंटग्रस्त मैगापोड. *सागर तरगं*, . 18-20

राव, जी.सी. एवं राधेश्याम शर्मा. 1989. अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूहों के वन्य जीव. *प्राणी जगत,* **2** : 107-125.

राव, जी.सी. एवं राधेश्याम शर्मा. 1994. अण्डमान तथा निकोबार द्वीपों का संकटग्रस्त समुद्री जीव समुद्री गाय. *पर्यावरण,* **6**(3) : 12-14

संजीव कुमार एवं कैलाश चन्द्र. 1993. महादस्यु केकडा. *पर्यावरण,* **5**(4) : 4

अण्डमान तथा निकोबार पन्ने का द्वीप

प्राणी विविधता एवं ऐतिहासिक महत्व के चित्र

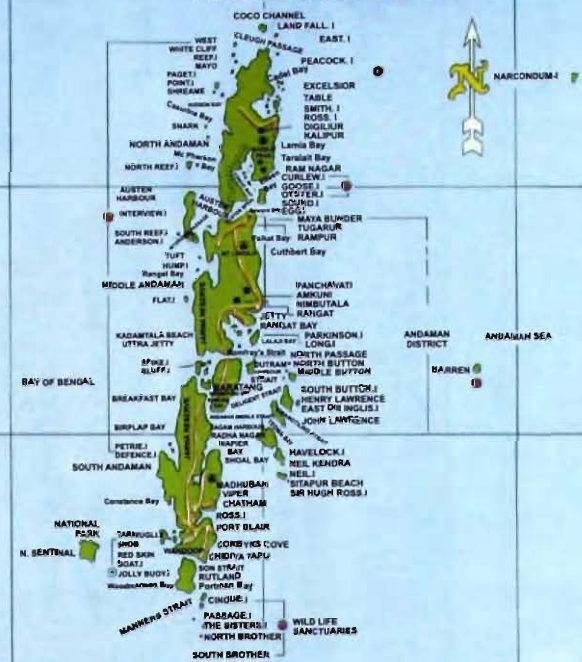

ANDAMAN &
NICOBAR ISLANDS
COCO CHANNEL
LAND FALL. I
EAST. I
PEACOCK. I
NARCONDUM.I
EXCELSIOR
TABLE
SMITH. I
ROSS. I
KALIPUR
NORTH ANDAMAN
Lamia Bay
NORTH REEF.I
RAM NAGAR
CURLEW.I
GOOSE.I
OYSTER.I
AUSTEN HARBOUR
INTERVIEW.I
MAYA BUNDER
TUGARUR
RAMPUR
Cuthbert Bay
MIDDLE ANDAMAN
PANCHAVATI
AMKUNJ
NIMBUTALA
RANGAT
RANGAT BAY
PARKINSON.I
LONG.I
NORTH PASSAGE
NORTH BUTTON
MIDDLE BUTTON
ANDAMAN DISTRICT
ANDAMAN SEA
BARREN
BAY OF BENGAL
BREAKFAST BAY
SOUTH BUTTON.I
HENRY LAWRENCE
JOHN LAWRENCE
HAVELOCK.I
NEIL KENDRA
NEIL.I
SITAPUR BEACH
SIR HUGH ROSS.I
SOUTH ANDAMAN
MADHUBAN
VIPER
CHATHAM
ROSS.I
PORT BLAIR
NATIONAL PARK
N. SENTINAL
CORBYNS COVE
CHIDIYA TAPU
RUTLAND
CINQUE.I
MANNERS STRAIT
PASSAGE.I
THE SISTERS.I
NORTH BROTHER
SOUTH BROTHER
WILD LIFE SANCTUARIES
SOUTH SENTINEL
LITTLE ANDAMAN
HUT BAY
SOUTH BAY
TEN DEGREE CHANNEL
DISTANCE FROM PORT BLAIR BY SEA
CAR NICOBAR
C. NICOBAR
BATTIMALY
FRESH WATER BAY
NICOBAR DISTRICT
CHOWRA.I
TILLANG C HONG.I
GASKE BAY
TERESSA.I
CAMORTA.I
NORTH BAY
TRINKAT.I
KATCHAL.I
NANCOWRY
NANCOWRIE SUB DIVISION
MERO
TRAK
LITTLE NICOBAR
KONDULI.I
BABRI.I
REFERENCES
MARINE NATIONAL PARK
NATIONAL PARK
WILD LIFE SANCTUARY
ROAD
GREAT NICOBAR. I
CASURINA BAY
MEGAPOD.I
INDIRA POINT
CHANNEL

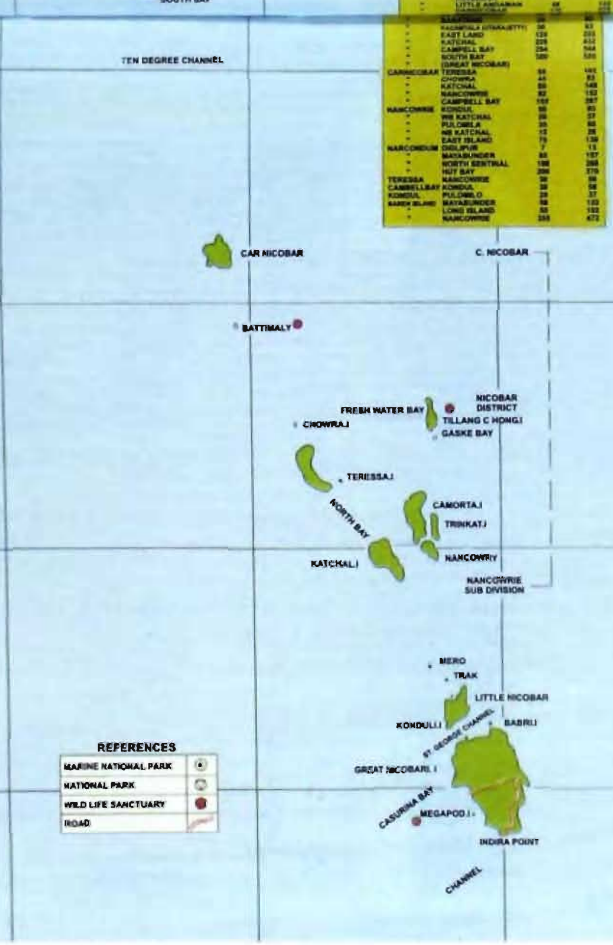

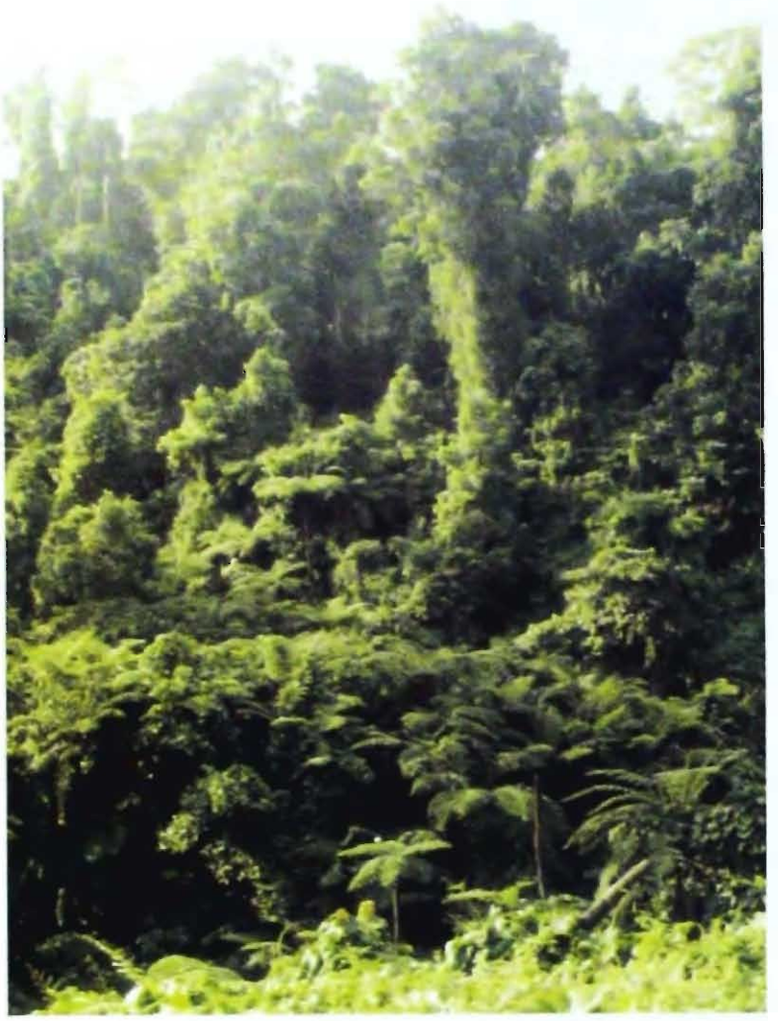

अण्डमान गर्म-तर सदा हरे जंगल

सदाबहार हरे जंगल - ग्रेट निकोबार वन

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

सदाबहार हरे जंगल

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

सिंक द्वीप का मनोरम दृश्य

गैलाथिया नदी ग्रेट निकोबार द्वीप

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

द्वीप पर आनंदित पर्यटक

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

चूने की गुफा

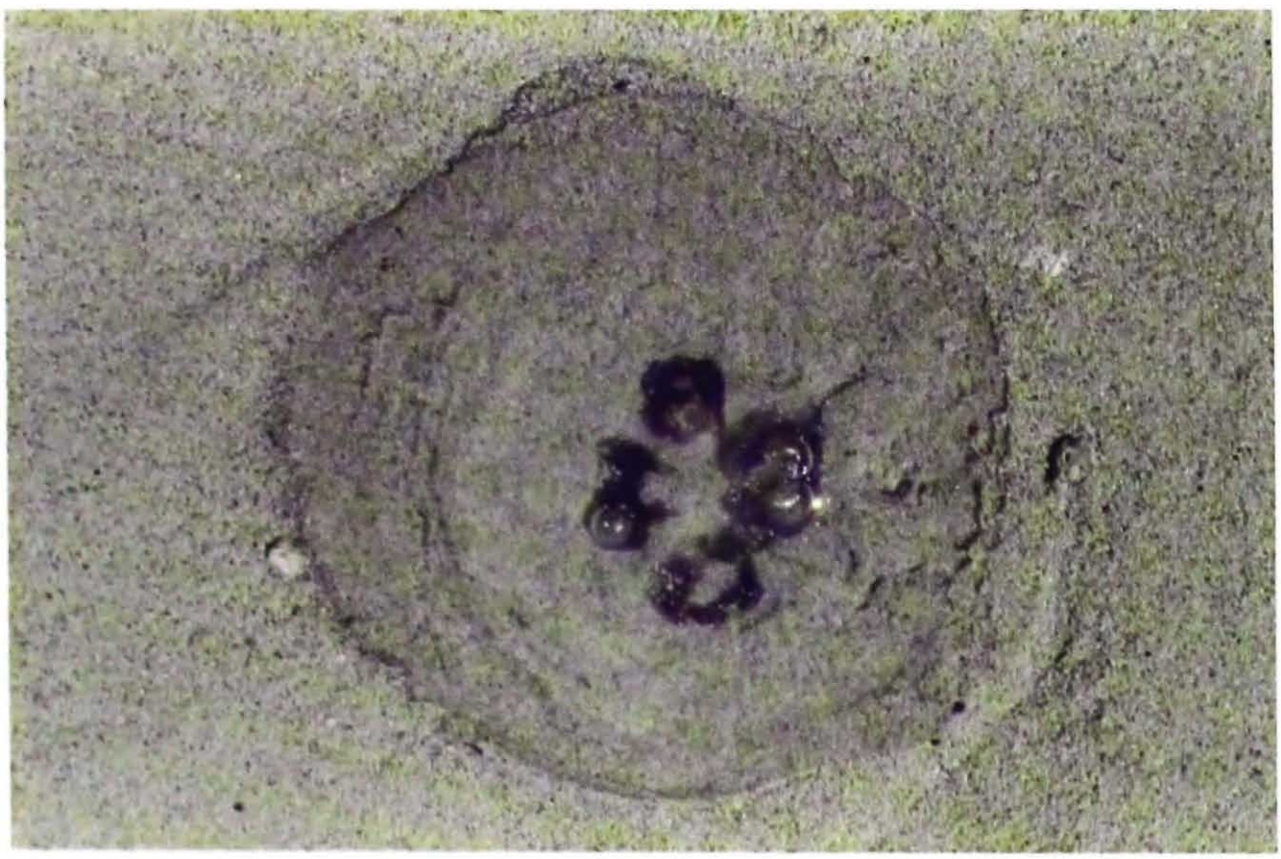

जेलीफिश

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

समुद्र के अन्दर का एक दृश्य

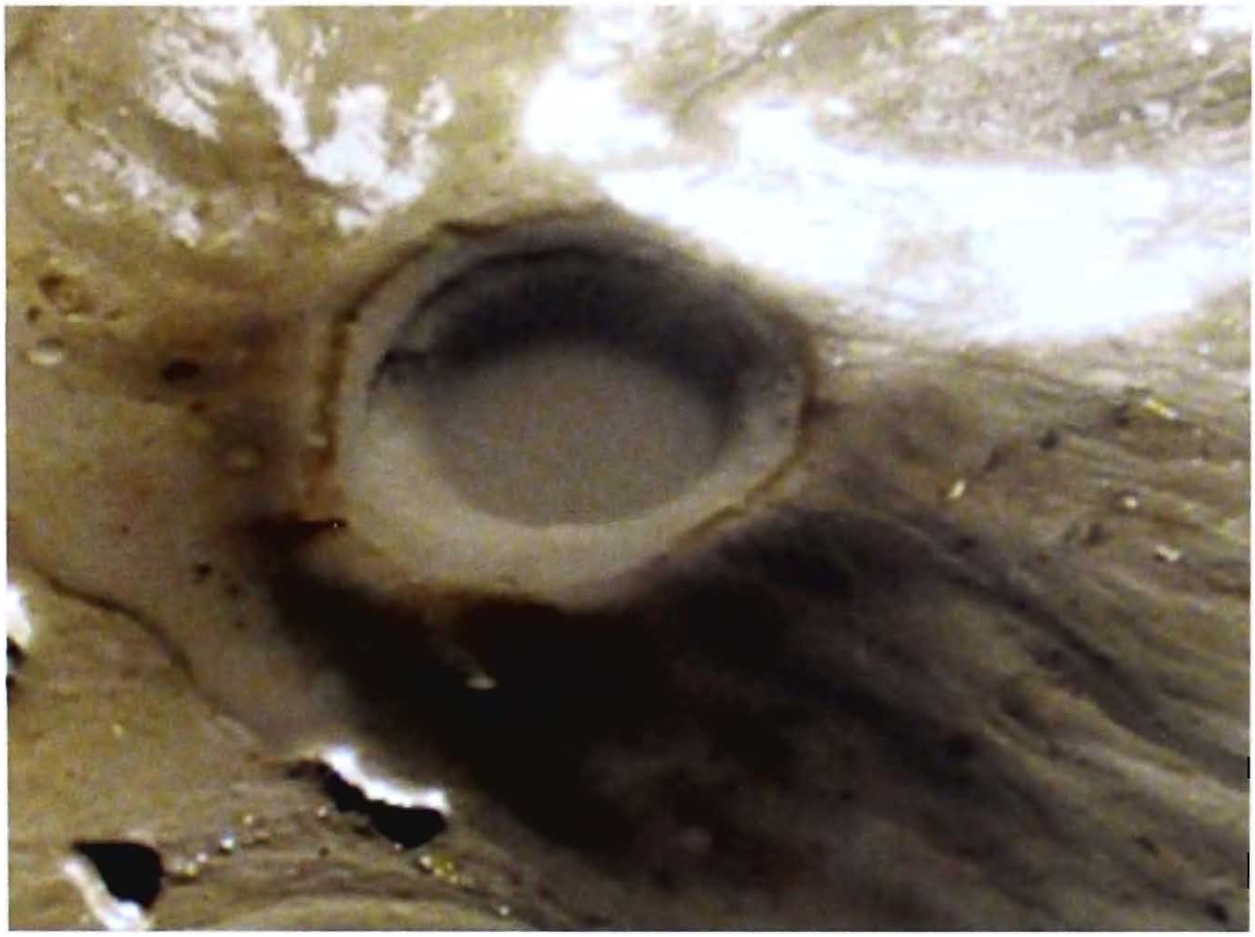

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

बारातंग द्वीप में मड वलकैनो

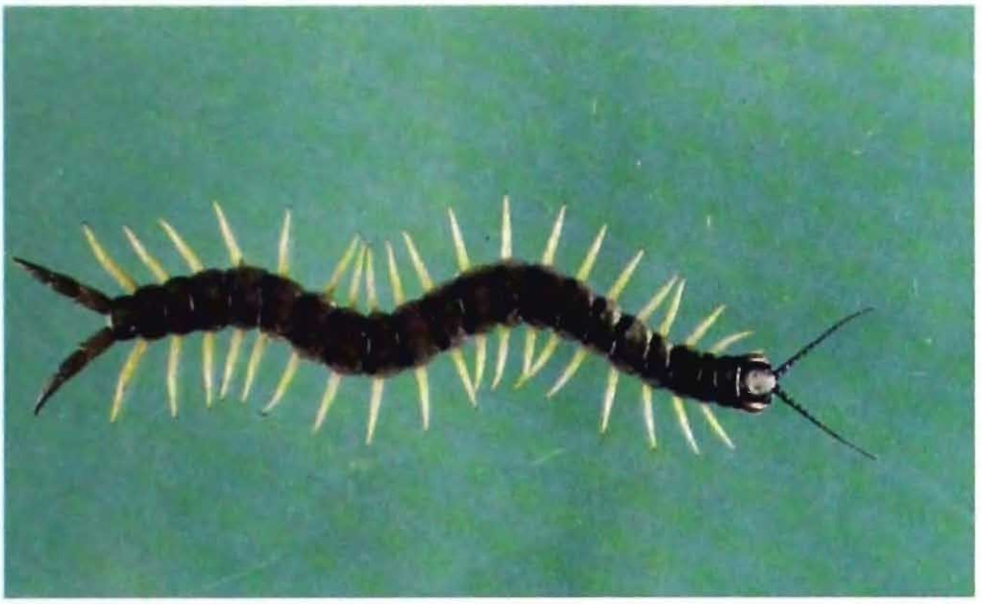

कानखजूरा

वेलवेट माईट (ट्रोम्बीडियम प्रजाति)

कोकोनट केकड़ा, दस्यु केकड़ा, कचाल द्वीप

हारमुरस आस्टैलासियाई, बिच्छू

स्कैरैब बीटिल, ''एनोमला प्रजाति''

अण्डमान टेल्ड जे तितली 'स्थानीय प्रजाति'

अण्डमान क्रो, तितली

अण्डमान यामफ्लाई 'स्थानीय प्रजाति'

अण्डमान क्लीपर तितली

नानमल्बरी सिल्क पतंगा

एक्टिपस सेलेन, मून माथ, लेपिडोप्टेरा

आरकटिड माथ – (निक्टीमेरा कोलेटा कोलेटा)

चैन्क शेल

नउटिलस प्रजाति

कामशियल टाप शेल

मोलस्का

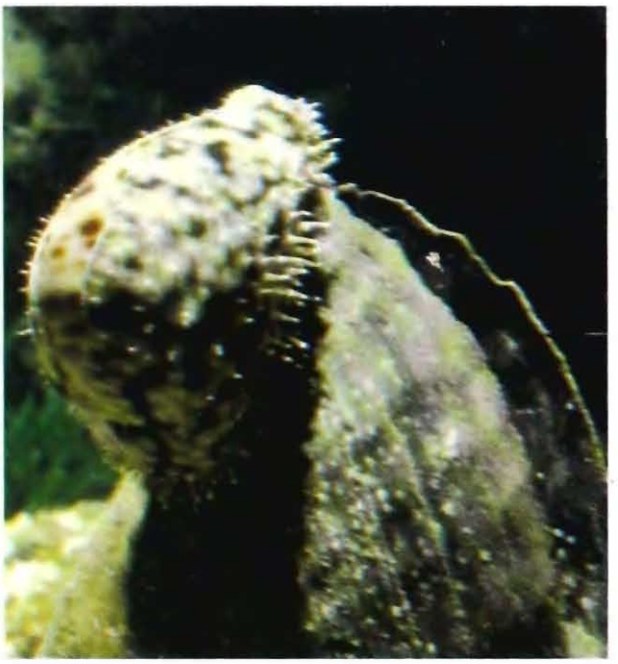

टाइगर कौड़ी

क्लेम्प शेल (ट्राईडेक्ना प्रजातियां)

नीली धारीवाला आक्टोपस

स्लग, फालिडा जेलानिका

स्लग, मोलस्का

कलासेटा नोवाजीनिया प्रजाति, 'कुशन स्टार' इकाईनोडरमेटा

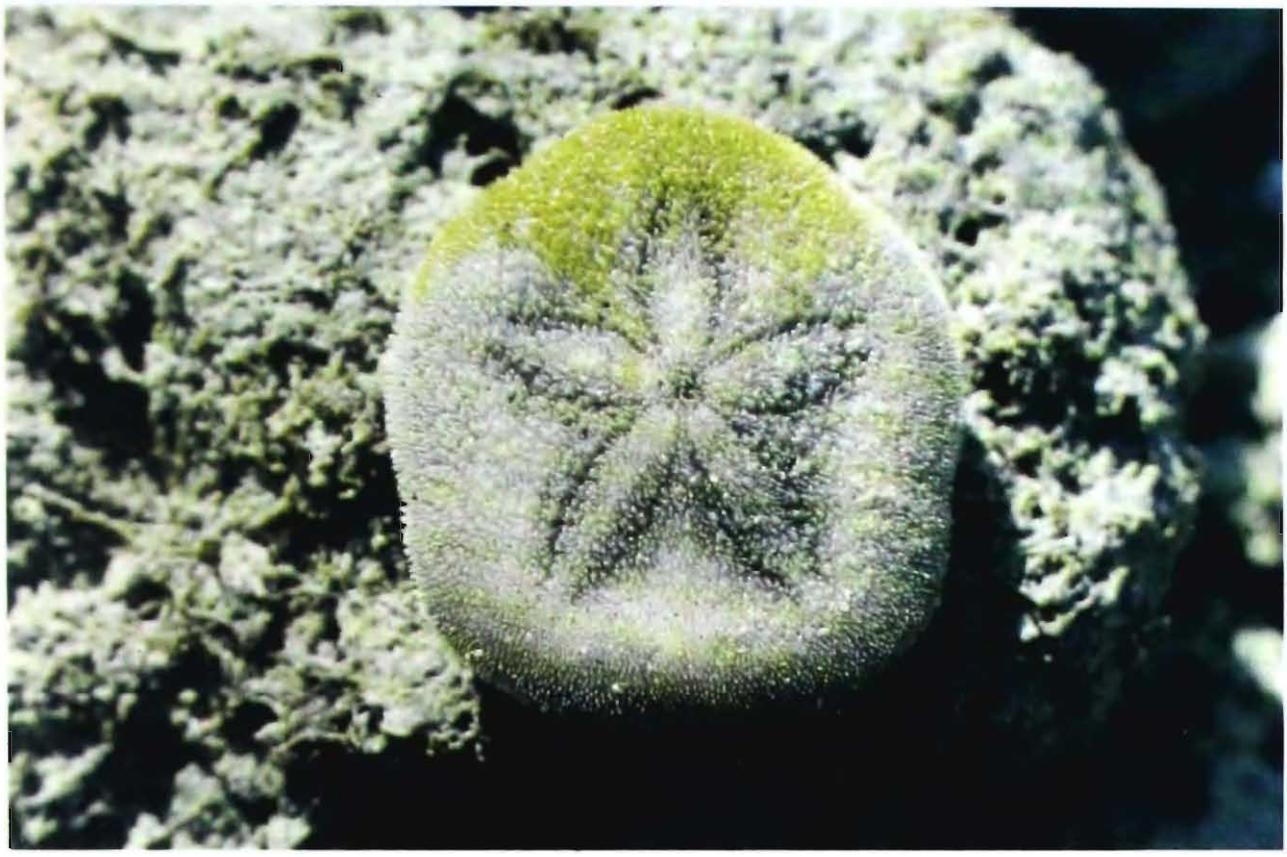

इकाईनोडरमेटा (*लगेनम*)

समुद्री खीरा (*एक्टीनोपैग मारिटीयेना*)

समुद्री खीरा (*एक्टीनोपैग लकानोरा*)

इकाईनोडरमेटा (*होलोथूरिया पैक्सिस*)

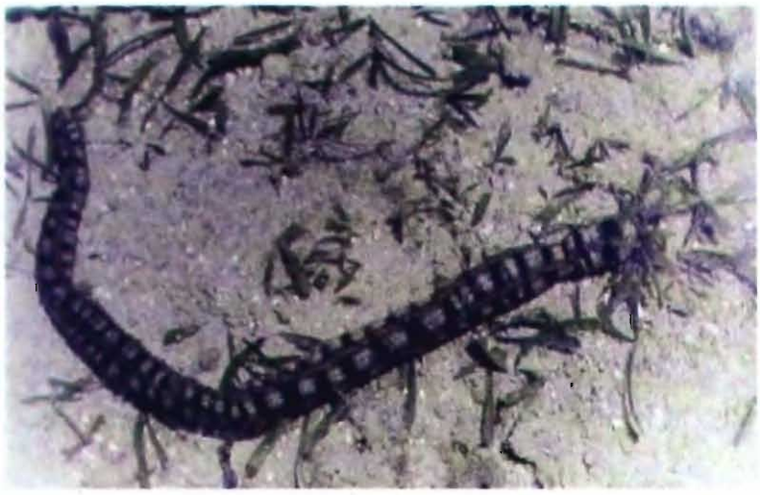

लम्बा समुद्री खीरा,
इकाईनोडरमेटा

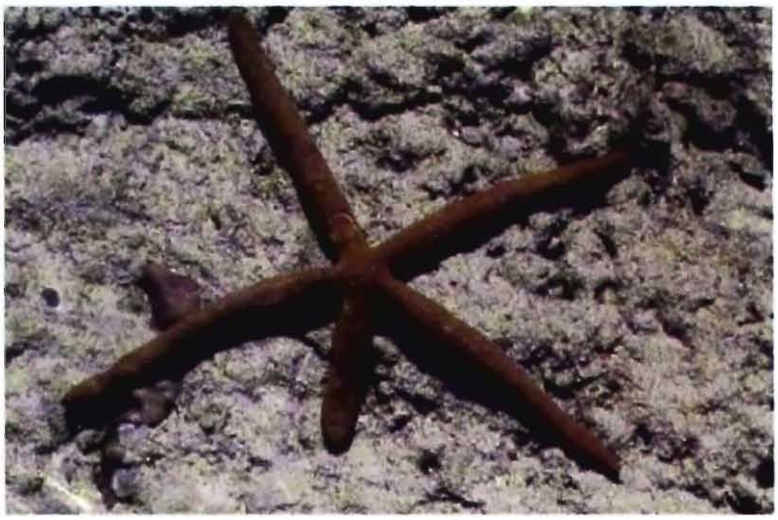

स्टार फिस, इकाईनोडरमेटा
(*लिनकिया गिलडिन्गी*)

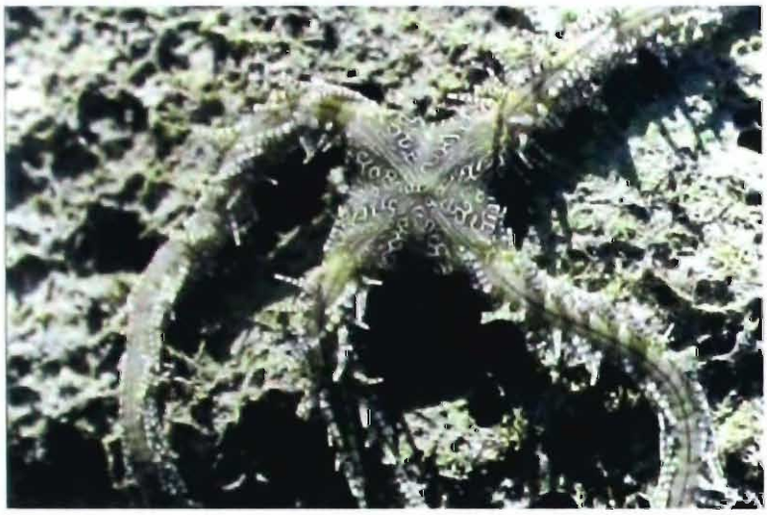

ब्रिटल स्टार फिस
(*ओफिआथरम पिकटम*)

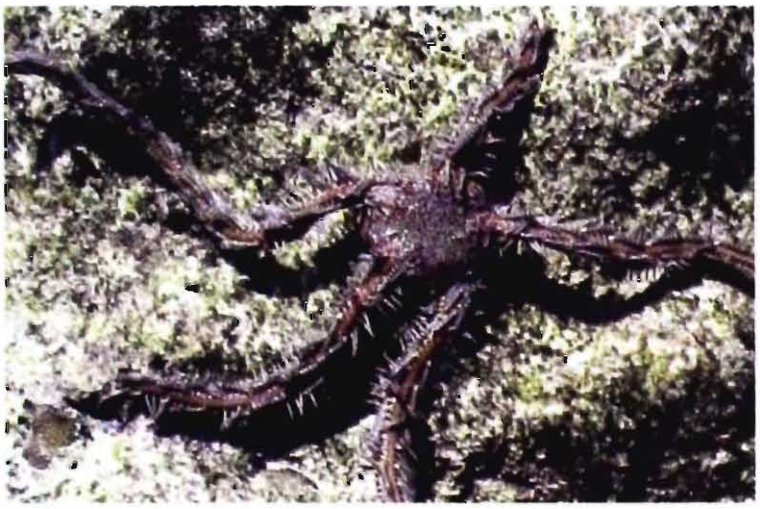

ब्रिटल स्टार फिस
(*आफियोनेस्टिस एनूलोजा*)

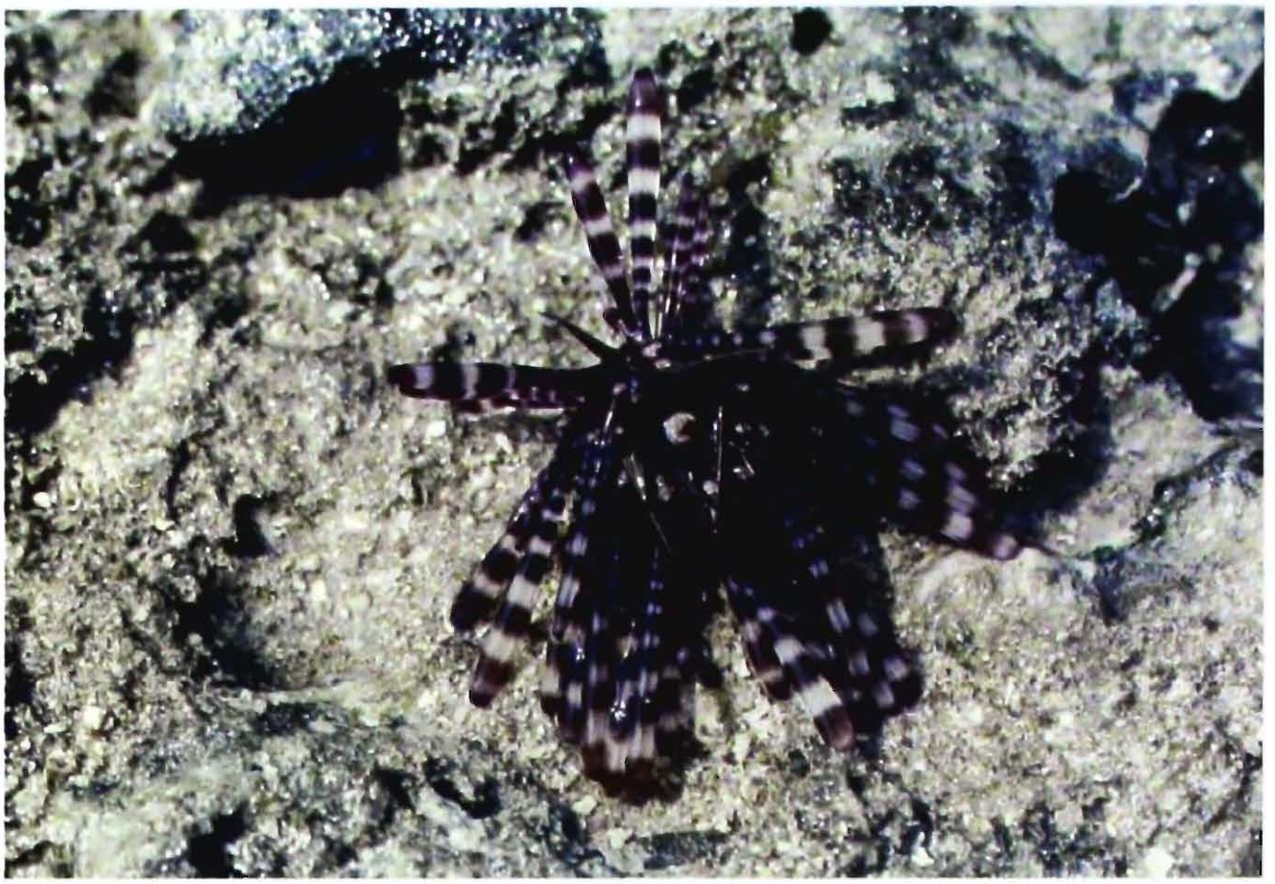

सी अर्चिन (*इकाईनोथ्रिक्स कलामारिस*)

प्रवाल भित्ति क्षेत्र

स्कारपियन मछली (*टिरोपिस वोलिटन्स*)

स्नेपर मछली (*लुटजेनस काश्मीरा*)

स्कूलिंग बैनर मछली (*हीनिओकस डाइफरुटस*)

ग्रुपर मछली (*इपीनिफेलस ब्लीकरी*)

दाढ़ी मछली (*युपिनियस विटेटस*)

डालफिन मछली (*कोरीफेना हिपूरस*)

रानी मछली (*केसियो कूनिंग*)

माइक्रोहाईला हेमोन्सी – फ्राग

लिम्नोनेक्टेस शोम्पेनैरियम – स्थानीय प्रजाति

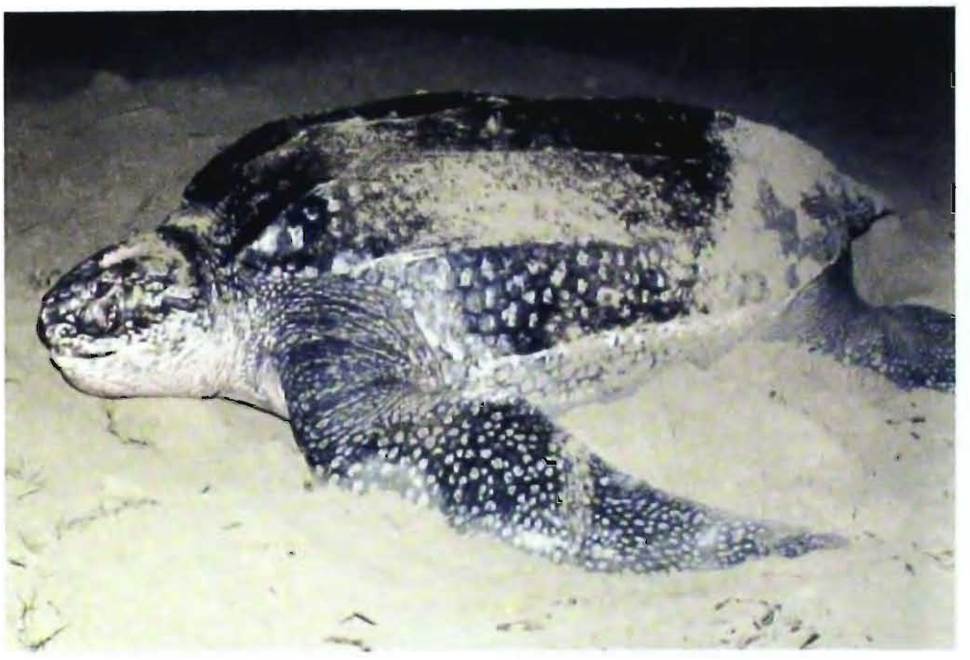

लेदरबैक समुद्री कछुआ

हाक्सविल समुद्री कछुआ

हरित समुद्री कछुआ

अण्डमान प्रवासी *वैरानस सेल्वाटोर अण्डमोनिन्सस*

बै आईलैंड फारेस्ट लिजार्ड, दक्षिण अण्डमान

ग्रेट निकोबर द्वीप की प्रजाति
बोन्कोसेला डैनेली

गार्डन लिजार्ड *(कैलोटेस बर्सीकलर)*

प्लैट टेल्ड गेको

समुद्री साँप – *लेटीकउडा कोलोबिस*

टील प्रजाति (*डेन्ड्रोसिग्ना जवानिका*)

दक्षिणी निकोबार मेगापोड़

अण्डमान चेस्टनट हेडड बीइटर
(*मिरोप्स लैसचेनौलटी अण्डमानोन्सिस*)

वाइट आई (*जोस्टरपस पालपबरोसा*)

समुद्री गाय (*डुगांग डुगान*)

अण्डमान पाम सीवेट (*पेग्यूमा लारवेटा टिट्लेरी*)

मिन्नी चिड़ियाघर में चीतल (स्पॉटेड डियर) – *ऐक्सिस ऐक्सिस*

केकड़े खाने वाले बंदर

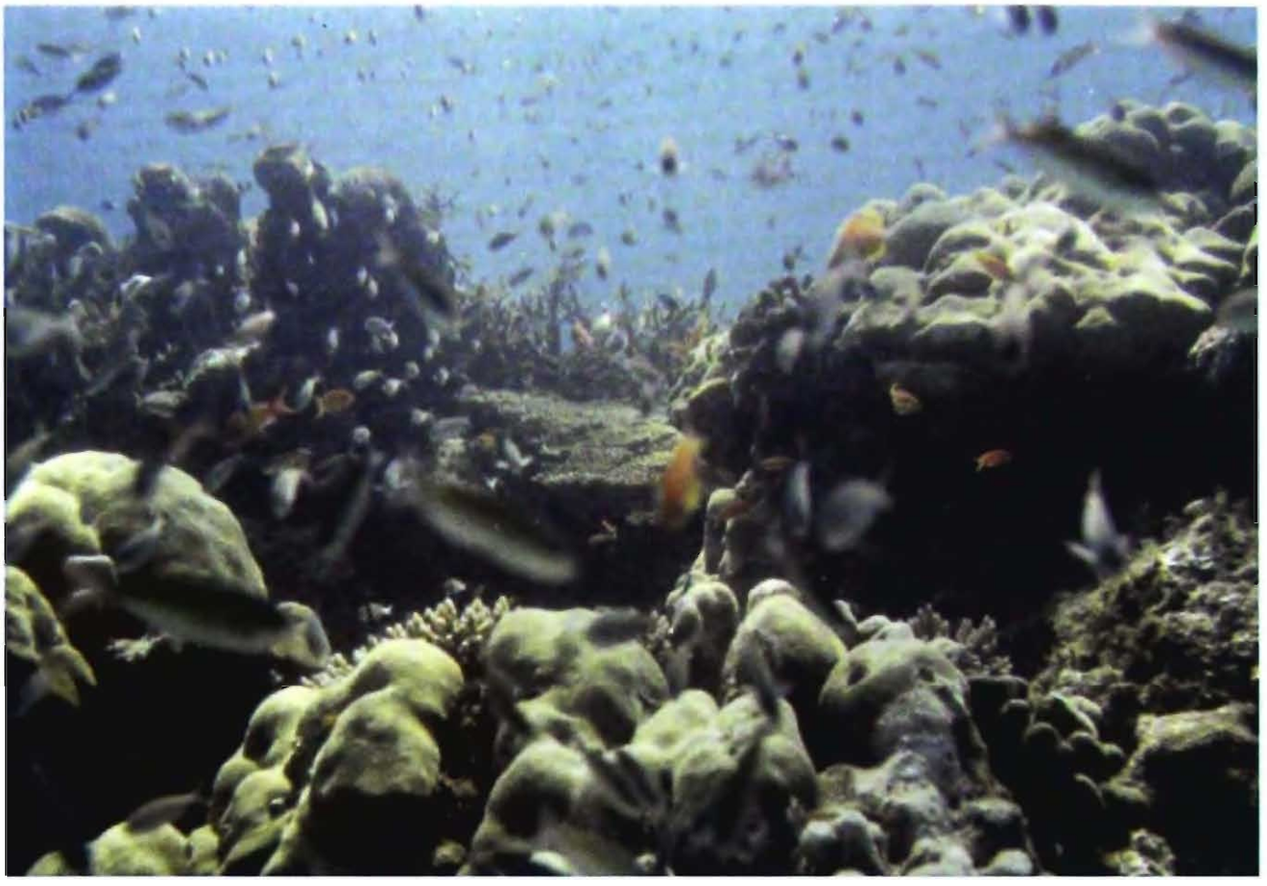

प्रवाल भित्ति

प्रवाल भित्ति

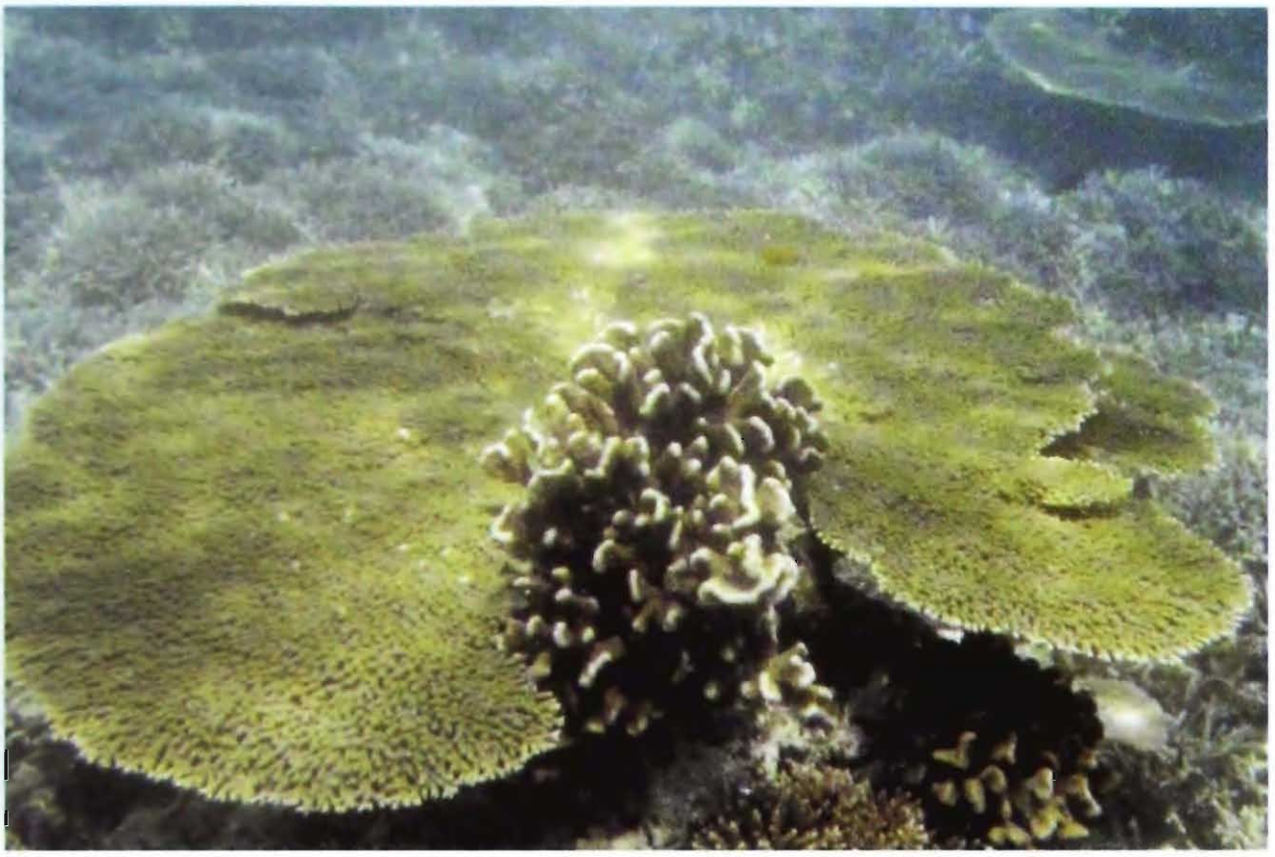

प्लेट कोरल, प्रवाल भित्ति

पोसिलोपोरा कोरल

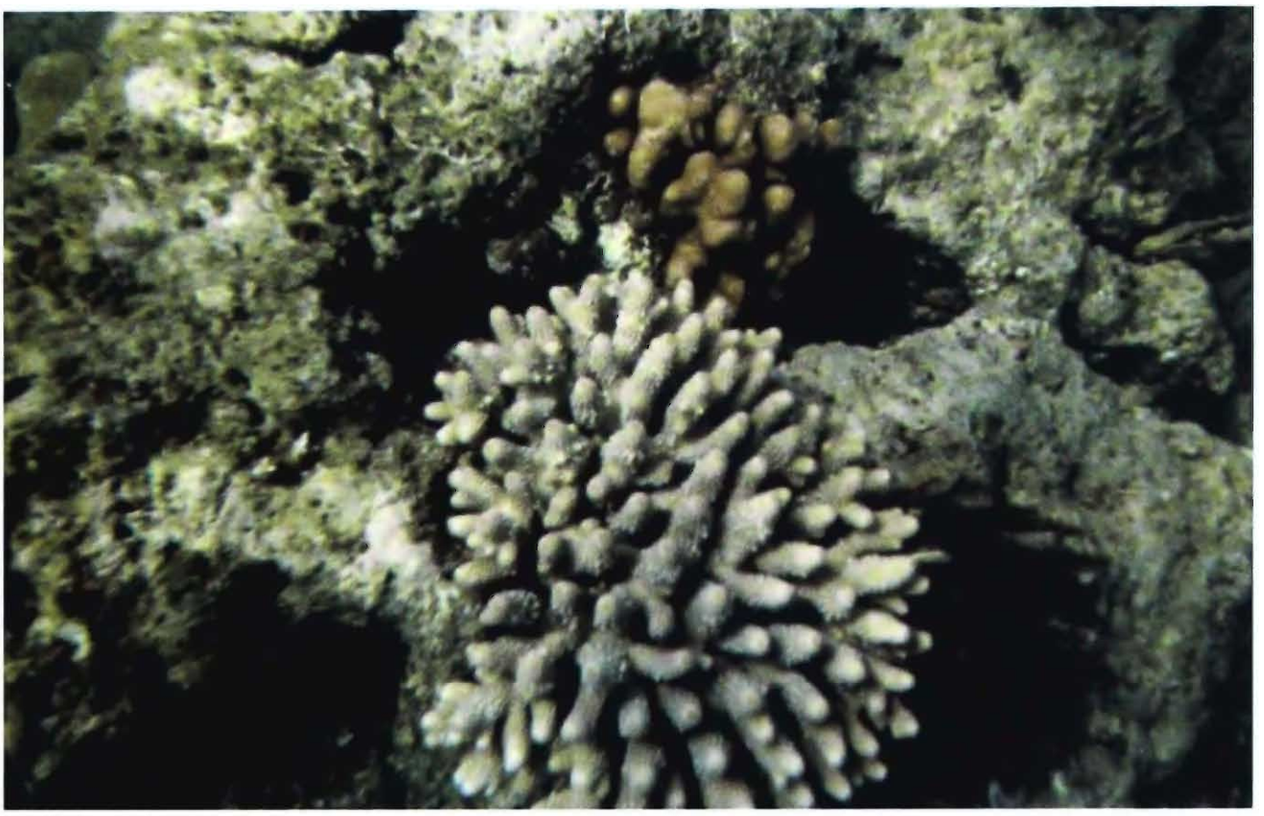

एक्रोपेारा कोरल

शोम्पेन जनजाति (ग्रेट निकोबार द्वीप के निवासी)

निकोबारी पारम्परिक झोपड़ी (निकोबार द्वीप)

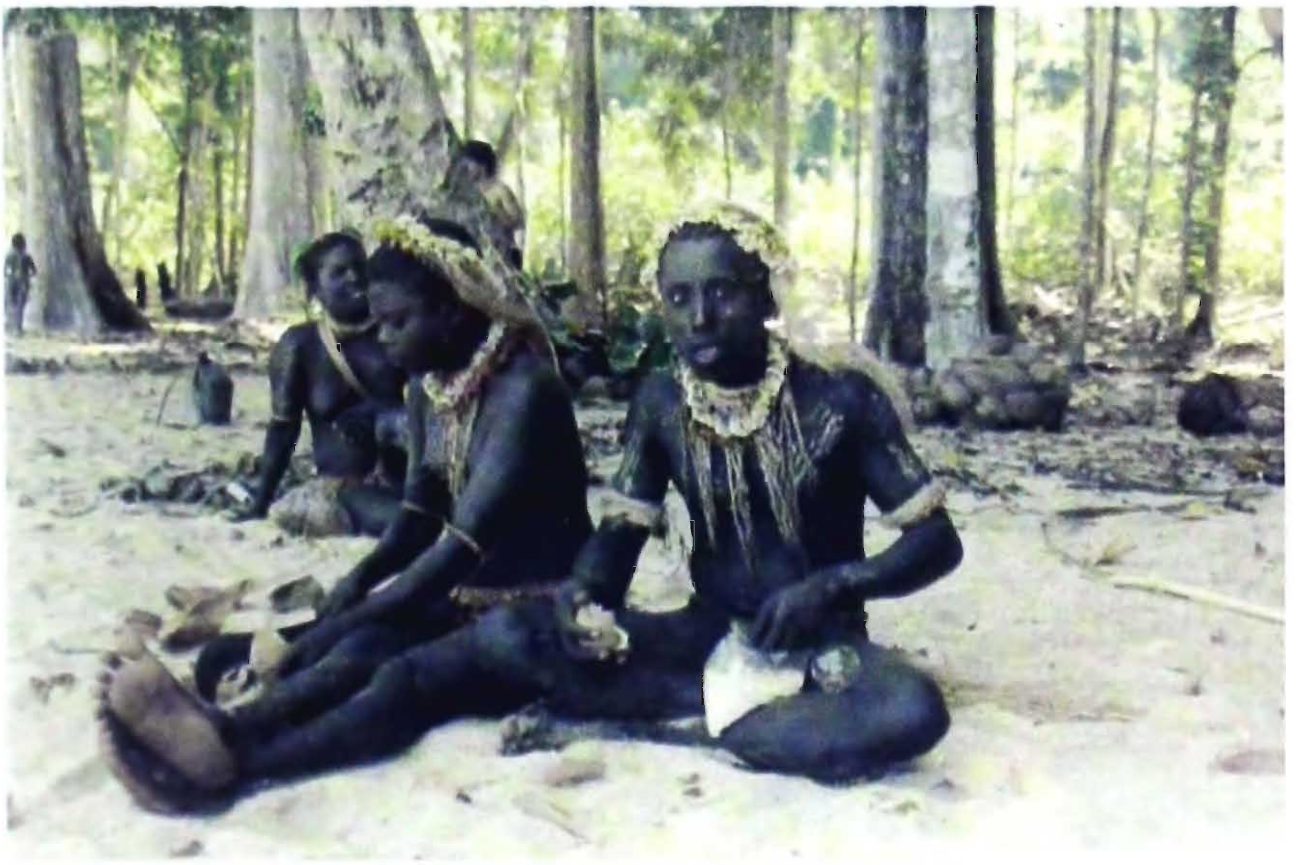

जारवा जनजाति ग्रेट अण्डमान के निवासी

सेन्टीनलीज जनजाति (सेन्टीनेल द्वीप)

ओगें जनजाति 'लिटिल अण्डमान' के निवासी

अण्डमान तथा निकोबार पन्ने का द्वीप

पर्यटन संबंधित जानकारी

पर्यटकों के लिए निर्देशिका

भूमिका

अण्डमान और निकोबार भारत के पूर्व में 572 हरे-भरे द्वीपों, छोटे द्वीपों और चट्टानी हिस्सों का बना द्वीप समूह है, जो अपनी पूरी भव्यता के साथ फैला है। यह द्वीप समूह छत्तीस रिहायशी द्वीपों के साथ उत्तर से दक्षिण तक 700 किलोमीटर से अधिक लम्बाई में फैला हुआ है। बर्मा (म्यांमार) से इण्डोनेशिया तक फैली पर्वत श्रंखला के साथ ये तरंगित द्वीप घने जंगलों और तरह-तरह के मनोहारी जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों से ढके होते हैं। इन द्वीपों की स्थलाकृति पर्वतीय है और सदाबहार वन इन्हें आच्छादित करते हैं। सर्पिलाकार किनारों वाले रेतीले समुद्री तटों पर नारियल के पेड़ समुद्र से आते झोंकों की लय पर झूमते हैं। इन द्वीपों के आसपास फैला विशाल समुद्र रोमांचित जल क्रीड़ा के लिए अच्छा और उपयुक्त परिवेश बनाता है। यहाँ मिलने वाले अनोखे-दुर्लभ जीव-जंतु तथा वनस्पति, पानी की गहराई में मिलने वाले जीव और मूंगे, नीला-चमकीला पानी और वनस्पति से ढके तट हर प्रकृति प्रेमी को लुभाते हैं, जो प्रकृति माँ की गोद में परम शांति और आराम चाहता है। साहसिक खेल जैसे ट्रेकिंग, द्वीप में कैम्प लगाना, स्नोरकेलिंग, स्कूबा डाइविंग आदि यहाँ के प्रमुख आकर्षण हैं। इन द्वीपों में एक बार का आगमन जीवनभर एक यादगार अनुभव कराता है।

इतिहास

पुराणों के अनुसार अण्डमान नाम हनुमान से बना है, जो मलाया लोगों के बीच हन्डुमान नाम से जाने जाते थे। इतिहास-पूर्व समय से इन द्वीपों में देशी मूल के आदिवासी रहते आए हैं। अण्डमान द्वीप समूहों की जनजातियों में शामिल हैं ग्रेट अण्डमानी, ओन्गें, जरवास और सेन्टीनेलील्स, ये सभी नोग्रिडो मूल के हैं, जबकि निकोबार निवासी और शोम्पेन दोनों मंगोलियाई मूल के हैं। यहाँ ब्रिटिश कम्पनी ने अपना पहला पड़ाव 1789 में डाला, जिसे 1796 में खत्म कर दिया गया। दूसरा पड़ाव मूलतः एक

स्त्रोत्र : Andaman & Nicobar the Emerald Islands से अनुवादित।

दण्डात्मक व्यवस्था थी, जो 1858 में आज़ादी के प्रथम संग्राम के बाद बनाई गई थी, इसके बाद मुजरिम, मोपलास, मध्य और संयुक्त प्रांतों के कुछ आदिवासी पहले पूर्वी पाकिस्तान कहे जाने वाले भाग बर्मा और श्रीलंका से आए शरणार्थी तथा पूर्व सेवारत व्यक्ति यहाँ आए।

निवासी

इन द्वीपों में सभी धर्मों - हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख आदि तथा सभी भाषाएँ बोलने वाले, जैसे हिन्दी, बंगाली, मलयालम, तमिल, तेलुगु पंजाबी, निकोबारी आदि मिल-जुलकर शांति और सद्भावना से रहते हैं। अंतरधार्मिक और अंतरजातीय विवाह यहाँ सामान्य बात है। यहाँ की अद्भुत मिश्रित संस्कृति और जातीयता को 'लघु-भारत' कहा जा सकता है।

जीव-जंतु और वनस्पति

इस द्वीप में चारों तरफ हरियाली छाई है। संरक्षित और सुरक्षित वन इस क्षेत्र के लगभग 86 प्रतिशत से अधिक हिस्से में फैले हैं और यहाँ पर 92 प्रतिशत से अधिक हिस्सा वनों से ढका है। वनों के लगभग 50 प्रतिशत भाग को आदिवासी संरक्षित वन, राष्ट्रीय पार्क और वन्य जीवन संग्रहालय के रूप में घोषित किया गया है, जिनका उल्लंघन नहीं हो सकता। विशाल मेंग्रोव क्षेत्र जो लगभग 11.5 प्रतिशत हिस्से में फैला है। इस द्वीप समूह में 150 से अधिक वनस्पति और जीवों की प्रजातियाँ यहाँ की स्थानीय प्रजातियाँ हैं। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में वन्य ऑर्किड की 110 से अधिक प्रजातियाँ हैं, जो ज्ञात भारतीय प्रजातियों का लगभग 10 प्रतिशत है।

आस-पास लहराते समुद्र में समुद्री जैव-विविधता से भरा पड़ा है। जिनमें 1200 से अधिक मछलियों की प्रजातियों, इकाइनोडर्म (स्टारफिश आदि) की 350 प्रजातियों, शंखों-सीपियों की 1000 प्रजातियाँ शामिल हैं। कशेरूक जंतुओं में डुगोंग, डॉल्फिन और व्हेल आम हैं। महात्मा गांधी मेरीन नेशनल पार्क में मूंगे, रंगीन मछलियों की किस्में, समुद्री कछुओं के साथ अन्य समुद्री जीव पाये जाते हैं।

अण्डमान चिड़ियों का स्वर्ग माना जाता है। इस सुंदर परिवेश में 270 से अधिक किस्मों की चिड़ियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से 95 स्थानीय हैं, जिनमें से मेंगापोड, स्विटलेट, हॉर्नबिल और निकोबारी कबूतर उल्लेखनीय हैं। पक्षीविज्ञानी और पक्षी देखने के शौकीन व्यक्तियों को ये द्वीप हमेशा आकर्षित करते रहे हैं।

इन द्वीपों के रेतीले किनारों पर कछुओं के अण्डे देने की प्रक्रीया प्रसिद्ध हैं। पाई जाने वाली कछुओं की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियाँ हैं लैदर ब्लैक, ग्रीन सी, हॉक्सबिल और ऑलिव रिडली कछुए। यहाँ वॉटर मॉनिटर लिज़ार्ड, सॉल्ट वॉटर क्रोकोडाइल, रेटिकुलेट अजगर आदि भी देखे जाते हैं।

समुद्री परिस्थितिकी तंत्र का सबसे अधिक मनमोहक हिस्सा है मूँगे की चट्टान (कोरल रीफ)। अब तक 61 वंशों की 179 प्रजातियाँ यहाँ देखी गई हैं। पश्चिमी तट पर अधिकांशतः कोरल रीफ कटे-फटे, लहरदार हैं। ये कोरल रीफ मछलियों और अन्य जीवों के लिए महत्वपूर्ण प्रजनन और नर्सरी क्षेत्र हैं।

सामान्य जानकारी

स्थान	:	बंगाल की खाड़ी 92^0 से 94^0 पूर्वी देशांतर 6^0 से 14^0 उत्तरी अक्षांश
क्षेत्र	:	अण्डमान ज़िला : 6,408 वर्ग कि.मी. निकोबार ज़िला : 1,841 वर्ग कि.मी. कुल क्षेत्र 8,249 वर्ग कि.मी.
राजधानी	:	पोर्ट ब्लेयर
दूरी	:	कोलकाता से 1255 कि.मी., चैन्नै से 1190 कि.मी. विशाखापटनम से 1200 कि.मी.
ऊँचाई	:	समुद्र स्तर से 732 मीटर ऊपर
सबसे ऊँचा शीर्ष	:	सैडल पीक - 732 मीटर
मौसम	:	औसत न्यूनतम तापमान 23 डिग्री से. और अधिकतम तापमान 30 डिग्री से. सहित पूरे साल उष्णकटिबंधीय मौसम। नमी अपेक्षाकृत अधिक 70 प्रतिशत से 90 प्रतिशत के साथ पूरे समय एक मृदु समुद्री हवा चलती है। पोर्ट ब्लेयर में 3,000 मि.मी. औसत वार्षिक बारिश के साथ मौसम आम तौर पर खुशनुमा रहता है। (मई से सितम्बर मध्य तक और नवम्बर से जनवरी तक)
वनों का आच्छादन	:	92 प्रतिशत, वन क्षेत्र 86 प्रतिशत
सर्वोत्तम मौसम	:	अक्टूबर से मई

मानसून में पर्यटन

मौसम : जून से सितम्बर

कपड़े : पूरे साल सूती कपड़े

आई एस डी कोड : ++91-3122 (एस टी डी 03192)

सरकारी वेबसाइट http://tourism.andman.nic.in

पहुंचने का तरीका

वायुमार्ग द्वारा : चैन्नै और कोलकाता से वायुमार्ग से जुड़ा है। इस समय रविवार, सोमवार, बुधवार और शुक्रवार सैक्टर में चैन्नै-पोर्ट ब्लेयर-चेन्नै और कोलकाता-पोर्ट ब्लेयर-कोलकाता सैक्टर में रविवार, सोमवार, मंगलवार, गुरूवार और शनिवार को एलाएंस एयरलाइन की फ्लाइट जाती है। जेट एयरवेज़ की फ्लाइट प्रतिदिन चैन्नै-पोर्ट ब्लेयर-चैन्नै सैक्टर में चलती है (सिवाय अगस्त-सितम्बर जब एक सप्ताह में चार उड़ानें होती हैं।)

एलाएंस एयर : शहरी कार्यालय : मिडिल पॉइंट
पोर्ट ब्लेयर,
फोन : 233108
एयरपोर्ट : 232983
वेबसाइट : www.indian-airlines.com

जेट एयरवेज़ : शहरी कार्यालय : जंगलीघाट
पोर्ट ब्लेयर,
फोन : 236922 / 33
फैक्स : 236944
एयरपोर्ट : 235911, 239544
वेबसाइट : www.jetairways.com

चार्टर फ्लाइट : विदेशी पर्यटक पोर्ट ब्लेयर में चार्टर फलाइट से उतर सकते हैं, बशर्ते वे भारत सरकार के नागरिक उड्डयन के महानिदेशक द्वारा तय शर्तों का पालन करें।

समुद्र के रास्ते : चैन्ने, कोलकाता और विशाखापटनम से पोर्ट ब्लेयर के लिए नियमित रूप से यात्री जहाज सेवाएँ जाती हैं। कोलकाता और चेन्नै से पोर्ट ब्लेयर तथा वापसी के लिए माह में तीन से चार यात्री जहाज़ जाते हैं। माह में एक बार विशाखापटनम से जहाज़ पोर्ट ब्लेयर जाता है। इस यात्रा में 50 से 60 घण्टे लगते हैं। समय अनुसूची और किराए पर और अधिक जानकारी यहाँ से ली जा सकती हैं :

शिपिंग कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

- ए पी जे हाउस, चौथा तल,
  दिनसा याचा रोड, मुम्बई 4000020
  टेलीफोन · 22822101 / 22823316
  फैक्स : (022) 22022438
- शिपिंग हाउस, नं 13, स्टैण्ड रोड,
  कोलकाता 700001
  टेलीफोन : 22482354, 22488013
  फैक्स : (033) 22482035, 22480377
- जवाहर भवन, राजाजी सलाई,
  चेन्नै 600001
  टेलीफोन : (044) 25231401,
  फैक्स : (044) 25231218
- एबरडीन बाजार, पोर्ट ब्लेयर 744101
  टेलीफोन : (03192) 233347, 233590
  फैक्स : (03192) 233778

जहाजरानी (शिपिंग) सेवा के उपनिदेशक
अण्डमान और निकोबार प्रशासन,
6, राजाजी सलाई, चेन्नै 600001
टेलीफोन : (044) 25220841 / 25226873
जहाजरानी (शिपिंग) सेवा के निदेशक
अण्डमान और निकोबार प्रशासन
फीनिक्स बे जेडी, पोर्ट ब्लेयर
(एम वी नानकोवरी और एम वी स्वराजदीप के लिए)
टेलीफोन : (03192) 232528 / 232742
फैक्स : (03192) 230480

मेसर्स ए वी बहानोजिरोव और गरूण पट्टाभिरामैया एण्ड कं.
पोस्ट बॉक्स नं. 17, विशाखापटनम
(एजेंट-शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि.)
टेलीफोन · (0891) 2565597 / 2562661
फैक्स : 256607 / 2549224

जहाजों के चलने की समय सूची इन वेबसाइटों पर भी उपलब्ध है :
www.andman.nic.in और
www.and.nic.in

प्रवेश की औपचारिकता

विदेशी : सभी विदेशी नागरिक 30 दिनों तक यहाँ रह सकते हैं। अनुमति लेकर इसे 15 दिनों के लिए और बढ़ाया जा सकता है। इन्हें रहने के लिए परमिट की जरूरत होती है। जिसे पोर्ट ब्लेयर पहुँच कर प्रवास प्राधिकारियों से बड़ी आसानी से प्राप्त किया जा सकता हैं, इसके साथ इंडियन मिशन ओवरसीज़, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नै, कोलकाता स्थित विदेशी पंजीकरण कार्यालयों और दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नै के हवाई अड्डों पर स्थित प्रवास प्राधिकारियों से भी इसकी अनुमति ली जा सकती है।

रात्रि विश्राम के इस परमिट के बाद इन स्थानों पर रुका जा सकता है : दक्षिणी अण्डमान द्वीप, मध्य अण्डमान द्वीप और छोटा अण्डमान द्वीप (आदिवासी संरक्षित क्षेत्र के अलावा), नील द्वीप, हेवलॉक द्वीप, लम्बाद्वीप, दिगलीपुर, बाराटांग, उत्तरी मार्ग और महात्मा गांधी मेरीन नेशनल पार्क (बोट होबडे, टिवन टारमुगली, मलय और प्लूटो के अलावा)। पार्क में अनुमति लेकर ही रात में रुका जा सकता है।

दिन में रुकने के लिए : साउथ सिंक द्वीप, ब्रदर सिस्टर और बैरन (बेरन में केवल बोर्ड वेसल से जा सकते हैं)।

भारतीय नागरिक : भारतीय नागरिकों को अण्डमान आने के लिए अनुमति की ज़रूरत नहीं होती। जबकि निकोबार और अन्य जनजातीय क्षेत्रों में जाने के लिए परमिट की जरूरत होती है, जो कुछ ही मामलों में दिए जाते हैं। इसके लिए उपायुक्त, पोर्ट ब्लेयर, अण्डमान जिला पोर्ट ब्लेयर को संबोधित कर निर्धारित प्रपत्र में आवेदन किया जाए।

ऐतिहासिक महत्व के स्थान

सेल्युलर जेल (नेशनल मेमोरियल) : पोर्ट ब्लेयर स्थित सेल्युलर जेल हमारी स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले सेनानियों पर किए गए अत्याचारों की मूक गवाह है, जिन्हें इस जेल में कैद किया गया था। यह जेल 1906 में बना और कैदियों को पूरा तरह से अलग-थलग रखने के लिए इसमें अलग-अलग कमरे तैयार किए गए। मूल रूप में यह सात दिशाओं का भवन था, जिसमें बीच में मौजूद स्तंभ से मधुमक्खी के छत्ते की तरह कतार में बने कमरे जुड़े हुए थे। आगे चल कर यह टूट-फूट गई और इस समय सात में से तीन कतारें मौजूद हैं। स्वतंत्रता प्रेमियों के लिए यह जेल एक तीर्थ स्थल है और इसे राष्ट्रीय स्मारक धोषित किया गया है।

ब्रिटिश लोगों द्वारा सन् 1857 में अण्डमान में स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम के बाद स्थापित यह कारावास वाइपर द्वीप के विशाल और दर्दनाक जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों की यंत्रणापूर्ण कहानी की शुरूआत के बाद की कहानी कहता है। जिन देश भक्तों ने ब्रिटिश राज के खिलाफ आवाज उठाई उन्हें इस जेल में भेज दिया गया, जहाँ उनकी मौत हो गई। नेताजी

सुभाष चंद्र बोस ने इसी जेल के पास 30 दिसम्बर 1943 को स्वतंत्रता की आवाज उठाने के लिए तिरंगा फहराया था। यहाँ एक म्यूज़ियम, एक कला दीर्घा और एक फोटो गैलरी भी हैं, जो सोमवार के अलावा सभी दिनों पर सुबह 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे और दोपहर 2:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक खुलती है।

प्रवेश शुल्क है : 5 रु. कैमरा - फोटो 10 रु., वीडियो 50 रु.।

ध्वनि और प्रकाश प्रदर्शन (साउण्ड एण्ड लाइट शो) : यहाँ सेल्युलर जेल के अंदर हर शाम शाम 5:00 बजे हिन्दी में और 7:15 बजे अंग्रेजी में ध्वनि और प्रकाश (साउण्ड एण्ड लाइट शो) के चलते-फिरते प्रयोग से स्वतंत्रता संग्राम का वास्तविक प्रतीत होने वाला संघर्ष दिखाया जाता है।

प्रवेश शुल्क : बड़ों के लिए 20 रु. और बच्चों के लिए 15 रु.।

रॉस द्वीप : ब्रिटिश राज के समय पोर्ट ब्लेयर की राजधानी रहा रॉस द्वीप एक छोटा सा द्वीप है, जो पोर्ट ब्लेयर बंदरगाह के रक्षक की तरह है। (पोर्ट ब्लेयर से नाव द्वारा 10 मिनट का रास्ता है)। इस द्वीप में इस समय बॉल रूम, चीफ कमिश्नर का आवास, सरकारी आवास, चर्च, कब्रिस्तान, अस्पताल, बेकरी, प्रैस, स्विमिंग पूल और ट्रुप बैंरकों जैसे पुराने भवन हैं, ये पुराने ब्रिटिश राज के टूटे-फूटे भवनों के अवशेष संजोए हैं।

जब से डॉ जेम्स पैटिसन वॉकर 10 मार्च 1858 को ईस्ट इंडिया कम्पनी के सेमीनारिस जहाज़ में सवार होकर पोर्ट ब्लेयर आए, यह द्वीप 1942 तक ब्रिटिश कम्पनी के राज में रहा। सन् 1942 से 1945 तक यह द्वीप जापानियों के कब्जे में रहा। जबकि 1945 में ब्रिटेन ने दोबारा इस पर कब्जा किया और बाद में यह उजड़ गया।

ब्रिटिश राज के दौरान यह द्वीप ब्रिटिश नागरिकों की शक्ति का केन्द्र था। इसे एक नागरिक सभ्यता के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं के साथ सुसज्जित शहर (टाउनशिप) के रूप में विकसित किया गया था। अण्डमान समिति के अध्यक्ष, डॉ वॉकर ने 200 अभियुक्तों के साथ इस बदनाम दण्डात्मक जेल की स्थापना की थी। ब्रिटिश कम्पनी ने कुछ आदिवासियों

को भी रॉस द्वीप पर बुलाया और 1893 में उन्हें बसाने के लिए अण्डमान हाउस की स्थापना भी की। आगे चलकर इन निवासियों ने रॉस द्वीप से भाग खड़े होने वाले कैदियों को पकड़ने का काम कराया जाता था।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि और संरक्षण योग्य खण्डहरों वाला यह द्वीप 0.6 कि.मी क्षेत्र में फैला हुआ है। इन खण्डहरों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण यह द्वीप पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय हो गया है। रॉस द्वीप बुधवार के अलावा सभी दिनों में दिन के समय खुला होता है। पोर्ट ब्लेयर से यहाँ नाव से जाने की सुविधा है। यहाँ नौसेना ने द्वीप के इतिहास को चित्रित करते हुए 'स्मृतिका' नामक संग्रहालय बनाया है।

प्रवेश शुल्क : 20 रु., कैमरा 25 रु.

वाइपर द्वीप : वाइपर एक छोटा सा, शांत और सुंदर द्वीप है और यह पोर्ट ब्लेयर हार्बर के अंदर स्थित है। इस द्वीप का नाम "वाइपर" शब्द से निकला है, जो उस जहाज का नाम था जिसमें बैठकर लेफ्टिनेंट आर्कीबाल्ड ब्लेयर 1789 में कारावास बनाने के लिए यहाँ आए थे। ऐसा माना जाता है कि जहाज़ के साथ दुर्घटना हो गई और इसके टुकड़े द्वीप के किनारे तैरते मिले। वाइपर द्वीप ने स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा झेली गई अनकही यातनाएँ देखी हैं। इस कारावास के नियमों को तोड़ने के दोषी खतरनाक अपराधियों को बेड़ियों के साथ इसी द्वीप में काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। नानी गोपाल और नंदलाल पुलिनदास जैसे स्वंतत्रता सेनानी, जिन्होंने सेल्युलर जेल में भूख-हड़ताल की, उन्हें यहाँ वाइपर की जेल में रखा गया। शेर अली एक पठान थे, जिन पर लॉर्ड मेयो की हत्या का आरोप था, को मृत्यु दण्ड दिया गया और उन्हें वाइपर द्वीप में फांसी पर चढ़ाया गया। इस द्वीप पर जेलों और फांसीगृह के अवशेष देखे जा सकते हैं। वाइपर की जेल में बंदियों को बाहरी दुनिया से अलग कर के रखा जाता था। इसे ब्रिटिश कम्पनी ने 1846-1867 के बीच बनाया था। अपनी काम करने की परिस्थितियों के कारण इस कुख्यात जेल को वाइपर चेन गांग जेल कहा जाता था।

पोर्ट ब्लेयर से चलने वाली निजी नावों द्वारा यहाँ के पर्यटन में इस पूरे हार्बर के आसपास स्थिति विभिन्न स्थानों का मनोरम दृश्य दिखाई देता है, इसमें वाइपर द्वीप का भ्रमण भी शामिल है।

पोर्ट ब्लेयर और इसके आसपास के अन्य स्थान

अण्डमान वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स (सेल्युलर जेल के पास) : यह अपने आप में एक अनोखा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स है। यहाँ सुरक्षित रूप से खेले जाने वाले और रोमांचक जल क्रीड़ाओं, जैसे वॉटर-स्कीइंग, वॉटर-स्कूटर, जोमिनी-बोड, पैरा-सेलिंग (हवा/मौसम की परिस्थिति पर निर्भर करते हुए), सेल बोट, विंड सर्फर, स्पीड बोट और ग्लास बॉटम बोट से कोरल/शिप रेक देखने आदि की सुविधाएँ हैं। सेलाइन पानी, स्विमिंग पूल, सुबह/शाम घूमने के कार्यक्रम, कपड़े बदलने कमरे और फूड प्लाज़ा इस कॉम्प्लेक्स के पास उपलब्ध हैं। एबरडीन के संग्राम को चित्रित करता यहाँ एक स्मृति भवन बनाया गया है, जो ब्रिटिश लोगों और अण्डमानी आदिवासियों के बीच मई 1859 में हुई और इसमें अनेक आदिवासियों की मौत हो गई।

कोर्बिन्स कोब : कोर्बिन्स कोव नारियल के पेड़ों से भरा तट है, जो सूर्य की धूप में स्नान करने का आदर्श स्थल है, पोर्ट ब्लेयर से 7 कि.मी. दूर है। इस तट के पास होटल, रेस्तरां और बार, कपड़े बदलने का कमरा आदि है। जापानी बंकर जैसे ऐतिहासिक अवशेष यहाँ देखे जा सकते हैं। यहाँ से नजदीक स्थित स्नेक आइलैण्ड स्कूबा डाइविंग के लिए प्रसिद्ध है।

चैथम : एशिया की सबसे बड़ी और पुरानी मिलों में से एक चैथम एक छोटा द्वीप है जो एक पुल द्वारा पोर्ट ब्लेयर से जुड़ा है। यहाँ पडौक, गरजन, मार्बल, साटन बुड आदि जैसी लकड़ियों का भण्डार है। यह द्वीप इन सभी द्वीपों में से दूसरे क्रम पर है। यह द्वीप हड्डो समुद्री घाट के पास स्थित है जो इस द्वीप का सबसे बड़ा घाट है।

पार्क

मरीना पार्क : वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के पास समुद्र के किनारे स्थित इस पार्क में मनोरंजन के झूले, बच्चों को यातायात के नियम सिखाने वाला पार्क और खिलौना रेल है।

गाँधी पार्क : राज निवास के पास स्थित इस सुंदर पार्क में मनोरंजन के झूले, सुरक्षित जल क्रीड़ाएँ, झील के आस पास प्रकृति का आनंद, रेस्तराँ और जापानी मंदिर तथा बंकर जैसे ऐतिहासिक अवशेष आदि देखे जा सकते हैं।

संग्रहालय

मानव विज्ञान संग्रहालय : पर्यटन निदेशालय के पास मौजूद यह संग्रहालय पेलियोनिथिक द्वीप निवासियों के जीवन को दर्शाता है। इसमें आदिवासियों के और उनके हथियारों के मॉडल रखे हैं। यह छुट्टी के दिनों में और गुरूवार को बंद रहता है।

समुद्रिका (नौसेना का समुद्री संग्रहालय) : अण्डमान टील हाउस, देलानीपुर के सामने स्थित यह संग्रहालय समुद्री परिवेश के विभिन्न पहलुओं पर जागरुकता लाने के लिए बनाया गया है। यहाँ शेल, कोरल और रंगीन मछलियों की कुछ प्रजातियाँ प्रदर्शित की गई हैं। समय सुबह 8:30 से 12:00 बजे तक, दोपहर 2:00 से शाम 5:00 बजे तक, बुधवार और छुट्टी के दिनों पर बंद रहता है। प्रवेश शुल्क 10 रु.

जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया म्यूज़ियम : अण्डमान टील हाउस के पास स्थित संग्रहालय और अनुसंधान पुस्तकालय में अनेक प्रकार के स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप, उभयचर, मछलियाँ, स्पंज, मूंगे, तितलियाँ, सेण्टीपीड आदि प्रदर्शित किए गए हैं। यह सभी कार्य दिवसों पर खुला है।

वन संग्रहाल : हड्डो (प्राणी संग्रहालय/जू के पास स्थित) इस संग्रहालय में पैमाने (स्केल) मॉडलों के माध्यम से वन की गतिविधियों के बारे में गहराई से बताया गया है और इसमें पडौक, मार्बल, पीउमा, गुर्जन,

साटन वुड, आदि जैसी प्रसिद्ध लकड़ियों के बने सजावटी सामान प्रदर्शित किए गए हैं। यह सभी कार्य दिवसों पर खुला है।

विज्ञान केन्द्र (साइंस सेंटर) : पोर्ट ब्लेयर कस्बे से 3 कि.मी की दूरी पर स्थित इस विज्ञान केन्द्र में द्वीपों के बनने, ज्वालामुखियों की गतिविधियों, समुद्र के विज्ञान को दर्शाने वाले अनेक मॉडल हैं, मनोरंजक विज्ञान गैलरी, आधुनिक प्रौद्योगिकी गैलरी, तारा मण्डल (चलता-फिरता तारा मण्डल), खुला विज्ञान पार्क और एक तितलियों का कोना है, जिससे विज्ञान के नए-नए पहलू पता चलते हैं। यह बुधवार और सार्वजनिक अवकाशों के अलावा सभी दिन खुला है (समय : सुबह 10 बजे से शाम 5:30 तक)।

जू/एक्वेरियम

मिनी जू : हड्डो (देलानीपुर-चाथम रोड) में स्थित है और इसमें कुछ दुर्लभ प्रकार की चिड़ियों और जंतुओं की स्थानीय प्रजातियाँ रखी गई हैं। समय : सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे, बुधवार को बंद।

प्रवेश शुल्क : वयस्क-2 रु., बच्चे-1 रु.

एक्वेरियम (मछलियों का संग्रहालय) : अण्डमान वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के पास स्थित इस संग्रहालय में द्वीप की विशिष्ट समुद्री प्रजातियों को रखा गया है और यहाँ हिन्द-प्रशांत महासागर और बंगाल की खाड़ी में मिलने वाले जीव भी रखे गए हैं। यह सोमवार और अवकाश के दिनों पर बंद रहता है।

प्रवेश शुल्क :वयस्क 5 रु., बच्चे - 3 रु. (12 वर्ष तक),
बिना फोकस लाइट वाला वीडियो - 25 रु

पोर्ट ब्लेयर के बाहर खोजी यात्रा

उत्तरी खाड़ी : पोर्ट ब्लेयर में कोरल तथा समृद्ध समुद्री जीवों को देखने का सबसे नजदीकी स्थान उत्तरी खाड़ी है, जो हैरिएट पर्वत के नीचे स्थित है। कोरल तथा समुद्री जीव स्नोरकेलिंग या काँच के तले

वाली नाव से देखे जा सकते हैं। यहाँ तट के पास उथले पानी में तैरा जा सकता है। निजी नाव सेवाएँ पोर्ट ब्लेयर से उपलब्ध हैं और इसमें केवल 15 मिनिट लगते हैं। इस स्थान पर जाने से पहले अपने भोजन और पीने के पानी की व्यवस्था करें।

कुरमाडेरा बीच (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 40 कि.मी. दूर) : तिरूर, कुरमाडेरा के पास (दक्षिणी अण्डमान द्वीप के पश्चिमी सिरे पर) एक 7अर्धचंद्राकार सफेद रेत वाला उथला किनारा तैरने के लिए और सूर्य स्नान के साथ कोरल देखने के लिए एक उपयुक्त स्थान है। यह सूर्यास्त को देखने का भी एक उपयुक्त स्थान है। यहाँ जाने से पहले अपना भोजन और पानी लेकर जाएँ।

सिंक द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र द्वारा 39 कि.मी. दूर) : एक संरक्षित स्थान के रूप में घोषित यह द्वीप दुर्लभ मूंगों और पानी के अंदर पाए जाने वाले समुद्री जीवों तथा उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों से भरपूर है। यहाँ की सुंदर रेत इन द्वीपों को आपस में जोड़ती है। यह स्कूबा, डाइविंग और स्नोरकेलिंग के लिए उपयुक्त स्थान है।

हैरिएट पर्वत (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 55 कि.मी./फेरी द्वारा 10 कि.मी. दूर) : ब्रिटिश राज में मुख्य आयुक्त का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय रहा यह स्थान अजूर समुद्र और बाहरी द्वीपों का सुंदर और जादुई दृश्य देखने के लिए एक आदर्श स्थान है। यह दक्षिणी अण्डमान की सबसे ऊँची चोटी (356 मी) है। यहाँ से बैम्बू फ्लैट से लेकर हैरिएट पर्वत तक चढ़ाई की जा सकती है और यहाँ से मधुवन तक प्राकृतिक रास्ते से जा सकते हैं। हैरिएट पर्वत एक राष्ट्रीय पार्क भी है। इस पर्वतारोहण में दुर्लभ स्थानीय चिड़ियाँ, जंतु और तितलियों को देखा जा सकता है। हैरिएट पर्वत पर जाने के लिए अण्डमान टील हाउस से टूर आयोजित किए जाते हैं। इस रास्ते में आप होप टाउन में रुक सकते हैं, जहाँ शेर अली पठान ने लॉर्ड मेयो की हत्या की थी। राष्ट्रीय पार्क का प्रवेश शुल्क 25 रु.

चिड़ियाँ टापू (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 25 कि.मी. दूर) : चिड़ियाँ टापू दक्षिण अण्डमान द्वीप का सबसे दक्षिणी सिरा है। हरे चमकीले मेंग्रोव, चहचहाती चिड़ियों के भरे जंगल और सिलवान रेत तथा मुण्डा पहाड़ समुद्री किनारा इसे एक आदर्श पिकनिक स्थल बनाते हैं। यहाँ पर मनोहारी सूर्यास्त भी देखा जा सकता है। अण्डमान टील हाउस, पोर्ट ब्लेयर से टूर आयोजित किए जाते हैं।

सिपीघाट फार्म (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 14 कि.मी. दूर) : यह फार्म 80 एंकड़ के क्षेत्र में फैला है और यहाँ लौंग, इलायची, नारियल और काली मिर्च जैसे मसालों की पैदावार के लिए अनुसंधान और विकास कार्यक्रम किए जाते हैं। केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान (सी ए आर आई) का अनुसंधान और प्रदर्शन फार्म पास ही है।

कोलिनपुर (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 36 कि.मी. दूर) : तिरूर के पास स्थित यह उथले पानी वाला सुंदर रेतीले किनारे वाला एक स्थान है, जो तैरने, सूर्य स्थान और सूर्यास्त देखने के लिए उपयुक्त है।

मधुवन (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 75 कि.मी./20 कि.मी. फेरी द्वारा की दूरी पर) : मधुवन दक्षिणी अण्डमान द्वीप में हेरियट पर्वत के पूर्वोत्तर भाग में एक पर्वतारोहण क्षेत्र है। इस पर्वतीय मार्ग के रोचक हिस्से हैं - सुंदर किनारे, स्थानीय चिड़ियाँ, पशु, तितलियाँ और हाथी।

द्वीप गंतव्य (आइलैण्ड डेस्टीनेशनस)

नील द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र द्वारा 36 कि.मी. की दूरी पर) : सुंदर हरे वनों और रेतीले किनारों वाला यह द्वीप अण्डमान का भरा-पूरा वनस्पति केन्द्र है। पोर्ट ब्लेयर से सप्ताह के 4 दिन यहाँ नाव द्वारा पहुँचा जा सकता है, यह पर्यावरण प्रेमी पर्यटकों के लिए एक आदर्श स्थान है। हवाबिल नेस्ट गेस्ट हाउस, जो पर्यावरण निदेशालय का है, आपको सुविधाजनक आवास प्रदान करता है। यहाँ पर्यटक गांव के जीवन की ईमानदारी और सुंदरता को महसूस कर सकता है। लक्ष्मणपुर, भरतपुर, सीतापुर के सुंदर तट समुद्री किनारों पर बने प्राकृतिक पुल हैं।

हेवलॉक द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र द्वारा 50 कि.मी.) : नील द्वीप के पास मौजूद यह द्वीप सुंदर रेतीले किनारों और चमकदार हरे वनों से भरा हुआ है। राधा नगर बीच जो द्वीप के पश्चिमी सिरे पर जेटी से 12 कि.मी. दूर है, इन द्वीपों के पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण है। पूर्वी सिरे पर जेटी से 4 कि.मी. दूर विजय नगर तट एक अन्य सुंदर स्थान है। राधा नगर तट पर पर्यटन के मौसम में पर्यटन निदेशालय द्वारा कैम्पिंग (टेंट में रहना) का आयोजन किया जाता है। यहाँ पर्यटक प्रकृति माँ की गोद में अपने अवकाश समय को शांति से बिता सकते हैं।

हैवलॉक को हर दिन पोर्ट ब्लेयर नाव की सेवाएं जोड़ती हैं। डॉल्फिन यात्री निवास पर्यटन निदेशालय का अतिथि गृह है जो विजय नगर के पास है। यहाँ सुविधाजनक आवास और आने-जाने की व्यवस्था है। पर्यटन के मौसम में स्कूबा डाइव सेंटर द्वारा स्नोरकेलिंग और स्कूबा डाइविंग के आयोजन किए जाते हैं।

नॉर्थ पेसेज द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र द्वारा 70 कि.मी. दूर) : मर्क बे कोरल सफेद रेत के लिए प्रसिद्ध, यहाँ के उथले तट स्नोरकेलिंग, तैरने और सूर्य स्नान (सन बाथ) के लिए उपयुक्त हैं। द्वीप के आस-पास समुद्र में मिलने वाली डॉल्फिन मछलियों के लिए यह तट प्रसिद्ध है। यह द्वीप नियमित नाव सेवाओं से नहीं जुड़ा है। पर्यटकों को लॉन्ग आइलैण्ड या इराटा जेटी से मर्क बे पहुँचने के लिए नाव किराए पर लेनी होती है। यहाँ की भव्य सुंदरता देखने के लिए दिन का समय उपयुक्त होता है। रहने की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

लॉन्ग द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 82 कि.मी. दूर) : फीनिक्स बे जेटी से सप्ताह में चार बार नाव द्वारा यहाँ पहुँचा जा सकता है। यह द्वीप लालाजी बे पर स्थित एक रेतीला भव्य तट है। इस द्वीप के आस-पास समुद्र में डॉल्फिन पाई जाती हैं। बोट जेटी से 6 कि.मी. की दूरी पर लालाजी बे में डोंगी या जंगल के रास्ते 15 मिनट में पहुँचा जा सकता है।

बाराटांग द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 100 कि.मी. दूर) : यह द्वीप दक्षिण और मध्य अण्डमान के बीच बसा एक सुंदर तट है। रंगत और मायाबुण्डर के लिए अण्डमान ट्रंक रोड यहाँ से होकर गुजरती है। यहाँ मिट्टी के ज्वालामुखी, चूने की गुफाएँ वन विभाग की अनुमति से देखीं जा सकती हैं।

रंगत (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 170 कि.मी./समुद्र से 90 कि. मी. दूर) : यहाँ आप शांत ग्राम्य जीवन और साफ-सुथरी प्रकृति का आनंद ले सकते हैं। यहाँ आप अप्रदूषित हवा में सांस ले सकते हैं, जो शहर निवासियों के लिए दुर्लभ है। कट वर्ट बे बीच (रंगत बाजार/जेटी से 20 कि.मी. दूर) कछुओं के रहने का स्थान है। यहाँ दिसम्बर-फरवरी के मौसम में कछुओं को अण्डे देते देखा जा सकता है। पर्यटन निदेशालय का अतिथि गृह, हॉस्कबिल नेस्ट कट वर्ब बे बीच और कछुओं के संरक्षित स्थान के पास है। पंचवटी झरना और अमकुंज बीच यहाँ के रास्ते में पड़ते हैं। यहाँ से मायाबुण्डर और दिगलीपुर पहुँचा जा सकता है।

मायाबुण्डर (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 242 कि.मी./समुद्र से 157 कि.मी. दूर) : मध्य अण्डमान द्वीप के उत्तरी भाग में स्थित मायाबुण्डर में उत्कृष्ट दृश्य और सुंदर तट हैं। बर्मा, पूर्वी पाकिस्तान और पूर्व अभियुक्तों से मिल कर बसा मायाबुण्डर एक विशिष्ट संस्कृति का प्रतीक है। एविस द्वीप (मायाबुण्डर से 30 मिनट नाव की यात्रा) के तट, कर्माटांग तट (13 कि.मी) और किनारों पर फैली हरी वनस्पति यहाँ के आकर्षण हैं। कर्माटांग तट पर भी कछुए अपने घर बनाकर अण्डे देते हैं। यहाँ दिसम्बर-फरवरी के मौसम में कछुओं को अण्डे देते देखा जा सकता है। स्विटलेट नेस्ट रिसॉर्ट कर्माटांग तट के काफी नजदीक है। यहाँ नाव द्वारा क्रीक से गुजरते हुए कालीघाट (दिगलीपुर के लिए) पहुँचा जा सकता है।

दिगलीपुर (पोर्ट ब्लेयर से सड़क द्वारा 325 कि.मी./समुद्र से 185 कि.मी. दूर) : उत्तरी अण्डमान द्वीप में स्थित दिगलीपुर में पर्यावरण प्रेमी पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव होता है। यह अपने संतरों, चावल और समुद्री जीवन के लिए प्रसिद्ध है। सैडल चोटी (732 मी) यहाँ स्थित सबसे

ऊँचा बिन्दु है। कालपोंग यहाँ से होकर बहती है, जो अण्डमान की एक मात्र नदी है। इस द्वीप की प्रथम जल विद्युत परियोजना इसी नदी पर है। सड़क के रास्ते पोर्ट ब्लेयर आने वाले लोग ऑस्टिन क्रीक पुल (70 मी.) से गुजरकर जा सकते हैं और यहाँ से कालीपुर और लमिया बे बीच देखने के लिए कालीपुर जा सकते हैं। यहाँ आने वाले लोग गाँव की मासूम सुंदरता देख सकते हैं। शहरी जीवन की भाग-दौड़ से थके लोगों को यहाँ एक शांतिपूर्ण अवकाश मिलता है।

पर्यटन निदेशालय ने टर्टल रिसॉर्ट, कालीपुरी में आरामदेह आवास बनाया है। वॉटर स्पोर्ट्स सेंटर पास में है, जो सैटल चोटी पर पर्वतारोहण करना चाहते हैं, वे कालीपुर से चढ़ाई शुरू करते हैं। रामनगर बीच (दिगलीपुर से 40 कि.मी दूर) दिसम्बर से फरवरी के बीच कछुओं की गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है।

जो पोर्ट ब्लेयर नाव के रास्ते आते हैं, वे एरियल बे जेटी पहुँचेंगे जो दिगलीपुर और कालीपुर के समीप है। सप्ताह में 2 बार पोर्ट ब्लेयर-दिगलीपुर (एरियल बे जेटी) नाव सेवा उपलब्ध है। मायाबुण्डर से कालीघाट के लिए प्रतिदिन नाव सेवा उपलब्ध है (दिगलीपुर से 25 कि. मी.)।

रॉस और स्मिथ नाम के दो जुड़वां द्वीप रेतीले मार्ग से जुड़े हैं, यह एरियल बे जेटी या कालीपुर वॉटर स्पोर्ट्स सेंटर से 30 मिनट की दूरी पर है।

बैरन द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र से 139 कि.मी. दूर) : यह भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है। यह लगभग 177 सालों तक सुप्त रहने के बाद, हाल में दो बार फटा, एक बार 1991 में और दोबारा 1994-95 में और 2005–2006 को फिर शक्रीय हुआ। यह द्वीप 3 कि.मी. के गोलाकार में फैला है और इसमें समुद्री किनारे से लगभग आधे कि.मी. की दूरी पर ज्वालामुखी का एक बड़ा सा मुहाना है। इस द्वीप में विशेष नावों द्वारा जा सकते हैं। विदेशी नागरिकों को केवल बोर्ड वाले जहाजों से जाने की अनुमति है।

लिटिल अण्डमान द्वीप (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र से 120 कि.मी. दूर) : दक्षिणी अण्डमान द्वीप के दक्षिण में स्थित यह द्वीप पर्यटकों के लिए आकर्षणों का भण्डार है। हट बे यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए आने और जाने का बिन्दु है। आमतौर पर पोर्ट ब्लेयर से दो-तीन नाव सेवाएं हैं। इस यात्रा में लगभग 9 घण्टे लगते हैं। पोर्ट ब्लेयर से इस द्वीप के लिए अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह वन पौधरोपण विकास निगम लि. द्वारा पैकेज टूर कराया जाता है।

यहाँ दो झरने है, द्वीप के ये दोनों झरने सदाबहार वर्षा के जंगल में हैं। व्हाइट सर्फ नामक झरना हट बे जेटी से 6.5 कि.मी. दूर है। यहाँ जंगलों में आप हाथी की सवारी का आनंद ले सकते हैं। दूसरा झरना, विस्पर वेव यहाँ से 20 कि.मी. दूर है। विस्पर वेव की यात्रा में 4 कि.मी. वन से गुजरते हुए पहाड़ की चढ़ाई है।

बटलर बे एक सुंदर तट है, जो हट बे जेटी से 14 कि.मी. की दूरी पर है। यह तट सूर्य-स्नान, स्नोरकेलिंग और सर्फिंग के लिए उपयुक्त है। यहाँ तट पर ही रहने के लिए पर्यटक कक्ष (झोंपड़ीनुमा) उपलब्ध हैं। तट के पास क्रीक से गुजरते हुए नाव की यात्रा सुखद लगती है। नेताजी नगर बीच (हट बे जेटी से 11 कि.मी.) इस द्वीप का एक अन्य सुंदर तट है। यहाँ जंगल के अंदर हाथियों को लकड़ियाँ ले जाते और उनके बच्चों का प्रशिक्षण कराते देखा जा सकता है। लिटिल अण्डमान अपने रेड ऑयल पाम बगीचे के लिए भी प्रसिद्ध है, जो 600 हेक्टेयर से अधिक के क्षेत्र में फैले हैं। इस बगीचे में पाम तेल निकालने की फैक्टरी है। व्हाइट सर्फ झरने और बटलर बे बीच के मध्य यात्रा करते हुए यहाँ आया जा सकता है।

इस द्वीप में पहले पूर्वी बंगाल कहे जाने वाले और अन्य स्थानों से आई आदिवासी ओन्गेस और निकोबारी जातियाँ निवास करती थीं।

साहसिक खेल : अण्डमान का पानी स्कूबा डाइविंग, स्कीइंग, सेलिंग, पैरा सेलिंग, विंड सर्फिंग, स्नोरेकेलिंग, हाई सी गेम, फिशिंग आदि जैसे साहसिक वॉटर गेम्स के लिए उपयुक्त हैं। घने हरे-भरे जंगलों के बीच पर्वतारोहण और कैंम्पिंग यहाँ होने वाली अन्य साहसिक गतिविधियां हैं।

स्कूबा डाइविंग : अण्डमान के पानी में अंदरूनी समुद्री जीवन, सुंदर रंगीन मछलियाँ, दुर्लभ मूँगे, डूबे हुए जहाजों के रहस्यमय अवशेष आदि यहाँ अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इन सब को स्कूबा डाइविंग के माध्यम से देखा जा सकता है।

अधिकृत स्कूबा डाइविंग केन्द्रों के विषय में, स्कूबा डाइविंग के लिए खुले क्षेत्र और स्कूबा डाइविंग केन्द्र चलाने की शर्तों और नियमों की जानकारी के लिए पर्यटन निदेशालय से सम्पर्क करें।

फिशिंग गेम : सुरमई फिशिंग क्लब दुगनाबाद,
फोन : 235446
ई मेल- surmai_fishing@hotmail.com

सेलिंग, स्कीइंग, पैरा-सेलिंग, वॉटर स्कूटर और स्पीड बोट

- अण्डमान वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स पोर्ट ब्लेयर में स्थित एक अनोखा वॉटर स्पोर्ट्स सेंटर है, जिसे पर्यटन निदेशालय द्वारा चलाया जाता है। यहाँ सेलिंग, स्कीइंग, वॉटर स्कूटर और स्पीड बोट आदि खेल उपलब्ध हैं। कोरल और डूबे हुए जहाज़ों के टुकड़े खोजने की ट्रिप्स यहाँ सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे के बीच चलाई जाती हैं।
- **आइसलैण्ड वॉटर स्पोर्ट्स** : अण्डमान वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एक निजी वॉटर स्पोर्ट्स ऑपरेटर द्वारा चलाया जाता है और यहाँ स्पीड बोट, जेट स्काइज़, ट्यूब राइड, वेक बोर्ड राइड, नी बोर्ड राइड आदि उपलब्ध हैं (टेली. 246229)

स्नोरकेलिंग : आप यहाँ पानी के अंदर के समुद्री जीवों को देख सकते हैं और अण्डमान वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, कोर्बिन्स कोब पर्यटन केन्द्र, चिड़िया टापू, उत्तरी खाड़ी, महात्मा गाँधी मेरीन नेशनल पार्क (जॉली बॉय, रेड स्किन) के द्वीपों, सिंक द्वीप, हेवलॉक द्वीप और रॉस तथा स्मिथ द्वीपों के पास स्नोरकेलिंग द्वारा मूँगों की दुर्लभ किस्में देख सकते हैं।

ट्रेकिंग : बैम्बू लैट से हैरिएट पर्वत तक, हैरिएट पर्वत से मधुबन तक, कांलीपुर (दिगलीपुर) से सैडल पीक (चोटी) और लिटिल अण्डमान में

सदाबहार जंगलों से गुज़रते हुए आप ट्रेकिंग का आनन्द उठा सकते हैं और सुंदर अंधेरे और घने जंगल में जीवन का अनुभव कर सकते हैं। कुछ अन्य ट्रेकिंग मार्ग भी हैं।

आइलैण्ड कैम्पिंग : आइलैण्ड कैम्प साहसिक स्वभाव के लोगों के लिए सही चुनाव है, जो धूप, समुद्र और समुद्री तट पर प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करते हुए अपनी छुट्टियाँ बिताना चाहते हैं। द्वीप कैम्पिंग मौसम पर निर्भर करते हुए (अक्टूबर से नई) हैवलॉक द्वीप में राधानगर तट पर उपलब्ध है।

निकोबार के दर्शनीय स्थल

छोटे-छोटे 28 द्वीपों से बना 1841 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में स्थित निकोबार द्वीप अण्डमान से दस डिग्री के चैनल से अलग किया हुआ है। निकोबार में नारियल, खजूर, कैसुआरिना और पाण्डानस के पेड़ बडी संख्या में है। ग्रेट और लिटिक निकोबार मे केकड़े खाने वाले गहरे रंग और लम्बी पूंछ वाले बंदर हैं। निकोबार में बड़ी संख्या में कबूतर पाए जाते हैं। मेगापोड एक दुर्लभ चिड़िया है,जो ग्रिड निकोबार में पाई जाती है। भारत का सबसे दक्षिणी सिरा "इंदिरा पॉइट" ग्रेट निकोबार द्वीप में है। (निकोबार द्वीप समूह अभी पर्यटकों की नज़र से बचा हुआ है)

कार निकोबार (पोर्ट ब्लेयर से समुद्र द्वारा 270 कि.मी. दूर) : कार निकोबार इस द्वीप का मुख्यालय है। यह समतल द्वीप नारियल के पेड़ों और हरहराते समुद्र से घिरा सुंदर द्वीप है। निकोबारी झोंपड़ियाँ, जो स्टिल्ट पर बनी होती हैं और इनका प्रवेश द्वार लकड़ी का, सीढ़ीदार होता है, जो यहाँ की विशेषता है। पोर्ट ब्लेयर से समुद्री रास्ते से 16 घण्टे की यात्रा कर यहाँ पहुँचा जा सकता है।

कचाल (पोर्ट ब्लेयर से समुद्री रास्ते द्वारा 425 कि.मी. दूर) : कचाल निकोबार समूह का एक छोटा सी द्वीप है। यही वह स्थान है जहाँ 1 जनवरी 2000 को शताब्दी को सूर्य की पहली किरण पड़ी थी। इस द्वीप में पूर्वी खाड़ी, झूला और पश्चिमी खाड़ी पर सुंदर तट हैं।

ग्रेट निकोबार (पोर्ट ब्लेयर से समुद्री रास्ते द्वारा 540 कि.मी. दूरी) : निकोबार के दक्षिणी सिरे पर स्थित यह द्वीप "इंदिरा पॉइंट (पहले इसे पिग मेलियन पॉइंट कहते थे) है, जो भारत का सबसे दक्षिणी सिरा है। गैलेथिया के पास बड़े लैदर बैक कछुओं के घर हैं। इस द्वीप पर बायोस्फेयर संरक्षित क्षेत्र भी है। पोर्ट ब्लेयर से समुद्री रास्ते से 50-60 घंटे की यात्रा।

उत्सव

द्वीप पर मनाए जाने वाले पर्यटक उत्सव : दो सप्ताह तक चलने वाला यह उत्सव हर साल (दिसम्बर-जनवरी) अण्डमान और निकोबार प्रशासन द्वारा आयोजित द्वीप का प्रमुख उत्सव है। इस उत्सव में प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ आदि होती हैं। द्वीप और भारत की मुख्य भूमि से सरकारी एजेंसियाँ और निजी उद्यमी उत्सव के दौरान इस प्रदर्शनी को देखने आते हैं। इस प्रदर्शनी में इन द्वीपों के विकास के पहलू दिखाए जाते हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि के सांस्कृतिक दल और कलाकारों को यहाँ आमंत्रित किया जाता है और आदिवासियों सहित द्वीप के प्रतिभाशाली कलाकारों को भी प्रदर्शन के लिए बुलाया जाता है।

सुभाष मेला : हर साल जनवरी में : नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जन्मदिवस पर हैवलॉक में आयोजित। सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भरपूर एक सप्ताह लम्बा उत्सव चलता है।

विवेकानन्द मेला : हर साल जनवरी में : स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिवस मनाने के लिए नील द्वीप में आयोजित।

ब्लॉक मेला : हर साल जनवरी/फरवरी में : दिगलीपुर में आयोजित इस मेले में ग्रामीण क्षेत्रों में हुए विकास पर प्रकाश डाला जाता है, जो इस बीच हुए तथा इन द्वीपों की विशिष्ट ग्रामीण संस्कृति के बारे में बताया जाता है।

खरीदारी

इन द्वीपों में लकड़ी, समुद्री शैलों और मोतियों के बने आभूषणों (गले, हाथों और कानों के) की विभिन्न किस्में मिलती हैं। नारियल के खोल से बने लैम्प शेड, एश ट्रे, निकोबारी चटाइयों के अलावा लकड़ी से बने अन्य सामान जैसे छड़ी, ट्रे, बॉल, मेजें और कुर्सियाँ यहाँ से खरीदे जा सकते हैं। ये चीज़ें सागरिका, कॉटेज इंडस्ट्रीज़, पोर्ट ब्लेयर और रंगत, खादी और ग्रामोद्योग के शो रूम में उपलब्ध हैं, जो मिडिल पॉइन्ट, पोर्ट ब्लेयर में और कस्बे के विभिन्न भागों के कई निजी शो रूमों में उपलब्ध हैं।

पैकेज टूर

- मिडिल और नार्थ अण्डमान-एएनआईआईडीसीओ, पोर्ट ब्लेयर
  टेली. 232380 / 232207 / 232098 / 234108
  फैक्स : 232720 / 235098
  ई-मेल aniidco@vsni.com
- लिटिल अण्डमान- एएनआईएफपीडीसीएल
  पोर्ट ब्लेयर; टेली.- 232866, 230867
  हटबे- 284211, 284218
  ई-मेल : pbkvanvikas@sabncharnet.in

आयोजित टूर

- चिड़िया टापू, हैरिएट पर्वत, कोर्बिन्स कोव बीच और पोर्ट ब्लेयर कस्बे के लिए पोर्ट ब्लेयर के अण्डमान टील हाउस, देलानीपुर से पर्यटन निदेशालय द्वारा नियमित रूप से टूर का आयोजन किया जाता है। अण्डमान टील हाडस देलानीपुर में इसकी बुकिंग होती है। फोन : 232642 / 234060 / 230061

बस सेवा : सेंट्रल बस स्टैंड, एबरडीन बाजार पोर्ट ब्लेयर के पास स्थित है, जहाँ से स्टेट ट्रांसपोर्ट सर्विस और निजी बस सर्विस वाले नियमित रूप से शहर और शहर के दूर दराज बसे हुए स्थानों के लिए बसें चलाते हैं। पोर्ट ब्लेयर रंगत (170 कि.मी) से जुड़ा है, मायाबुंदर (242 कि.मी) और दिगलीपुर (235 कि.मी) में जुड़ा है, इसे अण्डमान ट्रंक रौड जोड़ती है। यह रास्ता घने जंगलों से और जारवा संरक्षित आदिवासी वन से गुज़रता है। पर्यटकों को इन जंगलों में जाने और आदिवासियों से बातचीत करने की अनुमति नहीं है। इन आदिवासियों की फोटो लेना भी मना है। स्टेट ट्रांसपोर्ट सर्विस और निजी ऑपरेटर पोर्ट ब्लेयर से रंगत, मायाबुंदर और दिगलीपुर और यहाँ से वापसी के लिए सीधी एक्सप्रेस बसें चलाते हैं। पोर्ट ब्लेयर से रंगत के लिए लगभग 6 धण्टे; मायाबुंदर के लिए लगभग 9 घण्टे और दिगलीपुर के लिए लगभग 12 घण्टे लगते हैं। ये बसें सुबह 4.30 से 11.30 बजे के बीच पोर्ट ब्लेयर के सेंट्रल बस स्टैण्ड से चलती हैं।

द्वीपों के बीच चलने वाली नाव सेवा : जहाजरानी सेवा निदेशालय द्वारा फीनिक्स बे जेटी/कैथाम जेटी, पोर्ट ब्लेयर से बैम्बू लैट (हैरिएट पवर्त के लिए), हैवलॉक द्वीप, नील द्वीप, रंगत, दिगलीपुर और लिटिल अण्डमान जैसे पर्यटक स्थलों के लिए अंतर द्वीप यात्री और कार्गो फेरी/वाहनों को ले जाने वाली फेरी चलाई जाती हैं।

जहाजों/फेरियों के चलने के समय और किराए की जानकारी जहाज़रानी सेवा निदेशालय, पोर्ट ब्लेयर टेली. 232528/234299/231794 से ली जा सकती है।

जहाज़ों/नावों के चलने के ताज़ा कार्यक्रम जानने के लिए दैनिक समाचार पत्र देखें या ऑल इंडिया रेडियो, पोर्ट ब्लेयर में स्थानीय समाचार बुलेटिन में सुबह और शाम 7.00 बजे सुनें।

टूर ऑपरेटर

1. सागर टूर्स एण्ड ट्रेवल्स, प्रा. लि., (भारत सरकार द्वारा अनुमोदित) हड्डो, पोर्ट ब्लेयर, टेली : 233703 / 233704, फैक्स : 233318 चेन्नै : (044) 24986507 / 24986508 / 24988763 बैंगलोर : (080) 5559394 / 5098227 हैदराबाद : (040) 27819684 / 2781556 ई-मेल : andaman@vsnl.net	पैकेज़ टूर किराए पर वाहन हवाई जहाज के टिकट
2. आइसलैण्ड ट्रेवल्स (भारत सरकार द्वारा अनुमोदित) अबेरडीन बाजार, पोर्ट ब्लेयर, टेली: 233358 / 233034, फैक्स: 230109 / 233051 ई-मेल : islandtravels@yahoo.com	पैकेज़ टूर किराए पर वाहन हवाई जहाज के टिकट
3. एएनआईआईडीसीओ पोर्ट ब्लेयर, टेली : 232380, 232207, 232666- एक्सटेंशन 15	पैकेज़ टूर हवाई जहाज के टिकट
4. शोम्पेन ट्रेवल्स मिडिल पॉइन्ट, पोर्ट ब्लेयर, टेली : 232682 / 232644, फैक्स : 232425 ई-मेल : hotelshompen@yahoo.com	पैकेज़ टूर किराए पर वाहन हवाई जहाज के टिकट
5. तासनीम टूर एण्ड ट्रेवल फीनिक्स बे, पोर्ट ब्लेयर, टेली : 236718, 242648, फैक्स : 242648 ई-मेल : tanseemtours@yahoo.com	पैकेज़ टूर किराए पर वाहन
6. अशोका वर्ल्ड ट्रेवल्स फीनिक्स बे, पोर्ट ब्लेयर, टेली : 236818, 250845, फैक्स : 231616 ई-मेल : alokawarldtravels@msn.com	पैकेज़ टूर किराए पर वाहन
7. टी एस जी टूर विंग्स, फीनिक्स बे, पोर्ट ब्लेयर, टेली : 231894, 232894, फैक्स : 242799 ई-मेल : tsgtour@hotmail.com	किराए पर वाहन हवाई जहाज के टिकट
8. एस आर ट्रेवल्स हड्डो, पोर्ट ब्लेयर, टेली : 230077 / 241791	किराए पर वाहन हवाई जहाज के टिकट

ठहरने की जगह

पर्यटन निदेशालय

क्र. सं.	अतिथि गृह का नाम	रहने की जगह का प्रकार	किराया
1.	अण्डमान टील हाउस	ए.सी. (डबल बैड)	600/-
	दिलानीपुर, पोर्ट ब्लेयर	नॉन-ए.सी (डबल बैड)	400/-
	टेली. : 232642, 234060, 234061		
2.	डॉल्फिन रिसॉर्ट	वीआईपी काटेज ए.सी.	1500/-
	हैवलॉक आइसलैण्ड	(डबल बैड)	
	टेली. : 282411 फैक्स : 282444	डीलक्स एसी	1000/-
		सैमी डीलक्स नॉन-ए.सी	500/-
3.	हवाबिल नेस्ट	डीलक्स एसी (डबल बैड)	1000/-
	नील आइसलैण्ड	सैमी डीलक्स एसी (डबल बैड)	600/-
	टेली. : 282630	नॉन-ए.सी डॉरमैटरी	500/-
4.	हॉकबिल नेस्ट	ए.सी. (डबल बैड)	600/-
	कर्टबर्ट बे, रंगत	नॉन-ए.सी (डबल बैड)	400/-
		डॉरमैटरी	500/-
5.	टर्टल रिसॉर्ट	ए.सी. (डबल बैड)	600/-
	कालीपुर, दिगलीपुर	नॉन-ए.सी (डबल बैड)	400/-
	टेली. : 272553	डॉरमैटरी	500/-

आरक्षण संबंधित जानकारी

पोर्ट ब्लेयर - फोन : (03192)-232747, 232694
चैन्नई - फोन : (044)-26549295 (वित क्र.सं. 1 एवं 2)
ऑफ-सीजन छूट : 25 प्रतिशत (जून-सितम्बर)
ई-मेलः accomodations@and.nic.in

एएनआईआईडीसीओ

1.	टूरिस्ट होम	ए.सी. (डबल बैड)	1300/-
	टेली : 232207, 232380		
	मेगापोड नैस्ट (3 स्टार)	ए.सी. निकोबारी कॉटेज	1800/-
	फैक्स : 232095 (एमएपी)		

अकेले व्यक्ति तथा ऑफ सीज़न की दरें भी उपलब्ध है, क्रेडिट कार्ड स्वीकार किए जाते हैं।
आरक्षण : महाप्रबंधक, एएनआईआईडीसीओ, विकास भवन, पोर्ट ब्लेयर- 744101
टेलीफोन. 232098/234108 फैक्स : 235098, ई-मेल aniidco@vsnl.com

ए एन आई एफ पी डी सी एल, लिटिल अण्डमान द्वीप

1.	गेस्ट हाउस, हट बे	:	ए.सी. (डबल बैड)	150/-
		:	नॉन-ए.सी (डबल बैड)	प्रति बिस्तर
2.	बट्लर बे बीच रिसॉर्ट	:	नॉन-ए.सी (डबल बैड)	100 से 300 रु.
		:	कॉटेज	तक प्रति कॉटेज

आरक्षण : एएनआईएफडीसीएल, हड्डो, पोर्ट ब्लेयर- 744102
टेलीफोन. (03192) 232866/230867 फैक्स : 03192-233254,
ई-मेल pblvanvikas@sancharnet.com

निजी क्षेत्र द्वारा बनाये गए ठहरने के स्थान

(अपेक्षाकृत ऊँची श्रेणी)

क्र. सं.	होटल का नाम (पोर्ट ब्लेयर में)	सुविधाएँ	सिंगल बैड (रुपए)	डबल बैड (रुपए)
1.	फॉर्च्यून रिसॉर्ट बे आइसलैंड (वेलकम समूह) टेली : 234101, 232198, 232065 फैक्स : 231555 www.welcomgroup.com mail@welcomgroup.com	ए.सी. ** © ~~ (विवरण के लिए आगे देखें)	3299.00 ए.पी 2999.00 एम. ए. पी (+टेक्स)	5450.00 ए.पी 4650.00 एम. ए. पी (+टेक्स)
2.	होटल सेंटीनेल टेली : 237914-17, 244914-17 hotelsentinel@hotmail.com	ए.सी. रॉयल सुइट ए.सी. (डबल बैड) ए.सी. 4 (डबल बैड) नॉन ए.सी. डबल बैड. ** $		2500.00 से 4400.00
3.	पीयरलैस बीच रिसॉर्ट कोर्बिन्स कोव टेली : 233461-64, 240201-03 फैक्स : 233463 कोलकाता टेली : 033-2280301 pblbeachinn@sanchamet.in	ए.सी. ** © ~~	2250.00	3650.00 से 4500.00
4.	होटल सिन्क्लेयर्स बे व्यू टेली : 227937, 227824 फैक्स : 233159, 232937 www.sinclairshotells.com sinview@cal3vsnl.net.in	ए.सी. नॉन-ए.सी ** © ~~	1900.00 से 2210.00	2820.00 से 3240.00

क्र. सं.	होटल का नाम (पोर्ट ब्लेयर में)	सुविधाएँ	सिंगल बैड (रुपए)	डबल बैड (रुपए)
5.	होटल शॉम्पेन	ए.सी. डीलक्स		1250.00
	मिडिल पॉइंट	नॉन-ए.सी डीलक्स		1000.00
	टेली : 232644, 232682	नॉन-ए.सी स्टैण्डर्ड"		800.00
	फैक्स : 232425			
	hotelshompen@hotmail.com			
6.	होटल ब्लेयर	सुइट		350.00
	टेलीफोन केंद के निकट			
	टेली : 238109, 237668	सुपर डीलक्स ए.सी.		से
	फैक्स : 234062	डीलक्स ए.सी.	550.00	1250.00
		ए.सी.नॉन-ए.सी "	350.00	
7.	हॉर्नबिल नेस्ट रिसॉर्ट	डबल बैड		800.00
	टेली : 229243, 229245	ए.सी.		से
	फैक्स : 233161	नॉन-ए.सी		1800.00
	hornhillresort@rediffmain.com	~~		
8.	होटल धनलक्ष्मी	ए.सी. डीलक्स	1200.00	1500.00
	एबरडीन बाजार	ए.सी.	300.00	700.00
	टेली : 233952, 233953, 238698	**		
	फैक्स : 234964	नॉन-ए.सी		
9.	होटल जेम कॉन्टीनेंट	ए.सी. डीलक्स	800.00	800.00
	गोलघर	ए.सी.	600.00	से
	टेली : 234534, 23737	अतिरिक्त बैड		100.00
	फैक्स : 232327	** ©		
10.	होटल अभिषेक	ए.सी.	700.00	800.00
	गोलघर	नॉन-ए.सी	400.00	500.00
	टेली : 233565, 234561,	अतिरिक्त बैड		200.00
	फैक्स 230705	**		
	holelabhishek@hotmain.com	$		
11.	हॉलीडे रिसॉर्ट	ए.सी.	350.00	500.00
	प्रेम नगर	नॉन-ए.सी	से	से
	टेली : 230516, 234231	**	600.00	800.00
	फैक्स : 234231			
	info@aboutandamans.com			
12.	होटल एन के इंटरनेशनल	ए.सी.		500.00
	टेली : 233382, 233066, 232114	नॉन-ए.सी		400.00
	फैक्स : 230413	अतिरिक्त बैड		150.00
	चेन्नै : टेली : 22321305	~~		

हेवलॉक आइसलैंड

जंगल रिसॉर्ट राधानगर टेली : 237656, फैक्स : 237657 travelworld-india@exite.com	नॉन-ए.सी 4 बैड कॉटेज 2 बैड कॉटेज इको-हट् ~~	3200.00 से 5200.00	
वाइल्ड ऑर्किड टेली : 282472, 282476, 233358, 233034 फैक्स : 232327	नॉन-ए.सी कॉटेज	800.00	

**ऑफ-सीज़न डिस्काउंट उपलब्ध एपी - अमेरिकन प्लान

© क्रेडिट कार्ड स्वीकार किए जाते हैं ईपी - यूरोपियन प्लान

~~समुद्र के सामने

चिड़िया टापू, वंडेर और माउंट हैरिएट के लिए आवास फॉरेस्ट गैस्ट हाउस में उपलब्ध है। आरक्षण के लिए संपर्क करें :

चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन
वन सदन, हड्डो, पोर्ट ब्लेयर
टेली : 233549

रेस्तराँ / बार

इन द्वीपों की विशेषता है स्वादिष्ट सीफूड। अण्डमान के प्रदूषणरहित समुद्र में अनेक प्रकार की मछलियाँ, केंकड़े, लोबस्टर्स, झींगे आदि बड़ी मात्रा में मिलते है। ये सी फूड यहाँ बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं और इन्हें पकाकर अधिक स्वादिष्ट बना दिया जाता है। यहाँ उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, शाकाहारी, कॉन्टीनेंटल, चाइनीज़ पकवान भी उपलब्ध हैं। सी फूड के स्वाद का आनन्द लेने के लिए आप इन जगहों पर जाएँ ·

- मण्डाली रेस्तराँ और निकों बार
  फॉर्च्यून रिसॉर्ट बे आइसलैण्ड
  टेली. 234101
- कोर्बिन्स डिलाइट रेस्तराँ एण्ड बार
  पियरलैस रिसॉर्ट
  टेली. 233462 / 233464

- जेम कॉन्टीनेंटल गोलधर
  टेली. 234535 / 237537
- वेब्स रेस्तराँ एण्ड बार कोंबिन्स कोव
  टेली. 231032
- डॉल्फिन रेस्तराँ, गोलधर
  टेली. 243933
- लाइट हाउस रेस्तराँ, यूथ हॉस्टल
  टेली. 232459
- वाइल्ड ग्रास रेस्तराँ, बाबू लेन
  टेली. 237657
- दावत रेस्तराँ एण्ड बार
  देलानीपुर
  टेली. 230509
- आइसलेट रेस्तराँ, सेल्युलर जेल के पास
  टेली. 230104
- रूफ टॉप रेस्तराँ और ज़ेबरा बार
  होटल शोम्पेन, टेली. 232644
- होटल एन के इंटरनेशनल, टेली. 233066
- सिन्क्लेयर्स बे व्यू, टेली. 232973 / 233159
- द चाइना रूम, डुंगाबाद, टेली. 230759
- विश्रांति रेस्तराँ एण्ड बार, टेली. 2324107
- दिल्ली कैफेटेरिया, मिडिल पॉइंट, टेली. 233728
- अन्नपूर्णा कैफेटेरिया, टेली. 233139
- आनन्द रेस्तराँ, टेली. 233989

प्रकृति के ठण्डक पहुँचाने वाले टॉनिक-नर्म नारियल पानी को पीकर अपनी प्यास बुझाना नहीं भूलें और खुद को तरोताज़ा कर लें। ये नर्म नारियल अण्डमान में हर जगह उपलब्ध हैं।

कॉन्फ्रेंस सुविधा

पोर्ट ब्लेयर कॉर्पोरेट बैठकें, सम्मेलन और मिलने-जुलने का बेहतरीन स्थान है। इन सभी को प्रकृति के ताजा और नया बना देने वाले खुशनुमा माहौल में आयोजित करें। कॉन्फ्रेंस आदि की सुविधाओं के लिए सम्पर्क करें :

- फॉर्च्यून रिसॉर्ट बे आइसलैण्ड
  टेली. 234101, फैक्स : 231555
- मेगापोड नेस्ट
  टेली. 233659, 232207, फैक्स : 232702, 232076
- होटल सेंटीनेल, टेली. 237914, 244914
- प़ीयरलैस बीच रिसॉर्ट
  टेली. 233461-64, 240201-03
  टेली. 233463
- होटल सिन्क्लेयर्स बे व्यू
  टेली. 227937, 227824

बैंक

(विदेशी मुद्रा विनियम/ट्रेवलर्स चैक/क्रेडिट कार्ड के लिए)

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टेली. 233593, 232457
- सिंडीकेट बैंक टेली. 232532
- इंडियन बैंक टेली. 233341
- एटीएम आईसीआईसीआई, एसबीबाई और यूटीआई
- सेल्युलर फोन सेवा बीएसएनएल

पर्यटकों के लिए सुझाव

ध्यान रखें

- अण्डमान द्वीप के लिए यात्रा शुरू करने से पहले अपनी हवाई यात्रा की टिकट और रहने की जगह सुनिश्चित करें।
- विदेशी नागरिक द्वीप पर उतरने के बाद जल्दी से जल्दी अप्रवास प्राधिकरण से आवश्यक परमिट प्राप्त करें।
- द्वीप के केवल उन्हीं स्थानों पर जाएँ जहाँ अनुमति है।
- केवल अधिकृत पर्यटन गाइडों की सेवाएँ लें।
- ड्राइविंग करते समय यातायात के नियमों का पालन करें, बाएँ चलें। अपने साथ कानूनी दस्तावेज़ जैसे ड्राइविंग लाइसेंस, परमिट, पासपोर्ट आदि रखें।
- समुद्र में जाने से पहले लाइफ गार्ड से सलाह लें।
- केवल सुरक्षित समुद्री हिस्से में तैरें।
- तटों और पर्यावरण को साफ रखें।
- कचरे और प्लास्टिक की चीज़ें स्थानों/डस्टबिन में फेंके।
- शालीनता रखें और सभ्यतापूर्वक कपड़े पहनें।
- पैडी, सीमास, एनएयूएल, बीएसएसी या एसएसआई जैसे अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक संगठनों से प्रमाणित स्कूबा डाइविंग इंस्ट्रक्टरों की सेवाएँ लें ताकि आपका यह अनुभव सुरक्षित हो।
- किसी तरह की सहायता के लिए पर्यटक पुलिसकर्मी के पास जाएँ।

ऐसा नहीं करें :

- विदेशी नागरिक बिना परमिट लिए द्वीप में नहीं आएँ।
- प्रतिबंधित/आदिवासी इलाकों में प्रवेश नहीं करें।

- आदिवासी संरक्षित क्षेत्रों या देशी जनजातियों की वीडियो, फिल्म या तस्वीरें नहीं लें।
- फिशरीज़ डिपार्टमेंट/चीफ वाइल्ड वार्डन की विशेष अनुमति के बिना सी-फैन या सी शैल नहीं ले जाएँ।
- अपने टैण्ट/हेमोक लगाकर समुद्री तट या जंगल क्षेत्र में रात को नहीं रुकें।
- जंगली क्षेत्र में आग नहीं जलाएँ।
- बिना अनुमति नेशनल पार्क में नहीं जाएँ।
- तटों और सार्वजनिक स्थानों पर नग्नता पर पाबंदी है।
- किसी भी जीवित या मरे हुए जीव/पौधे का संग्रह, नाश या हटाने का काम नहीं करें।
- मरे हुए कोरल इकठ्ठा नहीं करें या किसी जीवित कोरल को स्पर्श नहीं करें/तोड़ें नहीं।
- स्नोरकेलिंग/स्कूबा डाइविंग करते समय कोरल रीफ पर खड़े नहीं हों।
- चिड़ियों/जानवरों का शिकार नहीं करें।
- उन स्थानों पर वीडियो या फिल्म नहीं लें, जहाँ ऐसा करना माना है।
- सार्वजनिक स्थलों, तटों और समुद्र के अंदर कचरा और प्लास्टिक आदि नहीं फेंकें।
- शराब पीकर नहीं तैरें।
- मानसून के दौरान असुरक्षित स्थान पर नहीं तैरें।
- अयोग्य/अपंजीकृत डाइव ऑपरेटर के साथ जोखिम लेकर न जाएँ, यह आपके लिए खतरनाक हो सकता है।

सामान्य सुझाव

- वन्य जीवन संरक्षण की शर्तों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को नियमानुसार दण्ड दिया जाएगा।
- इस द्वीप में प्रतिबंधित प्लास्टिक की चीज़ों का उपयोग नहीं करें।
- प्लास्टिक/पॉलीबैग का उपयोग नहीं करें। पर्यावरण अनुकूल चीज़ें उपयोग करें।
- मध्य और उत्तरी अण्डमान के पैकेट टूर ए.एन.आई.आई.डी.सी. ओ. द्वारा आयोजित किए जाते हैं।
  टेली. 232098, 234108
  ई-मेल : aniidco@vsnl.com
- लिटिल अण्डमान के लिए पैकेज टूर ए एनआईएफडीसी एल द्वारा हड्डो, पोर्ट ब्लेयर में आयोजित कराए जाते हैं।
  टेली. 232866, 230867, 284212
  ई-मेल : pblvanvikas@san charnet.in
- नील, हेवलॉक आदि द्वीपों की नाव की टिकट यात्रा से एक दिन पहले जहाज़रानी सेवा निदेशालय, फीनिक्स बे से सुबह 9 बजे से 11.00 बजे के बीच ली जाएँ।
- ए.एन.आई.एफ.पी.डी.सी.एल. के माध्यम से लिटिल अण्डमान के पैकेज टूर के पर्यटकों की नाव की टिकट ए.एन.आई.एफ.पी.डी.सी. एल. द्वारा सुनिश्चित की जाएगी।
- मुख्य भूमि (भारत) से चलने वाले जहाजों के लिए टिकट पर्यटक कोटे से उपलब्ध हैं, इच्छुक व्यक्ति पासपोर्ट/आगे की यात्रा के टिकट के साथ पर्यटन निदेशालय से सम्पर्क करें।

महत्वपूर्ण टेलीफोन नंबर

राज निवास	233333
मुख्य सचिव	233110
एएनआईआईडीसीओ	232098
सचिव (पर्यटन)	233227
प्रधान मुख्य वन संरक्षक	23321
उपायुक्त	23389
पुलिस अधीक्षक	233077
निदेशक (पर्यटन)	230933
उपयोगी टेलीफोन नंबर	
भारतीय वायु सेना	
कार्यालय	233108 / 234744
एयरपोर्ट	232983
जेट एयरवेज़	
कार्यालय	236922, 236933
एयरपोर्ट	235911, 235944
शिपिंग कार्पोरेशन	
ऑफ इंडिया	233347, 233916
जहाज़रानी निदेशालय	232528, 231974
पर्यटन निदेशालय	232747, 232694, 230933
भारत सरकार का	
पर्यटन कार्यालय	233006
रेलवे आरक्षण	233042
जी बी पंत अस्पताल	23102, 233473
पुलिस नियंत्रण कक्ष	232100 / 100
पुलिस टेलीफोन एक्सचेंज	234472
पुलिस स्टेशन एबरडीन	232400
फायर स्टेशन	232101,232301,पीबीएक्स 232002
सेल्युलर जेल -	
नेशनल मेमोरियल	232759, 230117
एन्थ्रोपोलॉजिकल म्यूज़ियम	232291
फिशरीज़ म्यूज़ियम	232719

अण्डमान तथा निकोबार पन्ने का द्वीप

पर्यटन संबंधित जानकारी के चित्र

अण्डमान एवं निकोबार सचिवालय

अण्डमान एवं निकोबार (पर्यटन कार्यालय)

सेलुलर जेल–राष्ट्रीय स्मारक

सेलुलर जेल, राष्ट्रीय स्मारक

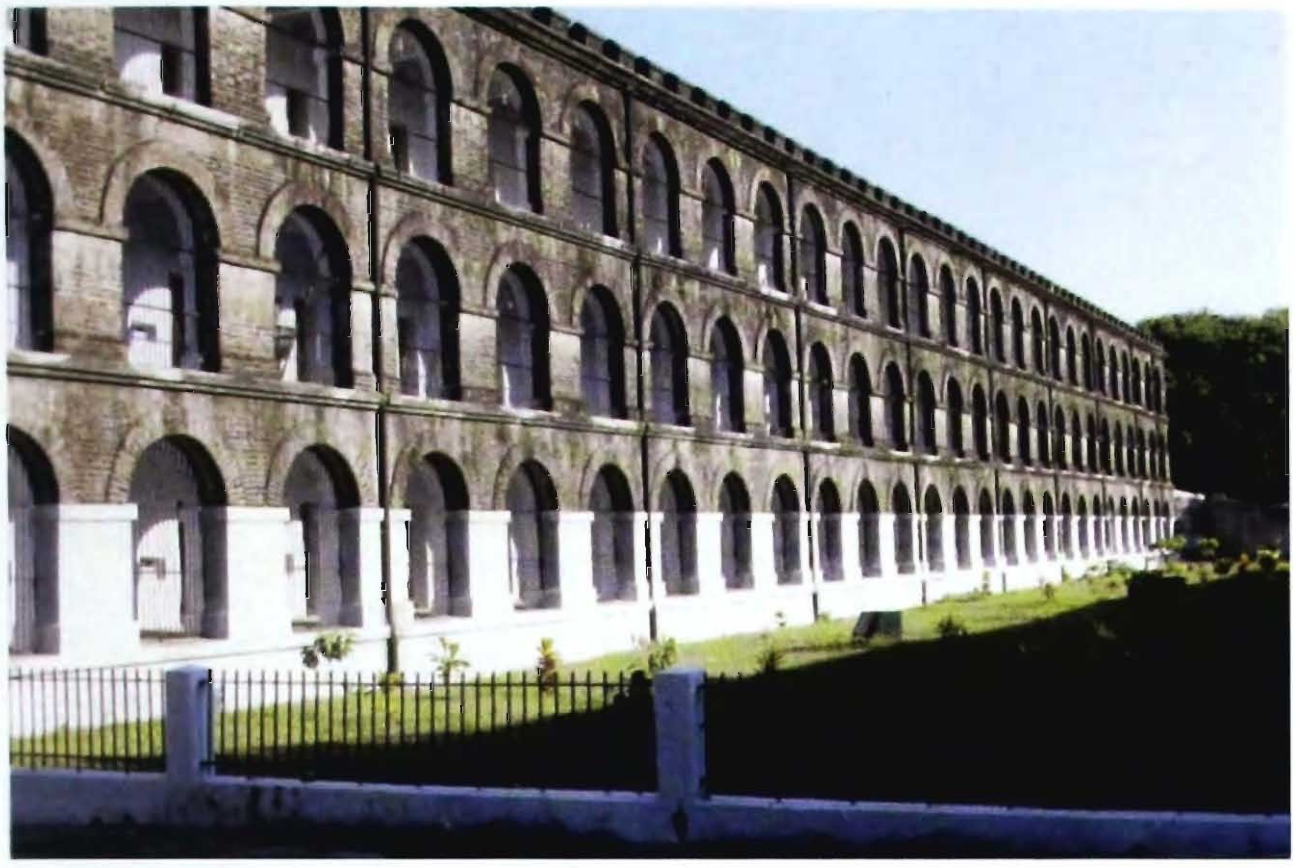

सेलुलर जेल

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

ध्वनि और प्रकाश प्रदर्शन (साउण्ड एण्ड लाईट शो)

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

रॉस द्वीप

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

रॉस द्वीप का किनारा

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

जल क्रीडा परिक्षेत्र (वॉटर स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स)

चाथम सा मिल, पोर्ट ब्लेयर

मैरीना पार्क, पोर्ट ब्लेयर (26 दिसम्बर 2004 के सुनामी से पहले का दृश्य)

मैरीना पार्क, पोर्ट ब्लेयर (सुनामी से पहले का दृश्य)

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

जौली ब्याय द्वीप (महात्मा गांधी मैमोरियल नेशनल पार्क, साउथ अण्डमान)

मैरीन नेशनल पार्क वन्डूर (दक्षिण *अण्डमान*)

अण्डमान एवं मुख्य द्वीप के यातायात के लिए स्वराज द्वीप पानी का जहाज

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

कोर्बिन्स कोब पर्यटन केन्द्र

सिन्क द्वीप, सुनामी के पहले का दृश्य

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

माउंट हैरिएट राष्ट्रीय पार्क

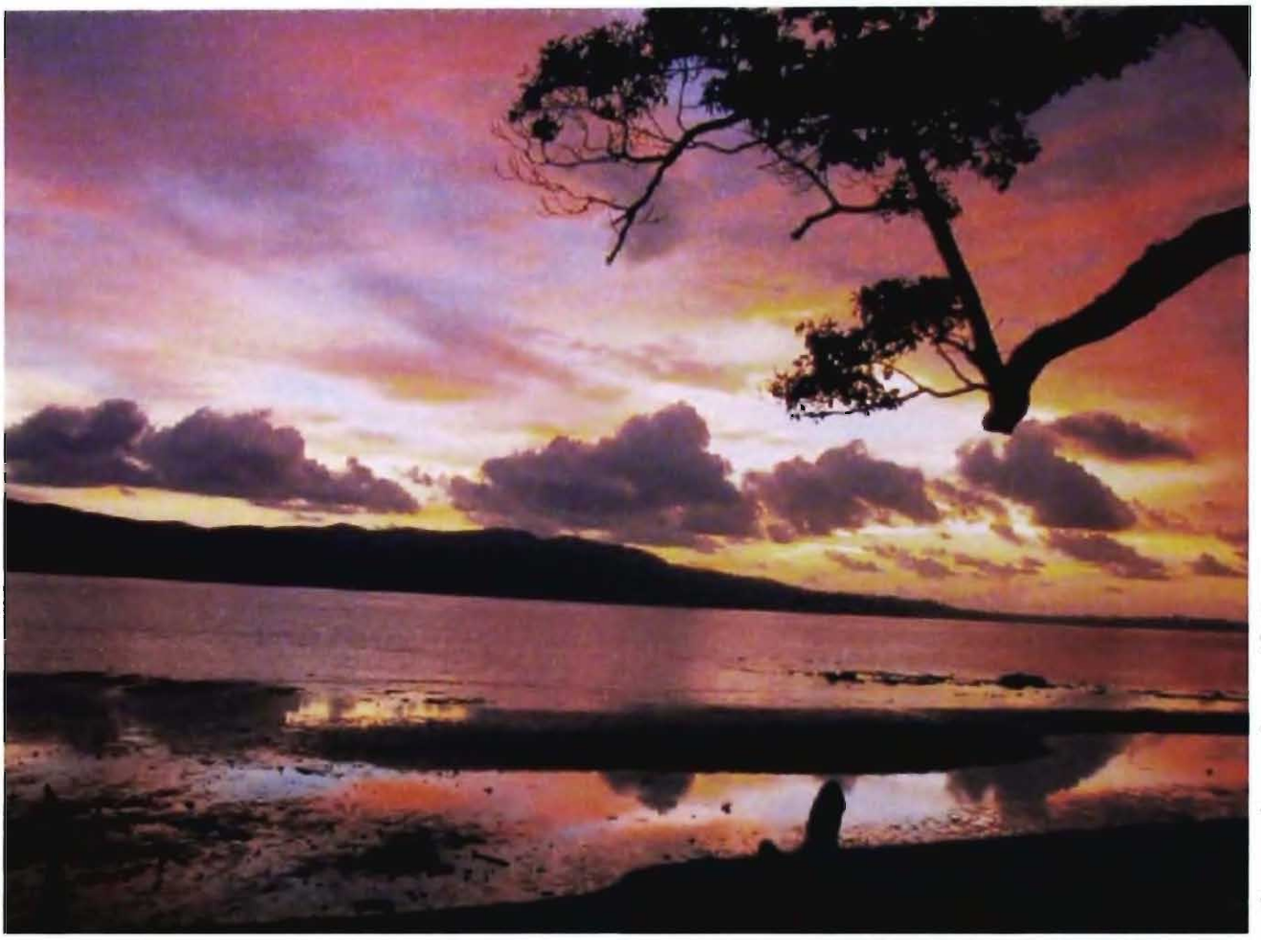

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

चिड़िया द्वीप

राइटम्यो (दक्षिण अण्डमान), मेनग्रोव

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

नील द्वीप

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

हैवलॉक द्वीप

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

नार्थ पेसेज द्वीप

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

लॉन्ग द्वीप (लालाजी बे)

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

बाराटांग द्वीप

बैरन द्वीप 1990 का चित्र

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

स्कूबा डाइविंग

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

स्नोरकेलिंग

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

फिशिंग गेम

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

द्वीप का उत्सव

सौजन्य से : पर्यटन निदेशालय

बैरन द्वीप में सक्रिय होता ज्वालामुखी

लाईट हाउस, इन्दिरा पॉइन्ट, सुनामी से पहले का दृश्य